सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार एकीभाव एवं चंदनषष्ठी विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादन

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम : सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदनषष्ठी विधान

आशीर्वाद : गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
: वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादकीय आशीर्वाद : प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव

रचनाकार : आगमस्वरा गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

सर्वाधिकार सुरक्षित : रचनाकाराधीन

प्रकाशन वर्ष : 2022

संस्करण : तृतीय 1000

प्रकाशक : श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थान
1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ
2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332
3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288
4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770
5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर
9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद–ग.ग.आचार्य कुंथुसागरजी	7
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें–आचार्य कनकनन्दीजी	8
3.	सम्पादकीय–आशीर्वाद – आचार्य गुप्तिनन्दीजी	10
4.	जैन धर्म में भावना का महत्त्व – मुनि महिमासागरजी	15
5.	धर्म कर्म निवहर्णम् – मुनि सुयशगुप्तजी	17
6.	भादो भी होगा भक्ति का सावन – मुनि चन्द्रगुप्तजी	18
7.	स्व कथ्यम् – गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	19
8.	तीर्थंकर पद की हेतू, सोलहकारण भावना– गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी	20
9.	विधान मंडल	37
10.	विनय पाठ	40
11.	पूजा आरम्भ	41
12.	नित्यमह पूजन–गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	46
13.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन–आचार्य गुप्तिनंदीजी	50
14.	ऋद्धि मंत्र	53

सोलहकारण विधान

15.	सोलहकारण भावना का स्तवन	54
16.	सोलहकारण समुच्चय विधान पूजा	55
17.	दर्शन विशुद्धि भावना पूजा	63
18.	विनयसम्पन्नता भावना पूजा	71
19.	शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा	75
20.	अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना पूजा	80
21.	संवेग भावना पूजा	86
22.	शक्तितस्त्याग भावना पूजा	91
23.	शक्तितस्तप भावना पूजा	95
24.	साधु समाधि भावना पूजा	100
25.	वैयावृत्त्य भावना पूजा	105
26.	अर्हद् भक्ति भावना पूजा	109
27.	आचार्य भक्ति भावना पूजा	114
28.	बहुश्रुत भक्ति भावना पूजा	122
29.	प्रवचन भक्ति भावना पूजा	129

30.	आवश्यकापरिहाणि भावना पूजा	135
31.	मार्ग प्रभावना भावना पूजा	140
32.	प्रवचन वात्सल्य भावना पूजा	145
33.	समुच्चय जयमाला	150
34.	प्रशस्ति	152
35.	विधान की आरती	153
36.	सोलहकारण चालीसा	155

श्री दशलक्षण विधान

37.	दशधर्म का स्तवन	157
38.	चौबीस भगवान की स्तुति	158
39.	श्री दशलक्षण धर्म विधान पूजा	161
40.	उत्तम क्षमाधर्म पूजा	167
41.	उत्तम मार्दव धर्म पूजा	172
42.	उत्तम आर्जव धर्म पूजा	178
43.	उत्तम शौच धर्म पूजा	184
44.	उत्तम सत्य धर्म पूजा	189
45.	उत्तम संयम धर्म पूजा	195
46.	उत्तम तप धर्म पूजा	200
47.	उत्तम त्याग धर्म पूजा	207
48.	उत्तम आकिंचन्य धर्म पूजा	212
49.	उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा	219
50.	क्षमावाणी पूजा	225
51.	समुच्चय जयमाला	229
52.	प्रशस्ति	231
53.	दशलक्षण धर्म की आरती	232
54.	दशलक्षण चालीसा	234

श्री पंचमेरु विधान

55.	श्री पंचमेरु समुच्चय विधान पूजा	236
56.	श्री सुदर्शन मेरु पूजा	241
57.	श्री विजय मेरु पूजा	248
58.	श्री अचल मेरु पूजा	255
59.	श्री मंदर मेरु पूजा	262
60.	श्री विद्युन्माली मेरु पूजा	269

61.	समुच्चय जयमाला	276
62.	प्रशस्ति	278
63.	पंचमेरु की आरती	279
64.	पंचमेरु चालीसा	280

श्री नंदीश्वर द्वीप विधान

65.	श्री नंदीश्वर पूजन विधान	282
66.	नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिश जिनालय पूजा विधान	287
67.	नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिश जिनालय पूजा विधान	294
68.	नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिश जिनालय पूजा विधान	301
69.	नन्दीश्वर द्वीप उत्तर दिश जिनालय पूजा विधान	307
70.	समुच्चय जयमाला	314
71.	प्रशस्ति	316
72.	नन्दीश्वर द्वीप की आरती	317

श्री रविव्रत विधान

73.	श्री रविव्रत विधान	318
74.	प्रथम वलय	320
75.	द्वितीय वलय	322
76.	तृतीय वलय	324
77.	चतुर्थ वलय	327
78.	पंचम वलय	329
79.	षष्ठम् वलय	331
80.	सप्तम वलय	333
81.	अष्टम वलय	336
82.	नवम वलय	338
83.	समुच्चय जयमाला	340
84	प्रशस्ति	343
85.	आरती	344
86.	चिंतामणी पार्श्वनाथ की आरती	345

तत्त्वार्थ सूत्र विधान (मोक्षशास्त्र)

87.	श्री तत्त्वार्थ सूत्र पूजा विधान	346
88.	तत्त्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय पूजा	352
89.	तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याय पूजा	357
90.	तत्त्वार्थ सूत्र तृतीय अध्याय पूजा	362

91.	तत्त्वार्थ सूत्र चतुर्थ अध्याय पूजा	367
92.	तत्त्वार्थ सूत्र पंचम अध्याय पूजा	372
93.	तत्त्वार्थ सूत्र षष्ठम अध्याय पूजा	377
94.	तत्त्वार्थ सूत्र सप्तम अध्याय पूजा	382
95.	तत्त्वार्थ सूत्र अष्टम अध्याय पूजा	387
96.	तत्त्वार्थ सूत्र नवम अध्याय पूजा	392
97.	तत्त्वार्थ सूत्र दशम अध्याय पूजा	398
98.	समुच्चय जयमाला	403
99.	प्रशस्ति	405
100.	मोक्षशास्त्र विधान की आरती	406

णमोकार विधान

101.	श्री णमोकार पूजा विधान	407
102.	विधान प्रारम्भ	411
103.	समुच्चय जयमाला	419
104.	प्रशस्ति	422
105.	आरती	423

एकीभाव विधान

106.	आदिनाथ भगवान की स्तुति	424
107.	एकीभाव पूजा विधान –श्री आदिनाथ पूजा	425
108.	विधान प्रारम्भ	429
109.	समुच्चय जयमाला	442
110	प्रशस्ति	445
111.	आदिनाथ भगवान की आरती	446
112.	एकीभाव विधान (आदिनाथ विधान) की आरती	447

चन्दन षष्ठी विधान

113.	चंदनषष्ठी व्रत विधान	448
114.	प्रशस्ति	464
115.	आरती	465
116.	अर्घावली	466
117.	समुच्चय अर्घ	468
118.	शांतिपाठ (हिन्दी), विसर्जन पाठ	469–470
119.	साहित्य सूची	471–472

आशीर्वाद

पुण्य ही जीव की सद्‌गति कराता है, सद्‌गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यसहित भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी** ने त्रिकाल चौबीसी और पंचकल्याणक विधान लिखे हैं और **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान आदि आठ विधानों को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्ग्रहस्थ व्रत करें, विधान करें। आप सभी विधानों को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावें, ऐसा मेरा कहना है। गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

-ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

राग – सुवर्ण पात्री मंगल आरती.. मराठी राग (चौपाई)

(तीर्थंकरों का सामान्य वर्णन)

आत्म उद्धारक विश्व प्रबोधक अनन्त ज्ञान सुख वीर्यवान्।
अनन्त दर्श के स्वामी भगवन्, घातीकर्म नाशक अरहन्॥ टेक॥

सोलह भावना बल पर बनते तीर्थंकर केवली महान्।
अतिशय युक्त पञ्चकल्याणों से होते हैं प्रभु शोभितवान्॥1॥

गर्भ से पूर्व होती रत्नवृष्टि माता देखती स्वप्न महान्।
देवों के द्वारा होती पूजित जिनेश माता पुण्य से जान॥2॥

जन्म होने पर होता अभिषेक पाण्डुक शिला पर महान्।
हजार आठ कलश के द्वारा देव करे उत्सव महान्॥3॥

राजकुमार राजा चक्री बन करते प्रजापालन श्रीमान्।
कोई बाल ब्रह्मचारी होते कोई विवाह भी करते जान॥4॥

बाह्य अन्त:करणों से जब होता वैराग्य सौभाग्य जान।
लौकान्तिक करते अनुमोदन दिव्य पालकी से वनगमन॥5॥

सिद्धों को करके सुमिरन पञ्चमुष्टि केशलोंच करें महान्।
अन्तरंग–बाह्य परिग्रह तजकर निर्ग्रन्थ रूप धरे महान्॥6॥

गर्भ से होते त्रिज्ञानधारी क्षायिक सम्यग्दृष्टि महान्।
दीक्षा से होता मनःपर्यय भी चौंसठ ऋद्धि अलौकिक जान॥7॥

बाह्य-आभ्यन्तर तपस्या करते सात्विक आहार लेते जान।
इसी से होते पञ्च आश्चर्य आहारदान का गुण बखान॥8॥

शुक्ल ध्यान से श्रेणी आरोहण करके घाती कर्म करें हनन।
अनन्त चतुष्टय धारी बनकर साक्षात् तीर्थेश जान॥9॥

समवशरण की रचना होती देवकृत अति मनोहर/(चमत्कार)।
गन्धकुटी बाहर सभा मध्ये विराजमान होते भगवान्/(जिनवर)॥10॥

सर्वभाषामयी श्रीवाणी खिरे श्रवण करे पशु देव नर।
गणधर उसे गुन्थित करते द्वादश जिनवाणी का सार॥11॥

हमारी संघस्था उदीयमाना कवियित्री **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री** के द्वारा रचित **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'**, ये अनेक विधान लिखे हैं उनका सदुपयोग करके विश्व मानव सातिशय पुण्यार्जन करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री** भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व-पर विश्वकल्याण करते हुये स्वात्मोपलब्धि करें ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें सह-

-आचार्य कनकनंदी
खाखड (उदयपुर) राज.
28-5-2012

सम्पादकीय-आशीर्वाद

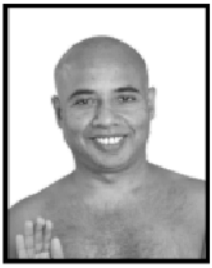

सोलहकारण दिव्य भावना, तीर्थंकर पद की दातार।
दशलक्षण आतम के लक्षण, करते पापों का परिहार॥
उनको भायें निशदिन ध्यायें, करने निज आतम उद्धार।
उनके धारक श्री जिन मुनि को, करते वंदन बारम्बार॥
पंचमेरु और नंदीश्वर के, जिनवर का हम करते ध्यान।
रविव्रत के श्री पार्श्वनाथ से, हो जाये मेरा उत्थान॥

भावनायें अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे–सद्भावना, दुर्भावना, प्रशस्त भावना, अप्रशस्त भावना। प्रशस्त भावनाओं में बारह भावना, मेरी भावना, सोलहकारण भावनाओं आदि का समावेश होता है। इन सभी भावनाओं में सोलहकारण भावना सातिशय पुण्य भावना है।

जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड आदि जैन आगम के अनुसार यदि कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य पुण्यात्मा जीव किसी तीर्थंकरादि केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में विधिबद्ध ढंग से इन सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन करता है तो वह तीर्थंकर पुण्य प्रकृति का बंध कर सकता हैं।

इसके अतिरिक्त षोडशकारण की व्रत कथा के अनुसार मुनियों के प्रति दुर्व्यवहार करने का फल भोगने वाली कुरूपा निंदनीया कालभैरवी कन्या ने पश्चात्ताप के साथ इस व्रत को सम्पन्न किया। जिससे मुनि निंदा के पाप से बचकर उसी कन्या ने आगे स्त्रीलिंग को छेदन कर, सीमंधर तीर्थंकर के महान् पद को प्राप्त किया। अर्थात् मुनि निंदा के प्रायश्चित्त हेतु भी यह व्रत करना चाहिए।

वर्ष में तीन बार आने वाला यह पर्व हमें दिशाबोध देता है कि तीर्थंकर कैसे तीर्थंकर बने ?

हमारे आदर्श क्या हो ? साधारण मानव भी आगे कैसे तीर्थंकर बन सकता है।

इसी प्रकार दशलक्षण धर्म, आत्मा का धर्म है। जैन संस्कृति में दशलक्षण पर्व का विशेष महत्त्व है। पर्वों में महापर्व, पर्वाधिराज पर्यूषण को माना गया है। पर्यूषण पर्व भी वर्ष में तीन बार आता है किन्तु भाद्रपद मास में आने वाला दशलक्षण पर्व जैन समाज में विशेष रूप से मनाया जाता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन धर्मावलम्बी श्रावक चाहे देश में हो या विदेश में रहे। वह अनिवार्य रूप से भाद्रपद मास के पर्यूषण पर्व पर

अपनी सांसारिक क्रियाओं से निवृत्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए दस दिनों तक नियम संयम के साथ दशलक्षण धर्म की महा–आराधना करते हैं।

धूमधाम से गीत, संगीत, वाद्ययंत्रों के साथ पूजा विधान करते हैं। इसलिए समय–समय पर हमारे आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताजी व श्रावकों ने कभी प्राकृत भाषा में, कभी संस्कृत में कभी ढुढ़ारी भाषा में तो कभी हिन्दी में छोटे या बड़े रूप में अनेक प्रकार से सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है।

इसी शृंखला में **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपनी भक्ति काव्य कला का सद्पयोग करते हुए **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'** को लिखा है। माताजी एक ऐसी पुण्यात्मा है जिन्होंने मात्र तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में घर, परिवार त्याग कर ''आर्यिका विशालमति माताजी'' के मार्गदर्शन में अपनी अध्यात्म यात्रा प्रारम्भ की। तत्पश्चात् जैनागम का गहन अध्ययन करने के लिये **'वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव'** का पावन सान्निध्य प्राप्त किया। धर्मपिता आचार्य गुरुदेव ने जहाँ आपको शास्त्राभ्यास कराया।

वहीं मर्यादा श्रमणमोत्तम आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने अपनी प्रथम शिष्या की आर्यिका दीक्षा अपने दीक्षा गुरु **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** से करवायी और इस तरह ब्रह्मचारिणी कुमारी लीला 17 फरवरी, 1997 को गुजरात प्रांत के अहमदाबाद नगर में **आर्यिका आस्थाश्री** बन गई। सन् 1994 से निरन्तर संघ में रहते हुए आपकी अध्यात्म साधना निरन्तर चलती रही।

दोहा– **पंचमेरु के जिन भवन, उनमें जिन भगवान।**
उनको ध्याऊँ रात–दिन, दर्शन दो भगवान॥

जैन संस्कृति में पंचमेरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ढाई द्वीप में पाँच मेरु होते हैं। जम्बूद्वीप के बीचोंबीच प्रथम सुमेरु पर्वत है। धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व और पश्चिम भाग में विजय व अचल मेरु हैं। पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व व पश्चिम में मन्दर व विद्युन्माली मेरु हैं।

इनमें से प्रथम सुदर्शन मेरु की ऊँचाई एक लाख चालीस योजन है व अन्य चार मेरु पर्वतों की ऊँचाई चौरासी हजार योजन बतायी है। इन पाँच मेरुओं में (1) भद्रशाल (2) नन्दन (3) सौमनस (4) पाण्डुक नामक चार वन हैं। चारों वनों की चारों दिशाओं में चार–चार जिनालय हैं। प्रत्येक जिनालय में 500 धनुष ऊँची 108–108 जिन प्रतिमायें हैं। इस प्रकार एक मेरु के चारों वनों के 16 चैत्यालयों

की 108–108 जिन प्रतिमायें मिलाने पर एक मेरु की 1728 जिनप्रतिमायें होती हैं। जैन शास्त्रों में पाँचों मेरु की कुल आठ हजार छह सौ चालीस जिन प्रतिमायें बनायी हैं। उनमें सभी प्रतिमाओं में प्रत्येक के समीप सर्वाण्ह यक्ष, सनत्कुमार यक्ष व श्रीदेवी और श्रुतदेवी की प्रतिमा भी शाश्वत स्थित है। प्रत्येक जिन प्रतिमा अष्ट महाप्रतिहार्य व अष्ट मंगल द्रव्य से विभूषित है।

पाँचों मेरु के पाण्डुक वनों की चार विदिशाओं में चार–चार शिलायें हैं। उनके क्रम से (1) पाण्डुक शिला (2) पाण्डुकम्बला शिला (3) रक्ता शिला और (4) रक्तकम्बला शिला नाम हैं। इन शिलाओं पर निर्धारित (भरत, ऐरावत, पूर्व, पश्चिम विदेह) क्षेत्र के बाल तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

हम इसे प्रथम सुमेरु पर्वत से समझते हैं। सुमेरु के पाण्डुक वन की ईशान दिशा में स्थित पाण्डुक शिला पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का, आग्नेय दिशा में स्थित पाण्डुकम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का, नैऋत्य दिशा में स्थित रक्ता शिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का और वायव्य दिशा में स्थित रक्तकम्बला शिला पर पूर्व विदेह के तीर्थंकरों का अभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्र के मेरु पर्वत के विषय में जानना चाहिए।

उन शिलाओं पर एक–एक सिंहासन और दो–दो भद्रासन होते हैं। जिनमें से सिंहासन पर बाल तीर्थंकर को विराजमान करके दोनों भद्रासनों पर सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी व ईशान इन्द्र–इन्द्राणी बैठकर 1008 कलशों में भरे क्षीरसागर के फल से बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक करते हैं। वह क्षीर सागर का जल भी दूध के समान स्पर्श–रस–गंध–वर्ण वाला होता है। जैनाचार्यों ने 1008 कलश 8 योजन (96 किमी.) गहरे, चार योजन (48 किमी.) चौड़े व मुख 1 योजन (12 किमी.) का बताया है। ऐसे बड़े–बड़े 1008 कलशों से श्री बाल तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य चार मेरु पर्वतों व धातकी खण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप के विषय में जानना चाहिए। पाँचों मेरु का सुन्दर–सा वर्णन 'श्री तिलोयपण्णत्ति', 'श्री त्रिलोक सार', 'श्री हरिवंश पुराण' आदि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है।

पंचमेरु को लक्ष्य करके ही पंचमेरु पुष्पाञ्जलि व्रत किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से एक ब्राह्मण पुत्री ने क्रम से देवपद, मनुष्य होकर चक्रवर्ती पद व आगे उसी भव से सिद्धपद प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार आने वाले दशलक्षण पर्व की पंचमी से नवमी तक यह व्रत किया जाता है। व्रत में शक्ति अनुसार उपवास या एकाशन करके पंचमेरु का विधान किया जाता है।

दोहा– जम्बुद्वीप से आठवाँ नन्दीश्वर हितकार।
उसके सब जिनबिम्ब को वन्दन बारम्बार॥

संघ में 'श्री तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थराज'' का स्वाध्याय चल रहा है उसमें मध्यलोक के आठवें नन्दीश्वर द्वीप का विस्तृत वर्णन पढ़ा। पढ़कर मन में अत्यानंद हुआ। उस समय ही **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने उनके द्वारा सृजित नंदीश्वर विधान की नवीन रचना अवलोकनार्थ दी। उसमें तिलोय पण्णत्ति को आधार लेकर माताजी ने 'नन्दीश्वर विधान' में नंदीश्वर द्वीप का, वहाँ–वहाँ के वैभव और पूजा विधि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। नंदीश्वर व्रत कथा से इस व्रत विधान की महिमा ज्ञात होती है। व्रत कथा के अनुसार कुबेर दत्त वैश्य और सुन्दरी सेठानी के पुत्र श्रीवर्मा ने नन्दीश्वर व्रत का विधिवत पालन किया। जिसके प्रभाव से वे स्वर्गादिक सुख भोगकर आगे हरिषेण चक्रवर्ती बने तथा उसी भव में पुनः व्रतकर आगे मुनि बने वा मोक्ष गये। व्रत के प्रभाव से अनंत वीर्य आगे चक्रवर्ती बना। जयकुमार सेनापति भगवान वृषभदेव के 72वें गणधर बने। इस व्रत की महिमा से कोटिभट् श्रीपाल का कोढ़ मिटा तथा आगे सर्वसुखों के साथ मोक्ष सुख भी प्राप्त हुआ। इत्यादि अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रन्थों में इस व्रत की महिमा बतलाते हैं। प्रस्तुत विधान में 52 अर्घ और 6 पूर्णार्घ हैं।

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान हैं, सर्व सुखों की खान।
उनका रविव्रत श्रेष्ठ है, देता सिद्धी निधान॥

भगवान पार्श्वनाथ का पावन जीवन चरित्र समतामूलक है। उनकी दस भव की साधना क्षमा की साधना है। साहस व धैर्य की साधना है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने दस भवों में आये संघर्ष व उपसर्ग पर एकमात्र समता से सफलता प्राप्त की। उनके वैरी कमठ ने जितनी बार उनको दबाया, पीड़ित किया उतना ही भगवान ऊपर उठते गये, सफलता का शिखर प्राप्त करते गये। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया बल्कि क्रोध का सामना क्षमा से किया। उन्होंने क्रोध की अग्नि पर क्षमा का जल डाल दिया। भगवान को परेशान करने वाला स्वयं हर बार दुःख के महासागर में गिरता गया। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन बताता है अच्छाई का फल अच्छा होता है और कमठ का जीवन बताता है बुराई का फल बुरा होता है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने पवित्र आचरण से बताया जीव का स्वभाव समता है, विषमता नहीं। उनकी समता कष्ट सहिष्णुता को सारे संसार ने सराहा तथा उन्हें अपना आदर्श माना। इसलिए आज भारत सहित सम्पूर्ण देश वा विदेश के सभी जिनालयों में सर्वाधिक भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमायें विराजमान हैं। श्रावकों ने आचार्यों की प्रेरणा से उनकी प्रतिमा विराजमान की तो अनेक आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों व कवियों ने उनके जीवन चरित्र को अनेक पुराण ग्रन्थों, कथा, नाटक, कविता–स्तोत्र व

पूजा में लिपिबद्ध किया। सबने अपनी शैली में भगवान का गुणानुवाद किया। भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अनेक व्रत भी किये जाते हैं। उनमें रविव्रत व मुकुट सप्तमी व्रत विशेष हैं। सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रचलित व्रत रविव्रत है। रविव्रत भी अहंकारी के अहंकार को तोड़ने वाला और धनहीन को धनवान, दुःखियों को सर्वसुखी बनाने वाला व्रत हैं। इसकी कथा से हम व्रत के सम्पूर्ण रहस्य को जान सकते हैं। रविव्रत पर भी संस्कृत व हिन्दी में अनेक विधान देखने को मिलते हैं। इसी रविव्रत पर हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी एक सुन्दर सारगर्भित स्वतंत्र रविव्रत विधान बनाया है। रविव्रत के 9 वर्ष के 9 वलयों के अर्घ में माताजी ने अपने ढंग से भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति की है। साथ में हम प्रभु भक्ति कितने द्रव्यों से, कितने प्रकार से कर सकते हैं। यह संदेश भी विधान के अनेक छन्दों में दिया है।

इसमें 81 अर्घ व कुछ पूर्णार्घ है इस विधान में उन्होंने, दोहा, काव्य, शम्भु, सखी, नरेन्द्र, चौपाई, गीता आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। पूरा विधान सरल, सहज सुन्दर है।

नंदीश्वर विधान और भी अनेक विधानों की रचना की है व महासती चन्दना, सती मनोरमा आदि अनेक कथा साहित्य का भी सृजन किया है। एक साथ **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव, चंदन षष्ठी विधान'** ये आठ विधान संयुक्त रूप में प्रकाशित होने जा रहे हैं। इन विधानों में माताजी ने शंभु, गीता, नरेन्द्र, जोगीरासा, कुसुमलता, चौपाई, अवतार, सखी, काव्य, दोहा, सोरठा, अडिल्ल, रोला, धत्ता, त्रिभंगी आदि अनेक छंदों का सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है। मूल में **सोमसेनाचार्य व अभयनंदी आचार्य** ने प्राकृत व संस्कृत भाषा में सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है व हिन्दी में **रईधु कवि** के दोनों विधान है। उन्हीं को आधार बनाकर वर्तमान भाषा शैली में नये ढंग से सरल छन्दों में, सुलझे सरस शब्दों में माताजी ने बहुत ही सुन्दर रचना की है।

विधान लेखन के क्षेत्र में माताजी का रचना धर्म अत्यन्त सराहनीय, प्रशंसनीय है। इसके साथ माताजी ने एकीभाव व णमोकार विधान आदि अनेकों की भी रचना की है, जो प्रकाशित हो गये हैं।

आपकी यह लेखनी अनवरत चलती रहे एवं यही श्रुत साधना, केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने, यही उनके लिए आशीर्वाद है।

ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक व पूजक सभी को शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनन्दी

जैनधर्म में भावना का महत्त्व

पाषाण से भगवान बना देती है भावना।
साधक को सिद्ध बना देती है साधना।।
पूजक से पूज्य बना देती है आराधना।
तथा पतित से पावन बनाते हैं 10 धर्म और 16 भावना।।

भावना शब्द का प्रयोग जैनागम में कई स्थान पर आता है। जैसे-बारह भावना, मेरी भावना, वैराग्य भावना, षोडशकारण भावना इत्यादि। भावना अर्थात् जीव के परिणाम, पुनः-पुनः चिंतन अथवा शुभ विचार। जगत के सम्पूर्ण प्राणी सुख की इच्छा करते हैं तथा दुःख से भयभीत रहते हैं। वह सुख भी दो प्रकार का है- एक इन्द्रिय सुख और दूसरा आत्मिक सुख। वह आत्मोत्थ सुख पर-पदार्थों से एवं पुण्योदय के बिना प्राप्त नहीं होता है बल्कि उससे भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। अर्थात् आत्मिक सुख बाह्य पदार्थों से प्राप्त नहीं होता है बल्कि पर पदार्थों के त्याग से एवं अपने आत्मस्वरूप के चिंतन से प्राप्त होता है तथा उनमें भी षोडशकारण भावनाओं के चिंतन से सर्वोत्तम पुण्य के फलस्वरूप तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है। संसार अवस्था में सर्वश्रेष्ठ पुण्यफल तीर्थंकर पद है। तीर्थंकरों की पूजा तीनों लोक के सभी इन्द्रगण करते हैं। सिद्धपद प्राप्त करना सहज साध्य है; परन्तु तीर्थंकर पद की प्राप्ति अतिशय रूप से दुर्लभातिदुर्लभ है। क्योंकि एक दुखमा-सुखमा काल में (अर्थात् चतुर्थ काल में) असंख्यात जीव मोक्ष तो जा सकते हैं परन्तु तीर्थंकर तो नियम से 24 ही होते हैं अधिक नहीं। तीर्थंकर पद प्राप्ति के लिए संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, कर्मभूमिज, सम्यग्दृष्टि मनुष्य होना आवश्यक है। इतना ही नहीं उस सम्यग्दृष्टि मनुष्य को केवली श्रुतकेवली के पादमूल में ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है। इनमें से एक भी कारण न हो तो वह असंभव है। इतना ही नहीं यह सब कुछ प्राप्त हो जाने पर भी अगर षोडशकारण भावनाओं का पुनः-पुनः चिंतन नहीं किया जाये तो भी इन सब बाह्य सामग्री से कोई लाभ नहीं है। संक्षेप में इस तीर्थंकर पद की प्राप्ति का लाभ होना लाटरी के टिकिट के समान है। अर्थात् लॉटरी के लाखों, करोड़ों टिकिट खपते हैं परन्तु पुरस्कार सभी को नहीं मिलता है; किसी एकाध भाग्यवान को ही मिलता है वैसे ही यह षोडशकारण भावना भी तीर्थंकर पद की प्राप्ति के लिये लॉटरी के टिकिट के समान है।

यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस वर्तमान पंचमकाल में प्रत्यक्ष रूप से केवली श्रुतकेवलियों का सान्निध्य तो है ही नहीं तो फिर तीर्थंकर प्रकृति का बंध कैसे होगा ? और आगम का नियम है कि केवली श्रुतकेवली के पादमूल में ही इसका बंध होता है। केवली के पादमूल ही नहीं तो षोडशकारण भावना का चिंतन भी व्यर्थ है, क्या लाभ ? क्यों भावना भाना चाहिए ? इसका उत्तर है कि उत्तम भूमि में उत्तम बीज उचित समय पर बोने से अच्छी फसल आती है, ऐसा सारा

संसार जानता है। हमारे पास कर्मभूमि रूपी उत्तम भूमि है, मानव जीवनरूपी उत्तम खेत है, अणुव्रत महाव्रत धारण करने योग्य उत्तम समय भी है, सम्यक्त्वरूपी उत्तम बीज भी बोया है, षोडशकारण भावना रूपी उत्तम जल भी सींचा है। परन्तु बीज बोते ही फसल नहीं आती है, कालांतर से आती है, उसी प्रकार हमारे पास सब कुछ होने पर भी केवली श्रुतकेवली के सान्निध्यरूपी कालांतर के इंतजार की आवश्यकता है। जैसे बीज बोने के बाद जब तक फल नहीं आता है तब तक उस वृक्ष की रक्षा की आवश्यकता है, उसी प्रकार इस दुर्लभातिदुर्लभ मानव पर्यायरूपी वृक्ष की रक्षा की हमें अत्यन्त आवश्यकता है। किसी हिन्दी कवि ने भी कहा है कि 'जो बालपन से करोगे साधन तो काललब्धि को पाओगे तुम' जिस प्रकार सुवर्ण पाषाण से सुवर्ण की उपलब्धि के लिए उसे योग्य उपादान उक्तियों के द्वारा सोलह बार अग्नि में तपाना पड़ता है तब कही शुद्ध 100% सुवर्ण की प्राप्ति होती है। तो क्या 1 से 15 बार का तपाने का पुरुषार्थ व्यर्थ हो जायेगा ? नहीं। 1 से 15 बार में हर समय तपन के विशुद्धि बढ़ती जा रही थी, विशुद्धि बढ़ते–बढ़ते 16वें बार में पूर्ण रूप से विशुद्धि होने से शुद्ध सुवर्ण तत्त्व की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार हमारे आत्मा के ऊपर भी परिणामों के विशुद्धि के लिये पुनः–पुनः उच्च विचारों के संस्कार किये जाना अत्यन्त आवश्यक है। इस काल में केवली श्रुतकेवलियों के न रहने पर भी उनकी प्राप्ति होने तक पुरुषार्थ जारी रखना चाहिए। क्योंकि कहा है–''आज का पुरुषार्थ ही कल का भाग्य बनता है।''

इसी प्रकार धर्म ही समाज, देश, राष्ट्र व विश्व का आधार है। आचार्यों ने कहा है **'वत्थु सहावो धम्मो'** अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही धर्म है। अपने सही रूप को प्राप्त करने के लिए ही उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म जैनदर्शन में रखे गये हैं। इन दस धर्मों के पालन करने पर ही आत्मा परमात्मा पद को प्राप्त होता है।

सोलहकारण पर्व एवं दशलक्षण पर्व वर्ष में 3 बार आते हैं। वर्तमान युग में मानव यंत्र चालित होता जा रहा है, उसके पास समय की अल्पता होती है, हमारी कब से भावना थी कि ऐसी विधान की पुस्तक बने जिसमें श्रावक पर्व के दिनों में अल्प समय में अनुष्ठान/विधान करके पुण्यार्जन कर सके। बड़ौत वर्षायोग–2011 में हमने **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** के सामने भावना रखी थी। माताजी ने हमारी बात को एक बार में ही स्वीकार करते हुए पूज्य **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** के आशीर्वाद से व सरस्वती की कृपा से अपने अथक परिश्रम द्वारा स्व–पर हितार्थ अपूर्व पुण्य बंध का कारण भूत एवं श्रावक तथा मुनिधर्म की सार्थकता के लिये **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर एवं रविव्रत विधान'** की रचना की है।

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को इस पुरुषार्थ से स्त्रीलिंग का छेदन हो और वे शीघ्र ही कर्मनाश कर मोक्षश्री प्राप्त करें, यही हमारा शुभाशीर्वाद है। साथ ही पुस्तक के द्रव्यदाता परिवार को भी आशीर्वाद।

–मुनि महिमासागर (शिष्य आचार्य वरदत्तसागरजी)

धर्मं कर्म निवर्हणम्

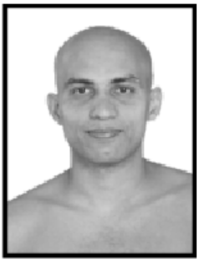

अनेकांत का प्रतिपादन करने वाले जैन दर्शन में 16 कारण भावनाओं व 10 धर्मों का विशेष महत्त्व है। 16 कारण भावनाएँ वे विशेष भावनाएँ हैं जो जीव को नर से परमेश्वर, कंकर से तीर्थंकर जैसी विशेष एवं महान् पुण्यशाली विभूति बना देती है। इसी प्रकार वस्तु का स्वभाव धर्म है। उत्तम क्षमा, मार्दव आदि 10 प्रकार के धर्म बताये हैं। तार्किक चूड़ामणि **श्री समन्तभद्र आचार्य** ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा है–

देशयामि समीचीनं, धर्मं कर्म निवर्हणम्।
संसार दुःखतः सत्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे॥2॥

जो संसार के दुःखी प्राणियों को संसार के दुःख से उठाकर उत्तम सुख में धरता है। अर्थात् मोक्ष दिला देता है वही धर्म है। ये उत्तम क्षमादि धर्म भी पालन करने वाले संसारी प्राणियों को उत्तम सुख दिला देते हैं।

सोलहकारण एवं दशलक्षण पर्व के दिनों में भव्य श्रावक विशेष रुचिपूर्वक व्रत–उपवास आदि के साथ 16 कारण एवं दशलक्षण विधान पूजन करते हैं।

मधुर कंठ की धनी **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपने काव्य कौशल का सदुपयोग करते हुये अपनी लेखनी द्वारा स्व–पर कल्याण की भावना से इस कृति का सृजन किया है। सभी धर्मात्मा श्रद्धालु भव्य जन इस विधान के माध्यम से जिनाराधना करके सातिशय पुण्यार्जन करें।

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी इसी प्रकार नित नयी रचनाओं का सृजन करें व अपने वात्सल्यमयी आचरण से तीर्थंकर जैसी विभूति व गुणों को प्राप्त करें, यही हमारी शुभकामना एवं शुभाशीर्वाद है।

साथ ही इस ग्रंथ के द्रव्यदाता, मुद्रक आदि सभी को आशीर्वाद..

–मुनि सुयशगुप्त

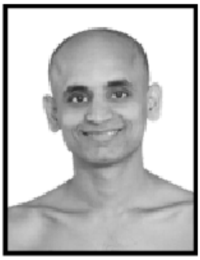

भादो भी होगा भक्ति का सावन

जिनबिम्बं जिनागारं जिनपूजां जिनस्तुतिं।
यः करोति जनस्तस्य न किंचिद् दुर्लभं भवेत्॥

जिस ग्रंथ को जैन रामायण के नाम से जाना जाता है। ऐसे **पद्मपुराण** नामक महाग्रंथ में **आचार्य श्री रविषेणजी** कहते हैं कि जो मनुष्य जिनबिम्ब (जिन प्रतिमा) जिनालय बनवाता है एवं जिनपूजा और जिनस्तुति करता है, उसे संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं होती है एवं जिनपूजा के रूप में ही यह **दशलक्षण एवं सोलहकारण विधान** भी इसी श्लोक की सार्थकता का स्वरूप है, क्योंकि जैन संस्कृति में चाहे व्रत के रूप में, चाहे पूजा के रूप में, चाहे विधान के रूप में, चाहे मुनि धर्म के रूप में, चाहे श्रावक धर्म के रूप में अथवा तीर्थंकर पद–दाता साधन के रूप में प्रत्येक रूप में दशलक्षण एवं सोलहकारण पर्व सर्वलोकमान्य हैं।

हमारे **दीक्षागुरु आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** के आशीर्वाद एवं **मुनि श्री महिमासागरजी** की पावन प्रेरणा से **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री माताजी** ने इन सभी विधानों को बहुत ही सुन्दर काव्य–शैली से रचना के साँचे में संजोया है।

माताजी को बचपन से ही पूजा भक्ति रचना एवं गान कला के संस्कार हैं एवं **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** के पावन सान्निध्य एवं **गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** की छत्रछाँव ने उनकी इस कला को और भी निखारा है एवं मुझे तो जब मैं 14 साल का था तब से ही माताजी की इस प्रतिभा को जानने का अवसर मिला है। मुनि श्री महिमासागरजी को व्रत एवं उपवास के प्रति एक अनूठी रुचि एवं शक्ति है एवं उनकी प्रेरणा से माताजी ने इस विधान की जो रचना की है, सचमुच में ही ये रचना प्रत्येक जिनधर्मी के लिए धर्म एवं सौख्य वृद्धि का कारण बनेगी। माताजी की ये रचना भादो के मास को भी भक्ति का सावन बनने पर मजबूर करेगी एवं पर्यूषण पर्व में तो चार चाँद लगायेगी इसमें कुछ संशय ही नहीं है।

जिनागम सम्मत इस कृति के माध्यम से माताजी ने निश्चित ही अपने सम्यक्त्व को वर्धमान रूप दिया है। अतः इस विधान की रचना के फलस्वरूप वे इसी भव में स्त्रीलिंग का छेद कर अपनी साधना का शिखर प्राप्त करें तथा उनकी इस कवित्व शक्ति में वृद्धि हो एवं वे अपनी लेखनी के माध्यम से इसी प्रकार जिनशासन की प्रभावना करें। यही मेरी शुभकामना है।

–मुनि चन्द्रगुप्त

''स्व कथ्यम''

जैनागम में साध्य, साधक और साधना, भक्ति, भक्त और भगवान, आराध्य, आराधक और आराधना का विशेष वर्णन है। साध्य को प्राप्त करने की साधना में साधक अपने आराध्य से प्रभु से साध्य से उपास्य से प्रीत करता है, उनसे जुड़ना चाहता है। वह तर्क, वितर्क, ऊहा-पोह में पड़ना नहीं चाहता। वह सिर्फ अपने इष्ट की प्रार्थना, भक्ति, पूजा करके उनसे अपना परिचय बढ़ाता है। उनके गुण गाता है, गुनगुनाता है, कुछ चढ़ाता है, कुछ माँगता है, कुछ सजाता है, नृत्य रचाता है, संगीत बजाता है और प्रभु को अपने पास बुलाने का उपक्रम जुटाकर वह आनंद के क्षण पाना चाहता है। शांति की सरिता में अवगाहन करता है। सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत पाता है। विचारों को परिशुद्ध बनाता है और अनादिकालीन कर्मों से कलंकित आत्मरूपी मैली चदरिया को उजली बनाता है। श्रद्धा, आस्था की अविरल धारा से हृदय की कलुषता को धोते-धोते सातिशय पुण्य की गागर भरता है और फिर वह सोलहकारण भावना भाता है। विधिवत् उपासना से तीर्थंकर प्रकृति का बंध करके संसार का सर्वोत्तम पद, सर्वोत्तम सुख प्राप्त कर भव-बन्धन से मुक्ति पाता है। दशलक्षण धर्म भी भरत व ऐरावत क्षेत्रों में पर्यूषण पर्व की शृंखला में उत्सवपूर्वक मनाया जाता है जिसमें साधक, भक्त, उपवास, विधान, यात्रा, रथ आदि कई प्रकार से मनाते हैं। दश धर्म आचार्यों के मूलगुणों में भी आते हैं, अतः दश धर्म भी साध्य प्राप्ति में सहायक बनते हैं। इसी शृंखला में **'गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी'** ने दशलक्षण व सोलहकारण आदि अनेकों विधान लिखे हैं, यह उनका पुरुषार्थ उनकी आत्मा को पवित्र बनाये व विधानकर्त्ता भी इन कृतियों से पुण्य प्राप्त करें।

यही शुभ भावना व कामना सहित-

-गणिनी आर्यिका क्षमाश्री

तीर्थंकर पद की हेतू सोलहकारण भावना

दोहा–जिनवाणी जिनधर्म के, शाश्वत है ये धर्म।
सोलहकारण भाव से, नाशे सारे कर्म।।

जैनधर्म कितना सूक्ष्म है जिसमें हर एक वस्तु का वर्णन आचार्यों ने सोच विचार कर किया है। जीव कैसा कर्म करता है तो उसका उसे क्या फल मिलता है। यह जानकारी आगम में मिलती है। पाप करने की भी सजा मिलती है तो पुण्य करने वाले को वरदान, चाहे व्यक्ति छुपकर ही पाप क्यों न करे परन्तु कर्म उसे नहीं छोड़ते। पाप भी व्यक्ति छुपकर करता है तो विशेष पुण्य भी अकेले में परमात्मा का चिंतवन करके संचय करता है। कोई कहते हैं कि पुण्य मत करो, पुण्य करने से स्वर्ग की प्राप्ति होगी। पुण्य हेय है, पुण्य सोने की बेड़ी, तो पाप लोहे की बेड़ी है। यदि हम विचार करें तो कोई भी व्यक्ति 24 घंटे पाप नहीं करेगा और ना ही पुण्य करेगा। पुण्य–पाप उसके भावों पर आधारित है; क्योंकि जीव के तीन उपयोग होते हैं। शुभ, अशुभ, शुद्ध, जीव अशुभ उपयोग में अधिक समय रहता है। शुभ में थोड़े समय और शुद्धोपयोग को पाने के लिये शुभ उपयोग ही कारण बनता है। जब पुण्य का कार्य होता है तब यह जीव दान, पूजा आदि शुभ उपयोग में थोड़ी देर के लिये मन स्थिर कर पाता है। क्योंकि मन बड़ा चंचल है, उसको वश में करना बड़ा मुश्किल है। जो अपने मन को प्रभु की भक्ति में लगा लेता है वही पुण्य का बंध कर पाता है। इसलिये आचार्यों ने कहा है–पुण्य करने से चाहे स्वर्ग ही क्यों न मिले परन्तु वही पुण्य आगे अरहंत सिद्ध बना देता है।

कुंदकुंद आचार्य ने कहा है–**''पुण्ण फला अरहंता''**।

पुण्य का उत्कृष्ट फल है अरहंत पद मिलना, उसमें भी तीर्थंकर पद सातिशय पुण्य प्रकृति है।

ऐसे सातिशय पुण्य का कौन संचय करते हैं ? जो पूर्व पर्याय में इन 16 कारण भावनाओं को भाते हैं, चिंतवन करते हैं। जितने भी व्रत विधि से करते हैं तो उनका फल अरहंत सिद्ध पद की प्राप्ति में कारण हो सकता है। दशलक्षण, पंचमेरु आदि व्रत का चिंतवन करने से तीर्थंकर पद नहीं मिलता, सिद्ध तो बन

सकते हैं परन्तु सोलहकारण भावना ही ऐसा व्रत है जिसका चिंतवन करने से, भाने से तीर्थंकर जैसे सर्वोत्कृष्ट पद की प्राप्ति होती है। केवली, श्रुतकेवली के पादमूल में बैठकर भव्य जीव तीर्थंकर प्रकृति का बंध करते हैं। 11 अंग 14 पूर्व के पाठी बनते हैं। उनके मन में प्राणीमात्र के प्रति करुणा, दया, वात्सल्य के भाव तीव्र रूप में उमड़ते हैं। कल्याण के भाव आते हैं। तीर्थंकर बनने वाले मुनिराज चिंतवन करते हैं। वे भावना भाते हैं कि मैं कैसे प्राणीमात्र का कल्याण करूँ, उद्धार करूँ, उन्हें सुख-शांति का मार्ग दिखाऊँ। ऐसी भावना सोलहकारण भाने वाले किसी विरले भव्यात्मा महापुरुषों की होती है। इन्हीं भावना से तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है। इसलिये भगवान के पाँचों कल्याणक के नाम के पीछे 'कल्याण' शब्द लगा है। कल्याणक का बड़ा महत्त्व है। सोलहकारण भावना चिंतवन करने वाले ही पंचकल्याणक को प्राप्त कर सकते हैं।

ये सोलहकारण व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है। इन सोलहकारण भावना का व्रत कभी भी कोई भी व्यक्ति व्रत कर सकता है। चार कन्याओं ने सोलहकारण व्रत किया और व्रत के कारण चारों कन्याओं ने उत्तम सुख को प्राप्त किया।

चारों ने स्त्री पर्याय को छेदकर मनुष्य बनकर मुनिव्रत धारण किया और एक कन्या के जीव ने सीमन्धर तीर्थंकर का पद प्राप्त किया।

आगम में बताया है- **एक-एक भावना को भाकर भी जीव तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर सकते हैं।** ऐसा हरिवंश पुराण में (पृष्ठ संख्या 446, गाथा नं. 149) जिनसेन आचार्य ने कहा है-

तीर्थंकर नाम कर्मणि षोड़श तत्कारणान्यमून्यनिशम्।
व्यस्तानि समस्तानि च भवन्ति सद्भाव्य मानानि॥149॥

अर्थ-सत्पुरुषों के द्वारा निरन्तर चिंतवन की हुई उक्त सोलह भावनाएँ पृथक्-पृथक् अथवा समुदाय रूप से तीर्थंकर नामकर्म के बंध की कारण हैं।

यह व्रत दिनकर की तरह हमारे जीवन में रोशनी फैलाये अंधकार को दूर करे, ज्ञान की किरण प्रस्फुटित करे, फूलों की तरह महकाने में कारण बने। यह सोलहकारण भावना व सोलहकारण व्रत तीर्थंकर जैसी महापदवी दिलाती है। ऐसे भूत, वर्तमान और भविष्यकाल के सभी तीर्थंकर भगवंतों को बारम्बार

नमन, वंदन। क्योंकि इनके पादमूल में बैठकर व केवली श्रुतकेवली की शरण में यह तीर्थंकर प्रकृति बंधती है। संसार में, तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ पद तीर्थंकर भगवान का है इसलिये अरहंत सिद्ध तो अनंतानंत बन जाते हैं परन्तु हर काल में तीर्थंकर 24 ही होते हैं। ऐसी तीर्थंकर प्रकृति में कारण है, सोलहकारण भावना उन भावना को भाव भक्ति, श्रद्धापूर्वक बारम्बार नमन..

यह विधान संस्कृत में **'अभयनंदि आचार्य'** के द्वारा लिखा गया है। हिन्दी में रईधु कवि ने इसकी रचना की है। इसी विधान में जो भावनाओं के भेद रूप अर्घ बनाये हैं, वो भेद ही मंत्ररूप में लिखे हैं। अभयनंदि आचार्य को भी त्रय भक्तिपूर्वक नमोस्तु।

चौबीस तीर्थंकर भगवान को नमोस्तु। देवाधिदेव शांतिनाथ भगवान को नमोस्तु, गणधर भगवान को नमोस्तु। **दीक्षादाता गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** त्रयभक्तिपूर्वक नमोस्तु। **शिक्षादाता वैज्ञानिक आचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव** को नमोस्तु।

इन दोनों विधानों का संपादन करने वाले **कविहृदय प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** को त्रय भक्तिपूर्वक कोटि–कोटि नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु। आचार्यश्री ने बहुत सुन्दर ढंग से इन दोनों विधानों का संपादन किया है। आचार्यश्री के लिये लिखने को मेरे पास शब्द नहीं और बोलने के लिये वाक्य नहीं। उनकी महानता हर दस धर्म में हर सोलह भावना में झलक रही है। उनको जो छंद संबंधी ज्ञान है वह बड़ा अनूठा है, अलौकिक है। एक भी मात्रा कम ज्यादा होने पर वे उसको तुरन्त ही सुधारते हैं। छंद पढ़ते ही पता लगा लेते हैं कि मात्रा अधिक है या कम है। यही कवि की सबसे बड़ी विशेषता है। यह विशेषता आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव के अंदर कूट–कूट कर भरी है। अपने कविहृदय विशेषण को गुरुदेव ने सार्थक कर दिया। ऐसे गुरुवर को बारम्बार नमोस्तु, नमोस्तु..। मेरा बड़ा सौभाग्य है जो उनकी छत्र छाया में यह विधान **मुनिश्री महिमासागरजी** की प्रेरणा व गुरुदेव के आशीर्वाद से लिखने का शुभ अवसर मिला।

इस सोलहकारण विधान का प्रारम्भ वीर निर्वाण संवत् 2537, विक्रम संवत् 2068 भाद्रपद कृष्णा तीज मंगलवार, दिनांक 16–8–2011 को बड़ौत

में हुआ तथा इसी वर्षायोग में कार्तिक कृष्णा दशमी शनिवार, दिनांक 5-11-2011 को यह विधान सम्पूर्ण हुआ। गुरु कृपा से मात्र 39 दिन में इस विधान की रचना पूर्ण हो गयी।

मुझे धर्म के मार्ग में लगाने वाली परम पूज्य **आर्यिका विशालमति माताजी** को भी बारम्बार वंदामि करती हूँ। उनके आशीर्वाद से ही यहाँ तक पहुँची हूँ। हमेशा उनका आशीष मिलता रहे, यही कामना करती हूँ।

दशलक्षण व्रत, कब, क्यों, कैसे ?

दोहा- दशलक्षण जिन धर्म की, महिमा अपरम्पार।
ऐसे शाश्वत धर्म को, वंदन बारम्बार॥
आदि शांति जिन पार्श्व को, सदा नमाऊँ माथ।
जिनवाणी गण ईश को, जोडू दोनों हाथ॥

हमारे आचार्यों ने अनेक पर्व बताये हैं। कोई धार्मिक पर्व है, कोई शाश्वत पर्व है, कोई राष्ट्रीय पर्व है, कोई सामाजिक पर्व है। हर पर्व कुछ न कुछ संदेश लाता है, कुछ सिखाता है। उत्साह व आनंद का वातावरण बनाता है। पर्व मनुष्य को आपस में जोड़ते हैं, आनंद का अनुभव कराते हैं। त्याग, शांति का उपदेश देते हैं। कुछ पर्व कर्मों से मुक्त होने का मार्ग दिखाते हैं। वे पर्व हैं। शाश्वत दशलक्षण पर्व, सोलहकारण पर्व, नंदीश्वर पर्व, अष्टाह्निका पर्व आदि। ये सभी पर्व वर्ष में तीन बार आते हैं। मन में भक्ति का नया जोश भर जाते हैं। हमारे धर्म में वैसे तो सभी पर्वों का अपना-अपना महत्त्व है फिर भी सबसे अधिक भाद्रमास में आने वाले दशलक्षण पर्व को सभी लोग श्रद्धा भक्ति के साथ मनाते हैं। पूजा, पाठ, व्रत, उपवास आदि करके आत्मिक शांति का आनंद प्राप्त करते हैं।

12 महीनों में सर्वश्रेष्ठ महीना भाद्रमास माना जाता है। भाद्रमास शब्द ही भद्रता को दर्शाता है। भद्र बनाता है, सरल बनाता है, पापों से छुड़ाता है। लोग व्यापार आदि को बंद करके तीर्थों पे जाकर साधु-संतों के सान्निध्य में दशलक्षण पर्व को विशेष रूप से मनाते हैं। गुरुवाणी में दशलक्षण पर्व किस प्रकार प्रारम्भ होता है वह सब सुना है। वैसे यह शाश्वत पर्व है जब षट्काल परिवर्तन होते हैं तब सृष्टि बदलती है। छठे काल का अंत हो जाता है तब यहाँ पर सात-सात दिन तक कुवृष्टियाँ होती है जो सृष्टि को समाप्त कर देती है, नष्ट कर देती है। सात दिन तक

अग्नि की वर्षा, सात दिन तक शीतल जल की वर्षा, सात दिन तक खारे पानी की वर्षा, सात दिन तक धुए की वर्षा, सात दिन तक धूलि की वर्षा, सात दिन तक विष की वर्षा, सात दिन तक धूम की वर्षा; इस प्रकार उनचास दिन तक ऐसी कुवृष्टि होगी। काल गणना के अनुसार छठे काल का अंत हमेशा आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को होता है। नये युग का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा (एकम्) को होता है। कुवृष्टियाँ ज्येष्ठ कृष्णा 11 से आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा तक होती है। यहाँ अवसर्पिणी काल समाप्त हो जायेगा। फिर उत्सर्पिणी काल प्रारम्भ होगा इसमें सात-सात दिन तक सुवृष्टि होगी। सुवृष्टि श्रावण कृष्णा एकम से भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी तक होती है। सात-सात दिन तक सुवृष्टि होती है वह इस प्रकार की है-

सात दिन तक क्षीर की वर्षा सात दिन तक अच्छे मीठे जल की वर्षा, सात दिन तक अमृत की वर्षा, सात दिन तक रस की वर्षा, सात दिन तक दिव्य रस की वर्षा, सात दिन तक शीतल गंध की वर्षा, सात दिन तक पुष्कर मेघ की वर्षा होगी जिससे पृथ्वी शांत, शीतल, उर्वरा, उपजाऊँ हो जायेगी।

जब यहाँ पर कुवृष्टि प्रारम्भ होती है तब उससे पूर्व विद्याधर देवगण आदि 72 (बहत्तर) जोड़ों को गंगा-सिंधु नदियों की वेदी में विजयार्ध पर्वत की गुफाओं में सुरक्षित रखेंगे। विद्याधर मनुष्यों को और कुछ तिर्यंचों को सुरक्षित छिपा देते हैं। जब यहाँ सुवृष्टि हो जाती है तब उन सबको भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को लाते हैं और वे मनुष्य उस दिन धर्म से पुनः अपने जीवन की शुरूवात करते हैं। धर्म से स्रष्टि का श्री गणेश करते हैं। 10 दिन तक भगवान की विशेष आराधना, साधना करते हैं। व्रत, उपवास करते हैं। तप, त्याग, संयम से जीवन प्रारम्भ करते हैं।

यह दशलक्षण पर्व वर्ष में तीन बार आता है। भाद्रमास में, माघमास में और चैत्रमास में इसका महत्त्व जानकर पूजा-अर्चा करनी चाहिये। जिसने भी श्रद्धा-भक्ति से व्रत को पालन किया है उसने निश्चित रूप से कर्मों का क्षय करके परम सिद्धपद को प्राप्त किया है। दशलक्षण व्रत को चार राजकुमारियों ने धारण किया था। मुनिराज के मुखारविंद से इसका महत्त्व जानकर उन्होंने 10 वर्ष तक 10 दिन के निर्जल उपवास किये, भक्तिभाव से व्रत का पालन किया। इस व्रत के प्रभाव से उन्होंने स्त्रीपर्याय का छेदनकर लिया और देव बनी। वहाँ से च्युत होकर राजकुमार बनकर मुनिपद को धारण किया और कर्म काटकर सिद्धपद को प्राप्त कर लिया।

पंचमेरु की विशेषता

दोहा– पाँचों मेरु जगत में, सर्व शैल की शान।
यहाँ न्हवन जिनका हुआ, बनते वो भगवान।।

पंचमेरु पे विराजित सर्व भगवंतों के चरणों में कोटि–कोटि नमन्।

आचार्यों ने पंचमेरु की विशेषता अनेक ग्रंथों में गाई है। तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, हरिवंशपुराण आदि ग्रन्थों में बड़े विस्तार से इसका वर्णन पढ़ने को मिलता है। इनका उल्लेख चारों अनुयोगों में आता है, क्योंकि इनके ऊपर श्री बाल तीर्थंकर का प्रथम जन्माभिषेक होता है। भगवान के अभिषेक के कारण ही इनकी इतनी विशेषता व अतिशय बढ़ जाता है।

भगवान का जन्मोत्सव पहले मेरु पे मनाया जाता है फिर जन्म नगर में। वैसे तो संसार में बहुत सारे पर्वत हैं परन्तु इन पंचमेरु जैसे पर्वत और नहीं हैं। जिनके पंचकल्याणक होते हैं। उनका मेरु पे न्हवन होता है, जो सोलहकारण भावना भाता है उनका मेरु पे 1008 कलशों से महाभिषेक होता है। पंचमगति को प्राप्त करने वाले बाल जिनेश्वर की स्तुति सौधर्म इन्द्र यही मेरु पे करता है।

इस ढ़ाई द्वीप में पाँच मेरु है। उसमें जम्बूद्वीप के बीचोंबीच 'सुमेरु पर्वत' है। इस सुमेरु पर्वत के 'हरिवंश पुराण' में अनेक नाम आये हैं। वज्रमूक, सवैडूर्यचूलिक, मणिचित विचित्राश्चर्यकीर्ण, स्वर्णमध्य, सुरालय, मेरु, सुमेरु, महामेरु, सुदर्शन, मन्दर, शैलराज, वसन्त, प्रियदर्शन, रत्नोच्चय, दिशामादि, लोकनाभि, मनोरम, लोकमध्य, दिशाम्न्त्य, दिशामुत्तर, सूर्याचरण, सूर्यावर्त, स्वयंप्रभ और सुरगिरि इस प्रकार आचार्यों ने अनेक नामों के द्वारा सुमेरु पर्वत का वर्णन किया है।

जिनसेन आचार्य ने हरिवंश पुराण में पाँचों मेरु का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। लंबाई चौड़ाई, ध्वजायें, जिनालय आदि वहाँ पर जो कुछ भी है वह सब बड़े विस्तार से बताया है। विशेष जानकारी के लिये हरिवंशपुराण पढ़ें।

सुमेरु पर्वत 1 लाख 40 योजन ऊँचा है, इसकी नींव 10 हजार योजन जमीन में है। 40 योजन की चूलिका होती है। इस पे चार वन हैं। जो एक से बढ़कर एक सुन्दर रमणीय नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित है। इसके चारों वनों में चार–चार चैत्यालय हैं, इस प्रकार कुल 16 चैत्यालय होते हैं।

पहला वन भद्रसाल है, दूसरा नंदन वन है, तीसरा सौमनस वन है, चौथा पाण्डुक वन है। इसी पाण्डुक वन की चार दिशा को छोड़कर चारों विदिशा में चार शिलायें बनी हुई हैं। इन्हीं पे भगवान त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर का जन्माभिषेक होता है। इस सुमेरु पर्वत का रंग मूल में 'वज्रमय' जैसा है, मध्य में 'रत्नमय' और ऊपर 'सुवर्णमय' एवं चूलिका नीलमणि की है।

इसी प्रकार सुमेरु पर्वत के समान ही चारों मेरु हैं। दो मेरु धातकी खण्ड द्वीप में हैं और दो मेरु पुष्करवर द्वीप में हैं। इन चारों मेरु की ऊँचाई सुमेरु पर्वत से कम है। इनमें भी चार वन 16-16 चैत्यालय है। पाँचों मेरु के कुल 80 चैत्यालय हैं। इनके वनों के नाम व जो अकृत्रिम वस्तुयें हैं जैसे वक्षारगिरि, गजदंत पर्वत, विजयार्ध पर्वत, कुलाचल आदि सब समान नाम वाले हैं। वर्ण भी चारों मेरु का सुमेरु पर्वत के समान ही है। इन चारों मेरुओं की शिला पे भी बाल तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है। चारों मेरु की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई एक समान है। सुमेरु पर्वत इन सबसे बड़ा है। ये सभी मेरु व मेरु पे बने सभी चैत्यालय शाश्वत हैं, अनादिनिधन हैं। इनको किसी ने बनाया नहीं, इन्हें कोई मिटा नहीं सकता।

ढाई द्वीप के मेरु आदि चैत्य चैत्यालय अकृत्रिम हैं। हमेशा एक जैसे रहने वाले हैं। इन मेरुओं की जितनी प्रतिमायें हैं। वो सब 8 प्रातिहार्य से युक्त हैं, मंगल द्रव्यों से पूज्य इन प्रतिमाओं पर 64 चँवर दिन-रात ढुरते रहते हैं। 108-108 प्रतिमायें 500 धनुष की यहाँ पर होती है। नाना रत्नों की ये प्रतिमायें भव्यात्माओं का कल्याण करने वाली है। हर जिनालय में 108, 108 ध्वजायें फहराती है। भगवान के आजू-बाजू सर्वाण्ह यक्ष, सनत्कुमार यक्ष चँवर ढुराते हैं। श्रीदेवी और श्रुतदेवी हर जिनालय में हैं। इस प्रकार प्रत्येक जिन प्रतिमा के पास दो यक्ष व दो देवियाँ विराजित हैं। ऐसे सुन्दर-सुन्दर बड़े स्तूप से युक्त शिखरबद्ध मंदिरों की पूजा वंदना करने चतुर्णिकाय के देव सदा जाते रहते हैं। विद्याधर आदि भी इनकी पूजा वंदना करते हैं।

भगवान का अभिषेक देखने ऋद्धिधारी मुनिराज भी मेरु पे जाते हैं, मेरु के चैत्यालयों की वंदना करते हैं। विद्या के बल से कर्मभूमि के मनुष्य भी पंचमेरु की वंदना, भक्ति, पूजा-पाठ करने जाते हैं। कोई-कोई देव या विद्याधर भी मनुष्य को मेरु पे ले जाते हैं। जैनाचार्यों ने जैनव्रत कथा में पंचमेरु की महिमा

को बताने वाला पुष्पाञ्जलि व्रत बताया है।

एक वर्ष में पंचमेरु की पूजा तीन बार की जाती है, यह 'पुष्पांजलि' व्रत के नाम से जाना जाता है। एक वर्ष में दशलक्षण पर्व तीन बार आता है, उसके साथ ही यह पुष्पांजलि व्रत भी तीन बार आता है। इसके उत्तम रूप में (5) निर्जल उपवास किये जाते हैं, 5 वर्ष तक यह व्रत होता है। एकाशन जघन्य रूप में है। अपनी सामर्थ्य शक्ति को देखते हुये भक्त श्रद्धा भक्ति से इस पंचमेरु के व्रत आदि करके परम्परा से मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

विशेषकर यह व्रत भाद्रपद शुक्ला पंचमी से नवमी तक किया जाता है, सब भक्त भादो महीने में व्रत उपवास अधिक करते हैं। भाद्रपद, माघ, चैत्र इस प्रकार एक वर्ष में यह व्रत तीन बार किया जाता है। इस व्रत को समझे जाने व भक्ति के साथ पालन करें।

नंदीश्वर द्वीप की महिमा

इस ढ़ाई द्वीप के अंदर दो समुद्र और ढ़ाई द्वीप हैं तथा इस मध्यलोक में असंख्यात द्वीप समुद्र हैं। सभी जगह जिन चैत्यालय नहीं है। वैसे मध्यलोक में अकृत्रिम चैत्यालय 458 बताये हैं। किसी द्वीप में अकृत्रिम चैत्यालय हैं और किसी द्वीप में नहीं है। किसी द्वीप में अधिक चैत्यालय हैं, किसी द्वीप में कम संख्या में है।

मध्यलोक के द्वीपों में सबसे अधिक पूजा-पाठ का महत्त्व नंदीश्वर द्वीप का है। इस नंदीश्वर द्वीप में भगवान की पूजा-अर्चा करने चारों निकाय के देव अष्टाह्निका पर्व के समय में आते हैं। वर्ष में तीन बार सौधर्म आदि इन्द्रगण अपने परिवार देवों के साथ वहाँ महापूजा करते हैं। वे चारों दिशाओं में पूजा करते हैं। अलग-अलग समय पर अलग-अलग देवगण पूजा करते हैं। 24 घंटे अखंड रूप से वहाँ पूजा होती है।

कार्तिक, फाल्गुन, आषाढ़ मास में अष्टाह्निका पर्व आता है। तीनों मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक अष्टाह्निका मनाई जाती है। आठ दिन की अष्टाह्निका होती है।

इस नंदीश्वर द्वीप में 52 चैत्यालय है। हर एक चैत्यालय में 108, 108 जिन प्रतिमायें होती हैं, नाना रत्नों की ये जिन प्रतिमायें 500 धनुष ऊँची होती

है। चारों दिशाओं में 13-13 चैत्यालय होते हैं और 13+13+13+13=52 चैत्यालय होते हैं।

एक-एक दिशा में एक अञ्जनगिरि, चार दधिमुख, आठ रतिकर होते हैं। इन्हीं के ऊपर 13 चैत्यालय होते हैं। चारों दिशाओं में एक-एक वापिका है, प्रत्येक दिशा में एक-एक वन है। इस प्रकार एक दिशा में एक अञ्जनगिरि की चार वापिकाओं सम्बन्धी 16 वन है। चारों दिशाओं के 64 वन है और प्रत्येक वन में एक-एक प्रासाद है।

देवगण-नाना प्रकार के फल, फूलों को लेकर अपने-अपने वाहन पर आरुढ़ होकर पूजा करने जाते हैं।

मनुष्य, विद्याधर और चारण ऋद्धिधारी मुनिराज ढ़ाई द्वीप से बाहर इस नंदीश्वर द्वीप में नहीं जा सकते हैं। इसलिये हम सभी यहीं से परोक्ष रूप में उस नंदीश्वर द्वीप के चैत्यालय की द्रव्य और भाव से महार्चना करते हैं। जिनालयों में इसलिये नंदीश्वर भगवान की चौमुखी प्रतिमा विराजमान की जाती है।

मुनिराज नंदीश्वर भक्ति पढ़ते हैं और श्रावकगण नंदीश्वर द्वीप की पूजा, विधान आदि करके पुण्य का संचय करते हैं।

यह नंदीश्वर विधान '**तिलोयपण्णत्ति**' के आधार से लिखा है। नंदीश्वर द्वीप के विषय में अधिक विस्तार से जानने के लिये 'तिलोयपण्णत्ति' का अध्ययन करें। ये 'तिलोयपण्णत्ति' यतिवृषाचार्य के द्वारा लिखा हुआ है। नंदीश्वर द्वीप का वर्णन 'तिलोयपण्णत्ति' के तीसरे भाग में है। वहाँ से पढ़ें और नंदीश्वर द्वीप की लम्बाई विस्तार आदि जाने।

वहाँ पे जो अञ्जनगिरि है वह इन्द्र नीलमणि के समान है। दधिमुख- दही के समान है। रतिकर- स्वर्ण के समान है।

सबसे अधिक पूजा इस नंदीश्वर द्वीप में होती है, एक बार ही नहीं। आचार्य कहते हैं कि वर्ष में तीन बार महार्चना होती है।

मैंने जब 'तिलोयपण्णत्ति' के तीसरे भाग में नंदीश्वर द्वीप की महिमा पढ़ी। उसमें देवों के द्वारा जो पूजा पढ़ी तो मेरे भाव विधान बनाने में लगे। पंचमेरु का विधान लिखा तब से नंदीश्वर विधान बनाने की इच्छा थी। जब हरिवंशपुराण का

स्वाध्याय किया उसमें भी नंदीश्वर द्वीप का वर्णन पढ़कर मन में बड़ा आनंद हुआ।

इस नंदीश्वर द्वीप का कितना महत्त्व है। 'तिलोयपण्णत्ति' में चतुर्णिकाय के देव अलग-अलग फूल, फलों को लेकर नंदीश्वर द्वीप में पूजा करने जाते हैं। बहुत ही सुन्दर वर्णन तीसरे भाग में दिया है। एक बार अवश्यमेव सब भक्त 'तिलोयपण्णत्ति' का स्वाध्याय करें। तीन लोक में कहाँ पर क्या बना है? कितनी संख्या में है, लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि सब कुछ जानने के लिये हमें अवश्य पढ़ना चाहिये।

इस विधान में 52 अर्घ है। 6 पूर्णार्घ है। इसका व्रत वर्ष में तीन बार उत्तम, मध्यम, जघन्य रूप से होता है। व्रत की विधि, व्रत की कथा पढ़कर समझे।

श्री नन्दीश्वर विधान अष्टाह्निका में आठ दिनों तक करना चाहिये। इसलिये ये चार पूजायें ही दो बार करना चाहिये।

जैन धर्म में व्रत का विशेष महत्त्व

दोहा- चिंतामणि श्री पार्श्व को, झुक-झुक करूँ प्रणाम।
संकटहर संकट हरो, जपूँ तुम्हारा नाम।।

जिन भक्ति का उपदेश हमारे आचार्यों ने दिया है। इसलिये जैनधर्म में अनेक व्रत, उपवास बताये हैं। हर व्रत की महिमा अपने आप में अनूठी है। समय-समय पर श्रावक-श्राविकाएँ व्रत, उपवास, एकाशन आदि गुरु से लेकर करते आ रहे हैं। और जब तक गुरु हैं तब तक इसी तरह व्रत, उपवास करते रहेंगे।

श्रावक ही नहीं बल्कि साधु भी इन व्रतों को श्रद्धा से करते आये हैं। छोटा व्रत हो या बड़े से बड़ा व्रत हो, जिसने भी जितनी श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक जो भी व्रत किया है उसे उसका फल मिला है। व्रत करने से जीवों को धन, वैभव, स्वर्गादिक सुख और अंत में व्रत के फलस्वरूप मोक्ष की प्राप्ति होती है। हम कोई भी व्रत की कथा जब पढ़ते हैं तो अनेक कथा के अंत में व्रत करने वाले को निर्वाण की प्राप्ति हुई है, ऐसा व्रत का फल कथा के अंत में आता है।

हर व्रत की विधि आचार्यों ने अलग-अलग बताई है। किसी में अल्प भोजन करना बताया है, किसी में एकाशन, किसी में उपवास क्योंकि तप, त्याग, नियम,

संयम जो लिया जाता है वह शक्ति के अनुसार लिया जाता है। जिसमें जितनी शक्ति हो वह उतना त्याग करे। बस जो भी व्रत, उपवास करें उस दिन क्रोध नहीं करे। समता में रहे, विषमता बिल्कुल भी नहीं आने दे, क्रोध करने पर सारा व्रत उपवास निष्फल हो जाता है। कोई कितना भी आपको परेशान करे परन्तु हम अपनी समता नहीं छोड़े। जितना हो सके व्रत के दिन अधिक समय धर्मध्यान में बिताये। मंत्रजाप, पूजा, पाठ, स्वाध्याय आदि में अपने मन को लगावें। घर परिवार से निवृत्त होकर गुरुओं के पास या जिनालय में बैठकर अपना समय निकालें। घर–परिवार से दूर रहने पर राग–द्वेष नहीं होगा।

राग–द्वेष ही जीव को कर्मों का बंध कराता है। जितना–जितना हमारा राग–द्वेष–मोह कम होगा उतना ही, कर्मों का बंध कम होगा।

जब भी हमें व्रत लेना हो तो गुरु से व्रत लेना चाहिये। कभी भी व्रत लेकर छोड़ना नहीं चाहिये। व्रत खंडित हो जाये, टूट जाये तो पुनः गुरु से प्रायश्चित्त ले लेना चाहिये।

फिर से व्रत का अखंड रूप से पालन करना चाहिये। व्रत लेकर जो व्रत को छोड़ देता है वह महान् दुःखों का पात्र बनता है।

यह रविव्रत भी एक सेठानी ने लिया और परिवार के लोगों के द्वारा व्रत की निन्दा करने से उसने व्रत को छोड़ दिया। वे व्रत को तोड़ने के कारण दर–दर के भिखारी बन गये। कुछ वर्ष के बाद पुनः व्रत ग्रहण किया। व्रत के प्रभाव से उनके दिन पुनः फिर गये। सबने श्रद्धा से रविव्रत को अपनाया, पालन किया। जिससे उनको राज सम्मान प्राप्त हुआ, अंत में मोक्ष को प्राप्त किया।

यह रविवार व्रत 9 वर्ष तक किया जाता है। उत्तम, मध्यम, जघन्य रूप से भी व्रत होता है। जैसी शक्ति हो उस प्रकार व्रत का पालन करें। हर वर्ष में आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में जो अंतिम रविवार आये उस समय यह व्रत ग्रहण करें। इस प्रकार आषाढ़ महीने का एक और श्रावण महीने में चार, भाद्रमास के 4 कुल नो रविवार किये जाते हैं। हर वर्ष में अलग–अलग भोजन सामग्री इसमें बताई है। या फिर 81 उपवास भी कर सकते हैं। पूरी विधि रविवार व्रत की कथा को पढ़कर समझे। इस विधान में पूर्णार्घ को मिलाकर कुल 90 अर्घ चढ़ते हैं। जब भी हम रविव्रत करते हैं तो उद्यापन में यह विधान हमें करना चाहिये।

''मोक्ष शास्त्र की बात ही निराली है''

मोक्षमार्गस्य नेत्तारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्वानां, वन्दे तद्गुण लब्धये॥

''मोक्ष'' इन दो शब्दों में अनंत सुख का भंडार भरा हुआ है। एक क्ष हटा दे और ह शब्द लगा दे तो यह मोह बन जाता है मो+ह=मोह, मो+क्ष=मोक्ष! मोह संसार को बढ़ाने वाला है। और मोक्ष अनंत सुख दिलाने वाला है।

सुख प्राप्त करने की इच्छा हर एक जीव की रहती है। संसार का प्रत्येक प्राणी एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक और असंज्ञी से लेकर संज्ञी तक सभी सुखी बनना चाहते हैं। परन्तु सुख मिले वैसा कार्य सभी नहीं करते। मोक्ष पाने के लिये जीव को अनेक भव तक पुरुषार्थ करना पढ़ता है। मनुष्य गति से ही पुरुष मुनि बन कर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं।

पुरुषार्थ तो चारों गति के जीव करते हैं। परन्तु पुरुषार्थ की सफलता मनुष्य जब मुनि बनता है। कर्म काटने के लिये 12,13,14 वें गुणस्थान प्राप्त कर लेता है। वही जीव वास्तविक अनंत सुख को प्राप्त करता है।

हम एक बार मोह का क्षय, क्षयोपशम उपशम करके अगर सम्यक्दर्शन प्राप्त कर लेते हैं तो हमें मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

हमारे आचार्य उमास्वामी (गृद्ध पिच्छाचार्य) ने इस तत्त्वार्थ सूत्र ग्रंथ की रचना की है। यह ग्रंथ बहुत ही सुन्दर है। इस ग्रंथ में 357 सूत्र हैं। इसमें 10 अध्याय हैं, इस छोटे से ग्रंथ में आचार्य भगवन् ने गागर में सागर भर दिया है। सरलता से ये सूत्र समझ में आते हैं। हर व्यक्ति इन सूत्रों को मुखाग्र कर सकता है।

इन अध्यायों में क्रम से 7 तत्त्वों का ही वर्णन आचार्य भगवन् ने किया है। प्रथम अध्याय का प्रथम सूत्र ही सम्यग्दर्शन का दिया है। **'सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः।'** अंत में मोक्ष तत्त्व 10वें अध्याय में बताया है। सम्यक्दर्शन प्राप्त करने वाला ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसलिये सर्व प्रथम हमें जीवादि 7 तत्त्वों पर श्रद्धान् करके सम्यक्दर्शन प्राप्त करना चाहिए।

इस ग्रंथ पर अनेक आचार्यों ने सर्वार्थ सिद्धी, तत्त्वार्थ वृत्ति,

श्लोकवार्तिकालंकार, तत्त्वार्थ राजवार्तिक, तत्त्वार्थ सार, गंध हस्ति महाभाष्य आदि और भी अनेकों ग्रंथ रचे हैं। तत्त्वार्थ सूत्र (मोक्ष शास्त्र) ग्रंथ में सम्पूर्ण जिनागम का सार समाहित है। धवला, जय धवला, महाधवला, महाबंध आदि यदि पढ़ना है तो पहले यह ग्रंथ अच्छे से पढ़ना चाहिये। तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ने के बाद उनका ज्ञान भी शीघ्र हो जाता है।

तत्त्वार्थ सूत्र की व्रत विधि– इसके हमें 10 उपवास करना चाहिये। उपवास के दिन 6 अंग सहित पूजा विधान करना चाहिये। शुरूवात का प्रथम उपवास चतुर्दशी को किया जाता है, फिर कभी भी कोई भी तिथि को कर सकते हैं।

जो व्रत नहीं कर सकते वे लोग श्रद्धा से, शुद्धि के साथ विनय पूर्वक तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ते हैं या सुनते हैं। उनको भी एक उपवास का फल मिलता है। सभी भक्तगण दशलक्षण पर्व के समय विशेषकर 10 दिन तो जिनवाणी के सामने श्रुत की पूजा करके तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ते हैं और एक–एक अध्याय को अर्घ चढ़ाते हैं।

हमें हर दिन 10 अध्याय का पाठ करना चाहिये। जिससे हमारे परिणाम निर्मल बने, पुण्य का बंध हो। सूत्रों का अर्थ समझते हुये शुद्ध वस्त्रों में चटाई या पाटे पर बैठकर सूत्र पढ़ना चाहिये। चलते–फिरते, खाते–पीते या बिस्तर पर लेटकर सूत्र नहीं पढ़ना चाहिये, हाथ–पैर धोकर शांति से पढ़ना चाहिये। ज्ञान पाना है तो जिनवाणी का बहुमान करते हुये चौकी पर जिनवाणी विराजमान करके पढ़ना चाहिये।

जिनवाणी का विनय करने से ही हमारा ज्ञान बढ़ेगा इसलिए हमें हमेशा देव–शास्त्र–गुरु का विनय करते हुये प्रत्येक धार्मिक कार्य करना चाहिये।

मंत्रों का राजा महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

यह णमोकार महामंत्र एक ऐसा मंत्र है। जिसकी महिमा को अतिशय को हर एक आचार्य ने अपनी वाणी में बताया है। इस मंत्र को छोटे से लेकर बड़े तक, मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका कभी भी किसी भी समय सर्वप्रथम जपते हैं।

सबसे अधिक किसी मंत्र की महिमा का वर्णन या दृष्टान्त दिया जाता है तो वह णमोकार मंत्र है। जन्म से लेकर मरण तक यह णमोकार ही सबको सुनाया जाता है। इस णमोकार मंत्र को बोलने के लिये कोई स्थान विशेष नहीं देखा जाता है। जैनधर्म का ये मूलमंत्र है इसलिये सबसे पहले ये ही सिखाया जाता है। अन्य कोई मंत्र किसी को याद हो चाहे ना हो परन्तु ये मंत्र तो हरेक बच्चे-बच्चे को आता ही है। इस णमोकार मंत्र की शक्ति का कोई पार नहीं पा सकता।

स्वयं आचार्य, उपाध्याय, साधु, परमेष्ठी भी इस मंत्र के अन्तर्गत आते हैं, फिर भी ये तीनों परमेष्ठी भी णमोकार मंत्र को अवश्य जपते हैं। जब हम बीमार होते हैं तो औषधि लेते हैं, उससे ठीक होने पर भी औषधि लेते रहते हैं कि आगे बीमारी ना हो, जैसे शुगर वालों को शुगर की दवाई रोज लेनी पड़ती है। बी.पी. वाले बी.पी. कन्ट्रोल करने के लिए रोज गोली खाते हैं। वे दवाई खाकर स्वस्थ रहते हैं इसलिये रोज खाते हैं।

उसी प्रकार ये तीनों परमेष्ठी णमोकार मंत्र में गर्भित होने पर भी दिन-रात इस मंत्र को जपते रहते हैं और मंत्र जपने से इनको फायदा होता है इसलिये जाप करते हैं। जिस चीज से हमें फायदा होता है वह कार्य हमेशा करते रहना चाहिये। इस णमोकार मंत्र में 35 अक्षर है। ये पैंतीस अक्षर बड़े ही महत्वपूर्ण है। ये बीजाक्षर मंत्र है, एक-एक अक्षर में भी बड़ा सार भरा हुआ है। हर एक बीजाक्षर का अपना महत्त्व है। हर अक्षर कुछ न कुछ विशेषताओं से युक्त है। हर अक्षर का अर्थ अलग-अलग है। इस णमोकार मंत्र से ही 84 लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई। प्राणीमात्र को सुख देने वाला एक णमोकार मंत्र है। नवग्रह के दुःखों से बचने के लिये भी ये नवकार मंत्र ही बताया है।

इस मंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें किसी व्यक्ति विशेष को नमस्कार नहीं किया इसलिये यह मंत्र अनादि निधन है। किसी ने बनाया नहीं, कोई इसे मिटा नहीं सकता है। भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल के पाँचों परमेष्ठी को इसमें नमस्कार किया है। हमारा धर्म गुण पूजक है, व्यक्ति पूजक नहीं है। इसलिये ये मंत्र भी किसी जाति विशेष के लिए नहीं है। कोई भी इसका जाप कर सकता है, जिन्होंने अपनी आत्मा को प्राप्त कर लिया है। जो ज्ञान, ध्यान, साधना में रत है ऐसे परमेष्ठी का नाम कोई भी ले सकता है।

इस णमोकार के 35 अक्षरों पर ही मैंने यह णमोकार विधान लिखा है। इसमें पैंतीस अक्षरों के 35 अर्घ है और 6 पूर्णार्घ है। इस व्रत को हर कोई व्यक्ति कर सकता है। हमारे द्वारा जाने-अनजाने में हुये अपराधों की मुक्ति के लिये यह व्रत अवश्य करना चाहिये। इस व्रत को करने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धी होती है।

इस व्रत की विधि इस प्रकार है- इस व्रत को आषाढ़ सुदी सप्तमी से प्रारम्भ करें आषाढ़ का एक, श्रावण में दो, भाद्र मास में दो, अश्विन महीने के दो उपवास इस तरह सप्तमी के सात (7) उपवास करते हैं।

पंचमी के पाँच- कार्तिक कृष्णा पंचमी के दो, अगहन के दो, पौष का एक इस तरह पंचमी के पाँच उपवास।

14 उपवास- पौष कृष्णा चतुर्दशी से चैत्र कृष्ण चतुर्दशी तक 7 उपवासकरें। चैत्र शुक्ला से 14 से आषाढ़ कृष्णा चतुर्दशी तक 7 उपवास करें।

नवमी के नव उपवास- श्रावण कृष्णा नवमी से अगहन कृष्णा नवमी तक नव उपवास करें। इस प्रकार 35 उपवास द्वारा यह व्रत पूरा करना चाहिये। व्रत के समय अभिषेक पूर्वक नवकार मंत्र पूजन करें। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें। नहीं तो व्रत दुगुना करें। यह व्रत डेढ़ वर्ष में समाप्त करना चाहिये।

यह विधान दुःख-दारिद्र को हरने वाला है। हमारे जीवन का उत्थान करने वाला है। हम कभी भी यह विधान कर सकते हैं। व्रत करने की शक्ति नहीं हो तो भी यह विधान किया जा सकता है। विधान करके भी हम अपने पापों का नाश कर सकते हैं।

भक्ति में शक्ति

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति हराय नाथ।
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल भूषणाय॥
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय।
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि शोषणाय॥26॥

यह अतिशयकारी **'एकीभाव स्तोत्र'** है। जिसके पढ़ने-सुनने मात्र से सातिशय पुण्य का बंध होता है। इस **'एकीभाव स्तोत्र'** की रचना के पीछे एक

चमत्कारी घटना छिपी है; क्योंकि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता, हर कार्य के पीछे कुछ-न-कुछ कारण अवश्य होता है। यह **'एकीभाव स्तोत्र'** किसी छोटे से साधु ने नहीं लिखा बल्कि एक महाविद्वान् तार्किक चूड़ामणि महाज्ञानी गुरुवर **वादिराज आचार्य** के द्वारा लिखा गया है। कहते हैं कि इनके सामने जब कोई वाद-विवाद करने पास में आता था तो वह आपके सामने ठहर नहीं पाता था, हारकर चला जाता था। इस कारण आचार्यश्री का नाम ही वादिराज पड़ गया। वाद-विवाद में कोई भी इनसे जीत नहीं सकता था।

केवल भगवान का नाम मात्र लेने से हमारे दुःख, संकट दूर हो सकते हैं। हमें चाहे संस्कृत स्तोत्र का अर्थ समझ में नहीं भी आये तो भी श्रद्धा से आचार्यों के द्वारा जो स्तोत्र जिस भाषा में लिखा है उसे उसी भाषा में पढ़ने व सुनने से अधिक पुण्य का बंध होता है। 24 घण्टे में एक न एक स्तोत्र का पाठ अवश्यमेव सभी भक्तों को करना चाहिये। स्तोत्र पढ़ना, पाठ करना, मंत्र जाप करना, भगवान के नाम मंत्र का स्मरण करना, स्तुति करना; ये सब भक्ति हैं।

इसे पढ़ें फिर आगे बढ़ें

पंच कल्लाण ठाणइ, जाणि वि संजाद मच्चलोयम्मि।
मण, वयण, काय, सुद्धो, सव्वे सिरसा णमस्सामि॥

दोहा

चन्दन षष्ठी व्रत करो, पूर्ण शुद्धि के साथ।
देव-शास्त्र-गुरु को भजो, त्रय योगों के साथ॥

जैनागम में देव-शास्त्र एवं गुरु की भक्ति पूर्ण शुद्धि के साथ बताई गई है। जब जिनवाणी का अध्ययन करते हैं तो पता लगता है शुद्धि का कितना महत्त्व है और अशुद्धि का क्या दुष्परिणाम होता है। भाव के साथ-साथ द्रव्य भी शुद्ध होना चाहिये। मन के साथ वचन की शुद्धि और वचन के साथ काय की शुद्धि आवश्यक है, जब तक हमारे मन-वचन-काय शुद्ध नहीं है, पवित्र नहीं है। तब तक ऐसी अशुद्ध अवस्था में यदि हम जिनेन्द्र प्रभु की आराधना करते हैं तो घोर असातावेदनीय कर्म का बंध करते हैं। यदि अशुद्धि में मुनिराजों की भक्ति कर उन्हें आहारदान आदि देते हैं तो कायशुद्धि न होने के कारण कुष्ठरोग से पीड़ित

होते हैं। शास्त्र पढ़ने से ज्ञानावरणी कर्म का बंध करते हैं। जाने–अनजाने में अशुद्ध अवस्था में जो भी हमारे द्वारा गुरुओं का अनादर हुआ हो, चारित्र धारियों का अपमान हुआ हो, तीर्थों की वंदना की हो तो उसका प्रायश्चित करना चाहिये। हर धार्मिक कार्य में मन–वचन–काय की शुद्धि होना चाहिये। पाप से छूटने के लिये, मुक्ति पाने के लिये यह 'चंदन षष्ठी व्रत' हर नर–नारी को वर्ष में एक बार 6 साल तक करना चाहिये। श्रावक श्रद्धा के साथ विवेक अवश्य रखे, मन–वचन–काय की शुद्धिपूर्वक देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति करे।

अशुद्धि में कभी भी जिनेन्द्र प्रभु के एवं गुरु के व जिनवाणी के दर्शन नहीं करना चाहिये। शुद्धिपूर्वक गुरु की भक्ति करें, पुण्य का संचय करें।

अशुद्धि में दिया गया दान क्या फल देता है वह इस व्रत की कथा से पता चलता है। जब हम से अशुद्ध अवस्था में कोई धार्मिक काम हो जाता है तो हमारा मन अपराधी बनकर दिन–रात दुःखी करता है, पाप का बोझ बढ़ जाता है। अपराध शांति से सोने भी नहीं देता है, हमारा मन हमें क्षमा नहीं करता, बार–बार गल्तियों को याद दिलता है। आत्मा अंदर से रोती है।

अपराधी व्यक्ति अपने आपको माफ नहीं कर पाता, अन्दर से हमेशा दुःखी रहता है। तनाव में रहता है। कैसे इस पाप से छुटकारा पाऊँ, पाप से बचूँ। अतः पापों से बचने के लिये यह **'चंदन षष्ठी व्रत'** आचार्यों ने आगम में बताया है। अवश्यमेव सभी श्रावक–श्राविका इस व्रत का पालन करें, अशुद्धि में किये हुये पापों का प्रायश्चित करें।

सबके लिये चंदनषष्ठी व्रत विधान लिखा है। इस व्रत को करते हुये सभी भक्त प्रभु की भक्ति में तल्लीन होकर सातिशय पुण्य का संचय करें। पापों से मुक्त होकर परमात्म पद को प्राप्त करें। इस विधान में 56 अर्घ हैं और एक पूर्णार्घ है। व्रत पूर्ण होने पर यह विधान करें। विधान लिखने में कुछ त्रुटि हुई हो तो गुण ग्रहण का भाव रखें। पुस्तक प्रकाशक, पाठक मुद्रक सभी को आशीर्वाद।

–गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

श्री सोलहकारण विधान का मांडला

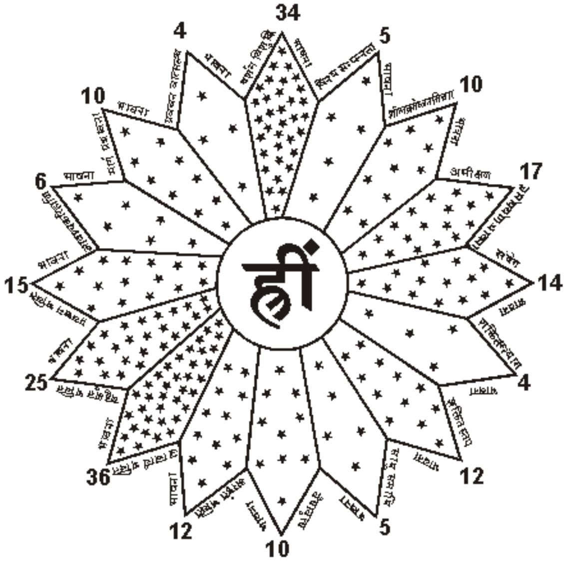

श्री दशलक्षण विधान का मांडला

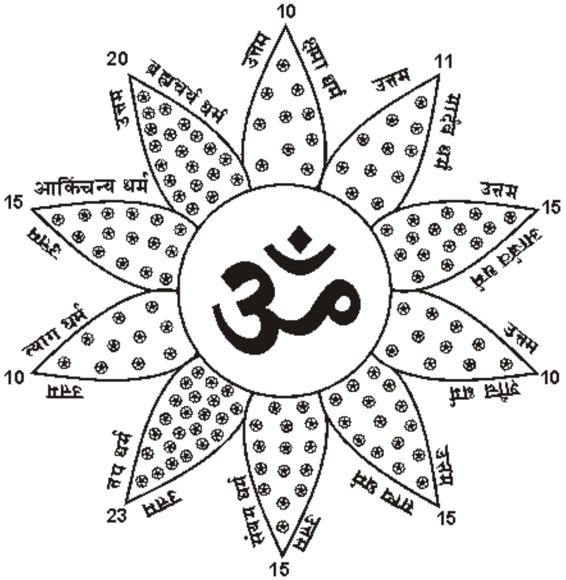

श्री पंचमेरु विधान का मांडला

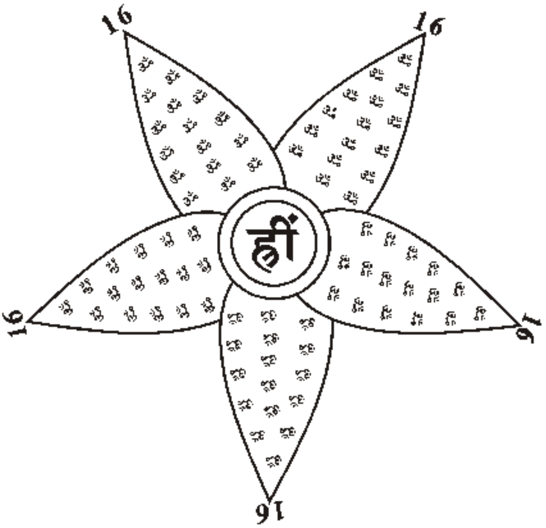

पाँचों मेरु के **16–16** अर्घ और **2–2** पूर्णार्घ चढ़ते हैं।

नंदीश्वर विधान का माण्डला

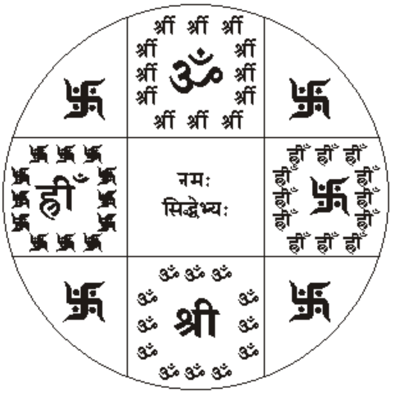

रविव्रत विधान का माण्डला

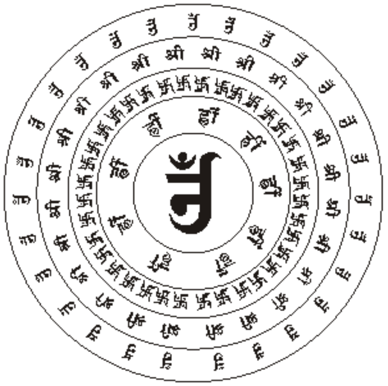

तत्त्वार्थ सूत्र विधान मंडल

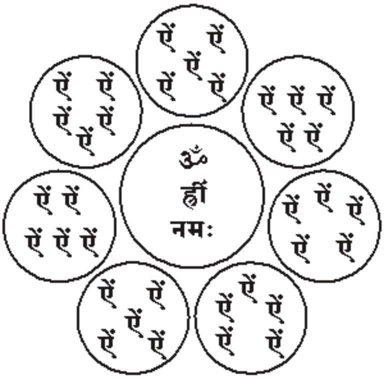

णमोकार विधान का मांडला

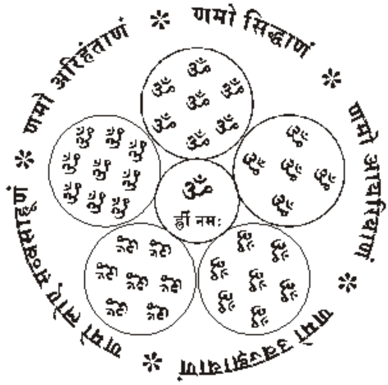

एकीभाव विधान का माण्डला

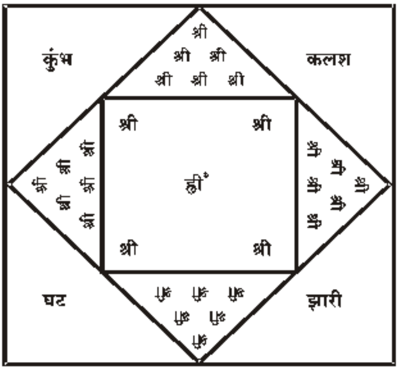

चन्दन षष्ठी विधान मण्डल

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार।।7।।

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार।।8।।

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान।।9।।

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म।।10।।

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥
सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥
अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥
महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥
परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन–वच–काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥
अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥
जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो।।
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को।।1।।

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।।
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।।2।।

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है।।
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है।।3।।

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है।।
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है।।4।।

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है।।

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी।।1।।

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी।।2।।

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी।।3।।

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी।।4।।

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी।।5।।

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी।।6।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।1।।

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।4।।

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ॥
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।**
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नम: स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।
विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।
कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।
श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।
श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन–कीर्तन–भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दु:ख मिटाये आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ:–ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र–ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।
सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।
विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।
कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।
नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।
चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं
(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सोलहकारण स्तवम्

(चाल–नरेन्द्रं फणेन्द्रं...)

देवाधिदेवं जय हो जिनेशं, हे वीतरागी सिद्धं जिनेशं।
तवपाद युगलं प्रणमामि नित्यं, भूतं भविष्यं जिनराज वंद्यम्।।

दर्शन विशुद्धिं विनय स्वभावं, शीलव्रतेषु सुआत्मभावम्।
अभीक्ष्ण ज्ञानं संवेग धारं, तप त्याग धारं स्वात्मनिखारं।।

साधु समाधि सिद्धि प्रदानं, गुरु वैयावृत्ति आरोग्यकायम्।
अर्हंत भक्ति दुःख शोक नाशं, आचार्य भक्ति वृत्तं विकासम्।।

बहुश्रुत वंद्यं पाठक नमामि, तव पाद युगलं नित्यं भजामि।
अर्हंत वाक्यं सत्य प्रकाशं, जिनमार्ग रूपं धर्म प्रभावम्।।

जयवन्त धर्मं सर्वत्र पूज्यं, जिनधर्म विश्वं त्रिलोक पूज्यम्।
कर्त्तव्य कर्त्तुं प्रमाद त्याज्यं, दानादि पूज्यं जिनराज आद्यम्।।

वात्सल्य रूपं भगवत स्वरूपं, वंद्येभिवंद्यं निजात्म रूपम्।
षोडश गुणानं सुकण्ठ धारं, सिद्धि प्रदानं सुमुक्ति द्वारम्।।

दोहा– षोडशकारण व्रत धरे, 'आस्था' भक्ति समेत।
व्रत के संग गुप्ति वरें, पायें मुक्ति निकेत।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सोलहकारण समुच्चय विधान पूजा

(गीता छंद)

दर्शन विशुद्धि आदि सोलह, भावना को भाइये।
चिन्तन मनन और ध्यान से, उत्कृष्ट पदवी पाइये।।
भायें जो सोलह भावना, वो भव्य तीर्थंकर बने।
उनका करें आह्वान हम, सुर नर जिन्हें नित ही नमें।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारण भावना समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

(तर्ज - नंदीश्वर पूजा की चाल...)

मन में आनंद अपार, प्रभु की भक्ति करें।
जल लाये प्रभु के द्वार, प्रभु का न्हवन करें।।
सोलहकारण गुण खान, जो भविजन भायें।
उनका हम करें विधान, प्रभु सम गुण पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचन वात्सल्य इति षोडश कारणेभ्योः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमकुम केशर कर्पूर, चंदन घिसवाये।
जिनपद में नित्य लगाय, आतप नश जाये।। सोलहकारण....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का मन भावन रूप, भव्यों को भायें।
हम पाने अक्षय रूप, अक्षत ले आये।। सोलहकारण....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद पद्म कचनार, पुष्प सजा लायें।
अर्पित जिनपद में हार, मन्मथ विनशायें।।
सोलहकारण गुण खान, जो भविजन भायें।
उनका हम करें विधान, प्रभु सम गुण पायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु और मन को भाय, घृत पय के व्यंजन।
जिनवर को आज चढ़ाय, हरने भव बंधन।। सोलहकारण.... ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा सी दीपक ज्योत, प्रभु दर पे चमके।
पायें हम ज्ञानोद्योत, निज आतम दमके।। सोलहकारण.... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागुरु धूप सुवास, नभ में जब फैले।
कर्मों का करने नाश, हम जिन शरणा लें।। सोलहकारण.... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में तिलक समान, तीर्थंकर पदवी।
पाने फल सिद्ध समान, हमने भक्ति रची।। सोलहकारण.... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक द्रव्य चढ़ाय, सुन्दर थाली में।
अष्टम भूमि मिल जाय, त्रिभुवन स्वामी से।। सोलहकारण.... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण भावना पूजाओं के पूर्णार्घ

(अडिल्ल छंद)

भावों को उज्ज्वल करती ये भावना।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना।।

दर्श विशुद्धि को भावों से ध्या रहे।
जिन चरणों में पूरण अर्घ चढ़ा रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

विनय मोक्ष का द्वार बताया शास्त्र में।
विनय करें हम देव गुरु का साथ में।।
विनय भाव के भेद प्रभुवर ने कहे।
विनय भाव से अर्घ समर्पण कर रहे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विनय सम्पन्नता भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

शील भावना आत्म भावना, स्व स्वभाव दिखलाती।
परद्रव्यों से मुक्त कराकर, परम ब्रह्म बनवाती।।
क्रोधादिक से रहित भाव ही, शील भाव कहलाये।
सर्व पाप का मोचन करने, उत्तम भक्ति रचायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर अर्हंत केवली, ज्ञानमयी निज को जाने।
श्रमण लगें नित ज्ञान ध्यान में, हम आये उनको ध्याने।।
ज्ञानमयी उपयोगवान ही, शुद्ध बुद्ध बन जाये।
उनको ध्या हम प्रभु चरणों में, मंगल द्रव्य चढ़ायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

धर संवेग विचार, मोह त्याग घर छोड़ें।
भाव विराग जगाय, ममता से मुख मोड़ें।।

यह संसार असार, जिनवर हमें बताते।
लेकर आठों द्रव्य, उनको अर्घ चढ़ाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

त्याग भावना भाय, बनते जो वैरागी।
छोड़ चले संसार, प्रभुवर के अनुरागी।।
भक्ति भाव के साथ, पूरण अर्घ चढ़ायें।
त्याग भावना भाय, तीर्थंकर बन जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

तप का तीव्र प्रभाव, कर्म समूह जलाता।
तप में तप कर जीव, सिद्ध रूप पा जाता।।
महातपस्वी संत, उनकी भक्ति रचायें।
तन तपमय बन जाय, ये ही भाव जगायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

साधु करें समाधि, अष्टम वसुधा पाने।
सात आठ भवधार, निश्चय मुक्ति ठाने।।
उन मुनियों को आज, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।
उन सम हम भी आज, यही भावना भायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

द्वादश तप में वैयावृत्ति, आभ्यन्तर तप कहलाता है।
वैय्यावृत्ति जो नित करता, वो तीर्थंकर बन जाता है।।

निर्ग्रन्थ श्रेष्ठ सब श्रमणों की, सेवा जिनने है सिखलायी।
वसुविधी द्रव्यों की थाल चढ़ा, हमने प्रभु की महिमा गायी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

णवकार मंत्र में पहला पद, अरहंत प्रभु का आता है।
अरिहंत प्रभु के सुमिरन से, सब दुःख संकट कट जाता है।।
अरहंत भावना कहती है, अरिहंत प्रभु का जाप करो।
अरिहंत देव के चरणों में, सब पूजन पाठ विधान करो।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

आचार्य भक्ति भावना को अर्घ चढ़ायें।
उनके चरण में बैठ अपना भाग्य जगायें।।
सन्मार्ग दिवाकर गुरु आचार्य हमारे।
हम झूम-झूम भक्ति करें उनको पुकारें।।11।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

बहुश्रुत धनी मुनीश का सम्मान हम करें।
पाठक ऋषि की भक्ति से सद्ज्ञान हम वरें।।
इस भावना को भायें ज्ञान ज्योति जलायें।
सुज्ञान रत्न पाने अष्ट द्रव्य चढ़ायें।।12।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

बारह सभा के मध्य खिरे जिन की देशना।
जिनके चरण में राग द्वेष होवे लेश ना।।

सत्यार्थ वाणी लोक में जिनवर की गूँजती।
जिनवाणी को ही सर्व सभा नित्य पूजती॥13॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

षट् आवश्यक जो नित पाले, मोक्ष मार्ग के वे रखवाले।
आवश्यक हम अवश करेंगे, समता धर शिव राह वरेंगे॥
कभी प्रमादी नहीं बनेंगे, दोषों का परिहार करेंगे।
प्रभु अर्चा हम सदा करेंगे, भक्ति से भगवान बनेंगे॥14॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मार्ग प्रभावना मार्ग दिखाये, धर्म किरण घर-घर पहुँचाये।
अंग आठवाँ यह कहलाये, सर्व जगत् में जिन मत छाये॥
जिनशासन जिनगुरु को ध्यावें, यशकीर्ति रवि सम फैलावें।
प्रभु को उत्तम द्रव्य चढ़ायें, पाप नशे बहु पुण्य कमायें॥15॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

वात्सल्य प्रवचन भावना, वात्सल्य गुण सिखला रही।
करुणा दया मन में धरो, माँ शारदा बतला रही॥
उसको विनय उत्साह से, पूर्णार्घ अर्पण कर रहे।
हम भी प्रभु तुम सम बने, यह प्रार्थना नित कर रहे॥16॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिस भू पे जिनवर चले, वहाँ शांति सुख छाय।
ऐसे प्रभु के चरण तल, शांतिधार कराय॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– प्रभु की छवि के सामने, भाग्य पुष्प खिल जाय।
पुष्प चढ़ा प्रभु आपको, मन हर्षित हो जाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– सोलह कारण पर्व की, जयमाला सुखकार।
गायें हम सब भक्ति से, पायें सौख्य अपार।।

(नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर पद देने वाले, सोलह कारण की जय हो।
जो भाये सोलह कारण को, उन मुनिराजों की जय हो।।
हम पूजें उन मुनिराजों को, जो तीर्थंकर बनते हैं।
उनके पावन चरण–कमल में, सुर–नर–किन्नर नमते हैं।।1।।

पूर्व जन्म में पुण्य उदय से, जिन जीवों का भाग्य जगे।
उनके हृदय कमल में देखो, प्राणी मात्र से प्रेम जगे।।
करना है कल्याण सभी का, यही भावना नित्य करें।
मोक्षमार्ग का पथ दिखलाने, स्वयं दिगम्बर वेश धरें।।2।।

उन्हें मिले जब केवलज्ञानी, या श्रुतकेवली मिल जाते।
तीर्थंकर प्रकृति पद दायक, दिव्य भावना वे भाते।।
करें समाधि देव बने वो, पुनः मनुज भव में आते।
अंतिम उत्तम जन्म धरें वो, तीन लोक को हर्षाते।।3।।

सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचना करते नगरी की।
पन्द्रह मास रत्न वर्षा से, पूज्य बने यह धरती भी।।

गर्भ पूर्व तीर्थंकर माता, शुभ सोलह स्वप्ने देखे।
जन्म समय में इन्द्र नाथ को, नेत्र हजार बना देखे।।4।।
सूर्य आप हैं चन्द्र आप हैं, तीन जगत् के हो स्वामी।
हमको भी प्रभु राह दिखाओ, आओ प्रभु अन्तर्यामी।।
गर्भ कल्याणक मंगलकारी, मात–पिता पूजे जाते।
जग जननी माँ के चरणों में, देव–देवियाँ झुक जाते।।5।।
जन्म कल्याणक की शुभ बेला, सुरपति प्रभु का न्हवन करे।
नश्वर वैभव तजकर जिनवर, दीक्षा लेकर ध्यान धरें।।
चार घातिया कर्म नशाके, केवलज्ञानी कहलाये।
द्वादश धर्म सभा में जिनके, मनुज देव और पशु आये।।6।।
कर्म अघाति नाशें भगवन्, शिवरानी का वरण करें।
भविजन दीप जला ले लड्डू, झूम–झूम कर भक्ति करें।।
पंच कल्याणक सदा मनायें, पंचम गति को प्राप्त करें।
बोधि समाधि गुप्ति त्रयधर, 'आस्था' से शिव राह वरें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि आदि षोडशकारणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सोलह कारण भावना, भव्यजीव ही भाय।
सर्व कर्म को नाशके, तीर्थंकर बन जाय।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

दर्शनविशुद्धि भावना पूजा

(जोगीरासा छंद)

प्रथम भावना दर्श विशुद्धि, सम्यक् दर्शन देती।
जो भवि प्राणी इसको भावे, भव-भव दुःख हर लेती।।
ऐसी शुद्ध भावना पाने, प्रभु की अर्चा करता।
गुण थापन आह्वान करूँ मैं, प्रभुवर के गुण वरता।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्धि भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

कंचन झारी निर्मल जल से, पत्र युक्त भरकर लाया।
रत्नत्रय निधि पाऊँ भगवन्, जन्म-जरा हरने आया।।
तीर्थंकर पद देने वाली, दर्श विशुद्धि को भाऊँ।
तीर्थंकर प्रभु के चरणों में, आनंदामृत पा जाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध युक्त चंदन का लेपन, भव संताप मिटाता है।
ऐसी प्रभु रज शीश लगा भवि, अपना भाग्य जगाता है।। तीर्थंकर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमुक्ता धवलाक्षत प्यारे, शालि सुगंधित अक्षत ये।
अक्षत पुंज चढ़ाकर भगवन्, पाऊँगा अक्षय पद मैं।। तीर्थंकर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जूही चंपा कमल केवड़ा, चढ़ा रहा प्रभु चरणों में।
भाग्यवान बनने को भगवन्, आया तेरे चरणों में।। तीर्थंकर..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे मनहर षट्रस व्यंजन, प्रभु को नित्य चढ़ाता हूँ।
क्षुधा कर्म को दूर भगाने, प्रभु चरणों में आता हूँ।। तीर्थंकर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी दीपों की थाली, मोह–तिमिर का नाश करे।
प्रभु की आरती करने वाला, सम्यक्ज्ञान प्रकाश वरे।।
तीर्थंकर पद देने वाली, दर्श विशुद्धि को भाऊँ।
तीर्थंकर प्रभु के चरणों में, आनंदामृत पा जाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कर्म जग में भटकाते, सदा रुलाते भव–भव में।
धूप चढ़ाऊँ तुमको भगवन्, पार करो इस भव वन से।। तीर्थंकर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर रसदार फलों से, जो श्रावक पूजा करता।
द्रव्य भाव से जिनगुण गाये, वो ही मुक्ति रमा वरता।। तीर्थंकर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक् पुष्पाक्षत ले, दीप धूप फल चरू महा।
अर्घ बनाकर भक्ति रचाकर, प्रभु चरणों को पूज रहा।। तीर्थंकर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि भावना विधान के अर्घ

दोहा– **सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।**
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

अंजन जैसे चोर ने, धरा निशंकित अंग।
हम इसकी पूजा करे, मन में धरें उमंग।।1।।

ॐ ह्रीं श्री निशंकित गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग निकांक्षित जो धरे, हैं अनंतमति नाम।
वैसे हम इसको वरें, पाने मुक्ति धाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री निकांक्षित गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्दायन नृप ने धरा, निर्विचिकित्सा अंग।
इसको पूजें हम सदा, पाने प्रभु का संग।।3।।

ॐ ह्रीं श्री निर्विचिकित्सा गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रानी रेवती धारकर, अमूढ़ दृष्टि अंग।
हो प्रसिद्ध इस लोक में, पाया प्रभु का संग।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अमूढ़दृष्टि गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपगूहन इस अंग में, जिनेन्द्र भक्त प्रसिद्ध।
इसकी अर्चा हम करें, बनने प्रभु सम सिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उपगूहन गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग स्थितिकरण में, वारिषेण मुनिराज।
सिद्ध हुये इस लोक में, पाया मोक्ष स्वराज।।6।।

ॐ ह्रीं श्री स्थितिकरण गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सल अंग में सिद्ध हैं, विष्णु कुँवर मुनिराय।
हम इसकी अर्चा करें, उर वात्सल्य बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्य गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

की प्रभावना धर्म की, वज्रकुंवर मुनिराज।
उसकी अर्चा हम करें, पाने सुख साम्राज।।8।।

ॐ ह्रीं श्री प्रभावना गुणसहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ मद निवारण के अर्घ (दोहा)

करें कभी ना ज्ञान मद, ये मद ज्ञान घटाय।
देव-शास्त्र-गुरु भक्ति ही, सम्यक दीप जलाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजामद अपना तजें, तजें ख्याति मद भाव।
जिनगुण पाने हम चले, भक्ति के ले भाव।।10।।

ॐ ह्रीं श्री पूजामद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुलमद का अभिमान तज, करें प्रभु से राग।
जिनवर का अनुराग ही, हरे हमारा राग।।11।।
ॐ ह्रीं श्री कुलमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिमद को हम तजें, छोड़ें सब अभिमान।
पूजा कर प्रभु आपकी, नाशें मिथ्याज्ञान।।12।।
ॐ ह्रीं श्री जातिमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलमद जिस नर ने तजा, पाये शक्ति अतुल्य।
हम जिनकी पूजा करें, पाने भक्ति अतुल्य।।13।।
ॐ ह्रीं श्री बलमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि मद ऋद्धि हरे, दे ना केवलज्ञान।
ऋद्धिधर प्रभु को भजें, दो प्रभु केवलज्ञान।।14।।
ॐ ह्रीं श्री ऋद्धिमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपमद से शक्ति घटे, फिर ना हो उपवास।
जिन अर्चा से शक्ति पा, करें मास उपवास।।15।।
ॐ ह्रीं श्री तपमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें रूपमद काय का, तन मिट्टी बन जाय।
प्रभुवर के गुणगान से, प्रभु सम मिलती काय।।16।।
ॐ ह्रीं श्री वपुमद रहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंकादि दोष निवारण के अर्घ (चौपाई)

देव शास्त्र गुरुवर की वाणी, शंका छोड़ बनो श्रद्धानी।
श्री जिनवर को हम सब ध्यायें, शंका दोष रहित बन जायें।।17।।
ॐ ह्रीं श्री शंकादोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागे सांसारिक इच्छायें, कांक्षा रहित धर्म अपनायें।
दर्श विशुद्धि भाव बढ़ायें, हम प्रभुवर को अर्घ चढ़ायें।।18।।
ॐ ह्रीं श्री कांक्षादोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मीजन से प्रीत बढ़ायें, ग्लानि भाव कभी ना लायें।
विचिकित्सा के भाव नशायें, हम जिनवर को नित उठ ध्यायें॥19॥

ॐ ह्रीं श्री विचिकित्सा दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूढ़दृष्टि यह दोष हटाये, अपनी सम्यक् दृष्टि बनायें।
तीन मूढ़ता अवश नशायें, हम जिनवर को अर्घ चढ़ायें॥20॥

ॐ ह्रीं श्री मूढ़दृष्टि दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनूपगूहन दोष विनाशे, स्वगुण ढ़ाँक स्वदोष प्रकाशे।
जिनभक्ति रच हम शिव पायें, जिनगुणसंपत् प्रभु से पायें॥21॥

ॐ ह्रीं श्री परदोषभाषण (अनूपगूहन) दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थितिकरण दोष दुःखदाई, रहे धरम में स्थित भाई।
गिरते को हम और उठाये, इसी भाव से अर्घ चढ़ायें॥22॥

ॐ ह्रीं श्री अस्थितिकरण दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवात्सल्य दोष विनशाये, प्रेम भाव के दीप जलायें।
हर प्राणी से प्रेम हमारा, स्वीकारों प्रभु अर्घ हमारा॥23॥

ॐ ह्रीं श्री अवात्सल्य दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रभावना हमसे ना हो, जैनधर्म बिन ना जीना हो।
जैनधर्म जन-जन अपनायें, हे प्रभु ! हम सब अर्घ चढ़ायें॥24॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रभावना दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छः अनायतन त्याग के अर्घ (चौपाई)

ना कुदेव की करे प्रशंसा, अरहंतों की करें प्रशंसा।
षट् अनायतन दूषण त्यागें, जिन भक्ति में भविजन लागे॥25॥

ॐ ह्रीं श्री कुदेव प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुदेव के भक्त कहाये, उनकी गुण गाथा ना गाये।
षट् अनायतन दूषण त्यागे, जिन भक्ति में भविजन लागे।।26।।

ॐ ह्रीं श्री कुदेव भक्त प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म छोड़ कुधर्म जो धारे, पाते वो दुःख संकट सारे।। षट्... ।।27।।

ॐ ह्रीं श्री कुधर्म सेव प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूर रहे कुधर्मी जन से, संग करें ना मन-वच-तन से।। षट्... ।।28।।

ॐ ह्रीं श्री कुधर्म भक्त प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुगुरुओं को हम ना मानें, सद्गुरुओं को हम पहचानें।। षट्... ।।29।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरु प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुगुरु सेवक हमें फंसाये, इनकी सेवा भ्रमण बढ़ाये।। षट्... ।।30।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरु भक्त प्रशंसा अनायतन दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन मूढ़ता त्याग के अर्घ

(चौपाई)

वीतराग जिनदेव हमारे, पूजन करते भविजन सारे।
देवमूढ़ता हम सब छोड़ें प्रभुवर तुमसे नाता जोड़ें।।31।।

ॐ ह्रीं श्री देवमूढ़ता दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनधर्म सच्चा कहलाये, इसी धर्म को अर्घ चढ़ायें।
धर्म मूढ़ता हम सब छोड़ें, जैन धर्म से नाता जोड़ें।।32।।

ॐ ह्रीं श्री धर्ममूढ़ता दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जिनने वेश दिगम्बर धारा, पूजें उन गुरु को जग सारा।
गुरु मूढ़ता हम सब छोड़ें, जिन गुरुओं से नाता जोड़ें।।33।।

ॐ ह्रीं श्री गुरुमूढ़ता दोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

भावों को उज्ज्वल करती ये भावना।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना।।
दर्श विशुद्धि को भावों से ध्या रहे।
जिन चरणों में पूरण अर्घ चढ़ा रहे।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जल से शांतिधार कर, जोड़ूँ दोनों हाथ।
नाना रंगों के सुमन, अर्पित करता नाथ।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– दर्श विशुद्धि भावना, मुक्ति की सोपान।
उसकी जयमाला पढ़ें, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

दर्श विशुद्धि मन की शुद्धि, पा जाये हम सम्यक् बुद्धि।
त्याग करें पच्चिस दोषों का, शंकादि वसु पाप मलों का।।1।।
शंका छोड़ निशंक बनेंगे, श्रद्धा प्रभु पे सदा करेंगे।
अंग निकांक्षित उर में धारें, त्यागें कांक्षा प्रभु के द्वारे।।2।।
निर्विचिकित्सा अंग निराला, ग्लानि दूर कराने वाला।
तीन मूढ़ता को पहिचानें, सच्चे तत्त्वों को हम जानें।।3।।

अपने सद्गुण को हम ढ़ांकें, वा पर के अवगुण को ढ़ांकें।
गिरते को हम सदा उठाये, धर्मी जन का धर्म बचाये।।4।।
श्रेष्ठ धर्म वात्सल्य निभायें, गौ बछड़े सम प्रेम दिखायें।
आठों अंग सदा हम धारें, स्वयं तिरें औरों को तारें।।5।।
अप्रभावना कभी न होवे, जैनधर्म की जय नित होवे।
जैनधर्म का यश फैलायें, गुण प्रभावना जग में छायें।।6।।
आठ दोष का त्याग करेंगे, आठ गुणों को ग्रहण करेंगे।
गुण संवेग प्रशम को पायें, अनुकम्पा आस्तिक्य जगायें।।7।।
तीर्थंकर पद जो भी पाये, निश्चय दर्श विशुद्धि भाये।
चौबीस जिनवर जो भी बनते, यही भावना भाकर बनते।।8।।
मानतुंग जिन भक्ति रचाये, कारागृह से मुक्ति पाये।
वादिराज सूरि भी ध्यायें, कोढ़ मिटा जिन यश फैलाये।।9।।
मेंढ़क ने जिन भक्ति रचायी, देव बना वो अति सुखदायी।
मैना सति भी पाठ रचायें, अपने पति का कोढ़ मिटाये।।10।।
सम्यक्दर्शन प्राप्त करेंगे, निज आतम कल्याण करेंगे।
गायें 'आस्था' से जयमाला, पा जायें मुक्ति की माला।।11।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायैः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विनय सम्पन्नता भावना पूजा

(जोगीरासा छंद)

विनयवान को मुक्ति मिलती, विनय करो सब प्राणी।
विनय मोक्ष का द्वार बताया, कहती है जिनवाणी।।
विनय नम्रता सद्गुण पाने, प्रभु के दर हम आये।
पुष्पों से आह्वान करें नित, मन में अति हर्षाये।।

ॐ ह्रीं श्री विनय–सम्पन्नता भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

जल के घट को मस्तक पे रख, अभिषेक प्रभु का करते हैं।
त्रय रोग दूर कर दो भगवन्, बस यही प्रार्थना करते हैं।।
ये विनय भावना मोक्षप्रदा, हम विनय भाव उर धारेंगे।
हम विनय करें नव देवों का, जिनमत पे श्रद्धा धारेंगे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर को गंध लगाने से, भव–भव के दुःख मिट जाते हैं।
केशर चंदन लेकर जिनवर, हम द्वार तिहारे आते हैं।। ये विनय..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद धारी जिनवर को, धवलाक्षत श्रेष्ठ समर्पित हैं।
हम अक्षय सुख को प्राप्त करें, ये भाव हृदय में सज्जित हैं।। ये विनय..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की क्यारी में पुष्पित, होते हैं पुष्प अनेक यहाँ।
अपने हाथों में पुष्प सजा, हम पूजें प्रभु के चरण महा।। ये विनय..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नमकीन मिठाई षट्रस की, पकवान मनोज्ञ चढ़ायेंगे।
प्रभुवर की पूजा करके हम, यह क्षुधा रोग विनशायेंगे।। ये विनय..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इस मोह मान के कारण ही, जग में प्राणी दुःख पाते हैं।
प्रभुवर की आरती करके वो, मिथ्यात्व तिमिर विनशाते हैं ॥
ये विनय भावना मोक्षप्रदा, हम विनय भाव उर धारेंगे।
हम विनय करें नव देवों का, जिनमत पे श्रद्धा धारेंगे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप चढ़ाते हैं, शुद्धात्म रूप प्रगटाने को।
हम लायें सुरभित श्रेष्ठ धूप, जिनवर को आज चढ़ाने को।। ये विनय..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम हरे-भरे फल से पूजें, उत्तम फल को पाने हेतू।
करते हम अनुनय विनय नाथ, हम पायें मोक्ष सुपथ सेतू।। ये विनय..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग के सारे नश्वर वैभव, हर प्राणी को मिल जाते हैं।
निज वैभव को पाने प्रभु से, हम आठों द्रव्य चढ़ाते हैं।। ये विनय..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनय सम्पन्नता भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

ज्ञान विनय से केवल ज्योति पाइये।
ज्ञान और ज्ञानी के नित गुण गाइये।।
विनय भावना की हम सब पूजा करें।
विनय भाव को धारें शिव सिद्धी वरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञान विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन की सविनय आराधना।
जिन अर्चा से होवे पाप विराधना।। विनय...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक चारित की सम्यक अर्चन करें।
चारित धर को विनय सहित वंदन करें।।
विनय भावना की हम सब पूजा करें।
विनय भाव को धारें शिव सिद्धी वरें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चारित्र विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक तप व तपधर गुरु की कर विनय।
विनय भाव से होता पापों का विलय।। विनय...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तप विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते हम उपचार विनय जिनधर्म की।
इसी विनय से कड़ियाँ काँटे कर्म की।। विनय...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उपचार विनय भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

विनय मोक्ष का द्वार बताया शास्त्र में।
विनय करें हम देव गुरु की साथ में।।
विनय भाव के भेद प्रभुवर ने कहे।
विनय भाव से अर्घ समर्पण कर रहे।।

ॐ ह्रीं श्री विनय सम्पन्नता भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रभु चरणों के पास में, मिलती शांति अपार।
पद्म पुष्प अर्पण करें, घट से शांति धार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– विनय भाव के साथ में, गायेंगे जयमाल।
विनय करें हम भाव से, वरें मोक्ष की माल।।

(शंभु छंद)

जय–जय हो विनय भावना की, यह विनय भावना हृदय धरें।
जो विनय भावना को धारे, वो तीर्थंकर पद प्राप्त करें।।

इस श्रेष्ठ भावना के कारण, मुनि तीर्थंकर प्रकृति बाँधें।
केवली श्रुतकेवली के दर पे, निज आतम को जिन से बाँधें।।1।।
जिनदेव गुरु जिनवाणी का, हम विनय भाव उर में लायें।
हम नमें प्रभू के चरणों में, मिथ्यात्व मान को विनशायें।।
कर विनय ज्ञान वा ज्ञानी की, सम्यक्ज्ञानी हम बन जायें।
मन में ना अहं कषाय धरें, बस विनय सरलता अपनायें।।2।।
यह अहं भाव ही प्राणी को, प्रभु से अति दूर कराता है।
जो अहम् छोड़कर नम्र बना, वो विनयवान बन जाता है।।
तप और तपस्वी गुरुओं की, हम विनय सदा करते जायें।
उपचार विनय को पालन कर, शिवपुर रमणी को पा जायें।।3।।
शिवभूति मुनि ने विनय सहित, केवललक्ष्मी श्री को पाया।
जब किया गुरु का अविनय तब, अज्ञानी बन अति दुःख पाया।।
धरसेन गुरु का विनय करें, मुनि पुष्पदंत और भूतबली।
षट्खंडागम की रचना कर, विख्यात हुये दो महाबली।।4।।
इस विनय भाव के आगम में, गुरुवर बहु भेद बताते हैं।
ये पंच भेद ही प्राणी को, पंचम गति में पहुँचाते हैं।।
हम तीन गुप्ति धर ध्यान धरें, श्री मुक्तिराज को पा जायें।
'आस्था' से प्रभु को नमन करें, बोधि समाधि जिन सम पायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा

(गीता छंद)

यह शीलव्रत की भावना, हम शील को धारण करें।
अतिचार व्रत में ना लगे, निर्दोष व्रत गुरुवर धरें।।
इस भावना को पूजते, सुमनांजलि ले हाथ में।
आह्वान वा थापन करें, मुक्ति मिले जिननाथ से।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

अभिषेक जिनवर आपका, पावन करे मम भावना।
त्रय रोग से मुक्ति मिले, इस हेतु यह आराधना।।
यह भावना है शील की, इस शील की पूजा करें।
जो पालता यह शील व्रत, शिव सौख्य में झूला करे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी का गंध चंदन, देह ताप निवारता।
प्रभु पाद का रज कण यही, मम पाप को परिहारता।। यह भावना.. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय परम पद आपने, पाया करम को नाशके।
हमको वही पद प्राप्त हो, हम आ रहे प्रभु द्वार पे।। यह भावना.. ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इस काम अरि को नश दिया, अर्हंत प्रभुवर आपने।
ये पुष्पमाला हम चढ़ायें, कामरिपु को नाशने ।। यह भावना.. ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

रबड़ी पुड़ी बरफी बना, नाना प्रकार मिठाईयाँ।
निज भूख तृष्णा नाशने, प्रभु को चढ़ा हरषे जिया।।
यह भावना है शील की, इस शील की पूजा करें।
जो पालता यह शील व्रत, शिव सौख्य में झूला करे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन रतन की थाल में, ये दीप चम-चम कर रहे।
प्रभु आरती में भक्त के, घुंघुरु छमाछम बज रहे।। यह भावना..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरु की धूप को, खेते प्रभु के सामने।
आठों करम को नाशने, हम लीन प्रभु के ध्यान में।। यह भावना..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर दाड़िम आम केला, जाम जामुन रसभरी।
लेकर फलों की थाल से, जिनराज की पूजा करी।। यह भावना..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर सुसज्जित थाल में, हम द्रव्य लेते अनगिने।
यह अर्घ अर्पण है उन्हें, जो मोक्ष के वासी बने।। यह भावना..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलव्रतेष्वनतिचार भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

देख अप्सरा देव की, ना लागे अतिचार।
शील व्रतों को हम धरें, जिन वच श्रद्धा धार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव स्त्री विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख मानवी नार को, मनवा ना ललचाय।
दोष लगे ना शील में, इस हित भक्ति रचाय॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मनुष्य स्त्री विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख तिर्यंची नार को, लगे न व्रत में दोष।
इस व्रत को हम पूजते, करें सदा जयघोष॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पशु स्त्री विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्र काष्ठ की नार लख, करे ना मनवा पाप।
बचने उस संताप से, करें प्रभु का जाप॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चित्रकाष्ठ स्त्री विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय वस्तु को देख हम, मन से करते त्याग।
जिन भक्ति में लीन हो, करें प्रभु से राग॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मनसा भोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से हम ना करे, विषय वस्तु का भोग।
नाथ आपके ध्यान से, मिटे काम का रोग॥6॥

ॐ ह्रीं श्री वचसा कृतिभोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटि से त्यागते, इन्द्रिय विषय कषाय।
पूजन ध्यान विधान में, लीन रहे मम काय॥7॥

ॐ ह्रीं श्री कायभोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम कृत भोग से, विरत हुये हम आज।
प्रभुवर तुमको पूजकर, पायें शिवपुर राज॥8॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मकृत भोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व तज पर कारित किया, किया पाप का बंध।
उसको हम सब त्याग कर, करें पुण्य का बंध॥9॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मनाकारित भोग विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर की रति अनुमोदना, भव-भव भ्रमण कराय।
उसको तजने आज हम, प्रभु की भक्ति रचाय॥10॥

ॐ ह्रीं श्री परानुमोदन विरति शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

शील भावना आत्म भावना, स्व स्वभाव दिखलाती।
परद्रव्यों से मुक्त कराकर, परम ब्रह्म बनवाती॥
क्रोधादिक से रहित भाव ही, शील भाव कहलाये।
सर्व पाप का मोचन करने, उत्तम भक्ति रचायें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- निर्मल जल की धार से, मिट जाये मम पाप।
पुष्प चढ़ा प्रभु पाद में, करें निरन्तर जाप॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- शीलव्रतों की भावना, निरतिचार से पाल।
गाऊँ जय गुणमालिका, अर्पित पुष्पित माल॥

(शेर छंद) (तर्ज-हे दीन बंधु...)

जय-जय हो शील भावना जय शील गुणव्रती।
इस शील का पालन करें मुनिवर महाव्रती॥
इस शील व्रत की भावना के भेद अनेकों॥
इस भावना के साथ में विवेक भी रखो॥1॥

अठदस सहस्र भेद शील के हैं बताये।
सम्पूर्ण शीलवान श्री जिनेश कहाये॥

स्वदार शीलव्रत को धारते अणुव्रती।
सम्पूर्ण शील पालते मुनिवर महाव्रती।।2।।
सब स्त्रियों में मात बहिन पुत्री ही दिखे।
आगम में ऐसे भक्त की महिमा मुनि लिखे।।
स्त्री के राग की कथा सुनो नहीं कभी।
स्वादिष्ट व गरिष्ठ भोज ना करो कभी।।3।।
नवकोटि सहित प्राणियों इस व्रत को पालना।
तन-मन वचन की शक्ति से पापों को टालना।।
इस काम को वश में करो मन धर्म से जोड़ो।
निजात्म का स्वभाव शील शील से जोड़ो।।4।।
इस लोक में जिन जिन ने शील धर्म को पाला।
सीता मनोरमा ने पाई शील की माला।।
सुलोचना व द्रोपदी को देवता ध्याये।
श्री अंजना व चंदना को शील बचाये।।5।।
जिनधर्म में इस शील को महान् बताया।
इस शील से ही प्राणी जगत् पूज्य कहाया।।
हम भी धरें त्रिगुप्ति और शील को धरें।
'आस्था' से मोक्ष लोक पाय, शांति सुख वरे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना पूजा

(गीता छंद)

शुद्धोपयोगी आत्मा, नित ज्ञान में तल्लीन है।
उन परम जिनवर देव की, हम भक्ति में लवलीन हैं।।
अज्ञानता के नाश हित, हम कर रहे नित साधना।
आह्वान पुष्पों से करें, करने सतत आराधना।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

जल की झारी भर कर लाये, प्रभु के पद हम आज चढ़ायें।
जन्म–जरादिक रोग नशायें, प्रभु पूजा से पुण्य कमायें।।
ज्ञाननिधि के तुम हो स्वामी, ज्ञान दान दो अन्तरयामी।
अभीक्ष्ण ज्ञान की भक्ति रचायें, केवलज्ञानी हम बन जायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस घिस चंदन केशर लायें, प्रभु चरणन् में गंध लगायें।
जो प्रभुवर को गंध लगाता, वो ही देह सुगंधित पाता।। ज्ञाननिधि..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर अक्षत नित्य चढ़ायें, अविनाशी अक्षय सुख पायें।
श्री जिनवर की भक्ति रचायें, भक्ति के रंग में रंग जायें।। ज्ञाननिधि..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केवड़ा उत्पल प्यारे, सुन्दर पुष्प सुगंधित सारे।
चढ़ा प्रभु को काम नशायें, परम ब्रह्म पदवी को पायें।। ज्ञाननिधि..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो प्रभु को नैवेद्य चढ़ाते, दुःख दारिद्र सभी मिट जाते।
क्षुधारोग से छुट्टी पाते, सब जीवों से पूजे जाते।।
ज्ञाननिधि के तुम हो स्वामी, ज्ञान दान दो अन्तरयामी।
अभीक्ष्ण ज्ञान की भक्ति रचायें, केवलज्ञानी हम बन जायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानदीप हरता अंधियारा, पाने प्रभु से ज्ञान उजारा।
रत्नमयी घृत दीपक लाते, जिन चरणों में नित्य चढ़ाते।। ज्ञाननिधि..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रक धूप अग्नि में डालें, अष्ट करम का संकट टालें।
जिन ने आठों कर्म नशायें, उनका हम सब कीर्त्तन गायें।। ज्ञाननिधि..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व फलों संग श्रीफल लायें, प्रभु को फल के गुच्छ चढ़ायें।
प्रभु सम हम भी शिवफल पायें, अपना जीवन सफल बनायें।। ज्ञाननिधि..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट द्रव्य की सुन्दर थाली, लय के साथ बजायें ताली।
नृत्य गान संग वाद्य बजायें, श्री जिनवर को अर्घ चढ़ायें।। ज्ञाननिधि..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

मतिज्ञान को हम भजें, बजा–बजा कर साज।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग की, करें भावना आज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञानोपयोग का, हो विशेष श्रुतज्ञान।
पूजें इस श्रुतज्ञान को, नाशें कुश्रुत ज्ञान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू निमित्त श्रुतज्ञान से, होता भू का ज्ञान।
पूजें हम इस ज्ञान को, हरने निज अज्ञान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भौमनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग निमित्त श्रुत ज्ञान से, होय शुभाशुभ ज्ञान।
हम पूजें उस ज्ञान को, जानें वह श्रुतज्ञान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अंगनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर निमित्त श्रुतज्ञान से, सीखें स्वर विज्ञान।
स्वर विज्ञानी को जजें, करें प्रभु का ध्यान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री स्वरनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन निमित्त सुज्ञान ये, देता भावि ज्ञान।
सुश्रुत व्यंजन ज्ञान को, पूजें धर श्रद्धान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री व्यंजननिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण निमित्त सुज्ञान ये, तन लक्षण बतलाय।
उसको पूजें आज हम, जिनवर के दर आय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री लक्षणनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छिन्न निमित्त सुज्ञान ये, नाना विध दे ज्ञान।
हमको सत् श्रुतज्ञान हो, इस विध करें विधान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री छिन्ननिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वप्न निमित्त श्रुतज्ञान से, हो स्वप्नों का ज्ञान।
सिद्ध लोक का स्वप्न मम, पूर्ण करो भगवान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री स्वप्ननिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अष्टांग निमित्त से, होय शुभाशुभ ज्ञान।
अष्ट अंग श्रुतज्ञान को, पूजें प्रभु दर आन॥10॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्त श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान उपयोग से, मूर्त्त द्रव्य का ज्ञान।
सम्यक् अवधिज्ञान हित, करें प्रभु का गान॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अवधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशावधि शुभ ज्ञान से, करें तत्व श्रद्धान।
पूजें अवधिज्ञान को, बनने को भगवान॥12॥

ॐ ह्रीं श्री देशावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमावधि यह ज्ञान शुभ, निश्चित मुक्ति दिलाय।
पूजें हम इस ज्ञान को, जिन चरणन् में आय॥13॥

ॐ ह्रीं श्री परमावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वावधि शुभ ज्ञान भी, मुनिराजों के होय।
उन मुनिवर की अंत में, सिद्ध अवस्था होय॥14॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋजुमति मनःपर्यय श्रमण, जाने मन की बात।
पूजें हम इस ज्ञान को, करें करम का घात॥15॥

ॐ ह्रीं श्री ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्यय विपुलमति, ये हे ज्ञान प्रसिद्ध।
होता ये मुनिराज को, वे बनते हैं सिद्ध॥16॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म के नाश से, होता केवलज्ञान।
इसकी हम पूजा करें, पाने केवलज्ञान॥17॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर अर्हंत केवली, ज्ञानमयी निज को जाने।
श्रमण लगें नित ज्ञान ध्यान में, हम आये उनको ध्याने।।
ज्ञानमयी उपयोगवान ही, शुद्ध बुद्ध बन जाये।
उनको ध्या हम प्रभु चरणों में, मंगल द्रव्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पाते साधक सिद्धि को, करें ज्ञान अभ्यास।
शांति हो त्रय लोक में, करते यही प्रयास।।

शांतये शांतिधारा

दोहा– चंपा जूही केवड़ा, निशिगंधा कचनार।
सेवन्ती शुचि मोगरा, जिन पद अर्पित हार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

(घत्ता)

हे ज्ञान निधीश्वर, हे जगदीश्वर, हमको सच्चा ज्ञान मिले।
जयमाला गायें, वाद्य बजायें, ज्ञान सुमन के फूल खिले।।

(नरेन्द्र छंद)

अभीक्ष्ण ज्ञान ही श्रेष्ठ ज्ञान है, ज्ञान भावना की जय हो।
ज्ञान भावना में जो रत हैं, ज्ञानी योगी की जय हो।।
श्री जिनवर ने ज्ञान रतन के, भेद अनेक बताये हैं।
ज्ञान बिना सब जीव जगत के, कष्ट उठाते आये हैं।।1।।

मुख्य भेद तो पाँच बताये, उत्तर भेद अनेक कहे।
मतिश्रुत अवधि ज्ञान तीसरा, मनःपर्यय ये ज्ञान कहे।।
केवलज्ञान एक है जिनके, युगपत सबको जान रहे।
हम भी केवलज्ञान जगाने, ज्ञानेश्वर की शरण लहे।।2।।

अष्ट अंग निमित्त ज्ञानधर, भूमि लक्षण स्वर व्यंजन।
अंग भौम स्वप्नादि ज्ञाता, हरते भव्यों के क्रंदन।।
देशावधि परमावधि धारी, सर्वावधि ऋजु विपुलमति।
केवलज्ञान जगाने भगवन्, तव चरणों में नमे यती।।3।।

ज्ञानाभ्यास साधना से ही, श्री अकलंक प्रसिद्ध हुयें।
पात्र केशरी गुरुवाणी सुन, संयम धार प्रसिद्ध हुयें।।
एक हरिण गुरुवाणी सुनकर, बालि बन मुक्ति पायें।
क्रूर शेर भी गुरु वचनों से, वीर जिनेश्वर बन जाये।।4।।

संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य जीव सम्यक् पाता।
ऐसा प्राणी ज्ञानी बनकर, तीर्थंकर पदवी पाता।।
ज्ञानी जन की सेवा कर हम, पायें उनसे ज्ञान निधी।
हित का लाभ अहित की हानि, 'आस्था' पाये पूर्ण विधी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

संवेग भावना पूजा

(नरेन्द्र छंद)

जो संवेग भावना धारें, वैरागी वे कहलायें।
मुनि बन कर जो करें साधना, उनकी हम पूजा गायें।।
शुभ भावों की ज्योति जगाने, पुष्पों से आह्वान करें।
प्रभु मुख मुद्रा हृदय बसाने, पूजन वंदन भजन करें।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छंद)

सिर पे जल का कुंभ, माणिक मोती वाला।
भर–भर कलशा नीर, प्रभु पे हमने डाला।।
मन में हो संवेग, यही कामना मन की।
पूर्ण करो भगवान, शक्ति बढ़े चेतन की।।1।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से पद पूज, भव आताप नशायें।
नतमस्तक हम होय, अपने शीश लगायें।। मन में..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल मनोज्ञ, और चढ़ायें मोती।
प्रभु पूजा से पाय, अविचल अक्षय ज्योती।। मन में..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नूतन पुष्प चढ़ाय, प्रभु को चुनकर ताजे।
काम रोग मिट जाय, खुले मोक्ष दरवाजे।। मन में..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की अर्चा श्रेष्ठ, क्षुधा मिटाने वाली।
प्रभु को अर्पित आज, षट्‌रस व्यंजन थाली।।
मन में हो संवेग, यही कामना मन की।
पूर्ण करो भगवान, शक्ति बढ़े चेतन की।।5।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी नाथ, करें आरती तेरी।
पायें सम्यक् ज्योत, मेटो भव दुःख फेरी।। मन में..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंबर की ये गंध, जिन मंदिर महकाये।
धूप अग्नि में खेय, हम निज कर्म नशायें।। मन में..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चीकू दाड़िम आम, पनस बिजौरा श्रीफल।
चढ़ा प्रभु को आज, पायें हम भी शिवफल।। मन में..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध से पूज, माँगें तुमसे भगवन्।
पद अनर्घ की आश, पूरी कर दो भगवन्।। मन में..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवेग भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

पृथ्वीकाय के दुःख ना पायें, इस गति में हम कभी न जायें।
श्री जिनवर की भक्ति रचायें, हम संवेग भावना भायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीकाय दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकायिक भव हम ना पायें, इस गति के दुःख से बच जाये।
श्री जिनवर की भक्ति रचायें, हम संवेग भावना भायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जलकाय दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि काय के दुःख ना पायें, इस गति से छुटकारा पायें।। श्री जिनवर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निकाय दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकाय का भव ना पायें, सर्व दुःखों से मुक्ति पायें।। श्री जिनवर..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वायुकायिक दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनस्पति काया दुःखदायी, हमें बचाओ हे जिनरायी।। श्री जिनवर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायिक दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठदस बार मरण जहँ पाये, यह गति नित्य निगोद कहाये।। श्री जिनवर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नित्यनिगोद दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इतर निगोद महादुःखदानी, रहे यहाँ मिथ्यात्वी प्राणी।। श्री जिनवर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री इतरनिगोद दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो इन्द्रिय के दुःख से छूटे, जो जिन भक्ति का रस लूटे।। श्री जिनवर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रिय जीव दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रीन्द्रिय के दुःख ना पाये, जो जिन पद में चित्त लगाये।। श्री जिनवर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री त्रीन्द्रिय जीव दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुरिन्द्रिय के दुःख ना पायें, हम जिनवर की शरणा आयें।। श्री जिनवर..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री चतुन्द्रिय जीव दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज गति के दुःख ना पायें, सम्यक् दर्शन धर सुख पायें।। श्री जिनवर..।।11।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रिय मनुष्य पर्यायजनित दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवगति के दुःख ना पायें, लोभ छोड़ जिनभक्ति रचायें।। श्री जिनवर..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री देवगतिजनित दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यक् गति के दुःख ना पायें, तज माया जिन भक्ति रचायें।। श्री जिनवर..।।13।।

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंचगतिजनित दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक गति के दुःख ना पाये, क्रोध छोड़ जिन भक्ति रचायें
श्री जिनवर की भक्ति रचायें, हम संवेग भावना भायें।।14।।

ॐ ह्रीं श्री नरकगतिजनित दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (काव्य छंद)

धर संवेग विचार, मोह त्याग घर छोड़ें।
भाव विराग जगाय, ममता से मुख मोड़ें।।
यह संसार असार, जिनवर हमें बताते।
लेकर आठों द्रव्य, उनको अर्घ चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं श्री चतुरशीतिलक्षयोनि जनित संसार दुःख विरक्ताय संवेग भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– वेग और आवेग तज, धरें सदा संवेग।
शांतिधारा से मिटे, वसु कर्मों का वेग।। शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम मल्ल को मारकर, धारें हम वैराग।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करें, नष्ट होय सब राग।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– संवेग बढ़ावें, वेग घटावें, वैरागी बन मुक्ति वरें।
मुनिव्रत हम धारें, कर्म विदारें, जयमाला गुणगान करें।।

(सखी छंद)

संवेग भावना धारें, हम अपना जनम सुधारें।
संवेग करे मन पावन, संवेग करे तन पावन।।1।।

जो जग भोगों के त्यागी, वो ही बनते वैरागी।
जो तन को नश्वर जाने, वो निज आतम पहिचाने॥2॥
अंजन मुनिव्रत अपनाये, वो कर्म काट शिव जाये।
विद्युच्चर मुनिव्रत धारे, आये सन्मति के द्वारे॥3॥
संवेग बिना यह प्राणी, चहुँ गति भटके अज्ञानी।
त्रस थावर योनी पाता, हर गति में कष्ट उठाता॥4॥
बलशाली जब बन जाता, निर्बल को दुःख पहुँचाता।
पापों का बंध बढ़ाता, तब मार करम की खाता॥5॥
पंचेन्द्रिय बना असंज्ञी, या मन वाला हो संज्ञी।
तिर्यंचों के दुःख भारी, कहने में जिह्वा हारी॥6॥
जब मनुज गति को पाया, भोगों में इसे गँवाया।
नरकों में कष्ट उठाये, भूखे-प्यासे दुःख पाये॥7॥
देवों की माया नगरी, ईर्ष्या है मन की गगरी।
इनकी माला मुरझाये, मोही थावर तन पाये॥8॥
चारों गति में दुःख पाये, हर गति में कष्ट उठाये।
अब सम्यक्दर्शन पायें, संवेग भावना भायें॥9॥
व्रत समिति गुप्ति अपनायें, मुनिमुद्रा मुक्ति दिलाये।
मन में संवेग जगायें, 'आस्था' धर शिव सुख पायें॥10॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें॥
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शक्तितस्त्याग भावना पूजा

(गीता छंद)

ये भावना है त्याग की, जो त्याग भाव बढ़ा रही।
निज आत्म शक्ति को बढ़ाने, राग भाव घटा रही।।
इस भावना की भक्ति से, आह्वान वा थापन करें।
जिनराज के दरबार में, भक्ति भजन कीर्त्तन करें।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद) (तर्ज–हे दीन बन्धू...)

कंचन कलश में नीर क्षीर सिंधु का भरें।
त्रय रोग को नशाने प्रभु का न्हवन करें।।
ये भावना है त्याग की कुछ त्याग हम करें।
इस त्याग भावना से मुक्ति धाम को वरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से प्रभु आपका गुणगान हम करें।
संसार ताप नाशने चंदन चरण धरें।। ये भावना..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से ही मिल पायेगा अक्षय अखंड पद।
अक्षत चढ़ाके नाथ से पायेंगे मोक्ष पद।। ये भावना..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भर–भरके पुष्प गुच्छ भक्त नित्य चढ़ायें।
जिनराज के समान आत्म शक्ति जगायें।। ये भावना..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू इमरती बरफी कलाकंद बनायें।
भर–भरके थाल नाथ को नैवेद्य चढ़ायें।। ये भावना..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति अखंड नाथ तेरे द्वार पे जले।
हम दीप थाल लेके करने आरती चलें।।
ये भावना है त्याग की कुछ त्याग हम करें।
इस त्याग भावना से मुक्ति धाम को वरें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप डालते कर्मों को जलाने।
प्रभु के चरण में आये हम तो भक्ति रचाने।। ये भावना..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे रसीले फल से भक्त भक्ति रचायें।
पूजा रचायें नाथ का विधान करायें।। ये भावना..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अनर्घ पद के हेत नाथ को ध्यायें।
ढोलक नगाड़े व मृदंग वाद्य बजायें।। ये भावना..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तितस्त्याग भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

आहार दान श्रेष्ठ महादान कहाता।
ये दान भव्य प्राणियों को मोक्ष दिलाता।।
शक्त्यनुसार त्याग भावना को भाइये।
इसके धनी मुनीश की पूजा रचाइये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आहारदान भावनोपदेश शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी गुरु की भक्ति ज्ञानवान बनाये।
औ ज्ञानवान श्रेष्ठ पूर्ण ज्ञान दिलाये।। शक्त्यनुसार..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानदान भावनोपदेश शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आदि चार संघ को हम देय औषधी।
पायें अनंत शक्ति सौख्य ज्ञान औषधी।।
शक्त्यनुसार त्याग भावना को भाइये।
इसके धनी मुनीश की पूजा रचाइये।।3।।

ॐ ह्रीं श्री औषधदान भावनोपदेश शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागी भवन बनाओ करो संत सुरक्षा।
देकर के अभयदान करो आत्म सुरक्षा।। शक्त्यनुसार..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभयदान भावनोपदेश शक्तितस्त्याग भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (काव्य छंद)

त्याग भावना भाय, बनते जो वैरागी।
छोड़ चले संसार, प्रभुवर के अनुरागी।।
भक्ति भाव के साथ, पूरण अर्घ चढ़ायें।
त्याग भावना भाय, तीर्थंकर बन जायें।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– त्याग भावना धर्म की, श्रद्धा उर में धार।
निर्मल जल से हम करें, प्रभु चरणों में धार।। शांतये शांतिधारा।

दोहा– समिति गुप्ति व्रत त्याग ही, मुनियों के श्रृंगार।
जिनवर वा मुनिराज को, चढ़ा रहे हम हार।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– शक्तितस्त्यागी, बन वैरागी, जो भविजन यह त्याग करे।
मिल जाये शांति, मिटे अशांति, हम जयमाला गान करें।।

(चौपाई)

जय–जय त्याग भावना प्यारी, त्याग धर्म जग में सुखकारी।
त्यागी जिसने संपत् सारी, मुनि मुद्रा पायी सुखकारी।।1।।
त्याग भावना त्याग सिखाये, राग–द्वेष की आग नशाये।
त्याग भावना पूज्य बनावे, राग छुड़ा वैराग्य जगावे।।2।।

तीर्थंकर जब वैभव त्यागे, सुर नर उनको भजने लागे।
द्वादश अनुप्रेक्षा प्रभु भाते, तब लौकान्तिक सुरगण आते।।3।।
अनुमोदन करके हर्षाते, सब कुछ त्याग प्रभु वन जाते।
त्याग आत्म सुख को दिलवायें, बीज मोक्ष का वपन कराये।।4।।
त्याग गर्भकल्याण दिलायें, जन्मकल्याणक त्याग करायें।
त्याग ज्ञानकल्याण दिलाये, त्याग मोक्षकल्याण दिलाये।।5।।
त्याग पंचकल्याण दिलाये, त्याग तीर्थंकर पद दिलवाये।
त्याग कर्म का पिण्ड नशाये, समवशरण भी वो रचवाये।।6।।
सौ–सौ इन्द्र नमें गुण गायें, गणधर भी जिनको नित ध्यायें।
त्याग भाव मुक्ति की चाबी, त्याग भाव से मिटे खराबी।।7।।
चार चतुष्टय त्याग दिलाये, गुण अनंत के नाथ बनाये।
शाश्वत सुख भी त्याग दिलाये, हम भी त्याग भाव अपनाये।।8।।
भेद चार इसके बतलाये, औषध अभय अहार कहाये।
ज्ञानदान कर पुण्य कमायें, श्रावक श्रद्धा भाव जगाये।।9।।
आदिनाथ ने दान दिया था, तीर्थंकर पद प्राप्त किया था।
शांतिनाथ ने दान दिया था, तीन पदों को प्राप्त किया था।।10।।
श्री श्रेयांस कुवर बन दानी, गणधर बन पाई शिव रानी।
जो भवि प्रथम आहार कराये, तीर्थंकर संघ शिवसुख पाये।।11।।
गृह त्यागी की करके सेवा, सेवा कर पायें सुख मेवा।
त्याग भावना जो भी धारे, 'आस्था' धर वो मोक्ष पधारे।।12।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शक्तितस्तप भावना पूजा

(अवतार छंद) (चाल–नंदीश्वर श्री जिन..)

शक्तितस्तप आधार, पावन पुण्य मही।
जिनदेव लगाओ पार, तुमरी शरण लही।।
भक्ति से पूजें आज, कुसुमांजलि लायें।
आह्वान करें हम आज, प्रभु के गुण गायें।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

हे तीन लोक के ईश, तुमको ध्याते हैं।
चरणों में हो नत शीश, नीर चढ़ाते हैं।।
शक्तितस्तप मनहार, हमको पार करे।
प्रभु पूजा मंगलकार, मम उद्धार करे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरणों के पास, शीतलता पायें।
शीतल चंदन शुचिवास, भव दुःख विनशाये।। शक्तितस्तप..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज मनोज्ञ, जिन को अर्पण है।
मिल जाये अक्षय सौख्य, हमारा यह प्रण है।। शक्तितस्तप..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से उत्तम रूप, प्रभु का मनहारी।
पुष्पों के गुच्छ अनूप, लाये नर–नारी।। शक्तितस्तप..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम षट्रस व्यंजन श्रेष्ठ, थाली भर लायें।
दो ज्ञान दान जिन ज्येष्ठ, योगी बन जायें।। शक्तितस्तप..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के दीप प्रजाल, आरती रोज करें।
जिन सन्मुख लेकर थाल, छम-छम नृत्य करें।।
शक्तितस्तप मनहार, हमको पार करे।
प्रभु पूजा मंगलकार, मम उद्धार करे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप चढ़ाय, कर्म नशाने को।
हे त्रिभुवनपति जिनराय ! तव गुण पाने को।। शक्तितस्तप..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाड़िम केला के साथ, जामुन सीताफल।
फल चढ़ा रहे हम नाथ, देना मोक्ष सुफल।। शक्तितस्तप..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदन अक्षत फूल, नैवज दीप लिया।
पाने प्रभु की पग धूल, अर्पित अर्घ किया।। शक्तितस्तप..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शक्तितस्तप भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

अनशन तप की भावना, करते श्री मुनिराज।
शक्तितस्तप भाव को, पूजें हम सब आज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनशन तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊनोदर तप भावना, तप की शक्ति जगाय।
हमको ये शक्ति मिले, प्रभु की भक्ति रचाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ऊनोदर तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्ति परिसंख्यान तप, बाह्य सुतप कहलाय।
उसके धारक श्रमण को, हम सब शीश झुकाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री व्रत परिसंख्यान तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो करते परित्याग रस, षट् रस व्यंजन त्याग।
उनको षट्रस से भजें, पार लगाये त्याग।।4।।

ॐ ह्रीं श्री रस परित्याग तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्त शय्यासन धरें, आतम शक्ति जगाय।
उन ऋषियों को हम भजें, भर-भर थाल चढ़ाय।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्त शय्यासन तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायक्लेश तप जो करें, काया से तज मोह।
पूजें हम उनके चरण, बन जायें निर्मोह।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेश तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रायश्चित्त तप श्रेष्ठ है, अन्तः तप कहलाय।
हम इसकी अर्चा करें, भाव विशुद्ध बनाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्त तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय महातप कह रहा, करो विनय का भाव।
विनय तपस्वी से हमें, है आत्मीय लगाव।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विनय तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैयावृत्य महान् तप, तीर्थंकर पद देय।
गुरु सेवा जिन भक्ति से, ये पदवी वर लेय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जो स्वाध्याय तप, पाने स्व का ज्ञान।
वो इस तप को सिद्ध कर, पाते केवलज्ञान।।10।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्याय तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप व्युत्सर्ग महान् है, पाले श्री यतिराज।
शक्तितस्तप भावना, दे मुक्ति का ताज।।11।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्ग तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम तप यह ध्यान है, ध्यान जिनेश बताय।
परम ध्यान के लाभ हित, हम जिन भक्ति रचाय।।12।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यान तप भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (काव्य छंद)

तप का तीव्र प्रभाव, कर्म समूह जलाता।
तप में तप कर जीव, सिद्ध रूप पा जाता।।
महातपस्वी संत, उनकी भक्ति रचायें।
तन तपमय बन जाय, ये ही भाव जगायें।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तीन लोक में शांति हो, करें यही हम भाव।
प्रभु के पद में नीर दें, वरें शांति सद्भाव।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– मन को मोहित जो करे, ऐसे पुष्प मँगाय।
श्री जिनवर के पाद में, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– तप से होती निर्जरा, तप से इच्छा रोक।
तप की जयमाला पढ़ें, पायें शिवपुर लोक।।

(सखी छंद)

बोले तप का जयकारा, तप से मिलता शिव द्वारा।
जिन–जिन ने तप स्वीकारा, है उनको नमन हमारा।।1।।
तप में जो तपते जायें, वो ही अर्हत पद पायें।
जो भविजन तप अपनायें, उनकी जयमाला गायें।।2।।
तप को धारा मुनियों ने, तप को धारा ऋषियों ने।
तप से इच्छा को रोका, तपकर कर्मों को रोका ।।3।।

तप में मुनि भाव लगाते, तप से ऋद्धि मुनि पाते।
तप ऋद्धिधर मुनि आये, तत्क्षण सुभिक्ष हो जाये।।4।।
मुनि योग जहाँ अपनाते, जीवों के कष्ट मिटाते।
वन में गुरु ध्यान लगाते, जीवों में प्रेम बढ़ाते।।5।।
वैरी पशु वैर भुलाते, गुरु चरणों में रम जाते।
ये तप ही पूज्य बनाये, ये तप ही मोक्ष दिलाये।।6।।
तप में तपकर गुरु ज्ञानी, बनते हैं केवलज्ञानी।
तप की महिमा अति भारी, तप को पूजें संसारी।।7।।
तप तीर्थंकर प्रभु धारें, अरि नाश सिद्धपद धारें।
शक्तितस्तप अपनायें, सर्वोच्च शिखर को पायें।।8।।
तप द्वादश विधी बताया, ऋषि-मुनियों ने अपनाया।
गिरते को तप बचवाये, दुर्गति से मुक्ति दिलाये।।9।।
वृषभेश्वर जिन तप धारें, षट् मास योग वे धारें।
बाहुबली वर्षी तप कर, वे बनें सिद्ध परमेश्वर।।10।।
मुनि भरत सुकोशल स्वामी, बालि शिवभूति स्वामी।
मुनि गजकुमार तप धारे, तप से सब मोक्ष सिधारे।।11।।
जो त्याग भावना भाये, वो तप से कर्म नशाये।
जो भव्य भावना भाये, तीर्थंकर पदवी पाये।।12।।
तप सम कुछ जाप नहीं है, तप सम कुछ पाठ नहीं है।
हम समिति गुप्ति व्रत पाले, 'आस्था' से तप अपना लें।।13।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

साधु समाधि भावना पूजा

(गीता छंद)

साधु समाधि साधकर, शिवलोक के वासी बने।
समता व संयम साधना, जिनमें भरें गुण अनगिने।।
इनके गुणों की प्राप्ति हित, हम भाव से वंदन करें।
आह्वान करते आज हम, अर्चा प्रभु की नित करें।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - दर्श विशुद्धि)

स्वर्ण रजत के कलश भराय, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।
करो कल्याण, श्री जिनदेव करो कल्याण।।
साधु समाधि भावना भाय, मोक्ष सिद्धि हमको मिल जाय।
करो कल्याण, श्री जिनदेव करो कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन चरणन् गंध लगाय, भव संताप तुरत नश जाय।
करो कल्याण............ साधु समाधि............।।2।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयदानी नाथ कहाय, अक्षत प्रभु के चरण चढ़ाय।
करो कल्याण............ साधु समाधि............।।3।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनपूजा ही काम नशाय, प्रभु चरणों में पुष्प सजाय।
करो कल्याण............ साधु समाधि............।।4।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु को नेवज श्रेष्ठ चढ़ाय, क्षुधा वेदनी रोग नशाय।
करो कल्याण............ साधु समाधि............।।5।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घृत कपूर के दीप जलाय, श्री जिनवर की आरति गाय।
करो कल्याण, श्री जिनदेव करो कल्याण।।
साधु समाधि भावना भाय, मोक्ष सिद्धि हमको मिल जाय।
करो कल्याण, श्री जिनदेव करो कल्याण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घटों में धूप खिराय, प्रभु भक्ति की धूम मचाय।
करो कल्याण............ साधु समाधि............।।7।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे भरे फल नित्य चढ़ाय, प्रभु को पूज मोक्ष फल पाय।
करो कल्याण............ साधु समाधि............।।8।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि द्रव्य सजाकर लाय, श्री जिनवर की भक्ति रचाय।
करो कल्याण............ साधु समाधि............।।9।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

श्री पुलाक मुनि की हम नित पूजा करें।
ये साधु भी करें समाधि शिव वरें।।
साधु समाधि मोक्ष प्रदायी भावना।
आत्म समाधि की करते हम भावना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुलाक मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुश मुनि भी करते उत्तम साधना।
उन मुनिवर की करते हम आराधना।।
साधु समाधि मोक्ष प्रदायी भावना।
आत्म समाधि की करते हम भावना।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वकुश मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कुशील कषायें नित ही कृष करें।
क्रम–क्रम से ये भी मुनिवर मुक्ति वरें।। साधु..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री कुशील मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री निर्ग्रन्थ श्रमण भी जाते मोक्ष में।
इनकी पूजा से हम पहुँचे मोक्ष में।। साधु..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रन्थ मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्नातक जिनवर का करते जाप हम।
श्री अरिहंत व सिद्ध जपें दिन रात हम।। साधु..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री स्नातक मुनि साधु समाधि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

(काव्य छंद)

साधु करें समाधि, अष्टम वसुधा पाने।
सात आठ भवधार, निश्चय मुक्ति ठाने।।
उन मुनियों को आज, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।
उन सम हम भी आज, यही भावना भायें।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **विश्व शांति की नाथ से, करें प्रार्थना एक।**
जल थल और आकाश में, छाये शांति एक।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– प्रभुपद में पंकज चढ़ा, मन पंकज बन जाय।
परमेश्वर के चरण में, झुक–झुक शीश नवाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

(धत्ता)

यह साधु समाधि, मेटे व्याधि, जीवों का कल्याण करे।
जिनगुण जयमाला, करे उजाला, हम जयमाला पाठ करें।।

(अडिल्ल छंद)

साधु समाधि मंगलकारी भावना।
साधक सिद्धी की करते हैं कामना।।
प्रभु का नाम सुमरते अपना तन तजें।
उनको तीनों लोक और सुरगण भजें।।1।।

मरण समाधि एक बार जो भी करे।
सात आठ भव में निश्चय मुक्ति वरे।।
सम्यक् विधी से राग–द्वेष का कर शमन।
क्रोध मान मायाचारी का कर वमन।।2।।

दीक्षा लेकर करें कठिन जो साधना।
उनकी हम करते हैं नित आराधना।।
मरण समाधि करने मुनि तैयार हैं।
हर क्षण मृत्यु का करते सत्कार हैं।।3।।

जीने मरने की इच्छा होती नहीं।
भव भोगों की वांछा भी उनको नहीं।।
गुरु पे जब उपसर्ग कोई आकर करे।
या दुष्काल पड़े तब मृत्यु व्रत धरें।।4।।

भद्रबाहु गुरु साधु समाधि व्रत धरें।
चंद्रगुप्त मुनि उनकी नित सेवा करे।।
सब तीर्थंकर साधु समाधि साधते।
भव्य जीव सब उनको नित आराधते।।5।।

अति असाध्य व्याधि जब तन को घेर लें।
समता से उत्तम समाधि मुनि साध लें।।
'आस्था' से ऐसे गुरुवर को कर नमन।
साधु समाधि धार वरें शिवपुर सदन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

वैयावृत्त्य भावना पूजा

(शम्भु छंद)

जो वैयावृत्य करें निशदिन, दशविध मुनियों साधर्मी की।
वो वैयावृत्य महातप धर, पाते पदवी तीर्थंकर की।।
उनका आह्वान करें नित हम, पुष्पाञ्जलि हाथों में लायें।
आओ जिनवर मम हृदय बसो, तव पूजा कर मन हर्षाये।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

हम कुंभ सजायें, जल भर लायें, प्रभु पद दे त्रय रोग हरें।
जन्मादिक व्याधि, नाश उपाधि, रत्नत्रय निधि प्राप्त करें।।
जिनदेव हमारे, हम तुम द्वारे, पूजन करने नित आयें।
हे नाथ ! तिराओ, पार लगाओ, हम भी तुम सम गुण पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चंदन लायें, खूब घिसायें, प्रभु के चरणों में चर्चें।
भव ताप नशायें, मन हर्षायें, झूमे नाचें नित अर्चें।। जिनदेव..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद दाता, त्रिभुवन त्राता, अक्षत पुंज चढ़ाते हैं।
उत्तम पद पायें, जिनगुण गायें, भव का भ्रमण मिटाते हैं।। जिनदेव..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुष्प चुनायें, माल बनायें, पूजें प्रभु के चरण कमल।
कमलादि सजाते, कमल चढ़ाते, खिल जाये मम हृदय कमल।। जिनदेव..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

बहु व्यंजन लाये, जिनपद ध्यायें, रोग क्षुधा परिहार करें।
हम नृत्य करेंगे, भक्त बनेंगे, वाद्य बजा जयकार करें।। जिनदेव..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपों की थाली, छटा निराली, जिन मंदिर आलोक करें।
हम दीप चढ़ायें, आरती गायें, केवल रवि आलोक वरें।।
जिनदेव हमारे, हम तुम द्वारें, पूजन करने नित आयें।
हे नाथ ! तिराओ, पार लगाओ, हम भी तुम सम गुण पाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्म रुलाये, भ्रमण कराये, चारों गति में भरमाये।
हम धूप चढ़ायें, प्रभु को ध्यायें, कर्म नशा शिवसुख पायें।। जिनदेव..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ले हरे–हरे फल, हरें करम मल, मधुर–मधुर फल लाते हैं।
शिवसुख भंडारी, सब दुःखहारी, जिनवर को हम ध्याते हैं।। जिनदेव..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनराज हमारे, आप सहारे, भक्त पुकारें भक्ति से।
हम अर्घ चढ़ायें, ताल बजायें, अर्चें हम निज शक्ति से।। जिनदेव..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वैयावृत्त्य भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

आचार्यों की करते सेवा, जिनकी सेवा करते देवा।
इनको हम सब अर्घ चढ़ायें, वैयावृत्त्य भावना भायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य जाति वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय की वैयावृत्ति, देती उन सम ज्ञान प्रवृत्ति।। इनको..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय जाति वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु होते बड़े तपस्वी, ध्यान लीन वे श्रेष्ठ मनस्वी।। इनको..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तपस्वी जाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शैक्ष्य गुरु नित शिक्षा देते, रत्नत्रय की शिक्षा देते।। इनको..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शैक्ष्य जाति मुनि वैयावृत्त्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्लान मुनि रोगी कहलाये, इनकी सेवा रोग मिटाये।
इनको हम सब अर्घ चढ़ायें, वैयावृत्य भावना भायें॥5॥
ॐ ह्रीं श्री ग्लानजाति मुनि वैयावृत्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मुनिगण के गणनायक स्वामी, चार संघ के ये हैं स्वामी॥ इनको..॥6॥
ॐ ह्रीं श्री गणजाति मुनि वैयावृत्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कुल जाति उत्तम कुल वाले, मुनि जिन धर्म बढ़ाने वाले॥ इनको..॥7॥
ॐ ह्रीं श्री कुलजाति मुनि वैयावृत्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करें चतुर्विध संघ की सेवा, इनकी सेवा देती मेवा॥ इनको..॥8॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विध संघजाति वैयावृत्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करें साधुओं की हम पूजा, जिनको तीन लोक ने पूजा॥ इनको..॥9॥
ॐ ह्रीं श्री साधुजाति मुनि वैयावृत्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कोई श्रमण मनोज्ञ कहाते, हम सब द्रव्य मनोज्ञ चढ़ाते॥ इनको..॥10॥
ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञजाति मुनि वैयावृत्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शंभु छंद)

द्वादश तप में वैयावृत्ति, आभ्यन्तर तप कहलाता है।
वैय्यावृत्ति जो नित करता, वो तीर्थंकर बन जाता है॥
निर्ग्रन्थ श्रेष्ठ सब श्रमणों की, सेवा जिनने है सिखलायी।
वसुविधी द्रव्यों की थाल चढ़ा, हमने प्रभु की महिमा गायी॥
ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सब प्राणी संसार के, होवें सदा निरोग।
शांतिधार करके प्रभू, धारूँ मैं शुभ योग॥ शांतये शांतिधारा।

दोहा– वकुल मालती केवड़ा, औ चंपादिक फूल।
प्रभु के चरणों में चढ़ा, पाऊँ चरणन् धूल॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– वैयावृत्ति तप करे, गुरु पे आस्था धार।
जयमाला गुणगान से, करें आत्म उद्धार॥

(अवतार छंद) (तर्ज–चौबीसों श्री जिनचंद...)

वैयावृत्ति गुणखान, धरम का मूल कहा।
वैयावृत्ति सुखखान, मिलती शांति जहाँ।।
जो करे गुरु की सेव, शिव सुख पाते हैं।
वैयावृत्ति के भेद, गुरु बतलाते हैं।।1।।
सूरि पाठक मुनिराज, तप निधी शैक्ष्य मुनि।
या ग्लान श्रमण गुरुराज, गणकुल आदि मुनि।।
मुनि आर्या आदि संघ, इनकी भक्ति करे।
साधु मनोज्ञ हैं वंद्य, भव से पार करें।।2।।
वैयावृत्ति का सार, प्रभु ने बतलाया।
मिलता मुक्ति का द्वार, सबको समझाया।।
त्यागें ग्लानि का भाव, वैयावृत्ति करें।
वात्सल्य प्रेम सद्भाव, मन में प्रगट करें।।3।।
तीर्थंकर पूर्व अपूर्व, वैयावृत्ति करें।
पांडु सुत मजले भीम, वैयावृत्ति करें।।
इससे विष अमृत रूप, हो उदरस्थ करे।
मुनि को दे औषध दान, मोक्ष महान् वरें।।4।।
जो करते वैयावृत्त, वो अर्हंत बने।
या बन तीर्थंकर देव, त्रिभुवन पूज्य बने।।
हम तजें मान दुर्भाव, वैयावृत्य करें।
मन में धर वत्सल भाव, 'आस्था' मोक्ष वरें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्त्य भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्हद् भक्ति भावना पूजा

(गीता छंद)

हे वीतरागी ! सर्वज्ञाता, केवली अरहंत जिन।
रागादि अठदस दोष विरहित, पूजते हम रात–दिन।।
चऊ घातिया का नाशकर, अरहंत पद को पा लिया।
आओ विराजो मम हृदय, आह्वान पुष्पों से किया।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

केवलज्ञानी अरहंत देव, सर्वज्ञ हितैषी कहलाते।
उनके चरणों में नीर चढ़ा, हम त्रय रोगों को विनशाते।।
अरहंत नाम मंगलकारी, उत्तम है शरणागत जग में।
पाँचों पद में अरहंत प्रथम, यह नाम जपें हम नित मन से।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन की होती है, बरसात नाथ के चरणों में।
हम भी चंदन का लेप करें, जिनराज आपके चरणों में।। अरहंत...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत प्रभु अक्षयदानी, सब जीवों का कल्याण करें।
हम अक्षत पुंज चढ़ा प्रभु को, अक्षय पद का वरदान वरें।। अरहंत...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा विष्णु हरि वा महेश, ये काम रिपु से हार गये।
हम पुष्प चढ़ाते हैं उनको, जिनसे कामादिक् हार गये।। अरहंत...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये क्षुधा कर्म भगवन् हमको, चारों गति में भटकाता है।
जो नेवज नित्य चढ़ाता है, वो क्षुधा रोग विनशाता है।। अरहंत...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्ज्ञान दिवाकर तीर्थंकर, श्री समवशरण में शोभ रहे।
हम करें आरती नृत्य करें, प्रभु भक्तों के मन लोभ रहे।।
अरहंत नाम मंगलकारी, उत्तम है शरणागत जग में।
पाँचों पद में अरहंत प्रथम, यह नाम जपें हम नित मन से।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने ध्यानानल के द्वारा, सब कर्म समूह जलाये हैं।
हे वीतराग ! परमात्म देव, हम धूप चढ़ाने आये हैं।। अरहंत...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत प्रभु के सुमिरण से, शाश्वत शिव पट खुल जाते हैं।
शिवफल पाने तुमसे भगवन्, हम फल के गुच्छ चढ़ाते हैं।। अरहंत...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक लक्ष्मीधारी भगवन्, क्षायिक दानी क्षायिक ज्ञानी।
हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं, जो हैं अनर्घ्य पद के दानी।। अरहंत...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हद् भक्ति भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

पहला प्रातिहार्य शुभ, तरु अशोक कहलाय।
उनके नीचे राजते, श्री जिनेश मन भाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि सुरपति करे, समवशरण में जाय।
सर्व पुष्प सीधे गिरें, यह अतिशय कहलाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि जिनराज की, मोक्षमार्ग दर्शाय।
उस वाणी को हम भजें, समवशरण में आय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनि प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् जिन पर यक्षगण, चौंसठ चँवर ढुराय।
ऐसे श्री अरिहंत को, हम पूजें मन लाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चामर प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आसन से ऊपर अधर, बैठे श्री जिनराज।
उनकी हम अर्चा करें, भक्ति भाव से आज।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सिंहासन प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामंडल प्रभु आपका, भव दिखलाये सात।
इससे ही प्रभु द्वार में, नहि होते दिन-रात।।6।।

ॐ ह्रीं श्री भामंडल प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों द्वारा दुंदुभि, बजती प्रभु के द्वार।
उनकी हम पूजा करें, जो जग तारणहार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री दुंदुभि प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र तीन जिनराज के, शोभ रहे मनहार।
त्रिभुवनपति की अर्चना, करता है संसार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी नाशकर, पाया ज्ञान अनंत।
हम विधान उनका करें, पाने ज्ञान अनंत।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतज्ञान सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण नश, पाया दर्श अनंत।
विधिवत् हम पूजें प्रभो !, पाने दृष्टि अनंत।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतदर्शन सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय को नाशकर, पाया सौख्य अनंत।
ऐसे जिन को हम भजें, पाने सौख्य अनंत।।11।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतसुख सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अंतराय को नाश जिन, पायें वीर्य अनंत।
उनकी पूजा हम करें, पाने वीर्य अनंत।।12।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतबल सहित अर्हद् भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शंभु छंद)

णवकार मंत्र में पहला पद, अरहंत प्रभु का आता है।
अरिहंत प्रभु के सुमिरन से, सब दुःख संकट कट जाता है।।
अरहंत भावना कहती है, अरिहंत प्रभु का जाप करें।
अरिहंत देव के चरणों में, सब पूजन पाठ विधान करें।।

ॐ ह्रीं श्री अष्ट प्रातिहार्यानिन्तचतुष्टयसहित अर्हद् भक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्री अर्हत् जिन हो जहाँ, सुख–शांति चहुँ ओर।
अमृत की वर्षा वहाँ, नाचे भवि मन मोर।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– चरण धरें प्रभुवर जहाँ, स्वर्ण कमल खिल जाय।
षट् ऋतु के बहु फूल ले, पुष्पांजलि चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– अरिहंत जिनेशा, नमत सुरेशा, गुण कीर्त्तन शत इन्द्र करें।
जयमाला गायें, माल चढ़ायें, भक्ति भाव से नृत्य करें।।

(जोगीरासा छंद)

जय–जय श्री अरिहंत जिनेश्वर, गुण अनंत के धारी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, जग मंगल उपकारी।।
समवरण के तुम हो स्वामी, इन्द्र खड़ें नित द्वारे।
जिनपे चौसठ चँवर ढुरें नित, वो अरिहंत हमारे।।1।।

केवली श्रुत केवली के सम्मुख, भव्य भावना भावे।
इन्हीं भावना के कारण वो, तीर्थंकर पद पावे।।
सम्यक् दर्शन ही प्राणी को, तीर्थंकर बनवाता।
त्रयविध सम्यग्दर्शन द्वारा, मिथ्यातम नश जाता।।2।।
चारों गति में समकित गुण के, हेतु अनेक बताये।
संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य सुदृष्टि पाये।।
एक बार समकित जो पाये, मोक्ष अवश वो पाये।
अर्हंतों के गुण अपनाकर, खुद अर्हत् बन जाये।।3।।
गोप सुभग अर्हत् भक्ति से, बने सुदर्शन ज्ञानी।
अकृतपुण्य जपें अरहंतं, बने मुनि महा ध्यानी।।
इंद्रभूति ने जिन अर्चा से, गणधर पद को पाया।
सेठ धनंजय ने भी इससे, सुत का जहर मिटाया।।4।।
श्री अरिहंत देव की श्रद्धा, अर्हत् सिद्ध बनाये।
अरहंतों के शाश्वत सुख को, अर्हंतों से पायें।।
चार घातिया कर्म नाशकर, चार चतुष्टय पायें।
चौंतिस अतिशय धारी जिन को, प्रातिहार्य चढ़ायें।।5।।
चारों पुरुषार्थों की सिद्धी, अर्हत् देव करायें।
ऐसे श्री अरिहंत नाथ की, हम भी भक्ति रचायें।।
रत्न रजत कंचन के सुन्दर, मंगल द्रव्य चढ़ायें
अरिहंतों को वंदन करके, 'आस्था' श्रेष्ठ बनाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् भक्ति भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आचार्य भक्ति भावना पूजा

(अडिल्ल छंद)

छत्तीस गुणधारी आचार्य महान् हैं।
चलते फिरते तीरथ ये भगवान हैं।।
दीक्षा शिक्षा दाता धर्म ध्वजा धरें।
इनका हम आह्वान करें पूजा करें।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

नीर क्षीर से गुरु पद हम प्रक्षालते।
गुरु हमारे तीन रोग परिहारते।।
गुरु के चरणों में आकर वंदन करें।
ढ़ोल मृदंग बजाकर हम अर्चन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कपूर मिलाकर चरणों में लगा।
गुरु पग रज से भक्तों का जीवन रंगा।। गुरु...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पदवी पाने गुरु त्यागी बने।
गुरु चरणों के हम भी अनुरागी बने।। गुरु...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि से जीवन पुष्पों सम खिले।
बढ़े भाग्य से हमें गुरु के चरण मिले।। गुरु...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगण भी जिनके तप की चर्चा करें।
उन गुरुओं की व्यंजन से अर्चा करें।। गुरु...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवाणी पे हम सच्ची श्रद्धा करें।
करें आरती ज्ञान ज्योति गुरु से वरें।।
गुरु के चरणों में आकर वंदन करें।
ढ़ोल मृदंग बजाकर हम अर्चन करें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पहुँचे गुरुवर कर्म नाश शिव लोक में।
धूप चढ़ा हम भी पहुँचे उस लोक में।। गुरु...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष लक्ष्मी वरने जो मुनिव्रत धरें।
सरस फलों से हम उनकी पूजन करें।। गुरु...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ चढ़ाया हमने गुरुवर आपको।
सदा करें गुरु अर्चा ये आशीष दो।। गुरु...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य भक्ति भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

बारह तप के अर्घ (दोहा)

अनशन तप को धारते, श्री आचार्य महान्।
छत्तीस गुण धर सूर्य का, करते भव्य विधान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनशन तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊनोदर तप धारते, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अवमौदर्य तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रतपरिसंख्या तप धरें, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतपरिसंख्यान तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस परित्याग सुतप धरें, श्री आचार्य महान्।
छत्तीस गुण धर सूर्य का, करते भव्य विधान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्याग तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्तशय्यासन धरें, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशय्यासन तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायक्लेश सुतप धरें, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेश तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रायश्चित्त तप को धरे, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्त तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय महातप को धरें, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विनय तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्त्यसुतप धरे, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वैय्यावृत्त्य तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते नित स्वाध्याय तप, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।10।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्याय तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायोत्सर्ग सुतप धरें, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।11।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्ग तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान तपस्या नित करें, श्री आचार्य महान्।। छत्तीस...।।12।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यान तपयुत आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म के अर्घ (दोहा)

उत्तम क्षमा धरें गुरु, क्षमा भाव के साथ।
हम उन गुरुओं को भजें, जोड़ें दोनों हाथ।।13।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म धर, करें मान का नाश।
ऐसे गुरु को हम भजें, करने मोह विनाश॥14॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आर्जव धर्म धर, कर माया का नाश।
उन गुरुओं को हम भजें, पाने ज्ञान प्रकाश॥15॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शौच धर्म उत्तम धरें, हरें लोभ का पाप।
पाप रहित आचार्य का, करते हम नित जाप॥16॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य धर्म उत्तम धरें, कहें सत्य भगवान।
सत्य व्रती आचार्य ही, बन जाते भगवान॥17॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धारते, पीछी कमण्डल साथ।
ऐसे श्री आचार्य को, सदा झुकायें माथ॥18॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तप पालें गुरु, कर इच्छा का रोध।
उन गुरुओं को हम भजें, पाने आतम बोध॥19॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग धर्म उत्तम धरें, त्यागी जैनाचार्य।
उन आचार्यों को भजें, सिद्ध होय सब कार्य॥20॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धरम, धरें श्रेष्ठ सूरीश।
उनको हम पूजें सदा, इक दिन बने मुनीश॥21॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य उत्तम धरें, ब्रह्म स्वरूप दिखाय।
श्री आचार्य इसे धरें, उनकी भक्ति रचाय॥22॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मसहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक के अर्घ (दोहा)

सुख दु:ख में समता धरे, धीर वीर गुरुराय।
उनको अर्घ चढ़ाय हम, सच्ची प्रीत लगाय॥23॥

ॐ ह्रीं श्री सामायिक आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवदेवों की श्रेष्ठतम, स्तुति करें त्रिकाल।
उनको हम ध्यायें सदा, पूजें नित्य त्रिकाल॥24॥

ॐ ह्रीं श्री स्तव आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन आवश्यक करें, श्री आचार्य त्रिकाल।
प्रभु के लघुनंदन गुरु, वंदन उन्हें त्रिकाल॥25॥

ॐ ह्रीं श्री वंदना आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें गुरुवर प्रतिक्रमण, पाक्षिक वार्षिक आदि।
निज आतम को शुद्धकर, नाशें कर्मन व्याधि॥26॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यानी सूरिवर, करें नित्य नव त्याग।
उनको हम निशदिन भजें, कर उनसे अनुराग॥27॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय प्रति उत्सर्ग ही, कायोत्सर्ग कहाय।
ये कृतिकर्म गुरू करें, हम उनको नित ध्याय॥28॥

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्ग आवश्यक सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार के अर्घ

(दोहा)

ज्ञानाचार धरें सदा, श्री आचार्य महान्।
उनकी हम पूजा करें, दो गुरु हमको ज्ञान॥29॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें दर्शनाचार नित, श्री आचार्य महान्।
उनको हम पूजें सदा, करने निज कल्याण॥30॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शनाचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरें चारित्राचार जो, देते चारित दान।
सम्यक् चारित का हमें, दो गुरुवर वरदान॥31॥
ॐ ह्रीं श्री चारित्राचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपाचार धारण करें, करें तपस्या घोर।
तपधारी आचार्य ये, नाशें कर्मन् चोर॥32॥
ॐ ह्रीं श्री तपाचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्याचार धरें गुरु, आत्म वीर्य प्रगटाय।
उनकी भक्ति हम करें, गुरु सम शक्ति जगाय॥33॥
ॐ ह्रीं श्री वीर्याचार सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्ति के अर्घ

(दोहा)

मनोगुप्ति धारी गुरु, मन में रखें न चाह।
उन गुरुओं को हम भजें, मन में रख उत्साह॥34॥
ॐ ह्रीं श्री मनोगुप्ति सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन गुप्ति पालें गुरु, मुख अमृत बरसाय।
उन गुरुओं को हम भजें, आठों द्रव्य चढ़ाय॥35॥
ॐ ह्रीं श्री वचनगुप्ति सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय गुप्तिधारी गुरु, तन का छोड़ें मोह।
उन गुरुओं को पूजकर, नाश करें हम मोह॥36॥
ॐ ह्रीं श्री कायगुप्ति सहित आचार्य भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

आचार्य भक्ति भावना को अर्घ चढ़ायें।
उनके चरण में बैठ अपना भाग्य जगायें।।
सन्मार्ग दिवाकर गुरु आचार्य हमारे।
हम झूम-झूम भक्ति करें उनको पुकारें।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जब तक गुरु संसार में, रहें चन्द्र रवि आग।
आचार्यों की भक्ति से, जागे मम सौभाग्य।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पंकज भी खिलते वहाँ, जहाँ गुरु नित होय।
गुरु के पावन चरण में, वो भी पुलकित होय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- श्री आचार्य मुनीन्द्र की, गाऊँ मैं जयमाल।
वे सद्गुण की खान हैं, करते मालामाल।।

(जोगीरासा छंद)

छत्तीस मूलगुणों के धारी, पंचाचार विहारी।
मुनियों के आचार्य गुरु के, चरणन् ढ़ोक हमारी।।
चार संघ के नायक गुरुवर, शिक्षा दीक्षा दाता।
लालन पालन करने वाले, जैनागम के ज्ञाता।।1।।

द्वादश तप का पालन करते, क्षमा आदि गुण धारें।
उत्तम क्षमा मृदु आर्जव से, क्रोधादिक परिहारें।।

शौच सत्य संयम के आगे, पाप नहीं रुक पाते।
इनकी त्याग तपस्या को लख, पापी भी झुक जाते।।2।।

तप है उत्तम त्याग अनूपम, आकिंचन व्रत प्यारा।
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ है, ब्रह्मचर्य व्रत न्यारा।।
राग-द्वेष तज समता धारें, षट् आवश्यक पालें।
दशविध भक्ति में निशदिन वे, तत्पर रहने वाले।।3।।

कभी वंदना संस्तव करते, तन से ममता छोड़ें।
बाईस परिषह जेता गुरुवर, कभी ना समता छोड़ें।।
नाना विध उपसर्ग सहन कर, हो मेरुवत ध्यानी।।
धीर वीर गंभीर गुरु की, मुद्रा लगे सुहानी।।4।।

चंद्रगुप्त ने भद्रबाहु की, ऐसी भक्ति रचायी।
जंगल में आहार कराते, सुरगण बने सहायी।।
श्रुतसागर मुनि गुरु आज्ञा से, ऐसा ध्यान लगाये।
चारों मंत्री वार करें पर, मुनि को मार न पाये।।5।।

घाति अघाति कर्म नशाने, नौका बन वे तारें।
रत्नत्रय है भूषण जिनका, त्रय गुप्ति जो धारें।।
सकल संघ से सहित गुरुवर, मोक्षमार्ग के नेता।।
'आस्था' उनको निशदिन पूजे, बनने कर्म विजेता।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

बहुश्रुत भक्ति भावना पूजा

(गीता छंद)

पाठक ऋषि मुनिराज का, पढ़ना पढ़ाना काम है।
शिक्षा सदा दें शिष्य को, उनको विशेष प्रणाम है।।
पच्चीस गुणधारी गुरु, उनका यहाँ आह्वान है।
ज्ञानी गुरु की अर्चना, देती हमें श्रुतज्ञान है।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

सुन्दर घट में जल लायें, गुरु पद प्रक्षाल करायें।
छम-छम-छम घुंघरु बाजे, भक्तों का मनवा नाचे।।
बहुश्रुत भक्ति को भायें, पाठक ऋषिवर को ध्यायें।
जो पूजा श्रेष्ठ रचायें, वो तीर्थंकर बन जायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणन् गंध लगायें, गुरु पाप ताप विनशायें।
पाठक गुरुवर को पूजें, उनका नभ में जय गूँजे।। बहुश्रुत...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का क्षय करते जो, अक्षय पदवी वरते वो।
श्वेताक्षत पुंज चढ़ायें, अक्षय अखंड पद पायें।। बहुश्रुत...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों सा मन गुरु धारें, हम आये उनके द्वारे।
जल थल के कुसुम चढ़ायें, मन बाग-बाग हो जायें।। बहुश्रुत...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रबड़ी व खीर पकौड़ी, पेड़ा लड्डू व कचौड़ी।
गुरुवर को नित्य चढ़ायें, हम क्षुधा कर्म विनशायें।। बहुश्रुत...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चमके ज्यों चाँद सितारे, दीपों संग आये द्वारे।
हे ज्ञान सूर्य ! गुरुदेवा, मिथ्यात्व तिमिर हर लेवा।।
बहुश्रुत भक्ति को भायें, पाठक ऋषिवर को ध्यायें।
जो पूजा श्रेष्ठ रचायें, वो तीर्थंकर बन जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु शुद्ध बुद्ध पद पायें, उनकी हम भक्ति रचायें।
प्रतिपल उनके गुण गायें, संग सुरभित धूप चढ़ायें।। बहुश्रुत...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आई भक्ति की बेला, गुरु के दर लगता मेला।
हम लाये श्रीफल केला, गुरु हर लो कर्म झमेला।। बहुश्रुत...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक द्रव्य सजायें, भावों से अर्घ चढ़ायें।
पाठक बहुश्रुत विज्ञानी, गुरु हमें बनाओ ज्ञानी।। बहुश्रुत...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत भक्ति भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

मुनियों के आचार्य को, कहता आचारांग।
इसकी हम पूजा करें, पाने आचारांग।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आचारांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय धर्म व्यवहार को, कहता सूत्र कृतांग।
इसकी पूजा हम करें, जानें सूत्र कृतांग।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सूत्र कृतांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर वस्तु स्थान को, कहता स्थानांग।
अष्ट द्रव्य को हाथ ले, पूजें स्थानांग॥3॥

ॐ ह्रीं श्री स्थानांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र समवाय को, कहता समवायांग
नीरादिक वसु द्रव्य ले, पूजें समवायांग॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समवायांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साठ हजार प्रश्न का, उत्तर दे यह अंग।
व्याख्याप्रज्ञप्ति भजें, पानें प्रभु का संग॥5॥

ॐ ह्रीं श्री व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के वैभव को कहे, ज्ञातृधर्म कथांग।
तीर्थंकर प्रभु को भजें, जाने ज्ञातृ कथांग॥6॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञातृधर्मकथांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपासकाध्ययनांग में, मिले श्रावकाचार।
उसी अंग को हम भजें, समझे वह आचार॥7॥

ॐ ह्रीं श्री उपासकाध्ययनांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के काल में, मुनिवर सह उपसर्ग।
अन्तकृद्दशांग को, चढ़ा रहे हम अर्घ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अंतकृत्दशांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग अनुत्तरपाद में, वर्णित मुनि उपसर्ग।
उन मुनियों व अंग को, चढ़ा रहे हम अर्घ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अनुत्तरोपपादिकदशांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्न व्याकरण अंग भी, कहे कथायें चार।
उसी अंग को हम भजें, नष्ट होय गति चार॥10॥

ॐ ह्रीं श्री प्रश्न व्याकरणांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म फलों को कह रहा, श्री विपाक सूत्रांग।
अर्घ चढ़ायें भाव से, जाने श्रुत सर्वांग॥11॥

ॐ ह्रीं श्री विपाकसूत्रांग सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यय उत्पाद व ध्रौव्य को, कहे पूर्व उत्पाद।
बहुश्रुत भक्ति भावना, कहती नय उत्पाद॥12॥

ॐ ह्रीं श्री उत्पाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रायणीय पूर्व में, द्रव्य तत्व का ज्ञान।
पूजें हम इस अंग को, हो हमको सद्ज्ञान॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अग्रायणी पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपो द्रव्य गुण वीर्य को, कहे वीर्यानुवाद।
स्वात्म दृष्टि हमको मिले, छोड़ें वाद-विवाद॥14॥

ॐ ह्रीं श्री वीर्यानुप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति प्रवाद दे, सप्त भंग का ज्ञान।
उसको पूजें आज हम, जानें श्रुत विज्ञान॥15॥

ॐ ह्रीं श्री अस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ ज्ञान को जो कहें, वो है ज्ञान प्रवाद।
हम पूजें इस अंग को, पाने ज्ञान प्रवाद॥16॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दों का वर्णन कहे, दस प्रकार के सत्य।
सत्य प्रवाद को पूज हम, छोड़ें सर्व असत्य॥17॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म प्रवाद पूर्व में, निज स्वरूप का ज्ञान।
उसका करें विधान हम, करने निज कल्याण॥18॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म प्रवाद पूर्व ये, कहे उदय व बंध।
कर्म काटने हम करें, पूजा भक्ति प्रबंध॥19॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मप्रवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान यही कहे, करो यथाक्रम त्याग।
सर्व द्रव्य ले हम जजें, हो प्रभु से अनुराग॥20॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु विद्या है सात सौ, महा पाँच सौ होय।
उसकी अर्चा हम करें, आत्म सिद्धि मम होय॥21॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यानुवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक नाथ के, करते नित कल्याण।
भज कल्याण प्रवाद हम, करें आत्म कल्याण॥22॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औषध विद्या दे रहा, श्रुत प्राणानुवाद।
इसकी ईज्या हम करें, मेटें रोग प्रवाद॥23॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणानुवाद पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीत कला संगीत को, कहता क्रिया विशाल।
इसकी अर्चा हम करे, जानें क्रिया विशाल॥24॥

ॐ ह्रीं श्री क्रियाविशाल पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कला बहत्तर को कहे, लोकबिन्दु श्रुत सार।
पाठक गुरु सब पाठ कर, करें भवार्णव पार॥25॥

ॐ ह्रीं श्री लोक बिन्दुसार पूर्व सहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

बहुश्रुत धनी मुनीश का, सम्मान हम करें।
पाठक ऋषि की भक्ति से, सद्ज्ञान हम वरें॥
इस भावना को भायें, ज्ञान ज्योति जलायें।
सुज्ञान रत्न पाने, अष्ट द्रव्य चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जैनागम के सूत्र को, तीन गुप्ति से धार।
निर्मल जल से हम करें, प्रभु चरणों में धार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– पाने बहुश्रुत ज्ञान को, दृढ़ श्रद्धा मन धार।
प्रभु के पद में हम करें, सुमनाजंलि मनहार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– बहुश्रुत की भक्ति, देती मुक्ति, सम्यक्ज्ञान प्रकाश करे।
मिथ्यात्व नशाये, ज्ञान जगाये, उसकी हम जयमाल पढ़ें।।

(काव्य छंद)

बहुश्रुत भक्ति रचाय, बहुविधि पुण्य कमायें।
ज्ञानी गुरु के पास, सूत्र ज्ञान के पायें।।
जिनवाणी है शास्त्र, उसको गुरु बतायें।
बिना गुरु लवलेश, सूत्र समझ न आये।।1।।
अनेकांत का सार, स्याद्वाद कहलाता।
सत्य अहिंसा रूप, जैनधर्म कहलाता।।
जीव मात्र से प्रेम, करना सीखो प्राणी।
दया धरम का सार, कहती है जिनवाणी।।2।।
त्यागें पाँचों पाप, सप्त व्यसन को छोड़ें।
पंच उदम्बर त्याग, त्रय मकार हम छोड़ें।।
आठ गुणों को पाल, अष्ट अंग को धारें।
देव–शास्त्र–गुरु तीन, इन पे श्रद्धा धारें।।3।।
पाप बंध के हेतु, प्रभु ने पाँच बताये।
मिथ्या अविरति आदि, चारों गति भटकाये।।

हो प्रमाद आधीन, प्राणी पाप कमाता।
पंचेन्द्रिय में लीन, फूला नहीं समाता।।4।।

पापारंभ कषाय, करें जीव अज्ञानी।
करके चार कषाय, भूले वो जिनवाणी।।
जाने व अनजान, भव का भ्रमण बढ़ाये।
अब हम तज अज्ञान, बहुश्रुत भक्ति रचायें।।5।।

द्वादशांग धर श्रेष्ठ, पाठक बहुश्रुत ज्ञानी।
अंग चतुर्दश इष्ट, अंग भौम विज्ञानी।।
गुरु का सन्निध पाय, सूत्र ज्ञान के पायें।
ज्ञानदीप की ज्योत, हम निज में प्रगटायें।।6।।

कोंडेश गोपाल, बहुश्रुत भक्ति रचायें।
कुंदकुंद आचार्य, बहुविध शास्त्र रचायें।।
नगर सेठ सुकुमाल, सुनते ही जिनवाणी।
सहे घोर उपसर्ग, बनकर मुनिवर ध्यानी।।7।।

मन में धर बहुमान, जिनवाणी अपनायें।
आगम का कर ज्ञान, सच्ची भक्ति जगायें।।
'आस्था' से हम मात!, समिति गुप्ति अपनाये।
बहुश्रुत भक्ति विचार, केवलज्ञान जगायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रवचन भक्ति भावना पूजा

(दोहा)

प्रवचन भक्ति भावना, सम्यक् दीप जलाय।
अर्हन्तों की पा कृपा, मिथ्या तिमिर नशाय।।
कर में कुसुम सजाय के, करते हम आह्वान।
मन–वच–तन कर जोड़ के, प्रभु को करें प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

इन्द्र शची बनकर करें, प्रभुवर का अभिषेक।
अर्हंतों के चरण में, अपना माथा टेक।।
अर्हंतों के वचन पे, करते हम श्रद्धान।
जिनवर की अर्चा रचा, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रज पाने हम चले, समवशरण में आज।
प्रभु पद में चंदन लगा, सिद्ध करें सब काज।। अर्हंतों के...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ललित मनोहर धवल ले, अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाय।
अर्हंतों की भक्ति से, अक्षय पद मिल जाय।। अर्हंतों के...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि प्रभु पे करें, स्वर्गों के सुर देव।
हम पुष्पों से पूजते, भाग्य जगे स्वयमेव।। अर्हंतों के...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभुवर के दरबार में, लगे भूख ना प्यास।
षट्रस व्यंजन थाल ले, आये प्रभु के पास।। अर्हंतों के...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

केवलज्ञानी आप हैं, दे दो सम्यक् ज्ञान।
करें आरती नाथ की, मिटे तिमिर अज्ञान।।
अर्हंतों के वचन पे, करते हम श्रद्धान।
जिनवर की अर्चा रचा, करते हम गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बुद्ध परमात्मा, अविनाशी चिद्रूप।
अष्ट कर्म को नाशने, तुम्हें चढ़ायें धूप।। अर्हंतों के...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष सुफल की कामना, भव्य जीव नित भाय।
हरे-भरे फल से सदा, प्रभु की भक्ति रचाय।। अर्हंतों के...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मन भक्ति में झूमता, मुख में प्रभु के गीत।
श्रेष्ठ थाल में अर्घ ले, करें प्रभु से प्रीत।। अर्हंतों के...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन भक्ति भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

ग्यारह अंग सहित भजें, प्रवचन चौदह पूर्व।
पूजें प्रवचन भक्ति को, पायें ज्ञान अपूर्व।।1।।

ॐ ह्रीं श्री एकादशांग चतुर्दश पूर्व सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामायिक विधि को कहे, प्रथम प्रकीर्णक भाव।
इसकी हम पूजा करें, पाने समता भाव।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर चौबीस की, स्तुति करें त्रिकाल।
वसुविधि द्रव्य सजाय के, पूजा करें त्रिकाल।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिस्तव प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक प्रभु की स्तुति, वंदन भाव कहाय।
ऐसा वंदन हम करें, प्रभु शीघ्र मिल जाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वंदना प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या के सब दोष को, प्रतिक्रमण विनशाय।
प्रतिक्रमण की अर्चना, हमको पार लगाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहता विनय स्वरूप को, विनय प्रकीर्णक नाम।
विनय भाव से हम भजें, करते सदा प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वैनयिक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित नैमित्तिक हर क्रिया, बतलावे कृतिकर्म।
कृतिकर्म को हम भजें, ये ही सच्चा धर्म।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कृतिकर्म प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवैकालिक कह रहा, मुनियों का आचार।
दशवैकालिक हम भजें, पाने श्रमणाचार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दशवैकालिक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तराध्ययन विशाल है, देता है उपदेश।
परिषह वा उपसर्ग की, कहते विधि जिनेश।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तराध्ययन प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे कल्प व्यवहार श्रुत, करो आचरण योग्य।
पूजें हम इस कल्प को, धारण करने योग॥10॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पव्यवहार प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्णित कल्प्याकल्प्य में, भक्ष्याभक्ष्य आहार।
जैसा भोजन हम करें, वैसा हो आचार॥11॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पाकल्प प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग पुरुषों का आचरण, महाकल्प दर्शाय।
महापुरुष बनते वही, जिसको धर्म सुहाय॥12॥

ॐ ह्रीं श्री महाकल्प प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ निकाय के देव का, जो उपपाद बताय।
पुण्डरीक वह शास्त्र है, पूजें मन वच काय॥13॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों के सब जन्म को, कहे महापुण्डरीक।
करो सदा सत्कर्म को, देता ऐसी सीख॥14॥

ॐ ह्रीं श्री महापुण्डरीक प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष को जो कहे, वो निषद्यका जान।
प्रायश्चित्त विधि कहे, पूजें धर सम्मान॥15॥

ॐ ह्रीं श्री निषद्यका प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

बारह सभा के मध्य खिरे जिन की देशना।
जिनके चरण में राग द्वेष होवे लेश ना॥

सत्यार्थ वाणी लोक में जिनवर की गूँजती।
जिनवाणी को ही सर्व सभा नित्य पूजती।।

ॐ ह्रीं श्री अंग प्रविष्ट अंग बाह्य श्रुत प्रकीर्णक सहित प्रवचन भक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता

जल झारी लाये, धार करायें, सर्व लोक में शांति रहे।
पुष्पों की वृष्टि, सुखमय सृष्टि, पुष्पों सा मन खिला रहे।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जिसने जिनवाणी सुनी, उसका पुण्य विशाल।
गायें प्रवचन भक्ति की, सुन्दर यह जयमाल।।

(शेर छंद)

जिनराज का शुभ नाम ही सुख शांति दिलाये।
श्रद्धा से नाथ आपको हम शीश झुकायें।।
शासन अमर रहे सदा जिनेन्द्र आपका।
चलता रहेगा विश्व में सुनाम आपका।।1।।

जिनराज की शरण में आके देशना सुने।
जिनवाणी सुनकर भक्त मोक्ष राह को चुने।।
हे नाथ ! हमको इष्ट वस्तु दान दीजिये।
संसार के दुःखों से यू उबार लीजिये।।2।।

भयभीत प्राणियों ने नाथ आन पुकारा।
तीनों जगत् में आप सा ना बंधु हमारा।।
तुम नाथ अनाथों के हमें दे दो सहारा।
दरबार साँचा श्रेष्ठ ज्येष्ठ एक तिहारा।।3।।

धरसेन सूरि शास्त्र व जिन धर्म बचायें।
मुनि युग्म को श्रुतज्ञान दे बहु शास्त्र रचायें।।
निकलंक ने इसके लिये बलिदान दे दिया।
अकलंक ने शास्त्रार्थ जीत ज्ञान दे दिया।।4।।

जिनवर ! हमारा समय पाद मूल में बीते।
सद्ज्ञान का प्रसाद भक्त पुण्य से पीते।।
हे नाथ ! आपके समक्ष पाप नशायें।
कर्मों को जीतने ये भक्त ध्यान लगायें।।5।।

जिनराज के समान और कोई ना गुरु।
आशीष लेके नाथ से जीवन करें शुरू।।
गुरुओं के गुरु आपको वन्दन है बार-बार।
'आस्था' भी इसी पुण्य से जाये त्रिलोक पार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आवश्यकापरिहाणि भावना पूजा

(गीता छंद)

जिनदेव ने सत्पथ दिया, जिन भक्ति भव से तारती।
कर्त्तव्य पालन नित करो, कहती यही माँ भारती।।
आवश्यकापरिहाणि का, हम पुष्प से थापन करें।
आह्वान करते भाव से, पूजा करें शिवपुर वरें।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

गंगा सिंधु का नीर, कलशों में लाये।
प्रभु नाम हरे भव पीर, चरणों में आये।।
त्रय रोग मिटे प्रभु द्वार, रत्नत्रय पायें।
हम आये प्रभु के द्वार, प्रभु के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–भव के संचित पाप, भव–भव भटकाये।
हम करें सतत प्रभु जाप, आतप नश जाये।।
चंदन दे शांति अपार, चंदन घिस लायें।। हम आये..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय दानी जगदीश, अक्षय पद देना।
हे तीन लोक के ईश, शाश्वत सुख देना।।
लाये मुक्ता मनहार, तव शरणा आये।। हम आये..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मम हृदय कमल खिल जाय, प्रभु के दर्शन से।
दर्शन विशुद्धि मिल जाय, प्रभु की पूजन से।।
सुन्दर पुष्पों का हार, प्रभु चरणन् लायें।। हम आये..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टादश दोष सताय, जग के प्राणी को।
अरहंत उन्हें विनशाय, बनते ज्ञानी वो।।
पकवान अनेक प्रकार, प्रासुक हम लाये।
हम आये प्रभु के द्वार, प्रभु के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी का ज्ञान, त्रिभुवन अवलोके।
है पाप बड़ा अज्ञान, चहुँगति में रोके।।
दीपोत्सव कर प्रभु द्वार, ज्ञान निधि पायें।। हम आये..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रक पावक में खेय, कर्मों को नाशें।
जिनवर की शरणा लेय, जिनगुण के प्यासे।।
हरने कर्मों की मार, जिनवर को ध्यायें।। हम आये..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूंगीफल आम अनार, श्रीफल हम लाये।
पाने मुक्ति उपहार, प्रभुवर को ध्यायें।।
अनुपम उत्तम रसदार, भर-भर फल लायें।। हम आये..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम द्रव्य भाव के साथ, पूजा करते हैं।
हम अर्घ चढ़ा नत माथ, कीर्त्तन करते हैं।।
साँचा है प्रभु का द्वार, भक्त हृदय गाये।। हम आये..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यकापरिहाणि भावना विधान के अर्घ

दोहा- सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

सामायिक समभाव से, करते मुनि त्रिकाल।
आवश्यकापरिहाणि को, पूजें भक्त त्रिकाल॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सामायिक आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक स्तवन वही, करे प्रभु का पाठ।
प्रभु के भक्ति पाठ से, मिले मोक्ष का ठाठ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवन आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक प्रभु की वंदना, चरणन् माथ झुकाय।
अभिवंदन जिन नाथ को, मन वच तन से ध्याय॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वंदना आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक है प्रतिक्रमण, करें पाप का नाश।
आवश्यकपरिहाणि ये, देती पुण्य प्रकाश॥4॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान अवश करें, रहें त्याग के भाव।
त्याग भावना का न हो, हममें कभी अभाव॥5॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

28 कृतिकर्म में, करते कायोत्सर्ग।
णमोकार नोबार जप, होता कायोत्सर्ग॥6॥

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्ग आवश्यक सहित आवश्यकापरिहाणि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (चौपाई)

षट् आवश्यक जो नित पाले, मोक्ष मार्ग के वे रखवाले।
आवश्यक हम अवश करेंगे, समता धर शिव राह वरेंगे।।
कभी प्रमादी नहीं बनेंगे, दोषों का परिहार करेंगे।
प्रभु अर्चा हम सदा करेंगे, भक्ति से भगवान बनेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– क्षीरोदधि के नीर से, करें प्रभु पे धार।
सर्व लोक में शांति हो, सुखी रहे संसार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– चुन–चुनकर लायें सुमन, चढ़ें प्रभु पद फूल।
प्रभु चरणों के फूल ही, कहलाती पग धूल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– षट् आवश्यक पालते, ऋषि मुनि वा यतिराज।
उनकी यह जयमाल पढ़, पायें शिवपुर राज।।

(शंभु छंद)

जय–जय गुरुवर जय–जय मुनिवर, जय बोलों सारे ऋषियों की।
जय–जय समता धर साधक की, जय बोलों त्यागी यतियों की।।
षट् आवश्यक ये गुरु पालें, कर्मों से छुटकारा पाने।
ऐसे सूरि पाठक मुनि का, गुण गाते हम सद्गुण पाने।।1।।

पहला आवश्यक सामायिक, जो समता भाव जगाता है।
सब राग–द्वेष क्रोधादिक को, अंदर से दूर भगाता है।।

चौबीसों प्रभु की स्तुतियाँ, श्रद्धा पूर्वक गुरुराज करें।
वंदन करते-करते प्रभु को, वे निश्चय से शिवराज वरें।।2।।

प्रतिक्रमण करें पापों को तज, निंदा गर्हा वो नित करते।
नित प्रत्याख्यान करें साधु, जिनगुण पाने तत्पर रहते।।
काया से ममता मोह तजे, णवकार मंत्र को जपते हैं।
जो ध्यान मनन चिंतन करते, उन गुरुओं को हम भजते हैं।।3।।

मेरु सम अटल रहें गुरुवर, परिषह जेता शुचि योग धरें।
रवि के सम्मुख मुख मुद्राकर, आतापन आदिक योग धरें।।
इनकी कठोर चर्या लखकर, वैरी प्राणी सम भाव धरें।
षट् आवश्यक पालन करके, ऐसे मुनिवर शिवलाभ वरें।।4।।

चक्रीश भरत छह आवश्यक, पालन कर निज उत्थान किया।
उत्तम श्रावक मुनि व्रत पाकर, क्षणभर में सब जग जान लिया।।
श्रीराम और सीता सति ने, वन में छह आवश्क पालें।
उससे हर संकट को जीता, मुनि बन वसु कर्म जला डालें।।5।।

हम इनकी अर्चा करते हैं, गुरु नाम मंत्र को जपते हैं।
समता धारी श्री गुरुवर से, समता अमृत रस वरते हैं।।
दश धर्म धरें त्रय गुप्ति वरें, गुणगान गुरु का हम गायें।
गुरुवर पे 'आस्था' करके हम, संसार दुःखों से तिर जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मार्गप्रभावना भावना पूजा

(नरेन्द्र छंद)

पूर्ण करेंगे नाथ कामना, उत्तम भाव हृदय धारें।
जिनवर जैन धरम की जय हो, लगा रहें प्रभु के नारे।।
मोक्षमार्ग के नेता के दर, पुष्पों की थाली लाये।
आओ आओ भगवन् मेरे, आह्वानन करने आये।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

जन्म जरा मृत नाश हो, लाये निर्मल नीर।
रत्नत्रय निधि दान दो, हरो नाथ भव पीर।।
प्रभु पूजा से जागती, भक्तों की तकदीर।
मन मंदिर में बस गई, जिनवर की तस्वीर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन शीतलता करे, हरता भव का ताप।
जिन चरणों की गंध से, मिटते सारे पाप।। प्रभु पूजा...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ले नर्तन करें, मिले प्रभु आशीष।
अक्षय सुख जिससे मिले, ऐसा पद दो ईश।। प्रभु पूजा...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बकुल मालती मोगरा, कमल कुंद कचनार।
जिन पद में अर्पण करें, सुमन सुगंधित हार।। प्रभु पूजा...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

खीर मलाई वा पुड़ी, सजा जलेबी सेव।
क्षुधा रोग को नाशने, पूजा करें सदैव।। प्रभु पूजा...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणिमय घृत के दीप ये, चम–चम करते जाय।
उनको थाली में सजा, प्रभु की आरती गाय।।
प्रभु पूजा से जागती, भक्तों की तकदीर।
मन मंदिर में बस गई, जिनवर की तस्वीर।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जला हम अग्नि में, कर्म समूह नशाय।
तीन लोक के नाथ की, अतिशय भक्ति रचाय।। प्रभु पूजा... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजन से मोक्ष हो, ये आगम की बात।
शिवफल हित जगदीश को, पूजें हम दिन–रात।। प्रभु पूजा... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पद पाया आपने, वीतराग भगवान।
वो ही पद हम भी वरें, करके अर्घ प्रदान।। प्रभु पूजा... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्गप्रभावना भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बने, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

प्रज्ञा मार्ग प्रभावना, ज्ञानी हमें बनाय।
उत्तम मार्ग प्रभावना, धर्म प्रभाव दिखाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेन मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से मार्ग प्रभावना, तप की वृद्धि कराय।
इसकी ये आराधना, तप की प्राप्ति कराय॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तपसा मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानतुंग आदि गुरु, कवित्व शक्ति दिखाय।
करके धर्म प्रभावना, सबको धर्म सिखाय॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कवित्वेन मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ प्रभावना के लिये, करें गुरु व्याख्यान।
उनकी सम्यक् व्याख्या, दे सम्यक् आख्यान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री व्याख्यानेन मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया भट्ट अकलंक ने, छह महीने तक वाद।
करके मार्ग प्रभावना, मेटा सर्व विवाद॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वादेन मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत का संरक्षण करे, ग्रन्थोद्धार कराय।
करते मार्ग प्रभावना, श्रुत पंचमी मनाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री ग्रंथोद्धारेण मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमा सुन्दर बना, मंदिर तीर्थ बनाय।
उनकी अतिशय भक्ति कर, मार्ग प्रभाव बढ़ाय॥7॥

ॐ ह्रीं श्री जिनप्रतिमा निर्माणरूप मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का पंचकल्याण भी, अति उछाव से होय।
पंच परावर्तन मिटे, वह प्रभावना होय॥8॥

ॐ ह्रीं श्री जिन प्रतिमा प्रतिष्ठाकृत मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चऊँ संघों की यात्रा, जो श्रावक करवाय।
करके धर्म प्रभावना, निज का भ्रमण मिटाय॥9॥

ॐ ह्रीं श्री संघ तीर्थ यात्राकृत मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा भव्य विधान कर, गजरथ भव्य चलाय।
जैनधर्म जयवंत हो, यही भावना भाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अनेकपूजा–विधानकृत मार्गप्रभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (चौपाई)

सुप्रभावना मार्ग दिखाये, धर्म किरण घर–घर पहुँचाये।
अंग आठवाँ यह कहलाये, सर्व जगत् में जिनमत छाये।।
जिनशासन जिनगुरु को ध्यावें, यशकीर्ति रवि सम फैलावें।
प्रभु को उत्तम द्रव्य चढ़ायें, पाप नशे बहु पुण्य कमायें।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

मंगल जल के कुंभ लिये हम हाथ में।
विश्व शांति की करें कामना साथ में।।
पुष्पों की पुष्पाञ्जलि जो भविजन करें।
उस प्राणी की पूजा सुरपति भी करें।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– रवि शशि ज्यों चमके, नभ में दमके, युगों–युगों जिनधर्म रहे।
जिनधर्म दिवाकर, ज्ञान प्रभाकर, जयमाला मम कण्ठ रहें।।

(गीता छंद)

उत्तम सुमार्ग प्रभावना, हरती सदा दुर्भावना।
मन में करें सद्भावना, होवे सुधर्म प्रभावना।।

सम्यक्त्व की सोपान है, मिथ्यात्व तम हरती घना।
जिनधर्म की कीर्ति बढ़े, करते यही हम कामना।।1।।
हरिषेण चक्री रथ चला, की धर्म की प्रभावना।
अकलंक वज्रकुमार ने, की श्रेष्ठ धर्म प्रभावना।।
मैना मनोवती चंदना, सतियों ने की प्रभावना।
सीता ने शील सुधर्म से, की लोक सिद्ध प्रभावना।।2।।
तीनों जगत् में यश रहे, हे नाथ ! प्रभुवर आपका।
संसार में बस एक ही, डंका बजे प्रभु नाम का।।
तन मन वचन धन से करें, सब भव्य धर्म प्रभावना।
मंदिर बनावे दान दे, उत्सव करें मन भावना।।3।।
चतुः संघ की सेवा करें, और द्रव्य खर्चें तीर्थ में।
निज शक्ति के अनुसार ही, तन को तपाये तीर्थ में।।
जिनदेव की आज्ञा धरें, निज देह से ममता तजें।
मन से भजें प्रभु नाम को, शुचि ज्ञान मय आतम भजें।।4।।
भवि दान ऐसा दीजिये, अचरज करे संसार ये।
सत न्याय नीति को निभा, बढ़ते चलें जिनमार्ग पे।।
जिनराज की अर्चा करें, पूजा करें उत्साह से।
त्रयगुप्ति वर समता धरें, 'आस्था' धरें शिवराह पे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रवचन वात्सल्य भावना पूजा

(शंभु छंद)

श्रीपति जिनवर की वाणी ही, मंगल प्रवचन कहलाती है।
गणधर गुंथित प्रभु की वाणी, वो जिनवाणी कहलाती है।।
करुणामय अमृत पीने हम, आह्वान उन्हीं का करते हैं।
स्वागत करते हम ईश्वर का, कर में कमलों को भरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

सोने चाँदी माणिक मोती, मिट्टी धातु के कलश भरें।
क्षीरोदधि के तीर्थोदक से, हम श्री जिन का अभिषेक करें।।
प्रवचन वात्सल्य सिखाता है, जो प्राणी मात्र से प्रेम करें।
वो ही तीर्थंकर बनते हैं, हम उनका पूजन पाठ करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित कर्पूर मिला, नाना प्रकार चंदन लायें।
प्रभु के चरणों में गंध लगा, संसार ताप हम विनशायें।। प्रवचन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धवल अखंडित मोती ले, श्री जिनवर की अर्चा करते।
हे नाथ ! तुम्हारे पद युग की, अभिषेक सहित पूजन करते।। प्रवचन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलासन पर प्रभुवर शोभें, केवल लक्ष्मी के जो स्वामी।
सुन्दर ताजे कमलों को ले, हम पूज रहे अन्तर्यामी।। प्रवचन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रभु के चरणों में रहता, उसको ना भूख सताती है।
जो पूजे षट्रस व्यंजन से, उसकी व्याधि मिट जाती है।।
प्रवचन वात्सल्य सिखाता है, जो प्राणी मात्र से प्रेम करें।
वो ही तीर्थंकर बनते हैं, हम उनका पूजन पाठ करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणिमय रत्नों के दीपों से, जिनवर की आरती गाते हैं।
केवलज्ञानी श्री जिनवर से, कैवल्य ज्योत्सना पाते हैं।। प्रवचन... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अगर तगर चंद्रक अंबर, जिन सन्मुख धूप चढ़ाते हैं।
पावक में धूप चढ़ाने से, सम्पूर्ण कर्म जल जाते हैं।। प्रवचन... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजा के फल से ही प्राणी, सम्पूर्ण सुखों को पाते हैं।
हम मोक्ष महाफल पाने हित, प्रभु को फल थाल चढ़ाते हैं।। प्रवचन... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वात्सल्य भावना प्रवचन की, उत्कृष्ट श्रेष्ठ प्रभु की वाणी।
आठों द्रव्यों को लेकर के, सब पूजें प्रभु को श्रद्धानी।। प्रवचन... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रवचन वात्सल्य भावना विधान के अर्घ

दोहा– सोलहकारण भावना, मुक्ति की सोपान।
इन्हीं भावना से बनें, तीर्थंकर भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

देख साधु का रूप, वात्सल्य भाव जगायें।
इनकी भक्ति विशेष, अतिशय पुण्य बढ़ायें।।

प्रवचन वत्सल भाव, इसकी करते पूजा।
इसको हमने आज, अष्ट द्रव्य से पूजा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री साधु–स्नेह रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात आर्यिका श्रेष्ठ, आठबीस गुण धारें।
उनसे गुण अनुराग, करें आज हम सारे।। प्रवचन..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आर्यिका स्नेह रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुल्लक श्रावक श्रेष्ठ, ग्यारह प्रतिमा धारें।
इनसे करके नेह, हम जग मोह निवारें।। प्रवचन..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रावक स्नेह रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात क्षुल्लिका पूज्य, ग्यारह प्रतिमा धारें।
इनको अर्घ चढ़ाय, जग व्यामोह निवारें।। प्रवचन..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्राविका स्नेह रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

वात्सल्य प्रवचन भावना, वात्सल्य गुण सिखला रही।
करुणा दया मन में धरो, माँ शारदा बतला रही।।
उनको विनय उत्साह से, पूर्णार्घ अर्पण कर रहे।
हम भी प्रभु तुम सम बने, यह प्रार्थना नित कर रहे।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विध संघ वत्सलत्व रूप प्रवचन वात्सल्य भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अर्हंतों को जल चढ़ा, पायें शांति अपार।
प्रवचन अर्हत नाथ के, जग में मंगलकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– पारिजात मंदार ये, पुष्पों की दे भेंट।
यही प्रार्थना आप से, नाशें कर्मन खेट।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा– प्रवचन वत्सल भाव, जिनवर की वाणी भली।
पाने आत्म स्वभाव, उसकी जयमाला पढ़ें।।

(शंभु छंद)

हे नाथ ! तुम्हारी वाणी को, हम श्रद्धा से अपनाते हैं।
उस वाणी पे श्रद्धा करके, समकित गुण पुष्ट बनाते हैं।।
हे मैय्या ! तेरे लाल बड़े, उनकी गुण गाथा गाते हैं।
तीर्थंकर के लघुनंदन को, आस्था से शीश झुकाते हैं।।1।।

ज्ञानी ध्यानी ऋषि मुनि यतिवर, अनगार श्रमण सूरिनायक।
ऋद्धि-सिद्धी धारी गुरुवर, सर्वोच्च श्रेष्ठ विद्या दायक।।
जिनवाणी माँ की रक्षा में, जीवन अपना बलिदान किया।
वात्सल्य दिखा साधर्मी पर, उसका सच्चा उत्थान किया।।2।।

धरसेन गुरु ने आगम को, विधिवत मुनियों को सिखलाया।
दो शिष्यों को बुलवा करके, श्रुतज्ञान वृक्ष को फैलाया।।
श्री पुष्पदंत गुरु भूतबली, जिनने की है श्रुत की सेवा।
वो पर्व पंचमी श्रुत का है, पूजें उसको सुर नर देवा।।3।।

श्री कुंदकुंद आचार्य देव, लिख डाले नाना ग्रंथ जहाँ।
उनके आगम को पढ़ने से, मिलता है मुक्ति पंथ यहाँ।।
अकलंक देव आचार्य श्रेष्ठ, जिनवाणी माँ को ध्याते हैं।
निकलंक भाई से भी पहले, श्रुत रक्षा में मिट जाते हैं।।4।।

गुरु समन्तभद्राचार्य श्रेष्ठ, जिनमत का ध्वज फहराते हैं।
कर नमस्कार में चमत्कार, प्रतिमा प्रभु की प्रगटाते हैं।।
विद्यासागर अकिवाट सिद्ध, पाहन पर दिल्ली जाते हैं।
जिनधर्म जिनागम की ताकत, राजा को सहज दिखाते हैं।।5।।

मुनि मानतुंग ने भूपति को, इक जैनधर्म बतलाया था।
जिनसेन आदि आचार्यों ने, आगम का दीप जलाया था।।
इस युग के शांतिसागर जी, माँ जिनवाणी को छपवायें।
जिन तीर्थ मूर्ति की रक्षा हित, जिन सूत्रों को हम अपनायें।।6।।

ये तीर्थंकर की वाणी है, हर प्राणी का कल्याण करें।
मिथ्यात्व मोह का वमन करें, सम्यक् श्रद्धा का पान करें।।
धर समिति गुप्ति बन महाव्रती, हम यही भावना भायेंगे।
धर 'आस्था' प्रभु की वाणी पे, निश्चय से शिव सुख पायेंगे।।7।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन वात्सल्य भावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकायें।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्ध्यादि षोडशकारण भावनायै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा– सोलहकारण पर्व की, पूजा गुण की खान।
जयमाला की माल वर, बन जायें भगवान।।

(नरेन्द्र छंद)

सोलहकारण श्रेष्ठ भावना, उसको हम भी भायें।
इन्हीं भावना से भवि प्राणी, तीर्थंकर पद पायें।।
इनका चिंतन सुख का कारण, सर्व सुखी बनवायें।
मोक्षमार्ग के अभिनेता बन, शिव सुख मार्ग दिखायें।।1।।

जो–जो भी तीर्थंकर बनते, यही भावना भायें।
ऐसे तीर्थंकर जिनवर को, हम सब शीश झुकायें।।
एक भावना का भी चिंतन, तीर्थंकर पद देता।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, मोक्षमार्ग के नेता।।2।।

दर्श विशुद्धि विनय भावना, क्रम–क्रम से हम भायें।
शील व्रतों के अतिचार हर, ज्ञान योग अपनायें।।
धारें उर संवेग भावना, तप वा त्याग बढ़ावें।
करें समाधि सेवा पूजा, राग–द्वेष विनशावें।।3।।

अर्हंतों के गुण कीर्त्तन को, युगों–युगों तक गायें।
आचार्यों की शरणा पाकर, उनके गुण अपनायें।।
बहुश्रुत ज्ञानी पाठक साधु, इनको हम आराधें।
अर्हंतों की वाणी को सुन, क्रोध कषाय विराधें।।4।।

षट् आवश्यक हम नित पालें, सत्पथ को अपनायें।
हो प्रभावना जैनधर्म की, धर्म ध्वजा फहरायें।।

प्रवचनमय वात्सल्य जगाकर, मोक्ष मार्ग प्रगटायें।
एक वर्ष में तीन बार ये, सोलहकारण आये।।5।।

कालभैरवी ने इस व्रत से, तीर्थंकर पद पाया।
सीमंधर तीर्थंकर बनकर, सबको मार्ग दिखाया।।
हम इस व्रत को विधिवत पालें, सर्व सुखों को पायें।
सोलहकारण की जयमाला, 'आस्था' से हम गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

सोलह कारण पुण्य भावना, भव्य जीव ही भावें।
इन्हीं भावना को भाकर वे, तीर्थंकर पद पावें।।
'आस्था' श्री भक्ति भावों से, प्रभु को शीश झुकाये।
समिति गुप्ति व्रत धारण करके, मुक्ति राज हम पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आचार्य अभयनंदी गुरुदेव का अर्घ

(जोगीरासा छंद)

अभयदान में दक्ष मुनीश्वर, जीवों के उपकारी।
भक्ति भाव से पूज रहे हैं, जग में सब नर-नारी।।
अभयनंदी आचार्य ऋषि से, अभयदान वर पाते।
नीर गंध मिश्रित करके हम, उनकी भक्ति रचाते।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री अभयनंदी मुनिराज चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

(कुसुमलता छंद)

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ से, महावीर का लेते नाम।
शांतिनाथ चिंतामणि बाबा, सब जिनवर को करें प्रणाम।।
जिनवाणी गणधर को ध्याकर, मिलती शांति अपरम्पार।
ज्ञानी मुनिवर अभयनंदि को, करते वंदन बारम्बार।।1।।

महावीर कीर्ति के नंदन, श्री कुंथुसागर गुरुराय।
मम दीक्षादाता गुरुवर को, भक्ति भाव से शीश नवाय।।
शिक्षादाता कनकनंदी और, गुप्तिनंदी गुरुवर गुणखान।
सब गुरुओं के श्रीचरणों में, पाया मैंने आगम ज्ञान।।2।।

इस विधान के प्रेरक निश्चय, मुनि महिमासागर तपवान।
वीर वर्ष पच्चिस सौ सैंतिस, आया मेरा पुण्य महान्।।
नगर बड़ौत शांति जिन सम्मुख, आरंभ भादो कृष्णा तीज।
पूर्ण हुआ कार्तिक कृष्णा को, दशमी तिथि धरम की बीज।।3।।

सोलहकारण का व्रत पालो, मुनि बन पाओ मुक्ति धाम।
सोलहकारण से मिलता है, तीर्थंकर का पद अविराम।।
श्री आचार्य गुप्तिनंदी का, मिला मुझे पावन आशीष।
'आस्था' से इन गुरुजनों को, झुका रही हूँ अपना शीश।।4।।

दोहा– ना बुद्धि ना ज्ञान है, नहीं छंद का ज्ञान।
भक्ति के वश में लिखा, प्रभु का भव्य विधान।।

।। इति अलम् ।।

सोलहकारण विधान की आरती

(तर्ज–मेरा मन डोले...)

सोलहकारण, करते पावन, भाये भवि ऋषि मुनिराज रे
हम करें प्रभु की आरतियाँ।

1. जो सोलहकारण को भाते, तीर्थंकर बन जाते।
सोलह स्वप्ने माता देखे, जब प्रभु गर्भ समाते।। जब प्रभु..
सुरपति आते, मंगल गाते, जय जय जय गर्भकल्याण की।
हम करें प्रभु.....

2. जन्मोत्सव की बेला में सब, झूमे–नाचे गायें।
इन्द्र–इन्द्राणी भक्ति करके, अतिशय पुण्य कमायें।। अतिशय...
डमरु बाजे, छम–छम नाचे, जय जन्म त्याग कल्याण की।
हम करें प्रभु.....

3. केवलज्ञानी के चरणों में, घृत के दीप जलायें।
मोह तिमिर को नाशों भगवन्, हम चरणों में आयें।। हम चरणों...
केवलज्ञानी, सबके स्वामी, जय केवलज्ञान कल्याण की।
हम करें प्रभु.....

4. आभा मंडल श्री जिनवर का, सबको पास बुलाता।
शुभ आशीष प्रभु का मिलता, जो नित आरती गाता।। जो नित...
'आस्था' से करें, त्रय गुप्ति वरें, जय जय हो मोक्षकल्याण की।
हम करें प्रभु.....

***

सोलहकारण विधान की आरती

(जय-जय जगदंबे मैय्या..)

जय-जय-जय सोलह कारण, तीर्थंकर पद में कारण।
हम सब उतारें तेरी आरती... हो जिनवर हम सब...

1. सोलहकारण का चिंतन कर, तीर्थंकर बन जायें-2
केवली श्रुतकेवली के पद में, भव्य भावना भायें-2 ऽऽ ओ..
छम-छम-छम घुँघरु बाजे, भक्ति से सुर-नर नाचें..
हम सब उतारें.....

2. दर्श विशुद्धि विनय भावना, आदि जो भी भाये-2
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ वो, तीर्थंकर पद पाये-2 ऽऽ ओ..
महिमा हम इसकी जाने, कीर्ति प्रभुवर की गाने..
हम सब उतारें.....

3. स्वर्ण रजत नाना रत्नों के, दीप जलाकर लायें-2
सोलहकारण के विधान की, आरती करने आयें-2 ऽऽ ओ..
भक्ति के भाव बनाये, 'आस्था' प्रभु के गुण गाये..
हम सब उतारें.....

***

सोलहकारण का चालीसा

दोहा– पाँचों परमेष्ठी प्रभु, चौबीसों भगवान।
जिनवाणी गणधर विभु, देना सम्यक्ज्ञान।।
सोलहकारण पर्व का, चालीसा सुखकार।
चालीसा इसका पढ़े, नमन करें शतबार।।

(चौपाई)

सोलह कारण मंगलकारी, परम विशुद्ध जगत् उपकारी।
जो भाये भविजन संसारी, बनते तीर्थंकर अविकारी।।1।।
केवली श्रुतकेवली के द्वारे, मोह–तिमिर मिथ्यात्व प्रहारें।
द्वादश अंग पूर्ण के पाठी, शीश लगायें इनकी माटी।।2।।
सम्यक् दर्शन दीप जलाते, तीर्थंकर प्रकृति को पाते।
उत्तम साधक सिद्धी पाने, निज आतम को सिद्ध बनाने।।3।।
करुणा सागर करुणा धारें, प्राणी मात्र का भला विचारें।
सबका ही कल्याण करूँगा, सबको भव से पार करूँगा।।4।।
ऐसा वत्सल जिनके होता, वो प्राणी तीर्थंकर होता।
यही भावना मुनिवर भाते, करें समाधि सुर तन पाते।।5।।
दर्श विशुद्धि मन की शुद्धी, विनय भावना देती बुद्धी।
शील भावना शील बढ़ावे, अभीक्ष्ण ज्ञान सुदीप जलावे।।6।।
श्री संवेग वेग विनशावे, त्याग भावना त्याग जगावे।
तप में तपती कंचन काया, साधु समाधि भाने आया।।7।।
वैयावृत्ति करें सदा ही, अरिहंतों को भजें सदा ही।
श्री आचार्य गुरुवर तारें, पाठक ज्ञानी चाँद सितारें।।8।।
प्रवचन है अर्हत् की वाणी, सुनते प्राणी बनते ज्ञानी।
षट् आवश्यक जो नित पाले, खोले वो शिवपट के ताले।।9।।
मार्ग प्रभावना धर्म बढ़ाती, भव्यों को सन्मार्ग दिखाती।
प्रवचन वात्सल्य प्रेम बढ़ाता, शत्रु को भी मित्र बनाता।।10।।

सोलह कारण जो भी भाये, वो तीर्थंकर पद पा जाये।
त्रय लोकों में पूज्य कहावे, सुर-नर-किन्नर शीश झुकावें॥11॥
सोलह स्वप्ने देखे माता, गर्भ कल्याणक इन्द्र मनाता।
जन्म कल्याणक प्रभु का प्यारा, झूम उठा सारा संसारा॥12॥
जब दीक्षा लेने प्रभु जाते, तब लौकान्तिक सुरगण आते।
ध्यान लगा चऊँ घाति नशाते, शत इन्द्रों से पूजे जाते॥13॥
समवशरण के श्री जिन स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।
जो प्रभुवर की शरणा पाते, दुःख संकट उसके मिट जाते॥14॥
भूख-प्यास पीड़ा मिट जाती, यशकीर्ति जग में बढ़ जाती।
श्री स्वामी श्री सबको देते, निर्धन की पीड़ा हर लेते॥15॥
नहीं सतावे व्यंतर बाधा, प्रभु नाम हरले सब बाधा।
अतिशय प्रभु का बड़ा निराला, सुख-समृद्धि शांति वाला॥16॥
मंगल करते जग उपकारी, हरें अमंगल शिव सुखकारी।
तीन लोक हर्षित हो जाता, समवशरण जिस दिश में जाता॥17॥
धरती उपवन सब खिल जाये, सागर नदिया प्रभु को ध्यायें।
ईति-भीति हिंसा मिट जावे, धर्म अहिंसा जग में आवे॥18॥
कर्मनाश प्रभु सिद्ध कहावें, सर्व कार्य में यश मिल जावे।
सुख संपत्ति वैभव दाता, पार लगाना हमें विधाता॥19॥
जिसने जो माँगा मिल जाये, भक्ति पूजा पाठ रचायें।
चालीसा 'आस्था' से गायें, तीन गुप्ति धर शिवसुख पायें॥20॥

दोहा- सोलहकारण पर्व का, चालीसा सुखकार।
करो कराओ भक्ति से, पाओ सौख्य अपार॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख संपदा, बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य-ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

दशलक्षण धर्म स्तवन

(तर्ज–जिनशासनी हंसासनी पद्मासनी माता...)

दश धर्म की, जिनधर्म की जय बोलते जाओ।
जिनराज के चरणों में आओ पुष्प चढ़ाओ।।

1. इक वर्ष में दश धर्म तीन बार मनाये।
उसमें भी भाद्रमास हमें भद्र बनाये।।
तुम नम्र बनो सरल बनो पाप नशाओ।
उत्तम क्षमादि धर्म धार सिद्ध कहाओ।। दशधर्म..

2. क्रोधादि ये कषायें हमें भ्रमण कराये।
ये क्रोध मान लोभ आदि धर्म छुड़ाये।।
ये झूठ कपट दुर्गति का पात्र बनाता।
इक सत्य शौच धर्म हमें पूज्य बनाता।। दशधर्म..

3. संयम बिना ये जीव पशु तुल्य कहाये।
तप त्याग से ही चित्त को पवित्र बनाये।।
मूर्छा की भावना ही पाप पंक बढ़ाये।
आरम्भ परिग्रह तजे वो मोक्ष उपाये।। दशधर्म..

4. उत्तम है ब्रह्मचर्य ब्रह्म रूप दिलाये।
सारे व्रतों में मुख्य ब्रह्मचर्य कहाये।।
इन्हीं व्रतों को श्रद्धा से हम पालते जायें।
मुनिराज बने ज्ञान का सुदीप जलायें।। दशधर्म..

दोहा– दश वर्षों तक व्रत करें, दश दश कर उपवास।
मन में हो 'आस्था' सदा, गुप्ति चित्त निवास।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चौबीस भगवान का स्तवन

दोहा

(हर भगवान की स्तुति के साथ पुष्प चढ़ाना है।)

1. ऋषभदेव वृषभेश जिन, आद्य बंधु आदीश।
आदीनाथ पुरुदेव को, सदा झुकाऊँ शीश।।
चौबीसों भगवान का, रात दिवस ले नाम।
पूजन अर्चन जाप से, सिद्ध होय सब काम।।1।।

2. अजितनाथ की जीत ही, सर्व जगत की जीत।
गणधर इन्द्र न गा सके, प्रभुवर के गुण गीत।। चौबीसों...

3. संभव प्रभु के द्वार पे, संभव होवे कार्य।
लगन लगाओ नाथ से, श्रद्धा धर अनिवार्य।। चौबीसों...

4. अभिनन्दन जिनदेव तुम, त्रिभुवन से अभिनंद्य।
हाथों में लेकर सुमन, नमन करें भविवृन्द।। चौबीसों...

5. सुमतिनाथ की अर्चना, दुर्मति दूर भगाय।
सुमति से सुगति मिले, ऐसी मति हो जाय।। चौबीसों...

6. पद्मनाथ को पद्म से, जो पूजे दिन-रात।
पद्मप्रभु की भक्ति से, पायें सुख सौगात।। चौबीसों...

7. श्री सुपार्श्व के पास में, भक्त सदा सुख पाय।
प्रभु के चरण प्रसाद से, सब संकट मिट जाय।। चौबीसों...

8. चंद्रनाथ के चरण में, चंदन नित्य चढ़ाय।
चन्द क्षणों में चन्द्र जिन, रोग शोक विनशाय।। चौबीसों...

9. पुष्पों से कोमल अमल, पुष्पदंत भगवान।
पुष्पहार से अर्चना, करते भक्त महान्।।
चौबीसों भगवान का, रात दिवस ले नाम।
पूजन अर्चन जाप से, सिद्ध होय सब काम।।

10. शीतलनाथ जिनेन्द्र से, मिला धर्म संदेश।
दश धर्मों को धार लो, काँटों कर्म अशेष।। चौबीसों...

11. मेरु पर जिनका हुआ, जन्म समय अभिषेक।
श्रेयनाथ से श्री मिले, चरणों में सर टेक।। चौबीसों...

12. मंगलमूर्ति आपकी, वासुपूज्य भगवान।
सर्व अमंगल दूर हो, करो प्रभु कल्याण।। चौबीसों...

13. विमलनाथ के नाम से, चित्त विमल हो जाय।
कर्म मलों को नाशके, भक्त विमल बन जाय।। चौबीसों...

14. गुण अनंत के ईश हैं, श्री अनंत जगदीश।
त्रिभुवन तिलक स्वरूप जिन, तुम्हें नमायें शीश।। चौबीसों...

15. धर्मतीर्थ में धर्म की, धर्म ध्वजा फहराय।
धर्मनाथ के ध्यान से, धर्म जगत् में छाय।। चौबीसों...

16. कामदेव चक्रीश हो, शांतिनाथ तीर्थेश।
शांतिनाथ शांति करें, शांत दांत परमेश।। चौबीसों...

17. कुंथुनाथ को है नमन, शत-शत बार प्रणाम।
मदन अरि जेता प्रभु, सदा जपें हम नाम।। चौबीसों...

18. छह खंडों को जीतकर, अरहनाथ भगवान।
धन वैभव को छोड़कर, किया आत्म कल्याण।। चौबीसों...

19. मोह मल्ल के क्लेश को, मल्लिनाथ विनशाय।
उन जिनवर की हम सदा, पूजा भक्ति रचाय।।
चौबीसों भगवान का, रात दिवस ले नाम।
पूजन भक्ति जाप से, सिद्ध होय सब काम।।

20. मुनियों के आधार हो, मुनिसुव्रत भगवान।
मुनिसुव्रत के ध्यान से, शीघ्र मिले भगवान।। चौबीसों...

21. नमिनाथ की भक्ति से, पायेंगे सद्ज्ञान।
बोधि समाधि का हमें, देना प्रभुवर दान।। चौबीसों...

22. बालयति हो तीसरे, धारा तुमने योग।
योगी नेमीनाथ सम, पायें हम चिद्योग।। चौबीसों...

23. महामंत्र नवकार से, नागयुगल को तार।
पार्श्वनाथ चिंतामणि, मधुवन के आधार।।चौबीसों...

24. महावीर औ सन्मति, वर्द्धमान अतिवीर।
पाँच नाम प्रभु आपके, सर्वश्रेष्ठ प्रभुवीर।। चौबीसों...

25. प्रभुवर का इक नाम ही, सबमें मंगलकार।
त्रय गुप्ति युत नमन कर, 'आस्था' हो भव पार।। चौबीसों...

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री दशलक्षण धर्म विधान पूजा

(गीता छंद)

ये धर्म दशलक्षण हमारे, भवदधि से तारते।
उत्तम क्षमादिक धर्म को, परिपूर्ण जिनवर धारते।।
हम भी उसे पालन करें, कल्याणकारी पथ चुनें।
आह्वान पुष्पों से करें, हम आप सम निज अघ हनें।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

प्रभु आपके पावन चरण, पावन करें मम चित्त को।
त्रय रोग से हम मुक्त हो, यह भावना मम चित्त हो।।
उत्तम क्षमा मार्दव धरें, और शौच आर्जव सत्य हो।
तप त्याग संयम ब्रह्ममय, मम धर्म आकिंचन्य हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम–क्षमा–मार्दव–आर्जव–शौच–सत्य–संयम–तप–त्याग–आकिंचन्य–ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अरजी सुनों इस भक्त की, चंदन रहे ज्यों चर्ण में।
हम भी चरण में नित नमें, प्रतिपल रहें तुम शर्ण में।। उत्तम...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा हमारी पूर्ण हो, अरदास प्रभुवर आपसे।
अक्षत चढ़ा अक्षय बनें, माँगें प्रभो बस आपसे।। उत्तम...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि पंचरंगी कमल ये, अर्पित तुम्हारे चरण में।
कामारि शत्रु को हने, हम आ गये प्रभु शरण में।। उत्तम...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मोह जेता ! क्षुत् विजेता, आपको जग पूजता।
प्रासुक बना नैवेद्य ले, मनवा हमारा झूमता।।
उत्तम क्षमा मार्दव धरें, और शौच आर्जव सत्य हो।
तप त्याग संयम ब्रह्ममय, मम धर्म आकिंचन्य हो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढ़ोलक नगाड़े बाजते, लय ताल संग भवि नाचते।
होती प्रभु की आरती, तब पाप डरकर भागते।। उत्तम...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपों के घट की धूप ये, महका रही है दश दिशा।
आठों करम मम नाश हो, पायें प्रभु से शिव दिशा।। उत्तम...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज ने की साधना, वे मोक्ष के स्वामी बने।
रसदार फल से पूजकर, हम जिनचरणगामी बने।। उत्तम...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य की थाली सजा, दश धर्म की माला बना।
प्रभु आपकी पूजा रचा, हम पा गये सुख अनगिना।। उत्तम...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्म पूजाओं के पूर्णार्घ

(जोगीरासा छंद)

त्रस थावर जीवों की रक्षा, महाव्रती ही करते।
सबकी रक्षा करने वाले, पूर्ण अहिंसा धरते।।
क्षमा धर्म के भेद अनेकों, उत्तम क्षमा बढ़ाये।
क्षमा धर्म धर को हम पूजें, शाश्वत शिवसुख पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

मार्दव मान हरे प्राणी का, विनय मोक्ष दिलवाये।
उत्तम मार्दव धारी यति को, वसु विधि द्रव्य चढ़ायें।।
उत्तम मार्दव आत्म धर्म को, विनय सहित हम नमते।
मार्दव धर्म धार श्रद्धा से, हम सब शिव सुख वरते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

माया ठगनी ठगे जगत् को, उस माया को त्यागें।
माया से बचकर मुनि उत्तम, निज आतम अनुरागें।।
उत्तम आर्जव मुनिवर धारें, उनका ध्यान लगायें।
ताल नृत्य संगीत झाँझ संग, पूरण अर्घ चढ़ायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

त्रय लोकों की भोग संपदा, विषय भोग विषकारी।
सर्वश्रेष्ठ सिद्धों का सुख ही, अचल अतुल सुखकारी।।
उत्तम शौच धरम धरणीधर, लोभ पाप विनशायें।
तन-मन की शुचिता को पाने, भक्त भक्ति से ध्यायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

सत्य शिवं सुंदर अनुपम है, सत्य सुखों का सागर।
सत्य देव है सत्य गुरु है, सत्य धरम गुण आगर।।
सत्य धर्म के जिन आगम में, नाना भेद बताये।
उत्तम सत्य धर्म को हम सब, पूरण अर्घ चढ़ायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

इन्द्रिय संयम प्राणी संयम, संयम सुख का साधन।
संयम व संयमधारी का, करते हम आराधन।।
उत्तम संयम धर्म श्रेष्ठतम, ऋषि मुनि गणधर धारें।
पूजन करने अर्घ चढ़ाने, आये हम गुरु द्वारे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

तप में तपकर जिनकी काया, परम शुद्ध बन जाती।
त्यागी संतों की महिमा को, सारी दुनिया गाती।।
उत्तम तप को श्रेष्ठ नरोत्तम, श्रमण महाऋषि धारें।
उनको अर्घ चढ़ाकर हम सब, उन सम तप को धारें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

सच्चे सुख को पाने गुरुवर, धन-वैभव सब त्यागें।
उत्तम त्याग धर्म अपनायें, आत्म निधि अनुरागें।।
उत्तम त्याग धर्म हम पाने, त्याग धर्म को पूजें।
अष्टम वसुधा को हम पायें, अष्ट करम सब छूटें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

मोह करम ही सदा जीव को, राग-द्वेष करवाता।
राग-द्वेष के वश हो प्राणी, चहुँगति कष्ट उठाता।।
उत्तम आकिंचन वृष पाने, गुरु से प्रीत लगायी।
सर्व परिग्रह त्यागी गुरु की, हमने भक्ति रचायी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

दश धर्मों का ये है राजा, ब्रह्मचर्य कहलाये।
मन-वच-काया त्रय गुप्ति से, इसको हम अपनाये।।
ब्रह्म रूप आतम में रत हो, पूर्ण सुखी बन जाते।
उत्तम ब्रह्मचर्य को हम सब, पूरण अर्घ चढ़ाते।।10।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आत्म धर्म जिनधर्म है, धर्म निजात्म स्वभाव।
शांतिधारा हम करें, नश जाये परभाव।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- मदन विजेता नाथ को, पुष्प चढ़ायें आज।
धर्मादिक पुरुषार्थ से, पायें शिवपुर राज।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्री उत्तम-क्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिंचन्य-ब्रह्मचर्येति दशलक्षण धर्माय नमः स्वाहा।
(2) ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- दश धर्म उजागर, भरते गागर, कैसे हम रस पान करें।
जयमाला गायें, प्यास बुझायें, भवसागर से मोक्ष वरें।।

(चौपाई)

दश धर्मों को नमन हमारा, इससे पाये मुक्ति द्वारा।
जिनने भी इसको उर धारा, उन मुनियों को नमन हमारा।।1।।
पहला धर्म क्षमा कहलाये, तीव्र क्रोध की आग बुझाये।
मार्दव मृदुता भाव जगाये, मान भाव को दूर हटाये।।2।।

आर्जव से ऋजुता को धारें, कपट जाल माया परिहारें।
शौच बिना शुद्धि नहीं होती, लोभी की नित दुर्गति होती।।3।।
सत्य धर्म शिवसुख का दाता, झूठ नर्क की सैर कराता।
संयम साधन मोक्ष डगर का, पाप असंयम साधन दुःख का।।4।।
उत्तम तप धारो नित प्राणी, कहती है प्रभुवर की वाणी।
त्याग बिना सुख नहीं मिलेगा, पुष्प अग्नि में नहीं खिलेगा।।5।।
आकिंचन्य वृष पाप छुड़ावे, परिग्रह ग्रह होकर डस जावे।
उत्तम ब्रह्मचर्य कहलाता, पाप कुशील वही विनशाता।।6।।
क्षमा आदि दश धर्म बताये, सर्व दुःखों से मुक्त करायें।
दशा सुधारे दिशा दिखाये, निश्चय आतम सुख प्रगटाये।।7।।
चलो दशों धर्मों को जाने, आगम से यह व्रत हम जाने।
दश उपवास करे जो कोई, संयम सम जीवन तब होई।।8।।
दश धर्मों को हम अपनायें, शाश्वत मुक्ति रमा को पायें।
समिति गुप्तिमय धर्म कहाये, 'आस्था' से उसको अपनायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम–क्षमा–मार्दव–आर्जव–शौच–सत्य–संयम–तप–त्याग–आकिंचन्य–ब्रह्मचर्येति दशलक्षण धर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिनवाणी जिनधर्म के, शाश्वत हैं दश धर्म।
'आस्था' से धारण करें, नाशें सारे कर्म।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम क्षमा धर्म पूजा

(जोगीरासा छंद)

दश धर्मों में प्रथम धर्म श्री, क्षमा धर्म कहलाता।
इसको जो भी धारण करता, महामोक्ष फल पाता।।
क्षमाधर्म धारी प्रभु का मैं, पूजन करने आया।
जिनवर का आह्वान करूँ मैं, पुष्पों संजोकर लाया।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

नीर क्षीर के उत्तम घटभर, मैं प्रभु का अभिषेक करूँ।
इतना पुण्य बढ़ाऊँ जग में, त्रय रोगों का कष्ट हरूँ।।
क्रोध कषाय विजेता जितने, उनके मैं नित गुण गाऊँ।
उत्तम क्षमा धर्मधारी बन, क्रोधाग्नि पर जय पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों की चंदन है रज, आप्त प्रभु के वाक्य यही।
प्रभु की पग रज शीश लगाकर, पाऊँगा मैं मोक्ष मही।। क्रोध कषाय.. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर का एक वाक्य ही, जीवन अमर बना देता।
जो अक्षत से पूजे प्रभु को, अक्षय शिव सुख पा लेता।। क्रोध कषाय.. ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त सभी मिल पुण्य कमायें, पुष्प चढ़ा प्रभु चरणों में।
काम अरि को दूर भगाने, आये सब प्रभु चरणों में।। क्रोध कषाय.. ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फैनी लड्डू बरफी, गुजियाँ पूड़ी लाया हूँ।
क्षुधारोग विनशाने भगवन्, अर्चा करने आया हूँ।। क्रोध कषाय.. ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चम-चम करती दीप आरती, अंधकार विनशाती है।
प्रभुवर की जो करे आरती, ज्ञान ज्योति मिल जाती है।।
क्रोध कषाय विजेता जितने, उनके मैं नित गुण गाऊँ।
उत्तम क्षमा धर्मधारी बन, क्रोधाग्नि पर जय पाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाऊँ कर्म नशाऊँ, शिव रानी का वरण करूँ।
ऐसी शक्ति दो प्रभु मुझको, मोक्षमार्ग पे गमन करूँ।। क्रोध कषाय.. ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पनस बिजौरा चोच मोच फल, आम जाम चीकू केला।
दाड़िम जामुन अर्पण कर मैं, बन जाऊँ प्रभु का चेला।। क्रोध कषाय.. ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टम भू को पाने वाले, जिन को शीश झुकाता हूँ।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु को, वसुविध द्रव्य चढ़ाता हूँ।। क्रोध कषाय.. ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम क्षमा धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

पृथ्वीकायिक जीव की, रक्षा करें सदैव।
क्षमा माँग सब जीव से, प्रभु को भजें सदैव।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकायिक सब जीव का, कर संरक्षण आज।
क्षमा धर्म को पूजते, पाने शिवपथ राज।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जलकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निकायिक जीव की, रक्षा करें सदैव।
उत्तम क्षमा सुधर्म की, पूजा करें सदैव।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकायिक जीव के, रक्षण का है भाव।
धारें वृष उत्तम क्षमा, पाने सिद्ध स्वभाव।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वायुकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनस्पतिकायिक सदा, हरियाली फैलाय।
इसकी हम रक्षा करें, क्षमा धर्म मन लाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निगोदी जीव का, करें नहीं हम घात।
क्षमा धर्म उत्तम वरें, करने कर्म विघात।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नित्यनिगोद रक्षणोत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इतर निगोदी जीव की, रक्षा करते भव्य।
पूजें हम उत्तम क्षमा, लेकर उत्तम द्रव्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्री इतरनिगोद भव्य जीव रक्षणोत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विकलेन्द्रिय जीव की, रक्षा करें विशेष।
क्षमा धर्म हम पूजते, लेकर द्रव्य विशेष।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विकलेन्द्रिय त्रयभेद जीव रक्षणोत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय सब जीव के, रक्षा के हो भाव।
क्षमा धर्म उत्तम भजें, मन में रख के चाव।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रिय जीव रक्षणोत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

त्रस थावर जीवों की रक्षा, महाव्रती ही करते।
सबकी रक्षा करने वाले, पूर्ण अहिंसा धरते।।

क्षमा धर्म के भेद अनेकों, उत्तम क्षमा बढ़ाये।
क्षमा धर्म धर को हम पूजें, शाश्वत शिवसुख पायें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– क्रोध जीतने हम करें, प्रभु चरणों में धार।
क्षमावान प्रभु दो क्षमा, आये तेरे द्वार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– उत्तम क्षमा जहाँ रहे, उनका हृदय विशाल।
उनके चरणों में चढ़े, पुष्पों की ये माल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा– क्षमा धरम को धार, क्षमा बिना जीवन नहीं।
जयमाला सुखकार, क्षमा मयी जीवन बने।।

(नरेन्द्र छंद)

जय–जय हो सुकमाल मुनीश्वर, उत्तम क्षमा धर्मधारी।
त्रय दिन खाये पैर श्यालनी, उस पर भी समताधारी।।
वन में जाकर ध्यान लगाया, वहाँ पशु मुनि को खाये।
तीन दिवस उपसर्ग सहनकर, मुनि सर्वार्थसिद्धि पायें।।1।।

धन्य सुकौशल महामुनीश्वर, महाधैर्य को अपनाया।
व्याध्री का उपसर्ग सहनकर, परम सिद्ध पद को पाया।।
गजकुमार मुनि बाल यतीश्वर, सिर पर जिनके आग जले।
धन्य–धन्य मुनि गजकुमार वे, कर्म काटकर मोक्ष चले।।2।।

पाण्डव मुनि पर दुष्ट जीव ने, गरम लोह भूषण डाला।
उपसर्गों को जीत उन्होंने, मोक्ष स्वर्ग को वर डाला।।

पाँच शतक मुनिराजों को जब, नृप ने घानी में पैला।
समता से उनने फिर कीना, मृत्यु महोत्सव अलबेला।।3।।

सात शतक मुनि संग अकंपन, हस्तिनपुर में जब आये।
राजा बलि उपसर्ग रचाकर, मुनियों को दुःख पहुँचाये।।
धन्य सभी की त्याग तपस्या, तनिक नहीं वे घबराये।
धन्य मुनीश्वर विष्णु कुँवर जो, उनकी रक्षा हित आये।।4।।

पार्श्वनाथ तीर्थंकर प्रभु पर, कमठ घोर उपसर्ग करे।
सात दिवस उपसर्ग सहन कर, प्रभुवर केवलज्ञान वरें।।
श्रेणिक नृप जब दुष्ट भाव से, मुनिवर पर उपसर्ग करे।
मुनि यशोधर तीन दिवस तक, क्षमाभाव धर सहन करे।।5।।

दिशभूषण कुलभूषण मुनि पे, जब भीषण उपसर्ग हुआ।
राम लखन सीता ने आकर, सब संकट को दूर किया।।
सात्यकि रूद्र वीर जिनवर पर, करता है उपसर्ग महा।
क्षमा देख महावीर प्रभु की, चरण झुका वो रूद्र वहाँ।।6।।

इत्यादि मुनि वा सतियों पर, जब-जब भी उपसर्ग हुआ।
उत्तम क्षमा धर्म ही तब-तब, उनका उत्तम सखा हुआ।।
हम भी उन सम क्षमा धर्म को, तीन गुप्ति धर अपनायें।
शाश्वत जिनगुण सम्पत् पाने, 'आस्था' से गुरु को ध्यायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम मार्दव धर्म पूजा

(जोगीरासा छंद)

उत्तम मार्दव मृदुता लाता, मान कषाय घटाये।
मन मन्दिर के हृदयासन पर, भगवन् तुम्हें बिठायें।
अभिनन्दन आह्वान करें हम, मन मंदिर में आओ।
आओ–आओ नाथ हमारे, मन को सुखी बनाओ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

स्वर्ण रजत का कलश सजाया रत्न से।
करें न्हवन प्रभु का बहुरंगी यत्न से।।
मान कषाय अहम् अपना विनशा रहे।
अर्हंतों की पूजा कर सुख पा रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में जो भी गंध चढ़ा रहें।
भव संताप पाप उसके खुद जा रहें।। मान कषाय...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत शालि गजमोती हम अर्पण करें।
अनुपम अक्षय निधियाँ प्रभु जैसी वरें।। मान कषाय...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केवड़ा नीलकमल कचनार ले।
प्रभु के चरण चढ़ायें सुरभित हार ये।। मान कषाय...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन प्रभु को चढ़ा करेंगे अर्चना।
क्षुधा रोग विनशाने करते वंदना।।
मान कषाय अहम् अपना विनशा रहे।
अर्हंतों की पूजा कर सुख पा रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त करें दीपक ले जिन की आरती।
देव आरती मोहतिमिर परिहारती।। मान कषाय...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश मुख वाला सुंदर सा ले धूप घट।
जिन को धूप चढ़ाकर पायें मोक्ष तट।। मान कषाय...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम केला नारंगी अंगूर फल।
जिनवर को पूजें पायें हम मोक्ष फल।। मान कषाय...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन पुष्पादिक अर्घ सजाइये।
सर्वश्रेष्ठ जिनवर के चरण चढ़ाइये।। मान कषाय...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म विधान के अर्घ

दोहा— दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

वीतराग अर्हंत को, नमन करें शतबार।
अष्ट द्रव्य ले हाथ में, पूजें बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वीतराग अर्हंत देवपद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म में, भजें सिद्ध भगवान।
सब सिद्धों की अर्चना, करती है कल्याण॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन सर्व आचार्य को, ये आचार्य महान्।
उत्तम मार्दव धर्म धर, करते जग कल्याण॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पाठक यतिराज को, नमन करें त्रय बार।
पूजें इनके पद युगल, पायें ज्ञान अपार॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप नित करें, सर्व श्रेष्ठ मुनिराज।
उन मुनियों को हम नमें, अष्ट द्रव्य ले आज॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधु पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनचैत्य को, विनय भाव से ध्याय।
उत्तम मार्दव धर्म को, पूजें द्रव्य चढ़ाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम जिनचैत्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्वलोक जिनचैत्य को, नमन करें हम भव्य।
अर्चें सब जिनबिम्ब को, लेकर आठों द्रव्य॥7॥

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोक संबंधी जिनचैत्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक जिनचैत्य को, नमें भक्ति के साथ।
पूजा कर प्रभु आपकी, सदा झुकायें माथ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोक संबंधी जिनचैत्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधोलोक के चैत्य को, नमन करें सुर इन्द्र।
हम भी उनको पूजते, बनकर उत्तम इन्द्र।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अधोलोक संबंधी जिनचैत्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र सब लोक के, उनकी भक्ति रचाय।
करें नमन इस भाव से, मार्दव गुण आ जाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व सिद्धक्षेत्र पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व अतिशय क्षेत्र को, पूजें बारम्बार।
नमन वहाँ के नाथ को, दर्शन हो हर बार।।11।।

ॐ ह्रीं श्री समस्त अतिशय क्षेत्रपद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

मार्दव मान हरे प्राणी का, विनय मोक्ष दिलवाये।
उत्तम मार्दव धारी यति को, वसु विधि द्रव्य चढ़ायें।।
उत्तम मार्दव आत्म धर्म को, विनय सहित हम नमते।
मार्दव धर्म धार श्रद्धा से, हम सब शिव सुख वरते।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अहम् भाव जिनके नहीं, वो हैं श्री भगवान।
शांतिधारा हम करें, बनने आप समान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– तीन लोक के नाथ का, स्वागत करते आज।
धन्य हो गये हाथ ये, पुष्प चढ़ाके आज।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा– मानो प्रभु की बात, मान तजो मार्दव वरो।
पढ़ते हम जयमाल, विनय मुक्ति का द्वार है।।

(शंभु छंद)

जय बोलो उत्तम मार्दव की, जय हो श्री जिनवर स्वामी की।
जो मान नशावे उनकी जय, जय–जय हो केवलज्ञानी की।।
जो मान कषाय मिटाता है, वो सम्यक् दर्शन पाता है।
सम्यक्दर्शन ही प्राणी को, श्री मोक्ष महल पहुँचाता है।।1।।

श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रभु को, मन–वच–तन से नमन करें।
हित उपदेशी जिनधर्म श्रेष्ठ, उस धर्म मार्ग पे गमन करें।।
सिद्धों ने शाश्वत पद पाया, ऐसे सब सिद्धों को वंदन।
छत्तीस गुणों के धारक श्री, आचार्य गुरु हरते क्रंदन।।2।।

ज्ञानी ध्यानी पाठक यतिवर, श्री उपाध्याय को नित्य भजें।
धारा है वेश दिगम्बर को, ऐसे साधु के चरण जजें।।
जो क्षमा आदि गुण के धारी, निज आत्मध्यान में लीन रहे।
पूजन करके उन गुरुओं की, नित विनय नम्रता सीख रहे।।3।।

सब अतिशय क्षेत्रों को वंदन, जिन प्रतिमाओं को करें नमन।
जिस भू से सिद्ध अनंत हुये, उन सिद्ध क्षेत्र को करें नमन।।
शाश्वत अकृत्रिम चैत्य बिम्ब, उन सबकी पूजा दुःखहारी।
तीनों लोकों की जिन प्रतिमा, सब भव्यों को मंगलकारी।।4।।

जिसने भी मान किया जग में, वो दुर्गति जाते अभिमानी।
रावण दुर्योधन कंस राज, ये नरक गये राजा मानी।।

पाते हैं विद्या विनयवान, जग में वो नाम कमाते हैं।
शिवभूति मुनि मार्दव गुण से, केवलज्योति को पाते हैं।।5।।

मुनि चन्द्रगुप्त मृदुता धारें, सुरगण उनकी भक्ति करते।
उत्तम मार्दव धारी गुरुवर, निश्चय से मोक्ष महल वरते।।
श्री देव-शास्त्र गुरुवर ज्ञानी, हम विनय करें मृदुता धारें।
इनके चरणों में ही झुककर, सम्पूर्ण दुःखों को परिहारें।।6।।

श्री पंच परम परमेष्ठी प्रभु, जिनधर्म चैत्य माँ जिनवाणी।
त्रय योगों से हम विनय करें, बनने भगवन् सम्यक्ज्ञानी।।
यह मार्दव मान घटाता है, व्रत समिति गुप्ति दिलवाता है।
'आस्था' से इसको जो पूजे, वो महा मोह विनशाता है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम आर्जव धर्म पूजा

(गीता छंद)

आर्जव कहे ऋजुता धरो, माया कपट को त्याग दो।
उत्तम धरम को धारकर, मुनिधर्म को स्वीकार लो।।
ऐसे धरम को पूजता, उत्साह मन में धार के।
आह्वान पुष्पों से करूँ, पूजा प्रभु की तार दे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

नीरादिक से नाथ का, जो अभिषेक रचाय।
जन्म जरादिक रोग से, वो मुक्ति पा जाय।।
नाम मंत्र हम सब जपें, मन निर्मल बन जाय।
प्रभु अर्चा में जो लगा, वो सुख शांति पाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म पीछे लगा, भव–भव में भटकाय।
भव–भव के अघ नाशने, प्रभु पद गंध लगाय।। नाम..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल भाव मेरे बने, ले धवलाक्षत पुँज।
चढ़ा रहा प्रभु आपको, पाने मोक्ष निकुँज।। नाम..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा विष्णु आप हो, हे तीर्थंकर देव।
पुष्प चढ़ा मैं आपको, मेटूँ काम कुदैव।। नाम..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में ना लगे, कभी भूख व प्यास।
चारों दान मिले वहाँ, जो रहता प्रभु पास।।
नाम मंत्र हम सब जपें, मन निर्मल बन जाय।
प्रभु अर्चा में जो लगा, वो सुख शांति पाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर मिथ्यात्व ही, दुर्गति में भटकाय।
करूँ आरती नाथ की, ज्ञान ज्योति मिल जाय।। नाम..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक सुरभित धूप से, जिन मंदिर महकाय।
धूप अर्चना भक्त के, आठों कर्म नशाय।। नाम..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नींबू तेंदू आँवला, दाड़िम चीकू आम।
प्रभुवर को फल से भजूँ, पाऊँ शिवपुर धाम।। नाम..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों से करूँ, जिनवर का गुणगान।
अष्टम वसुधा को वरूँ, बन जाऊँ भगवान।। नाम..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आर्जव धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

श्री अरिहंत जिनेश को, नमन करें हम आज।
उत्तम आर्जव प्राप्त हो, अर्घ चढ़ायें आज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अनंतानंत को, नमन भक्ति के साथ।
अष्ट द्रव्य से हम भजें, सदा नमावें माथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला में जो बसे, मुक्त वही कहलाय।
मुक्ति हेतु उनको नमन, वसु विधि द्रव्य चढ़ाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धशिला स्थित मुक्तात्म नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस गुणधारी गुरु, श्री आचार्य महान्।
अर्घ चढ़ा उनको नमें, उन सम बनें महान्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक आचार्य को, करें परोक्ष प्रणाम।
पूजा सेवा भक्ति कर, जपें नित्य गुरु नाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठि परोक्ष नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय परमेष्ठि को, नमते शीश झुकाय।
जल फलादि वसु द्रव्य से, पूजा भक्ति रचाय।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय त्रयकाल के, उनको नमन परोक्ष।
पढ़ें-पढ़ावें ये गुरु, कभी ना करते रोष।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठि परोक्ष नमनयुत आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन सर्व मुनिराज को, धारें आर्जव भाव।
अर्घ चढ़ावें हम उन्हें, मिले गुरु पद छाँव।।8।।

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व श्रमण को आज हम, नमें परोक्ष त्रिकाल।
सर्व साधु की अर्चना, करती माला माल॥9॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठि परोक्ष नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी को नित नमें, पाने आतम धर्म।
अर्घ देय ऋजु भाव से, नष्ट करें सब कर्म॥10॥

ॐ ह्रीं श्री जिनवाणी नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय क्षेत्रों को नमन, दर्शन कर सुख पाय।
करें अर्चना क्षेत्र की, अतिशय पुण्य कमाय॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र को है नमन, सिद्ध होय सब कार्य।
ऐसी अर्चा हम करें, सिद्ध बनें अनिवार्य॥12॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिन सदन में, रहें अकृत्रिम चैत्य।
उनको अर्घ चढ़ाय हम, पाने आतम चैत्य॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम जिनचैत्य नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम चैत्यों को सदा, नमन करें त्रयकाल।
अर्चन कर प्रभु आपकी, वरें लोक का भाल॥14॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिम जिनचैत्य नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल पूज्य स्थान को, वंदन बारम्बार।
सर्वद्रव्य ले हम करें, पूजा बारम्बार॥15॥

ॐ ह्रीं श्री सकल पूज्य स्थल नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

माया ठगनी ठगे जगत् को, उस माया को त्यागे।
माया से बचकर मुनि उत्तम, निज आतम अनुरागे।।
उत्तम आर्जव मुनिवर धारें, उनका ध्यान लगायें।
ताल नृत्य संगीत झांझ संग, पूरण अर्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निर्मल जल की धार से, धोवे कपट विकार।
सरल भाव ऋजुता धरें, करते शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– गंध पुष्प की खींचती, मंडराते अलि आय।
तन–मन जो सुरभित करे, ऐसे पुष्प चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– आर्जव अपनावें, ऋजुता लावें, माया तजते मृदु बने।
जयमाला गावें, पुण्य बढ़ावें, जिन चरणों के भक्त बने।।

(नरेन्द्र छंद)

उत्तम आर्जव धर्म हमारा, उत्तम गति दिलवाता है।
उत्तम उज्ज्वल भाव जगाने, दास शरण में आता है।।
माया छलनी छलती जग को, दुर्गति में ले जाती है।
जिसने छोड़ी मायाचारी, उसे सुगति मिल जाती है।।1।।

जो-जो करता मायाचारी, वो पशु आदिक बनता।
कहीं नहीं वो शांति पाता, तिल-तिल जलता रहता।।
कपट भाव से रहित जीव ही, जगत् पूज्य कहलाता।
सरल स्वभावी होकर जग में, यश कीर्ति को पाता।।2।।

जिनने छोड़ी मायाचारी, परमेष्ठी पद पाये।
ऐसे श्री अरिहंत प्रभु को, हम सब शीश झुकायें।।
लोक शिखर को पाया जिनने, आठों करम नशाते।
सिद्ध सौख्य शांति के दाता, सिद्धों को हम ध्याते।।3।।

श्री आचार्य गुरुवर पाठक, मुनिवर ज्ञानी ध्यानी।
इनके चरण कमल में आकर, पाते मुक्ति रानी।।
सर्व सिद्ध क्षेत्रों को वंदन, अतिशय जो दिखलाते।
कृत्रिमाऽकृत्रिम जिनबिम्बों को, विनय सहित हम ध्याते ।।4।।

मार्ग दिखाने वाली माता, सबकी माँ जिनवाणी।
सरस्वती माँ की वाणी को, सुनते सारे प्राणी।।
करें साधना साधु बनकर, गुप्ति त्रय हम पालें।
'आस्था' की जयमाल सजाकर, आये हम मतवाले।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम शौच धर्म पूजा

(शेर छंद)

ये शौचधर्म मन के पाप मल को अपहरे।
शुचिता दिलाये मन की लुब्धता को नित हरे।।
उत्तम धरम है शौच हमें शुद्धि सिखाये।
आह्वान करते नाथ का जो मार्ग दिखायें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

श्रीफल लगाके कुंभ पे पुष्पादि सजायें।
सम्पूर्ण नीर वाहिनी का नीर चढ़ायें।।
ये शौच धर्म हमको शुद्ध–बुद्ध बनाये।
जिनराज की सुन्दर छवि का दर्श कराये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर घिसके लायें ताप मेटने।
जिन पाद में लगा के पायें शांति भेंट में।। ये शौच धर्म....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमोतियों के संग श्वेत शालि चढ़ायें।
अक्षय निधि के नाथ को भज पुण्य कमायें।। ये शौच धर्म....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंगीन फूल माल काम रंग को हरे।
सुन्दर सी पुष्प माल से जिन अर्चना करें।। ये शौच धर्म....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन प्रकार की मिठाई थाल में सजा।
प्रभु को चढ़ायें ढोल नगाड़े बजा-बजा।।
ये शौच धर्म हमको शुद्ध-बुद्ध बनाये।
जिनराज की सुन्दर छवि का दर्श कराये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों की थाल में जलायें दीप स्वर्ण के।
करते हैं आरती प्रभु की आके चर्ण में।। ये शौच धर्म....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज की अर्चा में श्रेष्ठ धूप चढ़ायें।
स्व ध्यान धार आप जैसे रूप को पायें।। ये शौच धर्म....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे मनोज्ञ फल चढ़ायें नाथ आपको।
हमको भी मोक्षफल मिले हे नाथ ! साथ दो।। ये शौच धर्म....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अष्ट द्रव्य की शुभ थाल सजायें।
गाके बजाके झूमते प्रभुवर को चढ़ायें।। ये शौच धर्म....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

धर्म प्रतीति हो हमें, शौच धर्म मन भाय।
जिनने धारा धर्म ये, उनकी भक्ति रचाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मप्रतीति उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाक्य पवित्र उचारते, मुख अमृत बरसाय।
शौच धर्म धारी गुरु, वंदू मन–वच–काय॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पवित्रवाक्य उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम चारित के धनी, करें चरित स्नान।
शुचिता जिनका रूप है, वे मुनि दें सद्ज्ञान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्रस्नान उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मध्यान जो नित करें, करें स्वपर कल्याण।
कर्म काटकर वे गुरु, बन जाते भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मध्यान उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय गुप्ति रक्षा करे, सद्गति गमन कराय।
शौच धर्म उत्तम धरें, मुनि निर्मल सुख पाय॥5॥

ॐ ह्रीं श्री गुप्तित्रय रक्षण उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार कषायों से रहित, है शुचि उत्तम धर्म।
शुचिता के शुभ भाव से, मिले धर्म का मर्म॥6॥

ॐ ह्रीं श्री क्रोधादिरहित उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चैत्योपदेश से, होता सम्यक् दर्श।
जिनपूजा हम नित करें, पाये सम्यक् दर्श॥7॥

ॐ ह्रीं श्री जिनचैत्योपदेश उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समिति गुप्ति व्रत हम धरें, व्रत ही पाप नशाय।
समीचीन व्रत हो हमें, इस हित पूजन गाय॥8॥

ॐ ह्रीं श्री व्रतसमित्यादि उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजा उपदेश भी, मोक्षमार्ग दर्शाय।
मोक्षमार्ग हमको मिले, ऐसी भक्ति रचाय॥9॥

ॐ ह्रीं श्री जिनपूजोपदेश उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मंत्र के जाप से, प्राप्त होय निज ब्रह्म।
पूजें उत्तम शौच धर्म, मिले स्वयं पर ब्रह्म।।10।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मजपादि उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

त्रय लोकों की भोग संपदा, विषय भोग विषकारी।
सर्वश्रेष्ठ सिद्धों का सुख ही, अचल अतुल सुखकारी।।
उत्तम शौच धरम धरणीधर, लोभ पाप विनशायें।
तन-मन की शुचिता को पाने, भक्त भक्ति से ध्यायें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- प्रभु के पद प्रक्षाल, हम उत्तम जल से करें।
अर्पण करते माल, रंग-बिरंगे पुष्प की।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- जो शुचिता धारे, कर्म विदारे, गुण संतोष सुलाभ वरे।
कर तन की शुचिता, मन की शुचिता, श्री जयमाला कंठ धरे।।

चौपाई

उत्तम शौच धरम सुखकारी, इसको धारें बनें पुजारी।
शौच धरम को गुरुवर धारें, तज देते वे वैभव सारे।।1।।
लोभ पाप है अति दुःखकारी, संतोषी को शुचिता प्यारी।
जहाँ लोभ मन में आ जाये, सारे पाप वहाँ हो जाये।।2।।

ऊँच-नीच भेदों को भूले, भव भोगों में मनवा झूले।
पंचेन्द्रिय विषयों की आशा, देखे जहाँ पलट दे पाशा।।3।।

मन भोगों में दौड़ा जावे, तृष्णा मन की बढ़ती जावे।
लोभी नरकादिक् में जाये, दुर्गतियों में कष्ट उठाये।।4।।

चाम लपेटी चमके काया, तन को ही केवल चमकाया।
मन चमकाये तन चमकेगा, भोगों से वैराग्य जगेगा।।5।।

जिसने तजी अशुचिता सारी, सुन्दर काया नाथ तिहारी।
तप से तन को नित्य तपायें, शौच धरम तन-मन में लायें।।6।।

शौच धरम को जिसने जाना, उसने पाया मोक्ष खजाना।
बंधु मित्र सुत नारी साथी, सोना चाँदी रत्न व हाथी।।7।।

चक्री नारायण पद सारे, स्थिर पद ना कोई हमारे।
देवगुरु आगम की वाणी, लोभ पाप को छोड़ों प्राणी।।8।।

शुचिता बिन कल्याण न होई, बिन शुचिता के मुक्ति न होई।
त्रय गुप्ति से शुचिता धारें, 'आस्था' से आये प्रभु द्वारे।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम सत्य धर्म पूजा

(गीता छंद)

यह धर्म उत्तम सत्य है, यह सत्य ही शिवरूप है।
जिनने इसे धारण किया, वो ही बने शिवभूप हैं।।
ऐसे धरम को पूजते, हम हाथ में बहुपुष्प ले।
आओ त्रिलोकी जिन प्रभो, गुणगान करते भक्ति से।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

सुंदर सुसज्जित कलशे, हम लाये प्रभु के दर पे।
प्रभु पद में सलिल चढ़ायें, जन्मादिक रोग नशायें।।
यह सत्य धर्म उपकारी, पूजा करते नर–नारी।
श्री सत्य जिनेश्वर जाने, हम आये उनको ध्याने।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध सुहानी, प्रभु पद से प्रीत पुरानी।
मिट जाये भव की दूरी, आशायें कर दो पूरी।। यह सत्य..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुँज चढ़ायें, सुख वैभव शांति पायें।
दो अक्षय निधियाँ स्वामी, हम बने प्रभु पथ गामी।। यह सत्य..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों की लाये माला, मन भक्त बना मतवाला।
श्री जिन को माल चढ़ायें, शिवपुर की माला पायें।। यह सत्य..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम लाये शुद्ध मिठाई, प्रभुवर की भक्ति रचाई।
उनको नैवेद्य चढ़ाते, हम अपनी क्षुधा मिटाते।।
यह सत्य धर्म उपकारी, पूजा करते नर–नारी।
श्री सत्य जिनेश्वर जाने, हम आये उनको ध्याने।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु पूर्ण सत्य के ज्ञाता, हरलो प्रभु पाप असाता।
दीपक ले आरती गायें, निज आतम दीप जलायें।। यह सत्य..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है गंध धूप की आली, अंबर तक जाने वाली।
जिन सन्मुख धूप जलायें, कर्मों का संग छुड़ायें।। यह सत्य..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनपूजा का शुभ फल ये, श्री मोक्षप्रदाता फल है।
हम फल की थाल चढ़ायें, शाश्वत शिवफल को पायें।। यह सत्य..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्रव्यों की थाल सजायें और मंगल वाद्य बजायें।
प्रभु के रंग में रंग जाये, हर्षित चित अर्घ चढ़ायें।। यह सत्य..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम सत्य धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

क्रोध कषायों से रहित, होता उत्तम सत्य।
परम सत्य का लाभ हो, पूजें उत्तम सत्य।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्रोधातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ रहित इक सत्य है, सत्यं शिवं अनूप।
परम सत्य सुन्दर अति, सत्य ही भगवन् रूप।।2।।

ॐ ह्रीं श्री लोभातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भयातिचार रहित बनो, कहता उत्तम सत्य।
निर्भय निज आतम रमे, पाये उत्तम सत्य।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भयातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हास्य व्यंग्य के पाप से, सत्य झूठ बन जाय।
क्षमा माँगते भाव से, सत्य हृदय बस जाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री हास्यातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आज्ञा हमने तजी, किया प्रभु ! अतिचार।
क्षमा माँगते भाव से, सत्य प्रभु का द्वार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जिनाज्ञालंघनातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश क्षेत्र के वाक्य को, कहते जनपद सत्य।
ऐसे जनपद सत्य को, पूजें पाने सत्य।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जनपद उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूढ़ि से जो नाम है, संवृत सत्य कहाय।
ऐसे संवृत सत्य को, आठों द्रव्य चढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संवृत्त उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें सत्य स्थापना, चित्र काष्ठ पाषाण।
पूजें हम इस सत्य को, पाने सत्य महान्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री स्थापना उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसा अपना नाम हो, वैसा होवे काम।
नाम सत्य सार्थक करें, लेकर प्रभु का नाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नाम उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप सत्य का श्रेष्ठ है, गुण से श्रेष्ठ बनाय।
सुन्दर सत्य हमें मिले, ऐसी भक्ति रचाय॥10॥

ॐ ह्रीं श्री रूप उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य अनेक प्रकार है, एक अपेक्षा सत्य।
जीवों के बहु धर्म को, कहे अपेक्षा सत्य॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अपेक्षा उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर को भगवन् कहे, सत्य रूप व्यवहार।
इसकी हम पूजा करें, पाने मुक्ति द्वार॥12॥

ॐ ह्रीं श्री व्यवहार उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक पलटने को समर्थ, इन्द्रादि सुर देव।
यही सत्य सम्भावना, कहते जिनवर देव॥13॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भावना उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अमूर्तिक ना दिखे, ये है सत्य स्वभाव।
द्रव्य भाव से हम जजें, पाने उत्तम भाव॥14॥

ॐ ह्रीं श्री भाव उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक दूजे के कार्य लख, जो गुरु उपमा देय।
प्रचलित उपमा सत्य है, इनको जानो ज्ञेय॥15॥

ॐ ह्रीं श्री उपमा उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

सत्य शिवं सुंदर अनुपम है, सत्य सुखों का सागर।
सत्य देव है सत्य गुरु है, सत्य धरम गुण आगर॥
सत्य धर्म के जिन आगम में, नाना भेद बताये।
उत्तम सत्य धर्म को हम सब, पूरण अर्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सत्य धरम शांति करे, झूठ रहे ना पास।
जल से मन निर्मल करें, बनें प्रभु के दास।।
शांतये शांतिधारा।

दोहा– शिव ही सुंदर रूप है, शिव ही सत्य स्वरूप।
सुन्दर पुष्प चढ़ा रहे, पाने सिद्ध स्वरूप।।
दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– सत्य धरम जग पूज्य है, सत्य महाव्रत जान।
उसकी जयमाला पढ़ें, पाने मोक्ष महान्।।

(जोगीरासा छंद)

जैनधर्म का प्राण सत्य है, सत्य मूल कहलाता।
पूर्ण सत्य को एक अकेला, केवलज्ञान बताता।।
तीर्थंकर जिन मुनि बनें तब, मौन साधना धारें।
केवलज्ञान बिना वे भगवन्, कुछ भी ना उच्चारें।।1।।

कम से कम बोले जो प्राणी, जग में पूजा जाता।
हित–मित–प्रिय वाणी के द्वारा, यश कीर्ति वो पाता।।
इसीलिये जिनवर ने हमको, सत्य अनेक बताये।
जीवों की रक्षा के हेतू, सत्य धर्म अपनायें।।2।।

सत्य धर्म है सत्य त्याग है, सत्य महाव्रत पालें।
वचन गुप्ति हो सदा साथ में, भाषा समिति पालें।।

सत्य धर्म ही साथी बनकर, जग में जीत दिलाये।
सत्य वचन से नारद आदिक्, स्वर्ग मोक्ष सुख पाये।।3।।

होती जीत सत्य की जग में, जग सारा ये जाने।
ऐसे सत्य धरम को भव्यों, गुरु मुख से पहिचाने।।
सत्य अनोखा बड़ा निराला, सत्य सभी को प्यारा।
सत्य धर्म को जिसने धारा, उनको नमन हमारा।।4।।

निर्मल नीर समान सत्य ये, सबके पाप मिटाये।
एक बार जो मिथ्या बोले, सर्व दुःखों को पाये।।
अहंकार के वश हो जिसने, सत्य धर्म ठुकराया।
नहीं बचा वो भूप वसु भी, नरक सातवाँ पाया।।5।।

सत्य धर्म परमेश्वर अपना, सत्य भवोदधि तारे।
परम सत्य भगवद् सत्ता में, सच्ची श्रद्धा धारें।।
उत्तम सत्य धरम को हम भी, धारें शिव सुख पायें।
श्रद्धा से इस सत्य धर्म को, 'आस्था' शीश झुकाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम संयम धर्म पूजा

(गीता छंद)

निज आत्म की रक्षा करें, संयम धरें भव से तिरे।
संयम बिना कोई नहीं, संसार सागर से तिरे॥
संयम मनुज को जिन बना, पावन करे संसार में।
संयम धनी को पूजने, आये प्रभू के द्वार पे॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

बनकर इन्द्रादिक् देव, प्रभु का न्हवन करें।
हम करें चरण की सेव, प्रभु त्रय रोग हरें॥
संयम पाने हम नाथ, उत्तम भक्ति करें।
उत्तम संयम के साथ, शिवसुख धाम वरें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कर्पूर सुगंध, सबका ताप हरे।
प्रभु चरण लगा हम गंध, भव संताप हरें॥ संयम पाने..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ये उत्तम अक्षत पुँज, अर्पण है प्रभु को।
मिल जाये मोक्ष निकुँज, हम पूजें जिन को॥ संयम पाने..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की लेकर माल, आये प्रभु शरणा।
हम करते अर्पण थाल, पूजें प्रभु चरणा॥ संयम पाने..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये क्षुधा सदा रुलवाय, जग में भरमाये।
यह क्षुधा नशाने नाथ, व्यंजन हम लाये॥ संयम पाने..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते हम आरती नाथ, मोह तिमिर नशने।
जिनवर को नमते माथ, संयम निधि वरने।।
संयम पाने हम नाथ, उत्तम भक्ति करें।
उत्तम संयम के साथ, शिवसुख धाम वरें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम पाकर भगवान, आठों कर्म नशें।
हम धूप चढ़ा धर ध्यान, भव का भ्रमण नशें।। संयम पाने..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम फल लाये जिननाथ, हमको शरणा लो।
हे समोशरण के नाथ, मोक्ष सुफल दे दो।। संयम पाने..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा की आश, ले जिन दर आये।
यह भक्त करे अरदास, अर्घ सजा लाये।। संयम पाने..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

एकेन्द्रिय सब जाति की, रक्षा के हो भाव।
उत्तम संयम हम भजें, धारें संयम भाव।।1।।

ॐ ह्रीं श्री एकेन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीन्द्रिय सब जाति की, रक्षा करें सदैव।
ये ही संयम धर्म है, पूजें इसे सदैव।।2।।

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रीन्द्रिय जाति जीव की, रक्षा के परिणाम।
प्रेम करें सब जीव से, हो संयम परिणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री त्रीन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुरिन्द्रय सब जाति की, रक्षा करते भव्य।
उत्तम संयम पालने, सदा चढ़ायें द्रव्य॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय सब जाति की, रक्षा वत्सल भाव।
सिद्धरूप सब जीव हैं, जाने संयम भाव॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन के विषय को, त्यागें श्री मुनिराज।
कठिन तपस्या जो करे, उनको पूजें आज॥6॥

ॐ ह्रीं श्री स्पर्शनेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेन्द्रिय के विषय तज, करते जो उपवास।
उन मुनियों को हम भजें, बनें उन्हीं के दास॥7॥

ॐ ह्रीं श्री रसनेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय के विषय तज, तजें राग वा द्वेष।
उत्तम संयम से सजें, धरें दिगम्बर वेश॥8॥

ॐ ह्रीं श्री घ्राणेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु इन्द्रिय का विषय, त्याग करें मुनिराज।
उन मुनियों को हम भजें, बजा-बजा कर साज॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नेत्रेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुने सुनायें जिन वचन, देते सद् उपदेश।
कर्णेन्द्रिय का राग तज, ये गुरु का संदेश॥10॥

ॐ ह्रीं श्री कर्णेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय संध्या में नियम से, कर सामायिक ध्यान।
पाते संयम गुण श्रमण, उनका है गुणगान॥11॥

ॐ ह्रीं श्री सामायिक रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छेदोपस्थापना चरित, है संयम का भेद।
उसके धारक श्रमण भज, करें ना मन में खेद॥12॥

ॐ ह्रीं श्री छेदोपस्थापना रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत परिहार विशुद्धि भी, संयम शुद्धि बढ़ाय।
संयम ही बहु जीव को, सिद्ध लोक पहुँचाय।।13।।

ॐ ह्रीं श्री परिहार विशुद्धि रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्मसांपराय चरित, अंतस् दीप जलाय।
हमें शीघ्र मिल जाय वो, इस हित भक्ति रचाय।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मसांपराय रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात संयम धरें, अर्हत् सिद्ध महान्।
अंतिम संयम भेद ये, देता मोक्ष महान्।।15।।

ॐ ह्रीं श्री यथाख्यात रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (चौबोल छंद)

इन्द्रिय संयम प्राणी संयम, संयम सुख का साधन।
संयम व संयमधारी का, करते हम आराधन।।
उत्तम संयम धर्म श्रेष्ठतम, ऋषि मुनि गणधर धारें।
पूजन करने अर्घ चढ़ाने, आये हम गुरु द्वारे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– संयम समता दो प्रभु, करता शांतिधार।
संयम के पाने सुमन, अर्पित सुन्दर हार।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता– संयम की माला, सुख की शाला, जयमाला की माल कहें।
असंयम छोड़ा, बंधन तोड़ा, मोक्ष शिखर जिन आप रहे।।

(नरेन्द्र छंद)

उत्तम संयम है हितकारी, पूज्य परम पद दिलवाता।
संयम जिसके पास नहीं है, वो मानव पशु कहलाता।।
संयम रत्न मोक्ष की सीढ़ी, उत्तम संयम शिव द्वारा।
जिसने संयम व्रत को धारा, उनको पूजे जग सारा।।1।।

ब्रह्म गुलाल सेठ ने देखो, क्रीड़ा में मुनि पद धारा।
लेकिन वापस घर ना आये, दृढ़ता से व्रत स्वीकारा।।
ज्ञान नहीं पर भोजन हेतू, नंदीमित्र श्रमण बनते।
करें समाधि स्वर्ग सिधारे, आगे चंद्रगुप्त बनते।।2।।
इन्द्रिय प्राणी संयम दो हैं, द्वादश भेद बताये हैं।
करुणा धारें त्रस थावर पे, उनके प्राण बचायेंगे।।
पंचेन्द्रिय मन को वश करना, यही धर्म बतलाता है।
जो कोई इस व्रत को पाले, संयमधर कहलाता है।।3।।
संयम वीर पुरुष के होता, मुनिवर इसके अधिकारी।
ऐसे संयमधर साधु को, पूज रहे सुर नर नारी।।
पाँच समिति इन्द्रिय रोधन, पंच महाव्रत को धारें।
तीन गुप्ति आवश्यक पालें, निज स्वरूप को विस्तारें।।4।।
ज्ञान ध्यान है जिनका भूषण, विषय कषायों को छोड़ें।
सर्व परिग्रह के जो त्यागी, समता से नाता जोड़ें।।
त्रय संध्या सामायिक करते, राग–द्वेष माया छोड़ें।
छेदोपस्थापन संयमधर, कर्मों के बंधन तोड़ें।।5।।
सूक्ष्म लोभ हर यथाख्यात धर, मोहकर्म को विनशायें।
जगत्पूज्य बन जाते वे गुरु, शूरवीर वे कहलायें।।
संयम से भवसागर तिरते, मोक्ष शिखर वो पा जायें।
ऐसे श्री गुरु के चरणों में, 'आस्था' आतम सुख पाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश–दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम तप धर्म पूजा

(गीता छंद)

उत्तम धरम तप कह रहा, तप से मिले निज आत्मा।
उस आत्मा को प्राप्त करने, हम भजें परमात्मा।।
तप और तपधर नाथ का, आह्वान पुष्पों से करें।
मन में विराजो नाथ अब, हम भक्ति से पूजन करें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रोला छंद)

पावन निर्मल नीर, घट में भरकर लायें।
जन्म जरा मृत नाश, प्रभु के चरण चढ़ायें।।
उत्तम तप हित आज, तप की अर्चा गायें।
पूजा कर हम नाथ, अपने पाप नशायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुरभित गंध, घिस प्रभु पाद लगायें।
हम प्रभु पद की धूल, अपने शीश लगायें।। उत्तम तप..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर तप धार, अक्षय सुख को पायें।
हम अक्षय सुख हेतु, अक्षत पुंज चढ़ायें।। उत्तम तप..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ब्रह्म परमात्म, ब्रह्म रूप प्रगटायें।
हम मन्मथ क्षय हेत, चरणन् पुष्प चढ़ायें।। उत्तम तप..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम व्यंजन लेय, हम प्रभु पूजा करते।
पाने उत्तम श्रेय, द्वादश तप को वरते।।
उत्तम तप हित आज, तप की अर्चा गायें।
पूजा कर हम नाथ, अपने पाप नशायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मोहनी नाश, केवल ज्योति जगायी।
केवलज्ञानी नाथ, हमने आरती गायी।। उत्तम तप..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म श्रृंखला तोड़, अष्टम भू जिन पायें।
अष्टम मगरी हेत, उनको धूप चढ़ायें ।। उत्तम तप..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला आदि सजाय, प्रभु को आज चढ़ायें।
छम-छम वाद्य बजाय, घूमर नृत्य रचायें।। उत्तम तप..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्यों का थाल, लाये प्रभु के दर पे।
पद अनर्घ मिल जाय, अर्घ चढ़ायें भर के।। उत्तम तप..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तप धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

जिनगुण संपत्ति व्रत करे, उत्तम तप उपवास।
जिनगुण निधि की प्राप्ति हो, होवे कर्म विनाश।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मक्षपण व्रत धारकर, उत्तम तप अपनाय।
इस व्रत की पूजा रचा, कर्मों पर जय पाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री कर्मक्षपण उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहनिष्क्रीड़ित व्रत महा, श्रद्धा से अपनाय।
समता से उपवास कर, इसको अर्घ चढ़ाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महा सिंहनिष्क्रीड़ित उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु सर्वतोभद्र व्रत, सर्वश्रेष्ठ सुखदाय।
उत्तम तप उर धारकर, इसकी अर्चा गाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री लघु सर्वतोभद्र उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासर्वतोभद्र व्रत, उत्तम गति कराय।
निज पर के कल्याण हित, इस व्रत को अपनाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महासर्वतोभद्र उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु निष्क्रीड़ित व्रत करें, उत्तमादि त्रय रूप।
उत्तम द्रव्य चढ़ा रहे, पाने सिद्ध स्वरूप।।6।।

ॐ ह्रीं श्री लघु निष्क्रीड़ित उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तावली उत्तम निधि, व्रत कर मुक्ति पाय।
मुक्ता से जिन को भजों, कहते सब गुरुराय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तावली उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकावलि व्रत धारकर, करें कर्म का नाश।
कनकरत्न से हम भजें, बनें प्रभु के दास।।8।।

ॐ ह्रीं श्री कनकावलि उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप धारें आचाम्ल हम, एकाशन के साथ।
त्याग करें हम शक्ति से, शक्ति दो जग नाथ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आचाम्ल उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुदर्शन व्रत करें, पायें सम्यक् दर्श।
इस व्रत को नित पूजकर, नाशें मिथ्यादर्श॥10॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन तप मुनिवर करें, करें श्रेष्ठ उपवास।
उत्तम तप को पूजने, आये गुरु के पास॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अनशन उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कम खाये जो भूख से, होता अवमौदर्य।
इस तप को हम पूजते, पालें अवमौदर्य॥12॥

ॐ ह्रीं श्री अवमौदर्य उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत परिसंख्या कर श्रमण, विधि से ले आहार।
मुनियों के तप त्याग को, पूजें विविध प्रकार॥13॥

ॐ ह्रीं श्री व्रतपरिसंख्यान उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन छोड़ते, नीरस ले आहार।
रस परित्यागी वे गुरु, वरें मोक्ष साकार॥14॥

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्याग उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फलक चटाई भूमि पे, शयन करें गुरुराय।
विविक्तशय्यासन धरें, तप से मन चमकाय॥15॥

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशय्याशन उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायक्लेश तप धारकर, छोड़ें तन से मोह।
ऐसे त्यागी जीव ही, क्षय करते हैं मोह॥16॥

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेश उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रायश्चित्त तप के धनी, करते पश्चात्ताप।
सब पापों से छूटने, करते गुरु नित जाप॥17॥

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्त उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव–शास्त्र–गुरु की विनय, करें सतत जो संत।
विनय महातप धारकर, बन जाते अरहंत।।18।।

ॐ ह्रीं श्री विनय उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालवृद्ध रोगी गुरु, आदि तपस्वी जान।
इनकी वैय्यावृत्त से, पायें केवलज्ञान।।19।।

ॐ ह्रीं श्री वैय्यावृत्त उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर तप स्वाध्याय है, स्व का हो अभ्यास।
करें सतत स्वाध्याय हम, हो सच्चा विश्वास।।20।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्याय उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तप व्युत्सर्ग को, अर्घ चढ़ायें आज।
प्राप्त करें सौभाग्य हम, मिले मोक्ष साम्राज।।21।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्ग उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तिम तप इक ध्यान है, ध्यान कर्म विनशाय।
करें ध्यान की साधना, बनें सिद्ध जिनराय।।22।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यान उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

तप में तपकर जिनकी काया, परम शुद्ध बन जाती।
त्यागी संतों की महिमा को, सारी दुनिया गाती।।
उत्तम तप को श्रेष्ठ नरोत्तम, श्रमण महाऋषि धारें।
उनको अर्घ चढ़ाकर हम सब, उन सम तप को धारें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रभु चरणों की छाँव में, मिलता मुक्ति द्वार।
जल की त्रय धारा करें, पायें शांति अपार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– सूरज के आताप से, खिले सुगंधित फूल।
पुष्प समर्पण हम करें, पाने प्रभु पद धूल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– तप में तपकर ही बनें, श्रमण सिद्ध भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें, करें भक्त गुणगान।।

(चौपाई)

उत्तम तप की जय–जय बोलें, तप का रस जीवन में घोलें।
तप में तपते भविजन सारे, श्रमण सिद्ध बन मोक्ष सिधारें।।1।।

तप बिन कंचन शुद्ध न होता, बिना तपे मन शुद्ध न होता।
शुद्ध–बुद्ध पदवी को पाने, मुनि तप तपते कर्म खपाने।।2।।

तप से काया कंचन होती, पा जाते वो केवल ज्योति।
द्वादश तप को जो अपनाते, नानाविध उपवास रचाते।।3।।

नदी किनारे ध्यान लगाते, गर्मी शैल शिखर पे जाते।
तन से माया ममता छोड़ें, प्रभुवर से इक नाता जोड़ें।।4।।

सर्दी गर्मी या हो वर्षा, ध्यान मग्न रहते नित हर्षा।
बहुविध व्रत उपवास रचायें, जिनगुणसंपत् व्रत अपनायें।।5।।

मुक्तावलि आदि तप सारे, महाघोर दुर्द्धर तप धारें।
प्रभुवर ने जो व्रत बतलाये, उनको साधक करते जायें।।6।।

इस प्रकार द्वादश तप पालें, मोक्षमार्ग के वो रखवाले।
उनको नहीं प्रमाद सतावे, रंचमात्र भी क्रोध न आवे।।7।।
जहाँ-जहाँ मुनि ध्यान लगावें, जीवों में मैत्री हो जावे।
कण-कण में खुशहाली छावे, दूर-दूर तक शांति समावे।।8।।
विपदायें सारी मिट जाती, सर्व संपदा घर-घर आती।
तप की महिमा इतनी भारी, जिसको ना जाने संसारी।।9।।
वृषभनाथ के शत सुत न्यारे, उत्तम तप कर मोक्ष पधारे।
बाहुबली वर्षी तप धारें, कर्म नाश फिर जिनपद धारें।।10।।
भरत चक्री कर मुनि की सेवा, पात्र दान का पाया मेवा।
मुनि बन तत्क्षण कर्म नशायें, एक घड़ी में जिन पद पाये।।11।।
उत्तम तप को हम भी धारें, त्रय गुप्ति से भाग्य संवारें।
'आस्था' से जो तप अपनाये, उत्तम तप का फल वो पाये।।12।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम त्याग धर्म पूजा

(जोगीरासा छंद)

त्याग धर्म जिनने अपनाया, वो त्यागी कहलाये।
जग के नश्वर पद को तजकर, परमातम पद पाये।।
आओ हम सब करें अर्चना, वीतराग जिनवर की।
हृदय कमल से कमल चढ़ायें, चाह करें शिवपुर की।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

सागर सरिता का पानी, भर लाते हैं भवि प्राणी।
प्रभुवर का न्हवन कराते, सम्यक् रत्नत्रय पाते।।
जिन चरण कमल की पूजा, सुख देती प्रभु की पूजा।
हम त्याग धर्म को ध्यायें, जिनवर की शरणा आयें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कश्मीरी प्यारी, प्रभु चरण लगायें सारी।
मेटो संताप हमारा, छूटे ना प्रभु का द्वारा।। जिन चरण..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अनुपम सुखदाता, प्रभु तुमको सब जग ध्याता।
हम प्रभु को शीश झुकाते, धवलाक्षत नित्य चढ़ाते।। जिन चरण..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले कुसुम मनोहर ताजे, जिनद्वार बजायें बाजे।
हम भक्त नाचते आते, प्रभु चरणन् पुष्प चढ़ातें।। जिन चरण..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

षट्रस व्यंजन की थाली, पूजन में आज सजाली।
हम अर्चा करें तुम्हारी, नाशों प्रभु क्षुधा हमारी।।
जिन चरण कमल की पूजा, सुख देती प्रभु की पूजा।
हम त्याग धर्म को ध्यायें, जिनवर की शरणा आये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर संग तीर्थों की, जिन ऋषिवर मुनि यतियों की।
हम आरती करने आये, छम–छम–छम नृत्य रचायें।। जिन चरण..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की कृष्ण घटायें, बादल बनकर मंडरायें।
प्रभु सन्मुख धूप चढ़ायें, हम कर्मन् धूल उड़ायें।। जिन चरण..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवफल की चाह लगी है, तन–मन में भक्ति जगी है।
हम प्रभु का कीर्त्तन गायें, आमादि श्रीफल लायें।। जिन चरण..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य सजा हम लायें, भावों की गंध मिलायें।
हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें, आतम अमृत रस पायें।। जिन चरण..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

तन की ममता जो तजें, करें ना तन से मोह।
त्याग चलें जग संपदा, नाश करें वो मोह।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तन ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जननी की ममता तजे, मिले शारदा मात।
सच्ची माता है वही, हरपल देती साथ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री जननी ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागें पितृ ममत्व को, धार दिगम्बर वेश।
श्रेष्ठ पिता अरहंत हैं, कहते मुनि गणेश॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पितृ ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागा पुत्र ममत्व को, छोड़ा जग संसार।
इस असार संसार में, निज आतम इक सार॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पुत्र ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागें राज्य ममत्व जो, धरे दिगम्बर वेश।
ऐसे उत्तम त्याग से, मिले सिद्ध का देश॥5॥

ॐ ह्रीं श्री राज्य ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन वाहन के त्याग से, पाया स्वर्ग विमान।
त्याग धर्म ही लोक में, सच्चा मोक्ष विमान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री धन वाहनादि ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागें त्रिया ममत्व को, मुक्ति रमा वर लेय।
उत्तम त्यागी जीव ही, कर्म नष्ट कर लेय॥7॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्री ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृह कुटुम्ब का मोह तज, उत्तम भाव बनाय।
त्याग धर्म ही श्रेष्ठ है, त्यागी संत बताय॥8॥

ॐ ह्रीं श्री गृहकुटुम्ब ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम भाव को जो कषे, वो कषाय कहलाय।
सर्व कषायें त्याग कर, निष्कषाय बन जाय॥9॥

ॐ ह्रीं श्री कषायभाव उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष ही जीव को, भव-भव भ्रमण कराय।
त्याग धर्म हर जीव को, श्री जिनदेव बनाय॥10॥

ॐ ह्रीं श्री राग-द्वेष उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

सच्चे सुख को पाने गुरुवर, धन-वैभव सब त्यागें।
उत्तम त्याग धर्म अपनायें, आत्म निधि अनुरागें॥
उत्तम त्याग धर्म हम पाने, त्याग धर्म को पूजें।
अष्टम वसुधा को हम पायें, अष्ट करम सब छूटें॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- त्याग दिया संसार को, बने आप भगवान।
तव समान पद प्राप्त हो, माँगें यह वरदान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- मन पुष्पों सा खिल उठे, प्रभु के चरणन् पाय।
तन-मन-जीवन धन्य हो, प्रभु को पद्म चढ़ाय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- त्याग धर्म उत्तम कहा, त्याग धर्म गुणखान।
जयमाला से हम करें, जिनवर का गुणगान॥

(नरेन्द्र छंद)

उत्तम त्याग धर्म की जय हो, जय हो सारे मुनियों की।
यतिवर मुनिजन जिसको धारें, जय हो सारे ऋषियों की॥

जिसने त्याग धर्म को धारा, उनने उत्तम गति पायी।
ऐसे त्यागी मुनिराजों की, हमने गुणगाथा गायी।।1।।

जो अपनाये त्याग धर्म को, राग-द्वेष मद मोह तजे।
मात-पिता सुत नारी बंधु, कुटुम्ब कबीला सभी तजे।।
धन वैभव और राज्य खजाना, वाहन आदि नहीं रखे।
तन से भी निर्मोही बन के, त्याग धर्म का स्वाद चखे।।2।।

पात्र दान के अनुमोदन से, दुःखी रंक भी भूप बने।
त्याग धर्म से नंदीमित्र भी, चंद्रगुप्त सम्राट बने।।
अकृत पुण्य दान के द्वारा, धन्यकुँवर नृप श्रेष्ठ बने।
उत्तम त्याग धर्म अपनाकर, चरम स्वर्ग में देव बने।।3।।

मन इन्द्रिय को वश में करते, क्रोधादि से दूर रहे।
पाप-पुण्य ममता को तजते, करुणा मैत्री भाव रहे।।
आर्त्त रौद्र ध्यानों को तजकर, धर्म शुक्ल दो ध्यान करें।
श्रेणी आरोहण वो करके, उत्तम केवलज्ञान वरें।।4।।

समवशरण या गंधकुटी में, जिन बन शिवपथ समझायें।
कर्मश्रृंखला के मोचन के, सूत्र जगत् को सिखलायें।।
हम भी आये पूजा करने, त्याग धर्म को अपनायें।
तीन गुप्ति धर शिवसुख पाने, 'आस्था' प्रभु को शिर नाये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम आकिंचन्य धर्म पूजा

(शम्भु छंद)

उत्तम आकिंचन धरम कहा, वो धर्म मोक्ष सुख दिलवाये।
वो धर्म प्रभु के पास मिले, इस हेतू प्रभु के गुण गायें।।
कमलासन से प्रभु अधर रहे, फिर भी कमलों से हम पूजें।
आह्वान विधि पूर्वक करते, प्रभुवर को सुर–किन्नर पूजें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

निर्मल नीर प्रभु को आज चढ़ा रहे।
त्रय रोगों से मुक्ति पाने आ रहे।।
उत्तम आकिंचन्य धर्म धारें सदा।
जिन अर्चा से पायें सिद्धी सर्वदा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन प्रभु के पाद लगा रहे।
प्रभु पद में अर्पण कर भाग्य जगा रहे।। उत्तम आकिंचन्य...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमोती तंदुल प्रभु तुम्हें चढ़ा रहे।
परम पुण्य पाने हम जिन गुण गा रहे।। उत्तम आकिंचन्य...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की माला हम तुम्हें चढ़ा रहे।
मोक्षप्रदायी पुण्य माल हम पा रहे।। उत्तम आकिंचन्य...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूख प्यास बाधा दु:ख पहुँचाती सदा।
हे जिनवर ! हर लेना व्याधि रोग क्षुधा।। उत्तम आकिंचन्य...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न दीप ये चम-चम चमके थाल में।
करें आरती जिनवर की सुर-ताल में।।
उत्तम आकिंचन्य धर्म धारें सदा।
जिन अर्चा से पायें सिद्धी सर्वदा।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बाती धूप अगरबत्ती निर्दोष हो।
प्रभु को धूप चढ़ाकर मन निर्दोष हो।। उत्तम आकिंचन्य... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम जाम मौसंबी नारंगी सजा।
प्रभु को अर्पित सर्व श्रेष्ठ बाजे बजा।। उत्तम आकिंचन्य... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल अक्षत चरु पुष्प दीप फल ला रहे।
धूप ध्वजा संग प्रभु को अर्घ्य चढ़ा रहे।। उत्तम आकिंचन्य... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन्य धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

मैं ही नित्य अनित्य अरूपी, मैं ज्ञानी कहलाता।
मैं को छोड़ जगत् में मेरे, कोई काम न आता।।
इस अनित्य भावना को मैं, हरपल हर क्षण ध्याऊँ।
उत्तम आकिंचन्य धरम को, वसु विधि अर्घ चढ़ाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनित्य रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरा कोई शरण नहीं है, ना मैं शरण किसी का।
मैं ही शरण बनूँगा अपना, ना होऊँगा किसी का।।
यही भावना भाने भगवन्, अशरण भाव जगाऊँ।
उत्तम आकिंचन्य धरम को, वसु विधि अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अशरण रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये संसार असार कहाता, इसमें सार नहीं हैं।
सुख दुःख की ये धूप छाँव है, कोई सुखी नहीं है।।
इस जग में रहकर भी अब मैं, निज का ध्यान लगाऊँ।। उत्तम..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संसार रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं ही तो एकत्व रूप हूँ, मैं ही कर्त्ता धरता।
मैं के बिन ना कोई जगत् में, सुख-दुःख का ना भरता।।
यही मुख्य एकत्व भावना, इसको निशदिन भाऊँ।। उत्तम..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री एकत्व रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तो एक अमूर्त्त द्रव्य हूँ, ये तन मूर्त्त कहाता।
नीर क्षीरवत् मैं और काया, भिन्न-भिन्न कहलाता।।
तन वा तन से जुड़े बंधु जन, इनसे मोह हटाऊँ।। उत्तम..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अन्यत्व रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं को ये ही तन दिलवाये, प्रभु सम पूज्य बनाये।
रत्नत्रय का साधन ये तन, ये ही सिद्ध बनाये।।
अशुचि तन से शुचिता पाने, उत्तम तप अपनाऊँ।। उत्तम..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अशुचि रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष जब करता हूँ मैं, कर्म निकट आ जाते।
मैं ही इनको पास बुलाता, ये आश्रव कहलाते।।
मोह राग अब करूँ नहीं मैं, आश्रव सर्व रुकाऊँ।। उत्तम..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आस्रव रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कर्मों को रोके संवर, मैं भी और बढ़ाये।
स्व चिंतन की ओर बढ़ा मैं, पर का राग हटाये।।
संवर से कर कर्म निर्जरा, पुण्य-पाप विनशाऊँ।
उत्तम आकिंचन्य धरम को, वसु विधि अर्घ चढ़ाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री संवर रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सविपाक अविपाक निर्जरा, ये दो भेद कहाते।
समय पूर्व और पूर्ण समय पर, अंतर प्रभू बताते।।
तप संयम व समता धरकर, अपने कर्म नशाऊँ।। उत्तम..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री निर्जरा रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से मैं भटका, तीन लोक के माही।
मैं को ना जाना पहिचाना, पर में झूला राही।।
तीन लोक का श्रेष्ठ सिद्धपद, हे जिनवर ! मैं पाऊँ।। उत्तम..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री लोक रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति दुर्लभ है नर गति पाना, मैंने इसको पाया।
जैनधर्म और जिनकुल पाकर, हे जिन ! तुमको ध्याया।।
सम्यक् बोधि मुझे मिल जाये, यही भावना भाऊँ।। उत्तम..।।11।।

ॐ ह्रीं श्री बोधिदुर्लभ रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व वस्तु का जो स्वभाव है, वो ही धर्म कहाता।
ज्ञाता दृष्टा है मम आतम, निज स्वभाव कहलाता।।
आत्म धर्म को पाने भगवन्, धर्म भावना भाऊँ।। उत्तम..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मरूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं ही चेतन ज्ञान स्वरूपी, मात पिता ना मेरे।
बंधु बांधव और परिजन, कोई न साथी मेरे।।
मैं को छोड़ अन्य सब चेतन, उनसे राग हटाऊँ।। उत्तम..।।13।।

ॐ ह्रीं श्री चेतन रूप अब्रह्म परित्याग आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोना–चाँदी हीरे–मोती, आदि परिग्रह भारी।
रूपया पैसा वा धन वैभव, महल मकान अटारी।।
सर्व अचेतन बाह्य परिग्रह, इनसे मोह हटाऊँ।
उत्तम आकिंचन्य धरम को, वसु विधि अर्घ चढ़ाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अचेतन रूप बाह्य परिग्रह त्याग आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध मान माया लोभादि, हास्यादि ये कषायें।
अंतरंग मिथ्यात्व अरि ये, ये परिग्रह कहलाये।।
किन्चित भी परिग्रह नहीं मेरा, इनका मोह नशाऊँ।। उत्तम..।।15।।

ॐ ह्रीं श्री अंतरंग परिग्रह त्याग आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोह करम ही सदा जीव को, राग–द्वेष करवाता।
राग–द्वेष के वश हो प्राणी, चहुँगति कष्ट उठाता।।
उत्तम आकिंचन वृष पाने, गुरु से प्रीत लगायी।
सर्व परिग्रह त्यागी गुरु की, हमने भक्ति रचायी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रभु के चरणों में मिले, शांति अपरम्पार।
शांति पाने मैं करूँ, प्रभु चरणों में धार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– कमलासन के मध्य में, बैठे जिनवर आप।
पुष्प चढ़ाके चरण में, करूँ प्रभु का जाप।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जयमाला हम गा रहे, भक्ति भाव के साथ।
जयमाला धारण करें, सदा झुकायें माथ।।

(गीता छंद)

जय–जय हो आकिंचन धरम, जय–जय कहें इस धर्म की।
सम्पूर्ण परिग्रह को तजें, जय–जय कहें मुनिधर्म की।।
त्यागी तपस्वी ऋषि यति, इस धर्म के धारी बने।
अत्यल्प परिग्रह भी जहाँ, संक्लेश का कारण बने।।1।।

वह जीव संतोषी सुखी, जिसने परिग्रह को तजा।
वो भव्य ही मुनिराज बन, निज आत्म का लेते मजा।।
मूर्छा नहीं ममता नहीं, सम भाव में रहते सदा।
मन में विषमता है नहीं, कर्त्तव्य निज पालें सदा।।2।।

नदी शैल रवि के सामने, दुर्द्धर तपस्या वो करें।
नित ध्यान योगाभ्यास से, गुरु कर्म को जर–जर करें।।
भाते हैं द्वादश भावना, बाईस परिषह भी सहें
उपसर्ग में समता धरें, मुख से न कटु वाणी कहें।।3।।

पूजा करे कुछ आपकी, अथवा दे कोई गालियाँ।
कोई उतारे आरती, कोई बजावे तालियाँ।।
सुख–दुःख व कंचन काँच में, समभाव चेहरे पे रहे।
चारित्र धारी वे श्रमण, दृढ़ मेरु से अविचल रहे।।4।।

सागर सी है गंभीरता, विषयों की वांछा है नहीं।
क्रोधादि चार कषाय उनके, पास में आती नहीं।।

ख्याति व पूजा लाभ की, इच्छा तनिक भी है नहीं।
पर से विमुख मुनिराज ही, निज आत्म को पाते सही।।5।।
श्री ऋषभ जिन से वीर तक, सब त्याग आकिंचन बनें।
बाहुबली चक्री भरत, श्री राम कर्माजन हनें।।
आजन्म दिग्–अम्बर बने, जिनसेन वीराचार्य हैं।
बहुश्रुत सृजेता धर्मनेता, कुंदकुंदाचार्य हैं ।।6।।
जिनदेव के शुभ ध्यान से, काटे करम स्वयमेव ही।
निज में रमण करके गुरु, बनते परम जिनदेव ही।।
ऐसे गुरु के चरण में, श्रद्धा सुमन अर्पण करें।
अर्चा करें 'आस्था' धरें, त्रय गुप्ति से भवदुःख हरें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश–दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा

(गीता छंद)

त्रैलोक्य से पूजित सदा, ये ब्रह्मचर्य महान् है।
धारण करें जो भव्यजन, बनते वही भगवान हैं।।
आह्वान प्रभु का हम करें, बहु ब्रह्म पद्म गुलाब से।
जिनराज की अर्चा करें, सर्वोच्च व्रत का लाभ ले।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

श्री आप्त जिनागम जिनवर की, जल से पूजन करने आये।
त्रय रत्नों को पाने हेतू, पूजन कर मन में हर्षायें।।
दश धर्मों में अति उत्तम जो, उस ब्रह्मचर्य व्रत को वंदन।
उत्तम व्रतधर परमेष्ठी का, हम भक्ति से करते अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म ब्रह्म पाया जिनने, उनको शुचि गंध लगाया है।
उनकी अति पावन पग रज को, हमने निज शीश लगाया है।। दश.. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पद अर्हत् सिद्धों का, उस पद की बस अभिलाषा है।
अक्षत के पुंज चढ़ा उनको, पूरी हो मम अभिलाषा ये।। दश.. ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कचनार कमल और सेवन्ती, चंपक चंपा हम ले आये।
उनकी अति सुंदर माल बना, प्रभु पद में रख अति हर्षाये।। दश.. ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा से मारक विष भी, अमृत बन प्राण बचाता है।
षट्रस व्यंजन के थाल उन्हें, हर भक्त चढ़ा सुख पाता है।।
दश धर्मों में अति उत्तम जो, उस ब्रह्मचर्य व्रत को वंदन।
उत्तम व्रतधर परमेष्ठी का, हम भक्ति से करते अर्चन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे समवशरण के अधिनायक, केवलज्ञानी केवल वर दो।
अज्ञानजयी श्रुत ज्योति मिले, ऐसा जीवन जगमग कर दो।। दश.. ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाटक आठों ही कर्मों के, चउ गतियों में भटकाते हैं।
दुःखदायी गतियों से बचने, जिनवर को धूप चढ़ाते हैं ।। दश.. ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंगूर आम केला दाड़िम, जामुन नारंगी सीताफल।
पूजा करते करते इक दिन, पा जायेंगे निश्चित शिवफल।। दश.. ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये ब्रह्मचर्य मंगलकारी, व्रत का राजा जग सुखकारी।
हम अर्घ लिये अर्चा करते, बनने जिनपद के अधिकारी।। दश.. ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

स्त्री सहवास तजे जो, उत्तम ब्रह्मचर्य धरे वो।
इस ब्रह्मचर्य को ध्यायें, हम उत्तम अर्घ चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीसहवास वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री के अंग न देखें, आगम में गुरु उल्लेखे।
इस ब्रह्मचर्य को ध्यायें, हम उत्तम अर्घ चढ़ायें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीमनोहरांग निरीक्षण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग वचन ना बोलें, प्रभु भक्ति का रस घोलें॥ इस...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री रागवचन वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भोग भोग कर आये, उनको विस्मृत कर जायें॥ इस...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वभोगानुस्मरण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस गरिष्ट रस त्यागें, भक्ति में मनवा लागे॥ इस...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वृष्येष्ट रस वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार करें ना तन का, संस्कार करें चेतन का॥ इस...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री स्व–शरीर संस्कार वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री के संग ना सोयें, अपने व्रत को ना खोयें॥ इस...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्री शय्यासन वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी काम कथा न करें हम, बस प्रभु की कथा करें हम॥ इस...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री काम कथा वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरपेट न भोजन करना, पंचेन्द्रिय मन वश करना॥ इस...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री उदरपूर्णाशन वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटि शील दृढ़ पालें, निज आतम के रखवाले॥ इस...॥10॥

ॐ ह्रीं श्री नवधा शील पालनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोषण ना करें करायें, तन–मन की शक्ति बढ़ायें॥ इस...॥11॥

ॐ ह्रीं श्री शोषण कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप काम विनशायें, निज तप की शक्ति बढ़ायें॥ इस...॥12॥

ॐ ह्रीं श्री संताप कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चाटन काम को छोड़ें, भक्ति में मन को जोड़ें।
इस ब्रह्मचर्य को ध्यायें, हम उत्तम अर्घ चढ़ायें॥13॥

ॐ ह्रीं श्री उच्चाटन कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वशीकरण काम विनशायें, हम प्रभु के वश हो जायें॥ इस...॥14॥

ॐ ह्रीं श्री वशीकरण कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोहन काम भगायें, निज मोह राग विनशायें॥ इस...॥15॥

ॐ ह्रीं श्री मोहन कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पुलकित काम दुःखारी, दुःखदायी ये बीमारी॥ इस...॥16॥

ॐ ह्रीं श्री पुलकित कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवलोकन काम नशायें, स्व अवलोकन कर जायें॥ इस...॥17॥

ॐ ह्रीं श्री अवलोकन कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम हास्य काम विघटाये, निज काम व्यथा विनशायें॥ इस...॥18॥

ॐ ह्रीं श्री हास्य कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम काय कुचेष्टा छोड़ें, मायाचारी भी छोड़ें॥ इस...॥19॥

ॐ ह्रीं श्री इंगित चेष्टा वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये मारण काम कहाये, इनको तजकर सुख पाये॥ इस...॥20॥

ॐ ह्रीं श्री मारणकामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

दश धर्मों का ये है राजा, ब्रह्मचर्य कहलाये।
मन-वच-काया त्रय गुप्ति से, इसको जो अपनाये॥
ब्रह्म रूप आतम में रत हो, पूर्ण सुखी बन जाये।
उत्तम ब्रह्मचर्य को हम सब, पूरण अर्घ चढ़ाये॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ब्रह्मचर्य की भावना, बढ़ती व्रत के साथ।
शांति से बढ़ते चलें, नमा प्रभु को माथ।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– ब्रह्मचर्य व्रत की महक, सुरभित सुमन हजार।
प्रभु के चरणों में चढ़ा, पायें सौख्य अपार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– ब्रह्मचर्य व्रत की पढ़ें, जयमाला हम आज।
आस्था से धारण करें, पायें शिव साम्राज्य।।

(अडिल्ल छंद)

जय–जय–जय श्री ब्रह्मचर्य गुणखान है।
दश धर्मों में उत्तम श्रेष्ठ महान् है।।
जिसने इसको धारा वो अर्हत् बनें
कर्म काट वो श्रेष्ठ सिद्ध भगवन् बनें।।1।।

पूर्ण ब्रह्मव्रत होता श्री जिनराज के।
महाव्रती में होता श्री मुनिराज के।।
अणुरूप में श्रावक इसको पालता।
मन–वच–काया से दोषों को टालता।।2।।

ब्रह्मचर्य की महिमा बड़ी विशाल है।
सुर–नर–किन्नर नमते अपना भाल हैं।।

सेठ सुदर्शन जब शूली पे चढ़ गये।
शील धर्म से जय पाकर भव तर गये।।3।।

शील धर्म की धारी माँ सीता सती।
सती अंजना चंदन व राजुल मती।।
द्रोपदी नीली सोमा और मनोरमा।
नहीं फँसी वे पापों में निज मन रमा।।4।।

देवों द्वारा ये सतियाँ पूजित हुईं।
शील धर्म के कारण जग मंडित हुईं।।
नव कोटि से हम उनका अर्चन करें।
ब्रह्मचर्य पे 'आस्था' रख भव से तिरें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

क्षमावाणी पूजा

(गीता छंद)

जिसने रखी उत्तम क्षमा, वो ही क्षमाधारी बने।
तीर्थेश त्रिभुवन के प्रभु, हम आपके रागी बने।।
शक्ति मिले हमको प्रभो, आह्वान थापन हम करें।
हे नाथ आओ मन बसो, पूजन भजन हम नित करें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रत्नत्रय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

श्री जिनेन्द्र भगवान की, छवि हृदय को भाय।
निर्मल जल ले कुंभ में, प्रभु का न्हवन कराय।।
क्षमावाणी उत्तम धरम, समता दीप जलाय।
इसकी हम पूजा करें, उत्तम द्रव्य चढ़ाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री निशंकितांगाय नमः, निकांक्षितांगाय नमः, निर्विचिकित्सांगाय नमः, निर्मूढ़ताय नमः, उपगूहनांगाय नमः, स्थितिकरणांगाय नमः, वात्सल्यांगाय नमः, प्रभावनांगाय नमः, व्यंजनव्यंजिताय नमः, अर्थ समग्राय नमः, तदुभयसमग्राय नमः, गुरुपादापन्हवाय नमः, बहुमानोन्मानाय नमः, अहिंसाव्रताय नमः, सत्यव्रताय नमः, अचौर्यव्रताय नमः, ब्रह्मचर्यव्रताय नमः, अपरिग्रहव्रताय नमः, मनोगुप्त्यै नमः, वचनगुप्त्यै नमः, कायगुप्त्यै नमः, ईर्यासमित्यै नमः, भाषासमित्यै नमः, एषणा समित्यै नमः, आदान–निक्षेपणसमित्यै नमः, व्युत्सर्गसमित्यै नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री बोलकर, प्रभु पद गंध लगाय।
प्रभु चरणों की गंध से, अपना शीश सजाय।। क्षमावाणी..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत धवल ले, बहुविध रत्न चढ़ाय।
प्रभु को अर्पण हम करें, पुंज अनेक चढ़ाय।। क्षमावाणी..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को पुष्प चढ़ा रहे, मंत्र जाप के साथ।
सर्व कर्म होवें विलय, विनय करें हम नाथ।।
क्षमावाणी उत्तम धरम, समता दीप जलाय।
इसकी हम पूजा करें, उत्तम द्रव्य चढ़ाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधारोग हरने प्रभु, चढ़ा रहे नैवेद्य।
हरो हमारे रोग सब, हे त्रिभुवन के वैद्य !।। क्षमावाणी..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक से आरती, हर दिन प्रभु की गाय।
प्रभुवर के दरबार को, दीपों से चमकाय।। क्षमावाणी..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पात्र में खे रहे, बहुविध सुरभित धूप।
सर्वकर्म मम नाश हो, प्रगट होय जिनरूप।। क्षमावाणी..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपके नाम की, पूजा करें सदैव।
आम्रादि अर्पण करें, पार करो जिनदेव।। क्षमावाणी..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध वसु द्रव्य की, थाली भव्य सजाय।
अविनाशी भगवान के, चरणन् अर्घ चढ़ाय।। क्षमावाणी..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निर्मल भावों से करें, प्रभु चरणन् जल धार।
प्रभु के पद प्रक्षाल से, पायें शांति अपार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– सुंदर–सुंदर फूल से, मनवा अति हर्षाय।
फूल चढ़ा प्रभु चरण में, जिन का ध्यान लगाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– पर्व क्षमावाणी कहे, सरल करो परिणाम।
जयमाला इसकी पढ़ें, पायें मोक्ष मुकाम।।

(नरेन्द्र छंद)

क्षमावान ही क्षमा भाव से, क्षमा भावना चित्त धरें।
क्षमा धर्म को पाने हेतू, जिन गुरुओं को नमन करें।।
रत्नत्रय को धारण करके, जो मुनि उत्तम सुख पाते।
उनके चरणों में नत हो हम, उनसे रत्नत्रय पाते।।1।।

शिवपद का सोपान सुदर्शन, सम्यक्ज्ञान खजाना है।
तीजा सम्यक् चारित उत्तम, इससे सिद्धी पाना है।।
अष्ट अंगयुत सम्यक्दर्शन, ज्ञान अष्टविध कहलाये।
तेरह भेद कहे चारित के, हम इनको पाने आये।।2।।

शंका छोड़ो बनो निशंकित, अंग निशंकित कहता है।
जग के सुख की इच्छा त्यागो, अंग निकांक्षित कहता है।।

निर्विचिकित्सा कहता हमसे, ग्लानि भाव नहीं लाओ।
अंग अमूढ़ दृष्टि को धारो, सर्व मूढ़ता विनशाओ।।3।।

उपगूहन कहता है भव्यों, गुण अवगुण को पहिचानो।
गिरते को जो सदा उठाये, स्थितिकरण उसे मानो।।
गौ बछड़े सम प्रेम अमर हो, वत्सल अंग सिखाता है।
अंग आठवाँ है प्रभावना, धर्म प्रभाव बढ़ाता है।।4।।

सम्यक् ज्ञान आठ अंगों युत, केवलज्ञान दिलाता है।
इनमें जो श्रद्धा कर लेता, निश्चय भव तर जाता है।।
पाँच महाव्रत पाँच समिति, तीन गुप्तियाँ जो पाले।
सर्व परिग्रह के त्यागी ही, सम्यक् तप करने वाले।।5।।

राग-द्वेष मद मोह विनाशे, समता संयम को धारें।
क्षमा धनी उत्तम मुनियों की, अर्चा सब दुःख परिहारे।।
गुरुओं की सेवा पूजा से, क्षमावान हम बन जाये।
करें वंदना त्रय गुप्ति से, 'आस्था' से भव तिर जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन-अष्टांग सम्यग्ज्ञान-त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षण धर्मेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा– दश धर्मों की गा रहे, मंगलमय जयमाल।
पुष्पों की माला चढ़ा, होवे मालामाल।।

(त्रोटक छंद)

जयकार करें प्रभु द्वार खड़े, दश धर्मों की हम सीढ़ी चढ़े।
चलते जाये बढ़ते बढ़ते, दश धर्मों को वंदन करते।।1।।

क्रोधादि तजें मोहादि भगे, इस क्षमा धरम की ज्योति जगे।
मुनिराज क्षमा गुण को धरते, दश धर्मों को वंदन करते।।2।।

मार्दव मानो सुख का साधन, बनता है समता में कारण।
मार्दव से मृदुता को वरते, दश धर्मों को वंदन करते।।3।।

आर्जव माया से मुक्त करे, मन–वच–काया को सरल करे।
आर्जव गुण से निज को भरते, दश धर्मों को वंदन करते।।4।।

शुचिता बिन शुद्धि नहीं होती, लोभी दुनिया दुःख में रोती।
यह शौच धरम मुनिवर धरते, दश धर्मों को वंदन करते।।5।।

यह सत्य सुखों का मन्दर है, शिव शांति का वो समन्दर है।
नित सत्य श्रेष्ठ झरने झरते, दश धर्मों को वंदन करते।।6।।

उत्तम संयम पालो प्राणी, इन्द्रिय मन वश कर लो प्राणी।
मुनिवर उत्तम संयम धरते, दश धर्मों को वंदन करते।।7।।

उत्तम तप से सब कर्म झरे, द्वादश तप में जीवन निखरे।
तप में तप कर कुंदन बनते, दश धर्मों को वंदन करते।।8।।

वृष त्याग परम हितकारी है, पूजा करते संसारी हैं।
उत्तम त्यागी मुनिवर बनते, दश धर्मों को वंदन करते।।9।।

उत्तम आकिंचन धारेंगे, मुनि बन कर्मों को काटेंगे।
सम्पूर्ण परिग्रह मुनि तजते, दश धर्मों को वंदन करते।।10।।
यह ब्रह्मचर्य उत्तम व्रत है, मुनियों के यही महाव्रत है।
शुचि ब्रह्मचर्य मुनिवर धरते, दश धर्मों को वंदन करते।।11।।
दश धर्म दशों दिश चमकेगा, सुरभित पुष्पों सम महकेगा।
त्रय गुप्ति से पालन करते, दश धर्मों को वंदन करते।।12।।
श्रद्धा से हम गुणगान करें, 'आस्था' से भवदधि पार करें।
जिन चरणों का आश्रय वरते, दश धर्मों को वंदन करते।।13।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प.पू. सोमदेव आचार्य का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

समता है आभूषण जिनका, धैर्य क्षमा गुणधारी।
सोमदेव आचार्य ऋषिवर, जय हो सदा तुम्हारी।।
अष्ट द्रव्य की सुन्दर थाली, गुरुवर तुम्हें चढ़ायें।
दो आशीष हमें भी गुरुवर, तुम जैसे बन जायें।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री सोमदेव गुरुदेव चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

(नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ से महावीर तक, चौबीस जिन को नमन करूँ।
कल्पतरू श्री शांतिनाथ को, गणधर श्रुत को नमन करूँ।।
महावीर जिन के शासन में, महावीर कीर्ति गुरुवर।
उनसे दीक्षित कुंथुसागर, वे मेरे दीक्षा गुरुवर।।1।।

कनकनंदी गुरु गुप्तिनंदी को, शीश झुका मन हर्षायें।
गुरु चरण की छत्रछाँव में, मेरी किस्मत जग जाये।।
कार्तिक कृष्णा तेरस के दिन, यह विधान प्रारम्भ किया।
माघसुदी दशमी के शुभ दिन, इस विधान को पूर्ण किया।।2।।

धर्ममयी नगरी बड़ौत में, पुण्य उदय मेरा आया।
शुभ आशीष सभी गुरुओं का, मैंने जीवन में पाया।।
दशों दिशा में दश धर्मों की, धर्म ध्वजा नित फहराये।
शाश्वत हैं दश धर्म हमारे, इनको हम सब अपनायें।।3।।

पूर्ण शास्त्र का ज्ञान नहीं है, छंद शास्त्र का ज्ञान नहीं।
जिनपूजा में चित्त लगाने, नित्य चले ये कलम सही।।
गुप्तिनंदी आचार्य गुरु की, कृपा शीश पे सदा रहे।
'आस्थाश्री' की यही प्रार्थना, श्रद्धा सब पे सदा रहे।।4।।

दोहा– सूर्य चंद्रमा का रहे, भू पर दिव्य प्रकाश।
दशलक्षण गुणखान का, होवे दिव्य विकास।।
'आस्था' से यह व्रत करे, समिति गुप्ति के साथ।
तीन लोक परमेश को, जोड़ें हम सब हाथ।।

इति अलम्

दशलक्षण धर्म की आरती नं. 1

(तर्ज–प्यारा लागे छे गुरुराज....)

दशलक्षण गुणखान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी, आरती उतारें...

1. दश धर्म अतिशय मंगलकारी, शाश्वत पर्व परम सुखकारी।
कीर्त्तन करें गुणगान, आज थारी......

2. प्रथम क्षमामय धर्म कहाये, मार्दव आर्जव मन में बसायें।
दश धर्म है पह्चान, आज थारी......

3. उत्तम शौच शुचिता लाये, सत्य धरम के घोष लगायें।
यही हमारी शान, आज थारी......

4. संयम है श्रृंगार हमारा, तप से पाओ मुक्ति द्वारा।
त्याग धर्म सुख खान, आज थारी......

5. धर्म आकिंचन पाप छुड़ाता, ब्रह्मचर्य से सुख मिल जाता।
पायें सम्यक्ज्ञान, आज थारी......

6. रत्नों के दीपक सोने की थाली, हम सब बजायें भक्ति से ताली।
बन जायें भगवान, आज थारी......

7. दशों दिशा में दश धर्म चमके, नृत्यगान करलें सब जमके।
'आस्था' वरें शिवथान, आज थारी......
दशलक्षण गुणखान, आज थारी आरती उतारूँ।

***

दशलक्षण विधान की आरती नं.2

(तर्ज–मन डोले...)

दीपक लायें, आरती गायें, दशलक्षण धर्म विधान की
हम करें सभी मिल आरतियाँ।

1. दशलक्षण ये पर्व हमारा, मोक्षमार्ग दिखलाता।
प्रभु मुद्रा अवलोकन करके, मन पुलकित हो जाता..2
दर्शन करते, वंदन करते, प्रभु आके तेरे द्वार पे.. हम करें..

2. प्रभु दर्शन से शक्ति मिलती, सुख–शांति मिल जाये।
अतिशय हो ऐसा जिनवर का, ज्ञान किरण मिल जाये..2
घुंघरू बाजे, छम–छम नाचे, हम लाये दीपक थाल ये.. हम करें..

3. दशलक्षण का व्रत विधान ये, पाप ताप विनशायें।
दश धर्मों को पालन करने, प्रभु की शरणा आये..2
'आस्था' आये, शिवसुख पाये, ये धर्म परम सुखकार है
हम करें सभी मिल आरतियाँ...

***

दशलक्षण चालीसा

दोहा– श्री जिनवर को नमन कर, पाँचों पद का ध्यान।
चौबीसों जिनराज का, करें यहाँ गुणगान।।
श्री गणधर जिन शारदा, मंगल धर्म महान्।
चालीसा दश धर्म का, हरता मिथ्या ज्ञान।।

चौपाई

जय–जय धर्म महासुखकारी, दशलक्षण ये मंगलकारी।
आओ इनकी महिमा गायें, मंगलमय चालीसा गायें।।1।।
पर्वराज शाश्वत कहलाये, जिसमें हर प्राणी लग जाये।
उसमें भद्रमास जब आये, सबके मन में खुशियाँ छायें।।2।।
भाद्रमास यह भद्र बनाये, सबको सच्ची राह दिखाये।
पापी भी पावन बन जाये, पाप छोड़ शुभ में लग जाये।।3।।
तीन बार इक वर्ष में आता, दश धर्मों की याद दिलाता।
उनमें भाद्रमास अति प्यारा, दशलक्षण व्रत का जयकारा।।4।।
इस महीने में व्रत बहु आते, यह व्रत भव से पार लगाते।
सबके मन उत्साह जगावे, उत्सव उपवासों का छावे।।5।।
निर्जल व्रत उपवास करे जो, पुण्यमयी सुख कोष भरे वो।
कोई एकाशन व्रत धारे, वो भी अपना भाग्य संवारे।।6।।
पूजा पाठ करे करवावे, मंत्र जापकर पुण्य कमावे।
राग–द्वेष क्रोधादिक छोड़ें, पापारंभों से मुख मोड़ें।।7।।
षट् आवश्यक निश दिन पाले, कहलाते वो भक्त निराले।
दश धर्मों को गुरुवर पालें, क्षमा धैर्य समता रस वालें।।8।।
तीव्र क्रोध को क्षमा बुझाये, क्षमावान गुरु को शिर नावें।
जिसने छोड़ी क्रोध कषायें, उसका जीवन पूज्य कहाये।।9।।
वो ही हमको धर्म सिखायें, पाप पंक से हमें बचायें।
आओ मान कषायें जाने, मार्दव धार मान को हाने।।10।।

मान कषाय बड़ी दुःखदायी, सम्यक् से मिथ्या में लायी।
मान छोड़ हम विनय सम्हारें, बन जायेंगे प्रभु हमारे ॥11॥
माया ने पलटी सब काया, दुर्गतियों का पात्र बनाया।
आर्जव धर्म सरलता लाये, शौच धर्म मन में आ जाये ॥12॥
मन वच काया पावन करले, श्री जिनवर पापों को हरले।
जिसने सत्य धर्म को जाना, पाया उत्तम सत्य खजाना ॥13॥
संयम रत्न करे उजियारा, तप से चमके जीवन सारा।
त्याग बिना मुक्ति नहीं होती, त्याग धर्म है केवल ज्योति ॥14॥
उत्तम आकिंचन व्रत प्यारा, जिसने मोह भाव परिहारा।
सर्व परिग्रह ग्रह सम लागे, उसको त्याग धर्म अनुरागे ॥15॥
ऐसे गुरु की महिमा भारी, ब्रह्मचर्य व्रत के वो धारी।
इन्द्र नरेन्द्र भव्य सब ध्यावें, गुरुओं की वो भक्ति रचावें ॥16॥
जो दश-दश उपवास करेगा, सर्व दुःखों से मुक्त रहेगा।
जो दशलक्षण व्रत अपनाये, संकट पीड़ा नहीं सताये ॥17॥
दश धर्मों को जिसने जाना, पाया उसने मोक्ष खजाना।
कर्म काटके शिवसुख पाया, हमने उनको शीश झुकाया ॥18॥
चालीसा जो भी नित गाये, चहुँगति से छुटकारा पाये।
क्षमा हृदय में उसके आये, क्षमावान वह श्रमण कहाये ॥19॥
समिति गुप्तियाँ हम सब पायें, दश धर्मों पर 'आस्था' लायें।
भक्तों को दश धर्म उबारे, ये ही सबके तारण हारे ॥20॥

दोहा- चालीसा दश धर्म का, पढ़े-सुने मन लाय।
दश धर्मों को साधकर, उच्च शिखर को पाय॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
करो कराओ भक्ति से, दीप धूप के साथ॥

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री पंचमेरु समुच्चय विधान पूजा

(नरेन्द्र छंद)

पाँचों मेरु मंगलकारी, अतिशयवान कहाते हैं।
बिम्ब अकृत्रिम श्री जिनवर के, सबका भाग्य जगाते हैं।।
प्रथम न्हवन होता मेरु पे, बाल प्रभु जग स्वामी का।
करते हम आह्वान प्रभु का, सर्व श्रेष्ठ जिन स्वामी का।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति (अस्सी) जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

गंगादिक नदियों का जल हम, स्वर्ण कलश में भर लाये।
जन्मादिक त्रय रोग नशाने, हम प्रभु को भजने आये।।
पंचमेरु के सर्व जिनालय, सबका मन हरने वाले।
अस्सी जिन चैत्यालय भज हम, उनसे सच्चा सुख पालें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल दिव्य सुगंधित चंदन, भव आताप मिटाता है।
जो जिन पद में गंध लगाये, वो सुन्दर तन पाता है।। पंचमेरु..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य धवल मोती अक्षत के, भर–भर थाल सजाते हैं।
अक्षय पद के दानी प्रभु को, अक्षत पुंज चढ़ाते हैं।। पंचमेरु..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम भाव द्रव्य उत्तम ले, जिन की भक्ति रचाते हैं।
नाना रंगों के सुमनों की, पुष्पाञ्जलि बिखराते हैं।।
पंचमेरु के सर्व जिनालय, सबका मन हरने वाले।
अस्सी जिन चैत्यालय भज हम, उनसे सच्चा सुख पालें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधारोग ये दुःख पहुँचाये, चारों गति में भटकाये।
क्षुधा रोग वश करने जिन हम, व्यंजन शुद्ध बना लाये।। पंचमेरु..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख-लाख दीपक ले भगवन्, भव्य आरती गायें हम।
आरती से आरत मिट जाये, मोह-तिमिर विनशायें हम।। पंचमेरु..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में धूप चढ़ाकर, दशों दिशायें महकायें।
कर्मवर्गणा ढीली करने, प्रभुवर की पूजन गायें।। पंचमेरु..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पद है मोक्ष महापद, वह पद हमको मिल जाये।
आमादिक बहुविध फल लेकर, करुणानिधि को हम ध्यायें।। पंचमेरु..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत पुष्पादिक्, वसुविधि द्रव्य सजा लाये।
जिन गुण संपत् पाने भगवन्, अर्घ चढ़ाने हम आयें।। पंचमेरु..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों मेरु पूजा के पूर्णार्घ

(नरेन्द्र छंद)

मेरु के इन चार वनों में, सोलह चैत्यालय प्यारे।
सुर किन्नरियाँ भक्ति करती, आकर जिनवर के द्वारे।।
पाण्डुक वन की चार शिला पे, बाल प्रभु का न्हवन करें।
सब जिनवर को अर्घ चढ़ायें, द्रव्य भाव युत नमन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

विजय मेरु के जिन भवनों में, सोलह जिन प्रतिमायें।
सब जिनवर की पूजा करने, परिजन संग सुर आयें।।
चार वनों में सर्व श्रेष्ठ वन, पाण्डुक वन कहलाता।
सुरपति बाल प्रभु को लाकर, इस वन में नहलाता।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

श्री बाल प्रभु के चरण इस मेरु पे पड़े।
अभिषेक करने नाथ का सुर देवगण खड़ें।।
षोडश प्रभु के मंदिरों में घंटिया बजें।
लेकर के अष्ट द्रव्य भक्त नाथ को भजें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

मंदर मेरु के जिनवर को पूजते।
प्रभु पूजा से भव के बंधन छूटते।।
इस मेरु पे सोलह चैत्यालय कहे।
आठों मंगल द्रव्यों से शोभित रहे।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मेरु सुंदर विद्युन्माली, पूजा की हम लायें थाली।
चारों वन की चार दिशायें, चारों में हैं जिन प्रतिमायें।।
भद्र सोमनस नंदन प्यारा, पाण्डुक वन है उनमें न्यारा।
इन्द्रादिक् जिनवर को लाते, भक्ति भाव से न्हवन कराते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पंचमेरु की अर्चना, करते सुरपति देव।
सर्व सुखालय जिनभवन, शांति करें सदैव।।

शांतये शांतिधारा

दोहा– देव–देवियाँ मेरु पे, लाते पुष्प अपार।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करें, सुरगिरि जिनवर द्वार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– पंचमेरु पुष्पाञ्जलि, सुखमय व्रत की खान।
पाँचों पापों को हरें, पंचमेरु भगवान।।

(शंभु छंद)

श्री पंचमेरु की जयमाला, जयमाला को देने वाली।
श्री मेरु सुदर्शन विजय अचल, मेरु मंदर विद्युन्माली।।
इन पंचमेरु का दर्शन ही, भव्यों को सुख–शांति देता।
जो इसका व्रत पालन करता, वो मोक्ष महा सुख पा लेता।।1।।

इस जम्बूद्वीप का भरत क्षेत्र, उसमें मृणाल नगरी सुन्दर।
उस नगरी में द्विज कन्या ने, स्वीकारा जैन धरम सुखकर।।
उस प्रभावती में धर्म प्रभा, मानों सूरज सम चमक रही।
वह प्रभावती विद्या बल से, कैलासगिरि पर आन रही।।2।।

तत्क्षण देवी पद्मावती माँ, दर्शन हित आई मंदिर में।
प्रभु की पूजा भक्ति करने, सुरगण आये जिनमंदिर में।।
देवी से पंचमेरु व्रत सुन, व्रत ग्रहण किया उस कन्या ने।
विधिपूर्वक व्रत को पालन कर, सुर पद पाया उस कन्या ने।।3।।

वह देव वहाँ से च्युत होकर, नृप रत्नशिखर बन जाता है।
पुष्पाञ्जलि व्रत की महिमा से, वह चक्री पद को पाता है।।
षट्खंडजयी नृप शेखर ने, कई कोटि पूर्व तक राज्य किया।
फिर जग सुख तज मुनिव्रत को वर, श्री सिद्धरूप को प्राप्त किया।।4।।

पुष्पाञ्जलि व्रत के करने से, त्रैकालिक सुख मिल जाता है।
जो पाँच वर्ष तक व्रत पाले, वो पंचम गति को पाता है।।
हम भी इस पुष्पाञ्जलि व्रत में, अति उत्तम द्रव्य चढ़ायेंगे।
'आस्था' से व्रत का पालन कर, गुप्तिधर शिव सुख पायेंगे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचमेरु श्रेष्ठ व्रत, जो भव्य श्रद्धा से करे।
वो ही श्रमण जिनराज बन, शिव सौख्य में झूला करें।।
'आस्था' धरें जिनराज पे, हम धर्म अनुरागी बनें।
त्रय गुप्तियों को साध के, हम मोक्ष के भागी बनें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री सुदर्शन मेरु पूजा

(शंभु छंद)

इस प्रथम सुदर्शन मेरु की, महिमा सारे मुनिगण गायें।
इस मेरु पे ऋषिमंडल है, उसको भक्ति से शिर नायें।।
लख योजन ऊँचे मेरु पे, सोलह चैत्यालय मन भावन।
हम उनकी जिन प्रतिमाओं का, पुष्पों से करते अभिवादन।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

क्षीरोदधि का निर्मल जल ले, सुरपति मेरु पे भर लाते।
जिन बाल प्रभु का न्हवन करा, झूमे नाचें अति हर्षाते।।
श्री प्रथम सुमेरु पर्वत के, जिनराजों को वंदन करते।
उनके सोलह चैत्यालय की, हम भक्ति सहित पूजन करते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन लेपन जिनपद में कर, संसार ताप विनशायेंगे।
उस मेरु शिखर के बिम्बों को, हम चंदन खूब चढ़ायेंगे।। श्री प्रथम..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दानी में श्रेष्ठ महादानी, श्री जिनवर त्रिभुवन के स्वामी।
हम भी अक्षत से पूज रहे, बनने को त्रिभुवन के स्वामी।। श्री प्रथम..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की छटा निराली है, भौंरे उनपे गुंजार करें।
ऐसे पुष्पों को कर में ले, जिन चरण चढ़ा हम काम हरें।। श्री प्रथम..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज की भर–भर के थाली, थाली पे थाल चढ़ाते हैं।
मेरुवत द्रव्य चढ़ा प्रभु को, हम क्षुधा रोग विनशाते हैं।।
श्री प्रथम सुमेरु पर्वत के, जिनराजों को वंदन करते।
उनके सोलह चैत्यालय की, हम भक्ति सहित पूजन करते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चम–चम करते घृत के दीपक, जो अंधकार विनशाते हैं।
प्रभुवर सम ज्ञान जगाने को, हम मंगल आरती गाते हैं।। श्री प्रथम..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप चढ़ाते अग्नि में, प्रभु से अपना नाता जोड़ें।
जिन सम अंतिम तन पाकर हम, निज कर्मों के बंधन तोड़ें।। श्री प्रथम..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तरबूज पपीता श्रद्धाफल, वा नारंगी जामुन लाये।
रसदार सरस फल ले प्रभु हम, पूजा करने जिनगृह आये।। श्री प्रथम..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु सुदर्शन की कीर्ति, त्रिभुवन में निशदिन गूँज रही।
इसके चउवन की प्रतिमा को, नित भविजन राशि पूज रही।। श्री प्रथम..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदर्शन मेरु विधान के 16 चैत्यालय के अर्घ

दोहा– पंचमेरु के सर्व जिन, जग में मंगलकार।
उनका यहाँ विधान कर, पायें शांति अपार।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

दोहा– भद्रशाल के पूर्व में, चैत्यालय मनहार।
दर्शन कर पूजन करें, होने भवदधि पार।।
षोडश चैत्यालय कहें, मेरु सुदर्शन माय।
सुर मुनि करते वंदना, मेरु शिखर पे जाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश के नाथ को, मंगल द्रव्य चढ़ाय।
प्रभु पूजा वा जाप कर, समदृष्टि पा जाय।। षोडश..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिग् वन खंड में, रत्नमयी भगवान।
रत्नत्रय दो जिन हमें, पायें मोक्ष महान्।। षोडश..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर के जिनबिम्ब ये, विपुल विशद सुख देय।
जिनवर की आराधना, पाप तिमिर हर लेय।। षोडश..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन की पूरब दिशा, नूतन नव सुख लाय।
सूर्यादिक प्रभु को नमें, नित प्रातः सिर नाय।। षोडश..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश जिनबिम्ब को, पूजें मन–वच–काय।
नाथ आपके नाम से, रोग–शोक मिट जाय।। षोडश..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि नंदन वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन की पश्चिम दिशा, मंदिर में जिनराज।
देवों द्वारा पूज्य हैं, बजते नित प्रति साज।।
षोडश चैत्यालय कहें, मेरु सुदर्शन माय।
सुर मुनि करते वंदना, मेरु शिखर पे जाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश में शोभते, रत्नमयी जगदीश।
श्री जिन को हम पूजते, सदा झुकायें शीश।। षोडश..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि नंदन वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन भावन वन सोमनस, दिशा पूर्व शुभ नाम।
जिनप्रतिमा जिनचैत्य को, पूजें आठों याम।। षोडश..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि सौमनस वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद सौमनस जानिये, दक्षिण दिग् प्रभु होय।
दर्शन पा जिनराज के, तन-मन हर्षित होय।। षोडश..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि सौमनस वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौम्य सोमनस लग रहा, प्रभु का रूप सुहाय।
पश्चिम दिश के नाथ को, आठों द्रव्य चढ़ाय।। षोडश..।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि सौमनस वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश जिनबिम्ब को, पूजें हम अविछिन्न[1]।
ऋद्धिधर मुनि आय के, करते कर्म प्रछिन्न[2]।। षोडश..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि सौमनस वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

(1) निरन्तर (2) पूरी तरह से नष्ट करना।

पाण्डुक वन की क्या कहे, शोभा कहीं न जाय।
पूर्व दिशा के नाथ को, सुरगण शीश झुकाय।।
षोडश चैत्यालय कहें, मेरु सुदर्शन माय।
सुर मुनि करते वंदना, मेरु शिखर पे जाय।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक वन दक्षिण दिशा, भविजन होय निहाल।
पूजा कर भगवान की, पायें पुण्य विशाल।। षोडश..।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरवाई बहती जहाँ, पश्चिम दिश भगवान।
पाण्डुक वन के नाथ को, पूजें भव्य महान्।। षोडश..।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक वन है स्वर्ण का, स्वर्णाभा दिखलाय।
उत्तर दिश के चैत्य सब, सबका भाग्य जगाय।। षोडश..।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मेरु के इन चार वनों में, सोलह चैत्यालय प्यारे।
सुर किन्नरियाँ भक्ति करती, आकर जिनवर के द्वारे।।
पाण्डुक वन की चार शिला पे, बाल प्रभु का न्हवन करें।
सब जिनवर को अर्घ चढ़ायें, द्रव्य भाव युत नमन करें।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1728 जिनबिम्बों का पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

एक-एक मंदिर के अन्दर, इक सौ आठ जिनेश्वर।
सत्रह सौ अट्ठाईस प्रतिमा, इक मेरु के अंदर।।
इन्द्रादि परिकर युत आते, भक्ति नृत्य रचाते।
वीणा ताल मृदंग बजाते, अर्चा कर हर्षाते।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ मध्य विराजित एक सहस्र सप्तशत अष्टाविंशति[1] जिन प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- एक लाख योजन बड़ा, मेरु सुदर्शन श्रेष्ठ।
बाल प्रभु का सुरपति, यही करें अभिषेक।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पद्म सरोवर में खिले, कमलादिक् बहु फूल।
पुष्पवृष्टि प्रभु पे करें, काटे कर्मन् शूल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार करें)

जयमाला

धत्ता- जय मेरु सुदर्शन, इसका दर्शन, मन पावन कर देता है।
ये ऊँचा मेरु, नाम सुमेरु, त्रिभुवन वंदित जेता है।।

(नरेन्द्र छंद)

मेरु सुदर्शन सबको प्यारा, सब मेरु का ये राजा।
इसकी महिमा भविजन गायें, देव-गुरु-नर खग राजा।।
जम्बूद्वीप के मध्य बना है, नाम सुमेरु आता है।
एक लाख चालीस योजन का, मेरु शैल कहाता है।।1।।

इस मेरु पे बने चार वन, चारों में जिन प्रतिमायें।
मन को मोहित करने वाली, पाप ताप सब विनशायें।।

1. 1728 प्रतिमा।

पहला वन श्री भद्रशाल है, दूजा नंदन कहलाता।
और सोमनस कहा तीसरा, पाण्डुक वन चौथा आता।।2।।
मूल सुमेरु वज्रमयी है, मध्य भाग है रत्नों का।
कनकमयी है आभा जिसकी, नीलमणि शुभ रत्नों सा।।
पाण्डुक वन के चउदिश क्रम से, पाण्डुक पाण्डुकम्बला हैं।
चार शिला में तीजी चौथी, रक्ता रक्त कम्बला है।।3।।
पाण्डुक वन में चार शिलायें, चारों शुभ नामों वाली।
होता है अभिषेक इन्हीं पे, सर्व शिला महिमाशाली।।
पाण्डुक शिला दिशा ईशाने, भरत क्षेत्र के जिनवर का।
होता है अभिषेक यहीं पर, प्रथम बाल तीर्थंकर का।।4।।
इस मेरु के नाम अनेकों, आगम में बतलाये हैं।
वज्रमूक मणिचित्र सुरालय, सुरगिरि आदि कहाये हैं।।
लोकनाभि प्रियदर्शन मंदर, लोक मध्य में शोभ रहा।
सूर्याचरण मनोरम मेरु, सबके मन को लोभ रहा।।5।।
मुनि ऋद्धिधर महातपस्वी, न्हवन जिनेश्वर का देखें।
निज समकित[1] को सुदृढ़ करते, जिन आगम यह उल्लेखें।।
पंचमेरु का व्रत पालें हम, पंचम गति को पायेंगे।
पंचमेरु व्रत पे 'आस्था' रख, पाँचों पाप नशायेंगे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचमेरु श्रेष्ठ व्रत जो, भव्य श्रद्धा से करे।
वो ही श्रमण जिनराज बन, शिव सौख्य में झूला करें।।
'आस्था' धरें जिनराज पे, हम धर्म अनुरागी बनें।
त्रय गुप्तियों को साधके, हम मोक्ष के भागी बनें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

1. सम्यक्दर्शन।

श्री विजय मेरु पूजा

(नरेन्द्र छंद)

पूर्व धातकी खंड द्वीप में, विजय मेरु मनहारी।
उसके सोलह चैत्यालय को, पूजें सुर नभचारी।।
उनमें मणियों वा रत्नों की, सुन्दर जिन प्रतिमायें।
उनका हम आह्वान करें नित, पुष्पाञ्जलि चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

क्षीरोदधि के जल से सर्व कुंभ भरायें।
जन्मादि रोग नाशने जिनवर को चढ़ायें।।
मेरु में दूसरा विजयश्री विजय दिलाये।
इसके सभी जिनालयों की भक्ति रचायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर गंध स्वर्ण मेरु पे चढ़ा रहे।
संसार ताप नाशने जिनवर को ध्या रहे।। मेरु....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भर-भर अखंड तंदुलों से अर्चना करें।
हम नाथ से अखंड पद की याचना करें।। मेरु....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विजय मेरु के प्रभु पे पुष्प चढ़ायें।
मन्मथ विजेता नाथ कामशत्रु नशायें।। मेरु....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रबड़ी मलाई रसभरी जिनवर को चढ़ायें।
आनंद रस की वापिका में डुबकी लगायें।।
मेरु में दूसरा विजयश्री विजय दिलाये।
इसके सभी जिनालयों की भक्ति रचायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन समान मेरु की हम आरती गायें।
घृत दीप दान करके मोह ध्वांत नशायें।। मेरु....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपों के घटों में सुरेन्द्र धूप चढ़ायें ।
उन मेरु के बिम्बों को हम भी धूप चढ़ायें।। मेरु....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर एक ऋतु के फलों से थाल सजाया।
जिनराज को पवित्र भावना से चढ़ाया।। मेरु....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

थाली में अष्ट द्रव्य लेके नृत्य रचायें।
हम झूमते गाते प्रभु को अर्घ चढ़ायें।। मेरु....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपस्थ विजय मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु विधान के 16 चैत्यालय के अर्घ

दोहा– पंचमेरु के सर्व जिन, जग में मंगलकार।
उनका यहाँ विधान कर, पायें शांति अपार।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

दूजा मेरु विजय बताया, भद्रशाल वन पहला आया।
पूरब के जिनवर को ध्यायें, त्रय योगों से शीश नवायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रशाल वन दक्षिण प्यारा, बहती सदा सुखों की धारा।
दक्षिण के जिनवर को ध्यायें, सुर विद्याधर यजने आयें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम भद्रशाल वन जायें, व्योम[1] शिखर तक ध्वज फहरायें।
श्रीफल ध्वज ले अर्घ चढ़ायें, झूमें नाचें भक्ति रचायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु है जग में आला, उत्तरदिश जिनभवन निराला।
मुनिगण निशदिन प्रभु को ध्यायें, हम जिनवर को अर्घ चढ़ायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन के नंदन बन जायें, वंदन करके पाप नशायें।
पूरब दिश चैत्यालय ध्यायें, अर्चा के शुभ भाव बनायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आकाश।

नंदन वन दक्षिण दुःखहारी, उसमें चैत्य सदन सुखकारी।
उनको अर्चें शीश झुकायें, चैत्यालय को चित्त बसायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि नंदन वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अरण्य[1] पश्चिम दिग् न्यारा, नंदन का जो बना सितारा।
उसमें प्रभु को नमन हमारा, भवसागर से मिले किनारा॥7॥

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन वन उत्तर दिश सोहे, ये सब भव्यों का मन मोहें।
लेकर रंग-बिरंगी थाली, प्रभु की पूजा भक्ति रचाली॥8॥

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि नंदन वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोम समान सोमनस प्यारा, पूर्व दिशा का मंदिर न्यारा।
जिनबिम्बों को खेचर[2] पूजें, नील गगन में जय-जय गूँजें॥9॥

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश में सुन्दर आलय[3], रत्नमयी है वहाँ जिनालय।
सूरज चंदा इनको ध्यायें, नीरादिक वसु द्रव्य चढ़ायें॥10॥

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परचम[4] पश्चिम में लहराये, प्रभुवर हमको वहाँ बुलायें।
प्राँजल[5] जोड़ें प्रभु गुण गायें, अपने अवगुण दूर भगायें॥11॥

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश उत्तर नित देता, उस उत्तर के जिनवर नेता।
वीतराग जिनवर श्री देवा, करें वहाँ सुर खेचर सेवा॥12॥

1. वन, 2. विद्याधर, 3. स्थान, 4. ध्वजा, 5. दोनों हाथ।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक वन मेरु में चौथा, उसपे न्हवन नाथ का होता।
पूर्व दिशा के प्रभु को ध्यायें, भक्ति भाव से अर्घ चढ़ायें।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण विजयगिरि मनहारी, प्रतिमा प्रभु की मंगलकारी।
दीप धूप ले आरती गायें, त्रय योगों से अर्घ चढ़ायें।।14।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश में सुरगण आये, सब अपनी किरणें फैलायें।
फेरी हम सब नित्य लगायें, प्रभु को ध्यायें अर्घ चढ़ायें।।15।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक के उत्तर दिश जायें, प्रभु का न्हवन करें करवायें।
मुक्ति की मंजिल हम पायें, जिन चरणों की भक्ति रचायें।।16।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

विजय मेरु के जिन भवनों में, सोलह जिन प्रतिमायें।
सब जिनवर की पूजा करने, परिजन संग सुर आयें।।
चार वनों में सर्व श्रेष्ठ वन, पाण्डुक वन कहलाता।
सुरपति बाल प्रभु को लाकर, इस वन में नहलाता।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1728 जिनबिम्बों का पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

दूजा मेरु विजय मनोहर, चार वनों से घिरा हुआ।
वन की शोभा बड़ी निराली, फल फूलों से खिला हुआ।।
उस मेरु के मध्य विराजी, श्री जिनवर की प्रतिमायें।
सत्रह सौ अट्ठाईस प्रभु की, हम पूजन करने आये।।

ॐ ह्रीं श्री विजय मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ मध्य विराजमान एक सहस्र सप्तशताष्टाविंशति जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पूर्व धातकी खंड के, विजय मेरु के नाथ।
शांतिधार पुष्पाञ्जलि, करूँ विनय के साथ।।

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधि अशीति जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– विजयमेरु के जिन भवन, रत्नमयी भगवान।
चैत्य बनें सोलह जहाँ, उनका करें बखान।।

(शंभु छंद)

पूरब में खड़ा विजय मेरु, ये खंड धातकी में आता।
इसकी सुन्दरता के आगे, सूरज भी फीका पड़ जाता।।
बहु रंगों की आभा इसकी, नाना मणियों से चमक रहा।
कर्मों से विजय दिलाने को, मानो ये मेरु दमक रहा।।1।।

इस मेरु पे वन चार कहे, चारों में चैत्यालय शोभें।
इक वन में चारों दिश प्रतिमा, सोलह प्रतिमायें मन लोभें।।
मंदिर की शोभा मनहारी, तोरणद्वारों से युक्त कही।
मोती झालर घंटी वाली, बंधन मालाएँ लटक रही।।2।।

फानुस लगे हैं जगह–जगह, जगमग दीपों की ज्योति लगे।
रत्नों की राशि देख–देख, भव्यों का मिथ्या मोह भगे।।
प्रभु की वेदी के आगे ही, सुन्दर चंदेवा लगा हुआ।
ॐकार नाद करता घंटा, प्रभु के दरवाजे टंगा हुआ।।3।।
सुन्दर चौंसठ जब चँवर ढुँरे, ऊपर नीचे लहराते हैं।
श्री तीन लोक के जिनवर की, यश कीर्ति को फैलाते हैं।।
इस विजय मेरु के मंदिर में, नित विजय पताका फहराये।
इस पंचमेरु की पूजा में, हम विजय पताका ले आये।।4।।
यह मेरु चौरासी सहस्र, योजन ऊँचा बतलाया है।
श्री भद्रसाल से पाँच शतक, श्री नंदन वन बतलाया है।।
साढ़े सहस्र पचपन योजन, ऊपर सुमनस वन आता है।
योजन अट्ठाइस सहस बाद, चौथा पाण्डुक वन आता है।।5।।
इस मेरु के पाण्डुक वन में, सुर बाल प्रभु को लाता है।
अभिषेक नाथ का कर करके, सातिशय पुण्य कमाता है।।
हम भी वह पुण्य कमाने को, पुष्पाञ्जलि व्रत को अपनायें।
संयम समता त्रय गुप्तिधर, 'आस्था' से सम्यक् गुण पायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकी खण्ड द्वीपस्थ विजय मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचमेरु श्रेष्ठ व्रत जो, भव्य श्रद्धा से करे।
वो ही श्रमण जिनराज बन, शिव सौख्य में झूला करें।।
'आस्था' धरें जिनराज पे, हम धर्म अनुरागी बनें।
त्रय गुप्तियों को साधके, हम मोक्ष के भागी बनें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री अचल मेरु पूजा

(नरेन्द्र छंद)

खंड धातकी पश्चिम दिश में, अचल मेरु है स्वर्णमयी।
जिनमंदिर सोलह बतलाये, उनमें प्रतिमा रत्नमयी।।
सुर विद्याधर यक्ष यक्षिणी, ध्याते मुनि ऋद्धिधारी।
हम उनका आह्वान करें नित, पूजा प्रभु की सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम धातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छंद)

स्वर्ण रजत के कुंभ जल से भरकर लाये।
पाने भवदधि तीर प्रभु पद नीर चढ़ायें।।
अचल मेरु के सर्व चैत्यालय मनहारी।
उनकी पूजा श्रेष्ठ जग मंगल हितकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले चंदन कर्पूर केसर संग धिसायें।
प्रभु पद चंदन लेप भव आताप नशायें।। अचल मेरु...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत पुंज चढ़ाय अचल मेरु को ध्यायें।
क्षायिक पद अविराम प्रभु पूजा से पायें।। अचल मेरु...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों वन से पुष्प चुन–चुनकर हम लाये।
सोलह जिनगृह जाय पुष्पाञ्जलि बरसायें।।
अचल मेरु के सर्व चैत्यालय मनहारी।
उनकी पूजा श्रेष्ठ जग मंगल हितकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पय घृत की सुस्वादु प्रासुक बनी मिठाई।
क्षुधा नशाने हेत जिनवर तुम्हें चढ़ाई।। अचल मेरु...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप अपार जिनवर के दर लायें।
कर आरती मनहार ज्ञानवान बन जायें।। अचल मेरु...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट धातु का कुंभ सुन्दर दशमुख वाला।
उसमें अर्पें धूप फेरें हम प्रभु माला।। अचल मेरु...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम जाम अभिराम[1] बदरी फल हम लाये।
लेकर फल रसदार श्री जिनेन्द्र को ध्यायें।। अचल मेरु...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ बनाया आज आठों ही द्रव्यों का।
कर प्रभु का गुणगान भाग्य जगे भव्यों का।। अचल मेरु...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकी खंड द्वीपस्थ अचल मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सुन्दर।

अचल मेरु विधान के 16 चैत्यालय के अर्घ

दोहा– पंचमेरु के सर्व जिन, जग में मंगलकार।
उनका यहाँ विधान कर, पायें शांति अपार॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अर्द्ध नरेन्द्र छंद)

अचलमेरु का भद्रशाल वन, प्रथम दिशा पूरब है।
उनको अर्घ चढ़ायें जिसमें, रत्नमयी मूरत है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत अचल गिरि की प्रतिमा, अति मनोज्ञ मनहारी।
दक्षिण दिश में बना जिनालय, पूजें सुर नभचारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पश्चिम दिश में, सप्तछंद युत मंदिर।
अपलक दृष्टि प्रभु तुम्हारी, जहाँ–जहाँ जिन मंदिर॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश में अचल शैल पे, जिनमंदिर अतिशायी।
महापुण्य से मिले वंदना, अर्चा मोक्ष प्रदायी॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के नंदन वन में, पूरब दिश की लाली।
चम–चम करता सदा जिनालय, रहती सदा दिवाली॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होता जब आराधन प्रभु का, दक्षिण दिश नंदन में।
वंदन करते सर्व प्रभु को, अर्घ धरें चरणन् में।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि नंदन वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम की पुरवाई प्यारी, मन को मोहित करती।
प्रभु को छुती पावन वायु, पाप तिमिर नित हरती।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश के चैत्य बिम्ब को, हमने अर्घ चढ़ाया।
प्रभु की पावन मुख मुद्रा को, अपने चित्त बसाया।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि नंदन वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सोमनस के पूरब में, अति सुन्दर जिन प्रतिमा।
मोक्ष महल तक ले जाती है, प्रभु पूजा की महिमा।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपिन[1] सोमनस दक्षिण दिश में, जिनवर जगत् विजेता।
आठों याम उन्हें हम पूजें, बनने त्रिभुवन नेता।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु शिखर की सब रचनायें, अकृत्रिम बतलायी।
पश्चिम दिग् के तीर्थेश्वर की, प्रतिमायें मन भायी।।11।।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन का कल्याण करें जिन, इनके दर जो आये।
मुनिगण उत्तर दिश के प्रभु का, दर्शन कर सुख पायें।।12।।

1. वन।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन में उत्तर पाण्डुक वन ये, सर्वश्रेष्ठ कहलाता।
पूर्व दिशा की जिन प्रतिमा को, मनवा शीश झुकाता॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण वन में जो जन जायें, प्रभु के दर्शन पायें।
हम भी जिन अभिषेक रचाने, पाण्डुक वन में जायें॥14॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक वन की पश्चिम दिश में, दुंदुभि बाजे बाजे।
आठों मंगल द्रव्य मनोहर, जिन पूजा में साजे॥15॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल गिरि के उत्तर दिश में, पाठ ठाठ से होता।
प्रभुवर की पूजन करने से, जीवन पावन होता॥16॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

श्री बाल प्रभु के चरण इस मेरु पे पड़े।
अभिषेक करने नाथ का सुर देवगण खड़े॥
षोडश प्रभु के मंदिरों में घंटिया बजें।
लेकर के अष्ट द्रव्य भक्त नाथ को भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1728 जिनबिम्बों का पूर्णार्घ (शेर छंद)

मेरु अचल के मध्य में जिनराज हमारे।
मुनिराज भी आकर यहाँ पे कर्म विदारें।।
सत्रह सौ अट्ठाईस प्रभु को शीश झुकायें।
सुर-नर खगेन्द्र भक्त सभी पूजने आयें।।

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ मध्ये विराजमान एक सहस्र सप्तशताष्टाविंशति जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शाश्वत मेरु अचल की, प्रतिमा को सिर टेक।
हे जिनवर ! तव चरण में, पायें शांति विशेष।।

शांतये शांतिधारा

दोहा- सभी जिनालय द्वार पे, तोरणद्वार बंधाय।
पुष्पों से सज्जित करें, अचल मेरु पे जाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा- मेरु अचल शुभ नाम, जयमाला इसकी पढ़ें।
पायें सुख अविराम, दर्शन पूजन से सदा।।

(अवतार छंद)

ये मेरु तीरथ धाम, इसको नमन करें।
पावन है इसका नाम, इसका भजन करें।।
ये मेरु अचल कहाय, सोने सा चमके।
जो इसका दर्शन पाय, प्रभु सम वो चमके।।1।।

है अपर धातकी खण्ड, उसमें मेरु 'अचल'।
सब सुर–नर से यह वंद्य, कहते शास्त्र अमल।।
हो यहाँ जन्म अभिषेक, तीर्थंकर जिन का।
करता है शक्र विशेष, उत्सव से उनका।।2।।

इसमें भी वन हैं चार, सर्व सुरम्य लगे।
इक वन में प्रतिमा चार, सर्व मनोज्ञ लगे।।
गजदंत और वक्षार, इनमें जिन प्रतिमा।
विजयार्ध कुलाचल चार, उनकी जिन प्रतिमा।।3।।

इन सबकी भक्ति रचाय, मंगल वाद्य बजा।
जयघोष लगा हर्षाय, वसु विधि द्रव्य सजा।।
मेरु का अद्‌भुत रूप, सबके मन बसता।
शाश्वत है श्रेष्ठ अनूप, सबके दुःख नशता।।4।।

जहँ मानस्तम्भ महान्, घंटी ध्वज वाले।
सब चैत्यालय सुख खान, जिन प्रतिमा वाले।।
हम सब प्रतिमा को पूज, अविचल पद पायें।
षोडश जिनवर के द्वार, 'आस्था' शिर नाये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अचलमेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचमेरु श्रेष्ठ व्रत जो, भव्य श्रद्धा से करे।
वो ही श्रमण जिनराज बन, शिव सौख्य में झूला करें।।
'आस्था' धरें जिनराज पे, हम धर्म अनुरागी बनें।
त्रय गुप्तियों को साधके, हम मोक्ष के भागी बनें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री मंदर मेरु पूजा

(गीता छंद)

श्री मेरु मंदर सुख समंदर, मंदिरों से शोभता।
सोलह जिनालय से सजा, सुर खेचरों को लोभता।।
शाश्वत अकृत्रिम मेरु ये, बहु रत्नमय अविराम है।
उस मेरु का आह्वान है, जिसपे बसे भगवान हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

झारी में भरकर नीर, प्रभु पद में डालें।
टूटे कर्मन् जंजीर, सब दुःख विनशा लें।।
मंदर में मंदिर भव्य, चैत्यालय प्यारे।
सोलह प्रभु सुख दो नव्य[1], आये हम द्वारे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्टगंध कर्पूर, जिन पद में चर्चें।
भवताप करो जिन दूर, हम तव पद अर्चें।। मंदर...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि इंदुकांति सम श्वेत, मोती हम लाये।
अक्षय सुख पाने हेत, जिनवर को ध्यायें।। मंदर...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

1. नया।

बेला गुलाब कचनार, अर्पित प्रभुवर को।
हरने निज काम विकार, पूजें जिनवर को॥
मंदर में मंदिर भव्य, चैत्यालय प्यारे।
सोलह प्रभु सुख दो नव्य, आये हम द्वारे॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम सुन्दर गोल, ये मोदक प्यारे।
अर्पित प्रभु को जय बोल, रोग क्षुधा हारे॥ मंदर...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपों से मेरु सजाय, दीपोत्सव करते।
आरतियाँ प्रभु की गाय, मोह-तिमिर हरते॥ मंदर...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है जिन का सुन्दर रूप, उनको ध्यायेंगे।
पाने वह आत्म स्वरूप, धूप चढ़ायेंगे॥ मंदर...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अमरुद अनार, आमादिक लाये।
वरने मुक्तिपथ द्वार, जिन अर्चा गायें॥ मंदर...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजा में त्रयकाल, अर्घ सजायेंगे।
हम बजा-बजा करताल, अर्घ चढ़ायेंगे॥ मंदर...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्व पुष्करार्ध द्वीपस्थ मंदर मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदर मेरु विधान के 16 चैत्यालय के अर्घ

दोहा– पंचमेरु के सर्व जिन, जग में मंगलकार।
उनका यहाँ विधान कर, पायें शांति अपार।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

पूरब दिश मेरु मंदर, हम जायें उसके अंदर।
लगता है सबसे सुन्दर, ये भद्रसाल का मंदर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदर के दक्षिण वन में, बैठे हैं जिनवर उसमें।
आभा है रत्नों जैसी, वे सबके परम हितैषी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश में हम जायें, वे जिनवर हमें बुलायें।
तुम जिनवर जग के स्वामी, हम पूजें अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर मंदर के आलय, हम पूजें आज जिनालय।
नीरादिक द्रव्य चढ़ायें, शुभ ध्यान लगा सुख पायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु मंदर का नंदन, पूरब दिश प्रभु को वंदन।
बनने प्रभु का लघुनंदन, वसु द्रव्य चढ़ाकर वंदन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन के दक्षिण दिश में, रत्नों का मंदिर जिसमें।
जिनका दर्शन मन भावन, भक्तों को करता पावन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि नंदन वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश में हरियाली, जिनभक्ति दे खुशहाली।
जो जिनवर को आराधें, वो अपने पाप विराधें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर उत्तर वन के, हम पूजें जिन को मन से।
हम उनको निशदिन ध्यायें, अति उत्तम भक्ति रचायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि नंदन वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये सौम्य सोमनस प्यारा, अति उत्तम प्रभु का द्वारा।
पूरब दिश मंगलकारी, प्रभु चैत्यालय सुखकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन चंदन सा महके हैं, खुश्बू दश दिश फैले हैं।
चंदन जिन चरण चढ़ायें, दक्षिण दिश में हम जायें।।10।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण के आगे पश्चिम, मंदिर का मुख भी पश्चिम।
प्रभु का मुख मंडल प्यारा, स्वीकारों नमन हमारा।।11।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवालय के परमेश्वर, उत्तर दिश के तीर्थेश्वर।
मुक्ति दे दो सर्वेश्वर, नमते हम सर्व जिनेश्वर।।12।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि सोमनस वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपुर की कठिन डगरिया, है प्रभु की दूर नगरिया।
पूरब दिश के जिनदेवा, हम करें चरण की सेवा।।13।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर ललनायें सब नाचें, उनकी पैजनिया बाजे।
दक्षिण में नाथ विराजे, प्रभु के दर बजते बाजे।।14।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे पश्चिम के परमातम, हे शुद्ध बुद्ध ! शुद्धातम।
हम पाने निज परमातम, हम ध्यायें नित परमातम।।15।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश के जगत्राता, करुणा निधि आनंद दाता।
आश्रयदाता तुम स्वामी, पूजें मुनि गणधर नामी।।16।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

मंदर मेरु के जिनवर को पूजते।
प्रभु पूजा से भव के बंधन छूटते।।
इस मेरु पे सोलह चैत्यालय कहे।
आठों मंगल द्रव्यों से शोभित रहे।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1728 जिनबिम्बों का पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

इस मेरु पे और अनेकों हैं प्रभु।
सत्रह सौ अट्ठाईस हैं जिनवर विभू।।
मेरु के दर्शन को आते जिनगुरु।
प्रभु भक्ति से करते हम जीवन शुरू।।

ॐ ह्रीं श्री मन्दर मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ मध्ये विराजमान एक सहस्र सप्तशताष्टाविंशति जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मंदर मेरु के प्रभु, करो शांति विस्तार
शांतिपथ दर्शक विभू, वंदन बारम्बार।।

शांतये शांतिधारा

दोहा– सुर असुरों से पूज्य हैं, मेरु के जिनराय।
उनका अभिवादन करें, चरणन् पुष्प चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा– मंदर मेरु जान, गुण कीर्त्तन इसका करें।
इसकी कीर्ति महान्, सुर–असुरों से पूज्य है।।

(पद्धरि छंद)

जय मंदर मेरु सुभग जान, इसका मुनिगण करते बखान।
आगम में इसका विशद ज्ञान, मेरु शान्ति का पायदान।।1।।
इस मेरु पे वन चार–चार, हर दिश में प्रतिमा चार–चार।
सुन्दर रत्नों की चमकदार, प्रतिमायें करती चमत्कार।।2।।

यह मेरु पुष्कर के सुपूर्व, भव्यों को लगता है अपूर्व।
सब देव देवियाँ गीत गाय, संगीत नृत्य घूमर रचाय।।3।।
घुंघरु की रुनझुन झनन झान, वीणा की बजती तनन तान।
नाचत गावत प्रभु को रिझाय, कोटा कोटी बाजे बजाय।।4।।
प्रभु का उज्ज्वल नाटक दिखाय, जीवन चरित्र मंचन कराय।
प्रभु दर्शन से सम्यक्त्व पाय, सम्यक्दर्शन मुक्ति दिलाय।।5।।
मुनिगण घटना जिनकी बताय, उसको सुनके वैराग्य आय।
प्रभु की महिमा सुन्दर सुनाय, कानों को अमृत रस पिलाय।।6।।
जिन का अति उत्तम पुण्य आय, वे ही मेरु के दर्श पाय।
अतिशय ये प्रभुवर का कहाय, उनके चरणों में भव्य आय।।7।।
इसके व्रत आते तीन बार, धारों प्राणी विश्वास धार।
गुरु सन्निध में व्रत लेय भव्य, पाओ उत्तम सुख नव्य-नव्य।।8।।
ऐसे मेरु को शीश नाय, प्रभु प्रतिमा को मन में बसाय।
हम अर्घ थाल उत्तम सजाय, अर्चा कर जिनवर को चढ़ाय।।9।।
मेरु पे अर्पें पुष्पहार, फिर धारें अपने कण्ठ हार।
'आस्था' श्री पाँचों मेरु ध्याय, अविराम मोक्षपुर धाम जाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचमेरु श्रेष्ठ व्रत जो, भव्य श्रद्धा से करे।
वो ही श्रमण जिनराज बन, शिव सौख्य में झूला करें।।
'आस्था' धरें जिनराज पे, हम धर्म अनुरागी बनें।
त्रय गुप्तियों को साधके, हम मोक्ष के भागी बनें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री विद्युन्माली मेरु पूजा

दोहा– विद्युन्माली मेरु को, पश्चिम दिश में जान।
सोलह चैत्य जिनेश का, करता मैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

दोहा– करता हूँ स्थापना, जागा पुण्य विशेष।
पूजा करके नाथ की, प्राप्त करूँ जिनवेश।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।

दोहा– जिनपद मेरे मन बसे, मैं जिन पद का दास।
जिन चरणों में नित रहूँ, यही करूँ अरदास।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

हेम कलश में निर्मल जल भर ला रहा।
श्री जिन चरण कमल में नीर चढ़ा रहा।।
विद्युन्माली मेरु को निशदिन जजूँ।
उनके सोलह चैत्यालय को भी भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन से प्रभु के पद चर्चता।
भव आताप मिटाने प्रभु को अर्चता।। विद्युन्माली...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि सम उज्ज्वल अक्षत मुक्ता ला रहा।
परमोज्ज्वल पद पाने पुंज चढ़ा रहा।। विद्युन्माली...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध वर्ण के पुष्प सजा कर ला रहा।
मेरु के जिनवर को आज चढ़ा रहा।।
विद्युन्माली मेरु को निशदिन जजूँ।
उनके सोलह चैत्यालय को भी भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा और इमरती ला रहा।
चढ़ा प्रभु को क्षुधा रोग विनशा रहा।। विद्युन्माली...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण थाल में रत्नमयी दीपक लगे।
करूँ आरती नाथ मोह मेरा भगे।। विद्युन्माली...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में धूप दशांगी खे रहा।
कर्म नशाने प्रभु की शरणा ले रहा।। विद्युन्माली...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध फलों की लेकर सुन्दर थालियाँ।
चढ़ा प्रभु को बजा रहा मैं तालियाँ।। विद्युन्माली...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने मैं पूजन करूँ।
आठों द्रव्य चढ़ा प्रभु का कीर्त्तन करूँ।। विद्युन्माली...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विद्युन्माली मेरु सम्बन्धि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरु के 16 चैत्यालय के अर्घ

दोहा– पंचमेरु के सर्व जिन, जग में मंगलकार।
उनका यहाँ विधान कर, पायें शांति अपार॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

भद्रसाल वन पूर्व दिशा शुभ नाम है।
श्री जिनवर को बारम्बार प्रणाम है॥
विद्युन्माली मेरु को वंदन करें।
उनमें राजे जिनवर का अर्चन करें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल के दक्षिण जिन को ध्याइयें।
आठों द्रव्य चढ़ाकर पुण्य कमाइयें॥ विद्युन्माली...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश का मंदिर है मनभावना।
जो पूजें उसकी हो पूरी कामना॥ विद्युन्माली...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश के जिनगृह मुनिगण ध्या रहे।
कर्म काट के वो सिद्धालय जा रहे॥ विद्युन्माली...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि भद्रशाल वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

नंदन वन के पूरब दिश में, जिन मंदिर एक विशाल बना।
मेरु के चारों ओर यहाँ, मणियुत जिन मानस्तम्भ बना॥

विद्युन्माली का नंदन वन, इसकी प्रतिमायें रत्नों की।
उनकी पूजा करने हेतु, बहु टोली आती भक्तों की।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश के जिन की पूजा, सुर किन्नरियाँ आकर करती।
पुष्पों की माला कर में ले, जिन चरणों में अर्पण करती।। विद्युन्माली..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि नंदन वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश में संगीत नाद, बहु वाद्यों संग वीणा बाजे।
जिनवर के चरण कमल में हम, कमलादिक भेंट करें ताजे।। विद्युन्माली..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि नंदन वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिमायें पाँच शतक धनु हैं, हर चैत्यालय के मेरु की।
उत्तर दिश के श्री जिनवर की, जय हो प्रभु संग उस मेरु की।। विद्युन्माली..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि नंदन वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई : आँचलीबद्ध

(तर्ज : आठ दरबमय... पंचमेरु पूजा की राग..)

पूरब दिश चैत्यालय जान, करते हम प्रभु का गुणगान।
दरश मिल जाय, सब जिनवर को अर्घ चढ़ाय।।
विद्युन्माली मेरु सुहाय, उसकी पूजा भक्ति रचाय।
दरश मिल जाय, सब जिनवर को अर्घ चढ़ाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि सौमनस वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण देवारण्य महान्, चैत्यालय में जिन भगवान।
दरश मिल जाय, सब जिनवर को अर्घ चढ़ाय।। विद्युन्माली..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि सौमनस वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्राता दाता सबके नाथ, पश्चिम दिश के हैं जगनाथ।
दरश मिल जाय, सब जिनवर को अर्घ चढ़ाय।।
विद्युन्माली मेरु सुहाय, उसकी पूजा भक्ति रचाय।
दरश मिल जाय, सब जिनवर को अर्घ चढ़ाय।।11।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि सौमनस वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तोरण घंटा वाद्य चढ़ाय, उत्तर दिश के जिन को ध्याय।
दरश मिल जाय, सब जिनवर को अर्घ चढ़ाय।। विद्युन्माली..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि सौमनस वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चामर छंद)

पूर्व की दिशा बड़ी जहाँ जिनेश नाथ हैं।
आपके सुपाद में झुका रहे सुमाथ ये।।
देव-देवियाँ सदा सुमेरु को सुपूजते।
श्री जिनेश नाथ को सुभाव से सुवंदते।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पूर्वदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ला रहे सुचैत्य पाण्डु है जहाँ।
दक्षिणी जिनेश को नरेश भी भजे यहाँ।। देव...।।14।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित दक्षिणदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र आपको त्रिलोक नित्य पूजता।
पश्चिमी दिशी मनोज्ञ देव वृंद झूमता।। देव...।।15।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित पश्चिमदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरी दिशा सुरम्य साधु साधना करें।
वंदना महार्चना जिनेश की सदा करें।। देव...।।16।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि पाण्डुक वनस्थित उत्तरदिक् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (चौपाई)

मेरु सुंदर विद्युन्माली, पूजा की हम लायें थाली।
चारों वन की चार दिशायें, चारों में हैं जिन प्रतिमायें।।
भद्र सोमनस नंदन प्यारा, पाण्डुक वन है उनमें न्यारा।
इन्द्रादिक जिनवर को लाते, भक्ति भाव से न्हवन कराते।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1728 जिनबिम्बों का पूर्णार्घ (चौपाई)

एक-एक वन में हम जायें, एक शतक अठ जिन प्रतिमायें।
चारों वन की जिन प्रतिमायें, सत्रह सौ अट्ठाईस आये।।
रत्नमयी मन्दिर मनहारे, सुर विद्याधर पूजें सारे।
अष्ट द्रव्य ले पूजा गायें, पूजक से पूजित बन जायें।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ मध्य विराजमान एक सहस्र सप्तशताष्टाविंशति जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक के ईश का, जपूँ सदा मैं नाम।
शांति करें जिनदेव सब, उनको करूँ प्रणाम।। शांतये शांतिधारा

दोहा- जल थल के बहु वर्ण के, सुरभित पुष्प मनोज्ञ।
पुष्प चढ़ा ये व्रत करूँ, होवे कर्म निरोध।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- विद्युन्माली शैल की, कहता हूँ जयमाल।
सर्व सुरों से पूज्य है, वंदन करूँ त्रिकाल।।

(गीता छंद)

मेरु शिखर के मंदिरों की, गा रहे जयमाल हैं।
प्रभु के गुणों की माल ही, शांति सुखों की माल है।।
सुन्दर सुसज्जित ये जिनालय, मन सभी का खींचते।
जो आ रहे प्रभु द्वार पे, संसार में वो जीतते।।1।।

इन मंदिरों के द्वार पे, बजती सदा शहनाईयाँ।
बहु देव-देवी अप्सरा, गाती पुनीत बधाईयाँ।।
बाजे अनेकों नित बजे, उत्सव करें नित देवगण।
अतिशायी भक्ति वे करें, पूजें सदा प्रभु के चरण।।2।।

आनंद जो जिन भक्ति में, संसार में मिलता नहीं।
जो लोक में सुख खोजता, उससे बड़ा मूरख नहीं।।
आनंद है जिन भक्ति में, जिनभक्ति ही आनंद है।
आनंद रस में डूबकर, पायें परम आनंद ये।।3।।

सोने रजत व रत्न के, जिन चैत्य में चित्रण बने।
रंगावली से चौक शोभे, रत्न जिसमें अनगिने।।
सुन्दर कपाट विशाल हैं, नक्कासी रत्नों की बनी।
सुन्दर सुवासित जिन सदन, नित पूजते सब सुर गणी।।4।।

अति भव्य वैभव नाथ का, उसका कथन कैसे करें।
जिनशास्त्र में अवलोक कर, मन ये कभी भी ना भरें।।
आकाश में उड़ती ध्वजा, वो कह रही आओ सभी।
जिननाथ के दरबार में, सब पुण्य कोष भरों सभी।।5।।

हम नित्य प्रभु के पाद में, मस्तक झुका वंदन करें।
बोधि समाधि प्राप्त हो, जिनगुण चरण वंदन वरें।।
आये प्रभु के द्वार पे, भवताप सब हर लो प्रभो।
जब तक न मुक्ति प्राप्त हो, बस दर्श हरदम दो विभो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु संबंधि षोडश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचमेरु श्रेष्ठ व्रत जो, भव्य श्रद्धा से करे।
वो ही श्रमण जिनराज बन, शिव सौख्य में झूला करें।।
'आस्था' धरें जिनराज पे, हम धर्म अनुरागी बनें।
त्रय गुप्तियों को साधके, हम मोक्ष के भागी बनें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा– अस्सी चैत्यालय महा, पंचमेरु के जान।
श्रद्धा से हम सब करें, जयमाला गुणगान।।

(नरेन्द्र छंद)

पंचमेरु के जिन भवनों की, जयमाला हम गायें।
अस्सी चैत्यालय मनहारी, उनको शीश झुकायें।।
एक-एक मेरु के ऊपर, सोलह जिन चैत्यालय।
सुर-नर-किन्नर भक्ति रचाते, जिनगुण में हो तन्मय।।1।।
ये पर्वत भी पूजें जाते, जिन चैत्यों के कारण।
अतिशयकारी मेरु शिखर ये, कण-कण इनका पावन।।
चार शिलायें पाण्डुक वन में, इनकी शोभा न्यारी।
ये चारों विदिशा में होती, अर्द्धचंद्र मनहारी।।2।।
वसु योजन इनकी ऊँचाई, सौ योजन लम्बाई।
ये पचास योजन चौड़ी हैं, सब समान कहलायी।।
सर्व शिला पे तीन सिंहासन, पाँच शतक धनु[1] ऊँचे।
चौड़ाई भी पंच शतक धनु, रत्नमयी मन रूचे।।3।।

1. धनुष।

पंचमेरु के पाण्डुक वन में, सुर–गण प्रभु को लाते।
होता जब अभिषेक प्रभु का, मुनि ऋद्धिधर आते।।
कर्मभूमि के नर–नारी भी, पंचमेरु पे जाते।
दर्शन पूजन कर जिनवर के, बिन माँगें सब पाते।।4।।

सबसे बड़ा सुमेरु पर्वत, अन्य चार हैं छोटे।
चारों पे वन भी समान हैं, उनके नाम अनूठे।।
चैत्यालय भी इक समान हैं, उनका वैभव उत्तम।
ऐसे प्रभु का दर्शन पाकर, हमें मिले सुख उत्तम।।5।।

मेरु के वन में सब तरु हैं, चंपक आम सुपारी।
पक्षी गणों के मधुर स्वरों से, लगती शोभा न्यारी।।
देव भवन और कूट वापियाँ, वहाँ असंख्य बने हैं।
चारण मुनि भी जिन चरणों में, अघ तम दोष हने हैं।।6।।

पुष्पाञ्जलि व्रत दशलक्षण में, पाँच दिनों तक आये।
पाँच वर्ष तक करें भव्य जो, पंचम गति को पाये।।
पंचमेरु व्रत जो भी धारे, सुखमाला वो पाये।
त्रय गुप्तिधर कर्म नशाये, 'आस्था' मोक्ष उपाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचमेरु श्रेष्ठ व्रत जो, भव्य श्रद्धा से करे।
वो ही श्रमण जिनराज बन, शिव सौख्य में झूला करें।।
'आस्था' धरे जिनराज पे, हम धर्म अनुरागी बनें।
त्रय गुप्तियों को साधके, हम मोक्ष के भागी बनें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान प्रशस्ति

मोतियादाम छंद

(तर्ज–मारने वाला है भगवान....)

श्री आदिशांतिनाथ जिनराज, नमन है तुमको मेरा आज।
नमन है चौबीसों जिनराज, नमन है गणधर गुरु को आज।।1।।

नमन है जिनवाणी को आज, नमन है सब गुरुओं को आज।
नमन है कुंथु गुरु को आज, नमन है कनकनंदी को आज।।2।।

नमन है गुप्ति गुरु को आज, नमन है सब गुरुओं को आज।
लिखा रोहतक में भव्य विधान, पंचमेरु ये श्रेष्ठ विधान।।3।।

हुआ जिस दिन मुनियों का पर्व, पापहर रक्षाबंधन पर्व।
उसी दिन किया इसे आरंभ, मिटाने निज कर्मों का दंभ।।4।।

वीर सन् पच्चिस सौ अड़तीस, सामने श्री जिनवर शांतीश।
हुआ दशलक्षण पर्व महान, उसी दिन पूरण हुआ विधान।।5।।

किया इसका संपादन काज, सूर्यवर गुप्तिनंदी गुरुराज।
करूँ उनको वंदन त्रयकाल, मिले हमको उनकी गुणमाल।।6।।

हमें ना छंद शास्त्र का ज्ञान, भक्ति के वश हो लिखा विधान।
नमन है पंचमेरु को आज, नमन है सर्व प्रभु को आज।।7।।

मिले आशीष प्रभु का आज, पाने मोक्षपुरी का राज।
नमायें श्रद्धा से निज माथ, जोड़कर 'आस्था' दोनों हाथ।।8।।

दोहा– नभ में सूरज चंद्रमा, जब तक हैं मुनिराज।
हो मेरु की अर्चना, होवे जिन साम्राज।।

'इति अलम्'

पंचमेरु की आरती

(तर्ज – घुंघरु छम छमा छम बाजे रे...)

घुंघरु छम छमा छम छन नन नन नन बाजे रे, बाजे रे।
पंचमेरु की आरती करने दीपक लाये रे।। घुंघरु छम...

1. शाश्वत पंचमेरु की जग में, महिमा बड़ी निराली।
वहाँ हमेशा भव्य मनायें, होली और दीवाली।।
घुंघरु छम...

2. इन पाँचों मेरु पे होता, न्हवन सदा जिनवर का।
सुर–नर–किन्नर नाचें गावें, देख रूप जिनवर का।।
घुंघरु छम...

3. एक–एक मेरु पे सुन्दर, प्रभु के भव्य जिनालय।
सोलह–सोलह चैत्यालय ये, जिनभक्ति के आलय।।
घुंघरु छम...

4. ढाई द्वीप के पंचमेरु की, आरती हम सब गायें।
ढ़ोल नगाड़े वीणा लेकर, ताल मृदंग बजायें।।
घुंघरु छम...

5. जब होता अभिषेक प्रभु का, मुनि ऋद्धिधर आते।
तीर्थंकर बालक को लखकर, 'आस्था' भाव बढ़ाते।।
घुंघरु छम...

***

पंचमेरु चालीसा

दोहा– पंच परम परमेष्ठि को, वंदन बारम्बार।
पाँचों मेरु का पढ़े, चालीसा सुखकार।।
पाँचों मेरु का मिले, आगम में उल्लेख।
जिन पर होता है सदा, जिनवर का अभिषेक।।

चौपाई

पंचमेरु को नमन हमारा, करते हम उनका जयकारा।
इनमें बने जिनालय न्यारे, रत्नमयी सुन्दर मनहारे।।1।।
ढाई द्वीप में पाँच सुमेरु, जम्बूद्वीप में एक सुमेरु।
खण्ड धातकी में दो आते, विजय अचल मेरु कहलाते।।2।।
पुष्कर में होते दो मेरु, मंदर विद्युन्माली मेरु।
सब मेरु पे बने जिनालय, सुख शान्ति वैभव गुण आलय।।3।।
जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरु, चार वनों से शोभे मेरु।
भद्रसाल नंदन सुखदायी, और सौमनस मंगलदायी।।4।।
चौथा वन पाण्डुक कहलाता, सब मेरु को शीश झुकाता।
चारों वन की चार दिशायें, चारों में हैं जिन प्रतिमायें।।5।।
वहाँ अनेकों भव्य जिनालय, वे सब हैं शाश्वत देवालय।
सुर–नर इनके दर्शन पाते, भव–भव के मिथ्यात्व नशाते।।6।।
मानस्तम्भ मणि सम चमके, स्वर्ण रत्न के तोरण खम्भे।
रहती जहाँ सदा हरियाली, भव्य मनाये यहाँ दीवाली।।7।।
चैत्यालय सबके मन मोहे, देवछंद मंडप पे सोहे।
चित्रों से चित्रित दरवाजे, दरवाजे पे बजते बाजे।।8।।
गिरी वक्षार कुलाचल प्यारे, इन पर हैं जिनबिम्ब हमारे।
गिरि गजदंत वापिका सरवर, रजताचल विजयार्ध मनोहर।।9।।
जहाँ अनेकों जिन प्रतिमायें, उनको हम सब शीश झुकायें।
प्रातिहार्य युत ये प्रतिमायें, यक्ष यक्षिणी दायें–बायें।।10।।

सर्व मेरु हैं अतिशयकारी, पूजा करते सब नर–नारी।
चारों मेरु समान बतायें, एक सुमेरु बड़ा कहाये॥11॥
रचना एक समान कहाती, माँ जिनवाणी हमें बताती।
महिमा मंडित मेरु सारे, त्रय लोकों में पूज्य हमारे॥12॥
हर मेरु पे पाण्डुक वन है, होता उसपे सदा न्हवन है।
जन्मे जब तीर्थंकर स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी॥13॥
इन्द्र यहाँ प्रभुवर को लाता, सिंहासन पे उन्हें बिठाता।
चार दिशा में जिन प्रतिमायें, विदिशा में प्रभु को बैठायें॥14॥
फिर उनका अभिषेक करायें, इक हजार अठ कुम्भ ढुरायें।
इन्द्र–इन्द्राणी नाचें गायें, बाल प्रभु संग फाग उड़ायें॥15॥
सुरपति नयन हजार बनाये, बाल प्रभु को हृदय बसायें।
ऋद्धिधारी मुनिवर आयें, प्रभु का न्हवन देख हर्षायें॥16॥
पुण्यवान मानव भी जाते, श्री जिनवर के दर्शन पाते।
देव मित्र बन दर्श कराते, विद्याधर विद्या से जाते॥17॥
पंचमेरु का व्रत जो धारे, उनसे पंच पाप भी हारे।
पंच परावर्तन नश जाये, व्रत धारण कर शिव सुख पाये॥18॥
दुःख संकट पीड़ा मिट जाये, कर्मों के बन्धन कट जायें।
हे जिनवर ! हम तुम्हें पुकारें, सुनलो विनती नाथ हमारे॥19॥
पंचमेरु के दर्शन पायें, श्रद्धा से हम शीश झुकायें।
भक्ति कर भव भ्रमण नशायें, 'आस्था' से शाश्वत सुख पायें॥20॥

दोहा– चालीसा जिनराज का, चालीस दिन कर पाठ।
दीप धूप संग जाप कर, नाशें कर्मन आठ॥
तीन गुप्तियाँ सिद्ध हों, मिले मोक्ष का द्वार।
पंचमेरु को नित नमें, 'आस्था' बारम्बार॥

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधि सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री नन्दीश्वर* पूजन विधान

अथ स्थापना (शंभु छंद)

ये द्वीप आठवाँ नन्दीश्वर, शाश्वत अतिशय सुखकारी है।
इनके बावन चैत्यालय की, प्रतिमायें सब मनहारी हैं।।
कर युग में सुन्दर सुमन लिये, हम अभिनंदन करने आये।
शत इन्द्रों से पूजित प्रभु की, पूजा कर हम शिवसुख पायें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमा–समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

कलशों में नीर लेके भक्त ईश को ध्यायें।
त्रय रोग नशाने प्रभु को नीर चढ़ायें।।
बावन जिनालयों के चैत्य की महार्चना।
हम श्री जिनार्चना से नशें कर्म वंचना।। 1 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक जिनालय में बिम्ब इक सौ आठ हैं।
उनको चढ़ायें गंध आज ठाठ–बाट से।। बावन... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वो मूर्तियाँ अनादि निधन रत्न से बनीं।
मोती एवं तन्दुलों से उनको पूजते गुणी।। बावन... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

---

* श्री नन्दीश्वर विधान अष्टाह्निका में आठ दिनों तक करना चाहिये। इसलिये ये चार पूजायें ही दो बार करना चाहिये।

अतिशय से युक्त नाथ को हम पुष्प चढ़ायें।
निज कामबाण नाश हेत पूजने आये।।
बावन जिनालयों के चैत्य की महार्चना।
हम श्री जिनार्चना से नशें कर्म वंचना।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर जलेबी मालपुआ रबड़ी कचौड़ी।
हम नाथ को चढ़ायें आज शुद्ध पकौड़ी।। बावन... ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये द्वीप रत्न दीप से सदा ही जगमगे।
करके प्रभु की आरती मोहान्धतम भगे।। बावन... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उन मन्दिरों में महक उठे धूप गंध की।
हम धूप चढ़ाके नशायें कर्म बंदगी[1]।। बावन... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर एक ऋतु के फलों की थाल सजायें।
पाने सुमोक्ष हम प्रभु के चर्ण चढ़ायें।। बावन... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! अष्ट द्रव्य को स्वीकार कीजिये।
संसार के दु:खों से हमें तार दीजिये।। बावन... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दासता।

चारों दिशाओं की पूजा के पूर्णार्घ

(नरेन्द्र छंद)

अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, तेरह मंदिर न्यारे।
पूरब दिश के इन जिनगृह में, सिद्ध प्रभु मनहारे।।
शाश्वत अकृत्रिम चैत्यों को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
नंदीश्वर के बावन प्रभु को, हम सब शीश नवायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

नंदीश्वर दक्षिण अंजन गिरि, उस गिरि पे दधिमुख चार कहे।
रतिकर पर्वत विदिशाओं में, कुल पर्वत प्रभु ने आठ कहे।।
तेरह जिनमंदिर वहाँ कहे, उत्तम शिखरों पे ध्वज फहरे।
हम भी उनको निशदिन पूजें, वो भव्य जनों का चित्त हरे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, उन्नत गिरी अंजन हैं।
वहाँ प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का, शत्–शत् अभिवंदन हैं।।
दधिमुख पर्वत की विदिशा में, रतिकर आठ कहे हैं।
तेरह चैत्यालय को हम सब, निशदिन पूज रहे हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, उत्तर दिश सुखकारी।
रतिकर दधिमुख अंजनगिरि के, मन्दिर मंगलकारी।।

तेरह जिन चैत्यालय को हम, अर्घ पवित्र चढ़ायें।
उनके शाश्वत जिनबिम्बों को, हम सब शीश झुकायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांतिधारा हम करें, जिन पद नीर चढ़ाय।**
नन्दीश्वर के सब प्रभो, समता शांति दिलाय।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– **वकुल मालती मोगरा, नील कमल कचनार।**
अभिनन्दन प्रभु आपका, भव्य करें मनहार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– **नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, गायें हम जयमाल।**
पुष्पों की माला चढ़ा, पायें जिनगुण माल।।

(नरेन्द्र छंद)

नमस्कार है जिन प्रतिमा को, नमस्कार नंदीश्वर को।
नमस्कार बावन चैत्यों को, नमस्कार हो जिनवर को।।
नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, जग में मंगलकारी है।
सर्व सुरासुर से पूजित जिन, रत्नमयी मनहारी हैं।।1।।

पर्व अठाई एक वर्ष में तीन बार नित आता है।
कार्तिक फागुन षाढ मास में, पर्व मनाया जाता है।।
नन्दीश्वर में जाकर सुरगण, पूजा-पाठ रचाते हैं।
आठ दिवस तक वे सब मिलकर, उत्सव वहाँ मनाते हैं।।2।।

द्वीप आठवें नंदीश्वर में, मनुज नहीं जा पाते हैं।
वो परोक्ष में जिनमंदिर में, पूजा कर सुख पाते हैं।।
बावन हैं इसमें चैत्यालय, रत्नमयी सब प्रतिमायें।
सब मन्दिर में अष्टोत्तर शत, राजे श्री जिन प्रतिमायें।।3।।

दधिमुख रतिकर अंजनगिरी के, बावन जिन चैत्यालय हैं।
ऊँचे-ऊँचे मन्दिर सारे, भव्यों को सौख्यालय हैं।।
प्रतिमा हमसे भले दूर हो, फिर भी फल वो देती है।
उनकी पूजा हर पूजक के, दुःख संकट हर लेती है।।4।।

अष्टाह्निक में आठ दिवस तक, भव्य विधान रचाते हैं।
रत्नचूर्ण का रंग बिरंगा, मण्डल भव्य बनाते हैं।।
श्रीफलादि में ध्वजा लगाकर, प्रभु को अर्घ चढ़ाते हैं।
प्रभु पूजा के फल से क्रमशः, मोक्षपुरी को पाते हैं।।5।।

बेला तेला या एकाशन, अनशन जो जन करते हैं।
अष्ट करम से मुक्ति पाकर, अष्टम् भू वो वरते हैं।।
चारण ऋद्धिधारी मुनिगण, प्रभु का ध्यान लगाते हैं।
'आस्था' रखकर त्रय गुप्ति पा, मोक्ष सम्पदा पाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिश जिनालय पूजा विधान

अथ स्थापना (शंभु छंद)

नन्दीश्वर के पूरब दिश में, तेरह चैत्यालय श्रुत गाये।
अतिशय युत ये जिनगृह सुन्दर, हम भक्तों के मन बस जायें।।
उनका प्रत्यक्ष महा अर्चन, श्रद्धा से सुरगण करते हैं।
हम भी परोक्ष आह्वान करें, सब चैत्यालय को भजते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

गंगा नदी का शुचि नीर लिये, श्री जिनवर का प्रक्षाल करें।
जिन प्रतिमा की सम्यक् अर्चा, मम जन्म जरादिक रोग हरे।।
नंदीश्वर के पूरब दिश में, शाश्वत तेरह चैत्यालय हैं।
हम उनकी भक्ति विधान रचा, जायेंगे मोक्ष सुखालय में।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर्ष तगर चन्दन धिस हम, जिनवर को आज चढ़ाते हैं।
प्रभु की पावन पग रज ले हम, श्रद्धा से शीश लगाते हैं।। नंदीश्वर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उन चैत्यालय की प्रतिमायें, सब रत्नमयी सुन्दर प्यारी।
रत्नों के अक्षत पुंज–चढ़ा, हम भक्ति करें अतिशयकारी।। नंदीश्वर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वयं पुष्प की माल बना, प्रभुवर को अर्पण करते हैं।
वो मालामाल बनें जग में, सुख वैभव शांति वरते हैं।।
नंदीश्वर के पूरब दिश में, शाश्वत तेरह चैत्यालय हैं।
हम उनकी भक्ति विधान रचा, जायेंगे मोक्ष सुखालय में।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन प्रकार के व्यंजन से, बावन चैत्यालय को पूजें।
यह क्षुधारोग नश जाये प्रभु, इस कारण हम निशदिन पूजें।। नंदीश्वर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों प्रकार के देव सभी, दिन–रात नाथ को भजते हैं।
हम भी दीपक लेकर पूजें, मिथ्यात्व मोह को तजते हैं।। नंदीश्वर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप चढ़ाने से, मंदिर सुरभित हो जाता है।
जिन अर्चा में जब भाव लगे, जीवन सुरभित हो जाता है।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आमादि चढ़ा कीर्त्तन करते, वाद्यों की मंगल ध्वनि बजे।
श्रीफल कदली व गन्ने से, जिनवर के मंडप पूर्ण सजें।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर में सुर ताल विशेष मिला, सुर देव–देवियाँ नृत्य करें।
वसुविध द्रव्यों की थाल चढ़ा, हम भी जिनवर की भक्ति करें।। नंदीश्वर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशागत चैत्यालय के 13 अर्घ

दोहा– पूर्व दिशा के नाथ को, पूजूँ मन वच काय।
तेरह जिनगृह चैत्य को, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(अडिल्ल छंद)

नन्दीश्वर की पूर्व दिशा में आइये।
अंजनगिरि के चैत्यालय को ध्याइये।।
सिद्ध जिनालय इस पर्वत की शान है।
इस पर्वत पे शोभे श्री भगवान हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि की चउ दिश जग में वंद्य हैं।
चार सरोवर कुमद कमल से रम्य है।।
पूरब नंदा वापी दधिमुख शैल है।
प्रभु को पूजें छूटे कर्मन् जैल से।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दधिमुख दही सम श्वेत वर्ण का जानिये।
'नन्दवती' वापी दक्षिण में मानिये।।
चारों दिश में वृक्ष आदि फूलें फलें।
हम भी प्रभु को पूजें और फूलें फलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदवती वापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश की वापी है 'नन्दोत्तरा'।
एक लाख योजन शाश्वत विस्तृत अहा।।
दधिमुख नग पे जिन चैत्यालय एक है।
अर्घ चढ़ा हम चरणों में सिर टेकते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदोत्तरावापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस हजार योजन दधिमुख पर्वत कहा।
उत्तर दिश 'नंदीघोषा' वापी जहाँ।।
रत्नमयी जिनबिम्ब यहाँ हैं स्वर्ण के।
अर्घ सजा लाये हम नाना वर्ण के।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदिघोषा वापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदा द्रह ईशान कोण रतिकर वहाँ।
उसके ऊपर रत्नों का मंदिर अहा।।
रतिकर पर्वत स्वर्ण वर्ण का जानिये।
प्रभु पूजा से शिव सुख मिलता मानिये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदा' द्रह आग्नेय दिशा में ध्याइये।
त्रिभुवन पति की पूजा से सुख पाइये।।
रतिकर पर्वत इक हजार योजन महा।
वहाँ विराजे प्रभु को हम पूजें यहाँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निकोण में 'नंदवती' वापी कही।
रतिकर पे जिनमंदिर रत्न मणीमयी।।
लोकपूज्य तहँ सिद्ध बुद्ध परमात्मा।
उनको पूजें बनने हम सिद्धात्मा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदवती वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदवती' द्रह नैऋत्य कोण सुहावनी।
नाना रत्नों की प्रतिमा मन भावनी।।

उन्हें पूजने आते नित सुर देवता।
निज समकित को दृढ़ करते वे देवता।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदोत्तर वापी पे रतिकर तुंग है।
नैऋत्य दिश में जिन प्रतिमायें तुंग हैं।।
सुर वनितायें मंगल नृत्य वहाँ करें।
अर्घ चढ़ा प्रभु को हम भी शिवसुख वरें।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदोत्तरावापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार निकायों के सुर नित आते यहाँ।
चँवर ढुरायें भक्ति रचायें वो अहा।।
पवन दिशा में वापी है नंदोत्तरा।
अर्घ चढ़ायें हे भगवन् ! हमको तिरा।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदोत्तरावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन दिशा में नंदीघोषा वापिका।
कमल वनों से शोभित हर इक वाटिका।।
वज्रमयी ये पर्वत नीचे गोल हैं।
प्रभु पूजा में भक्त बजाते ढ़ोल हैं।।12।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदिघोषावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापी है ईशान में।
रतिकर नग पे बड़े-बड़े भगवान हैं।।
शाश्वत अनुपम जिनमंदिर मन भा रहे।
पूजा करने हम जिनमंदिर जा रहे।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदिघोषावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, तेरह मंदिर न्यारे।
पुरब दिश के इन जिनगृह में, सिद्ध प्रभु मनहारे।।
शाश्वत अकृत्रिम चैत्यों को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
नंदीश्वर के बावन प्रभु को, हम सब शीश नवायें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना।।
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- दर्शन हमको दीजिए, नंदीश्वर के नाथ।
हमें शरण में लीजिए, तुम्हें नमावें माथ।।

(शंभु छंद)

जय नंदीश्वर जय नंदीश्वर, इसकी जयमाला हम गायें।
यह द्वीप आठवाँ नंदीश्वर, यह मध्यलोक में ही आयें।।
यह वसुधा कितनी पावन है, जिस भू पे इतने चैत्य बनें।
शाश्वत अकृत्रिम रत्नमयी, बावन जिनगृह अभिराम बनें।।1।।
नंदीश्वर के चारों दिश में, तेरह-तेरह चैत्यालय हैं।
अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, शुभ रत्नमयी देवालय हैं।।

यह इन्द्रनील मणियों वाले,चौरासी सहस ऊँचाई है।
सब तरफ गोल हैं इक समान, चूड़ी जैसी गोलाई है।।2।।
इस गिरि पे चार वापियाँ हैं, योजन इक लाख कहीं सारी।
जलपूर्ण वापियों के अंदर, कमलादि खिले हैं मनहारी।।
चारों द्रह की चारों दिश में, उद्यान बने सुन्दर–सुन्दर।
अशोक आम और सप्त छंद, चंपादि लगे सबको सुन्दर।।3।।
वापी के मध्य भाग में ही, पर्वत दधिमुख दधि सम सोहे।
योजन हजार दस ऊँचा ये, सुर ललनाओं का मन मोहे।।
वापी के दोनों कोने में, रतिकर पर्वत ये आठ कहे।
जो इनकी पूजा–पाठ करे, उनके घर में नित ठाठ रहे।।4।।
योजन हजार चौड़े ऊँचे, रतिकर पर्वत हैं स्वर्णमयी।
सब शैल स्वर्ण के बने हुये, इनमें प्रतिमायें रत्नमयी।।
वैभव युत ये तेरह मंदिर, ये निलय शिखर युत बतलाये।
उन पर हैं स्वर्ण कलश सुन्दर, ध्वज उनकी कीर्ति फैलाये।।5।।
इस नंदीश्वर के दर्शन को, केवल सुरगण ही जा सकते।
साक्षात् प्रभु के दर्शन से, सम्यक्त्व निधि वो पा सकते।।
हम भी परोक्ष में पूजा कर, पूजा का उत्तम फल पायें।
'आस्था' से नमन करें प्रभु को, भवसागर से हम तिर जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिश जिनालय पूजा विधान

अथ स्थापना (दोहा)

द्वीपों में यह आठवाँ, नंदीश्वर है धाम।
दक्षिण दिश के चैत्य का, करता मैं आह्वान।।
अकृत्रिम जिनबिम्ब ये, रत्नमयी भगवान।
तेरह चैत्यालय बनें, उनको करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

प्रभुवर का अभिषेक करूँगा, बड़े–बड़े कलशों से।
वो ही न्हवन बने गंधोदक, ॐ ह्रीं मंत्रों से।।
मंत्रित उस गंधोदक को मैं, अपने शीश लगाऊँ।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का ताप नशाने वाला, चंदन घिसकर लाऊँ।
केशर में कर्पूर मिलाकर, प्रभु के चरण चढ़ाऊँ।।
प्रभु चरणों की पावन रज का, सिर पर तिलक लगाऊँ।। नंदीश्वर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नवरंगों के माणिक मोती, रंग–बिरंगे लाऊँ।
अक्षयपद के धारी भगवन्, अक्षय पद मैं पाऊँ।।
अक्षयपद को पाने हेतु, अक्षत पुंज चढ़ाऊँ।। नंदीश्वर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्र और फूलों का मैंने, तोरणद्वार बनाया।
विविध वर्ण के गुलदस्तों से, मंदिर आज सजाया।।
पुष्पहार अर्पण कर भगवन्, काम अरि विनशाऊँ।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मण्डल के चारों कोने पे, इक्षुदण्ड लगाये।
कदली खंब व पुष्पमाल से, तोरणद्वार बनाये।।
पय घृत के सुस्वादु व्यञ्जन, प्रभुवर तुम्हें चढ़ाऊँ।। नंदीश्वर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब होता मंदिर में उत्सव, तब-तब मने दिवाली।
करें आरती नंदीश्वर की, बजा-बजा कर ताली।।
घृत कपूर के दीप जलाकर, मंदिर खूब सजाऊँ।। नंदीश्वर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एक-एक चैत्यालय पे सुर, पूजन भव्य रचायें।
सुरभित धूप चढ़ाकर प्रभु को, अपने कर्म नशायें।।
नंदीश्वर के जिनबिम्बों को, घट में धूप चढ़ाऊँ।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, जिनमन्दिर मनहारे।
सोने का श्रीफल लेकर के, भक्त चढ़ायें सारे।।
तेरह विध चारित को पालूँ, महामोक्ष फल पाऊँ।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा के स्वामी को, अष्ट द्रव्य से पूजूँ।
भक्ति के रस में रम जाऊँ, कर्म बंध से छुटूँ।।
राग–द्वेष के द्वंद फंद से, छुटकारा मैं पाऊँ।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा– दक्षिण के जिन चैत्य पे, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
तेरह जिनगृह पूजने, सुर नंदीश्वर जाय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(अवतार छंद)

नंदीश्वर दक्षिण माय, अंजन तुंग महा।
इन्द्रादि देवगण आय, मंदिर भव्य जहाँ।।
नानाविधि लेके द्रव्य, सुरगण आते हैं।
पूजा करते अति भव्य, पुण्य कमाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि पूरब ज्येष्ठ, 'अरजा' वापि बहे।
वापीमधि दधिमुख श्रेष्ठ, इसपे चैत्य कहे।। नानाविधि..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश अंजन तुंग, 'विरजा' द्रह होवे।
जिनमंदिर शिखर उतुंग, दधिमुख पे सोहे।। नानाविधि..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वापी अशोका नाम, पश्चिम दिश प्यारी।
दधिमुख ऊपर भगवान, सबको सुखकारी।।
नानाविधि लेके द्रव्य, सुरगण आते हैं।
पूजा करते अति भव्य, पुण्य कमाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी गतशोका होय, उत्तर दिश अंजन।
दधिमुख पे जिनवर होय, उनको है वंदन।। नानाविधि..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोका वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

रतिकर पर्वत है स्वर्णमयी, औ बाह्य कोण में वापी के।
ईशान कोण में 'अरजा द्रह', जिनमंदिर है इस वापी में।।
हैं रत्नमयी सब चैत्यालय, उनमें रत्नों की प्रतिमायें।
सुर किन्नर से वंदित प्रभु की, पूजा कर हम भी हर्षायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजा वापिका ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अग्निकोण 'अरजा' वापी, रतिकर सोने सा चमक रहा।
रत्नों की जिन प्रतिमाओं से, इन्द्रों का मन भी दमक रहा।। है..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजा वापिका आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतिकर नग की मणिमय प्रतिमा, सब धनुष पाँच सौ ऊँची हैं।
आग्नेय दिशा विरजा वापी, कहती जिनवाणी सच्ची है।। है ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजा वापिका आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कनक शैल रतिकर सुन्दर, विरजा वापी नैऋत्य दिशा।
दिन–रात प्रभु को सुर पूजें, फेरी करते वो सर्व दिशा।।
हैं रत्नमयी सब चैत्यालय, उनमें रत्नों की प्रतिमायें।
सुर किन्नर से वंदित प्रभु की, पूजा कर हम भी हर्षायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजा वापिका नैऋत्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम अशोका वापिका, भक्तों के शोक मिटाती है।
रतिकर की रत्नमयी प्रतिमा, नैऋत्य दिशा में आती है।। है ..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोका वापिका नैऋत्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायव्य कोण रतिकर वापी, है नाम अशोका मनहारी।
चामी[1] नग[2] पे सुन्दर मन्दिर, उनकी पूजा मंगलकारी।। है ..।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोका वापिका वायव्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम वीतशोका जिसका, वायव्य कोण के रतिकर पे।
नाना रत्नों की प्रतिमायें, जिनभक्तों को अति रुचिकर हैं।। है ..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोका वापिका वायव्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलों से सुरभित वापी ये, हे नाम वीतशोका जिसका।
ईशान दिशि विस्तृत मंदिर, वर्णन नहीं कर सकते जिसका।। है ..।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोका वापिका ईशान कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

नंदीश्वर दक्षिण अंजन गिरि, उस गिरि पे दधिमुख चार कहे।
रतिकर पर्वत विदिशाओं में, कुल पर्वत प्रभु ने आठ कहे।।

1. स्वर्णमयी, 2. पर्वत।

तेरह जिनमंदिर वहाँ कहें, उत्तम शिखरों पे ध्वज फहरे।
हम भी उनको निशदिन पूजें, वो भव्य जनों का चित्त हरे।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना।।
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- कल्पवृक्ष चिंतामणि, कामधेनु भगवान।
नंदीश्वर के नाथ का, करते हम गुणगान।।

(अडिल्ल छंद)

नंदीश्वर के बावन जिन गृह वंद्य हैं।
इन्द्रादिगण भक्ति करें अतिरम्य हैं।।
कार्तिक फागुन षाढ़ मास मन भावना।
नंदीश्वर दर्शन की करते कामना।।1।।

चार निकायों के सुर नित आते यहाँ।
पूजा करते पुण्य कमाते वो महा।।
चहुँ दिश में चारों निकाय के सुरपति।
भक्ति करके पाते वो सम्यक् मति।।2।।

पूर्व दिशा में कल्पवासी सुर पूजते।
भवनवासी सुर दक्षिण जिन को पूजते।।
व्यन्तरवासी पश्चिम में पूजा करें।
ज्योतिष सुरगण उत्तर में अर्चा करें।।3।।

प्रचुर भक्ति से नृत्य रचा फेरी करें।
अपना मुख पावन करने संस्तव करें।।
एक चित्त हो प्रभुवर की भक्ति करें।
विविध विधि से आठ प्रहर पूजा करें।।4।।

दो–दो प्रहर करें प्रभु की आराधना।
पौर्वाह्निक अपराह्निक में आराधना।।
पूर्वरात्रि पश्चिम रात्रि दो–दो घड़ी।
दिशा बदलकर पूजा करते वो बड़ी।।5।।

महाअर्चना आठ दिवस होती वहाँ।
नंदीश्वर चैत्यालय जिनप्रतिमा जहाँ।।
हम भी यहीं से प्रभुवर की पूजा करें।
श्रद्धा से 'आस्था' मुक्ति का पथ वरे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिश जिनालय पूजा विधान

अथ स्थापना (गीता छंद)

यह द्वीप नंदीश्वर कहा, इस द्वीप की पश्चिम दिशा।
मंदिर बने तेरह यहाँ, चारों दिशा विदिग्[1] दिशा।।
इसके सभी जिननाथ की, हम कर रहे आराधना।
प्रभु आपके आह्वान से, हो जाय कर्म विराधना।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

विपुल सुगन्धित नीर से, स्वर्ण कलश भर लाय।
न्हवन करें सुरगण वहाँ, भारी पुण्य कमाय।।
नंदीश्वर पश्चिम दिशा, तेरह मंदिर जान।
सब बिम्बों को पूज हम, बन जायें भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरु कर्पूर संग, चंदन कुंकुम लाय।
इन्द्र सुगन्धित द्रव्य ले, प्रभु पद लेप कराय।। नंदीश्वर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल निर्मल चन्द्र सम, तंदुल धवल सजाय।
प्रतिमाओं को देवगण, अक्षत पुञ्ज चढ़ाय।। नंदीश्वर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. विदिशा

सेवन्ती पुन्नाग संग, विविध पुष्प की माल।
माला प्रभु पद में चढ़ा, अंत वरें जयमाल।।
नंदीश्वर पश्चिम दिशा, तेरह मंदिर जान।
सब बिम्बों को पूज हम, बन जायें भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्भुत अमृत रस भरे, षट् रस व्यञ्जन थाल।
सब देवेन्द्र चढ़ा रहे, भर-भर प्रभु को थाल।। नंदीश्वर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कज्जल व कालुष्य बिन, रत्नदीप सुर लाय।
सुर कर प्रभु की आरती, केवलज्योति जगाय।। नंदीश्वर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दिर में जिनबिम्ब को, सुरभित धूप चढ़ाय।
दिग् मण्डल तक देवगण, धूप गंध महकाय।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारंगी केला पनस, मातुलिंग व आम।
पके फलों से सुर भजें, प्रभु को आठों याम।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाचें चंवर ढुरा रहे, किंकिणियों संग देव।
अष्ट द्रव्य ले हाथ में, पूजें प्रभु को देव।। नंदीश्वर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा– पश्चिम के जिन चैत्य पे, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
तेरह जिनगृह नाथ को, मन–वचन–तन से ध्याय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(शंभु छंद)

यह द्वीप आठवाँ नंदीश्वर, पश्चिम दिश अंजनगिरि सोहे।
सिद्धों की रत्नमयी प्रतिमा, सुर किन्नरियों के मन मोहे।।
तेरह चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरी दधिमुख पूरब में, विजयावापी कहलाती है।
दधिसम जिनगृह की पूजा को, देवों की टोली जाती है।। तेरह..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयंति वापी दक्षिण में, अंजन दधिमुख ये धवल कहा।
ये पर्वत वापी अचल सभी, जिन मंदिर भी है अचल अहा।। तेरह..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंती वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वापी 'जयंती' पश्चिम में, उस वापी में कमलादि खिले।
अंजनगिरि दधिमुख जिनवर के, दर्शन से अद्भुत शांति मिले।। तेरह..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि जयंती वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी अपराजित नीर भरी, जय–जय ध्वनि इसपे आती है।
अंजन दधिमुख उत्तर दिश की, प्रतिमायें अति मनभाती हैं।। तेरह..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अपराजिता वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयावापी ईशान दिशा, रतिकर गिरि पर हैं जिन प्रतिमा।
शत पाँच धनुष ऊँची मूरत, अनुपम अविनाशी ये प्रतिमा।।
तेरह चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय कोण विजया वापी, रतिकर पे सब जिन चैत्यालय।
इनकी परोक्ष पूजा भक्ति, भक्तों को है सुख का आलय।। तेरह..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजया वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय दिशि 'वैजयन्ति' द्रह, रतिकर की रत्नमयी प्रतिमा।
नाना रत्नों का अर्घ बना, पूजें हम शाश्वत जिन प्रतिमा।। तेरह..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंती वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयन्ति द्रह ये नैऋत्य में, नित नव्य[1] सुखों को दिलवाये।
त्रैलोक्य तिलक रतिकर जिन से, हम भी सच्चा सुख पा जायें।। तेरह..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंती वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी जयंती नैऋत्य दिशा, है परम श्रेष्ठ सुन्दर मंदिर।
रतिकर नग पे जिनवर जितने, उनके रत्नों के जिनमंदिर।। तेरह..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि जयंती वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी जयंती वायव्य दिशा, रतिकर नग रत्नों सा चमके।
जिन चैत्य अकृत्रिम बने जहाँ, वो नौ रत्नों से नित दमके।। तेरह..।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि जयंती वापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित द्रह वायव्य कोण, सोने का रतिकर नग प्यारा।
जिनचैत्य चैत्यालय का वैभव, देवों द्वारा पूजित सारा।। तेरह..।।12।।

1. नये।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अपराजिता वापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित वापी रतिकर की, ईशान दिशा में कहलाये।
रतिकर की स्वयं सिद्ध प्रतिमा, रत्नों की आभा फैलाये।।
तेरह चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अपराजिता वापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, उन्नत गिरी अंजन हैं।
वहाँ प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का, शत्-शत् अभिवंदन हैं।।
दधिमुख पर्वत की विदिशा में, रतिकर आठ कहे हैं।
तेरह चैत्यालय को हम सब, निशदिन पूज रहे हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना।।
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- मंत्र जाप कर हम करें, जिनवर का गुणगान।
कीर्तन से कीर्ति मिले, भक्ति से भगवान।।

(पद्धरि छंद)

श्री नंदीश्वर को नमस्कार, हम नमते प्रभु को बार–बार।
चैत्यालय बावन हैं महान्, रत्नों के दिव्य प्रकाशवान॥1॥
चैत्यालय चारों दिश कहाय, बहुवर्णी सब प्रतिमा सुहाय।
पद्मासन सब प्रतिमा कहाय, शत पाँच धनुष ऊँची बताय॥2॥
चऊँ दिश में अंजनगिरी चार, हर गिरि पे वापी चार–चार।
उसके चऊँ दिश दधिमुख बताय, दधिमुख दधि सम सुन्दर कहाय॥3॥
विदिशा में दो रतिकर सुहाय, सब रतिकर स्वर्णमयी बताय।
तेरह जिनमंदिर अति विशाल, हम सदा झुकायें इन्हें भाल॥4॥
इन्द्रादि देव भक्ति रचाय, सुर–किन्नरियाँ भी संग आय।
नाचत गावत बाजे बजाय, प्रभु का सुन्दर नाटक दिखाय॥5॥
जब–जब आष्टाह्निक पर्व आय, चारों निकाय सुर वहाँ जाय।
कार्तिक फाल्गुन आषाढ़ मास, ये शुक्ल पक्ष में पर्व खास॥6॥
अष्टम तिथि से प्रारम्भ होय, पूनम तिथि में सम्पूर्ण होय।
सुर आठ प्रहर पूजा रचाय, शुभ आठ दिवस दिन–रात ध्याय॥7॥
नंदीश्वर में सुर देव जाय, मुनि मनुज खगाधिप नहीं जाय।
हम सब परोक्ष वन्दें अपार, दर्शन दो प्रभुवर एक बार॥8॥
जिन प्रतिमाओं को नमस्कार, उन सबको वंदें बार–बार।
त्रय गुप्ति समाधि सुखद सार, 'आस्था' से पावे लोक पार॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिम दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें॥
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप उत्तर दिश जिनालय पूजा विधान

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के जिनभवनों में, प्रतिमा रत्नमयी हैं।
इन्द्रनील मणियों के पर्वत, कोई स्वर्णमयी हैं।।
अंजन दधिमुख रतिकर नग में, शाश्वत त्रिभुवन स्वामी।
करते हम आह्वान जिनेश्वर, हृदय विराजो स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज– दीप अढ़ाई सरस...)

कलश में नीर भर लाये, प्रभु को पूजने आये।
जरादिक रोग विनशायें, मोक्ष का लाभ हम पायें।।
आठवाँ द्वीप कहलाये, वहाँ की उत्तर दिश ध्यायें।
त्रयोदश तीर्थ हम ध्यायें, सुखों की सम्पदा पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित गंध मनहारा, मिला प्रभु का सुखद द्वारा।
चढ़ाये गंध हम सारा, मिले पापों से छुटकारा।। आठवाँ..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र सम रत्न हम लाये, धवल अक्षत सजा लाये।
प्रभु की अर्चना गायें, परम पद प्राप्त हो जाये।। आठवाँ..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचरंगी सुमन लायें, पंच पापों को विनशायें।
प्रभु पद पुष्प हम लाये, काम का मद उतर जाये।।
आठवाँ द्वीप कहलाये, वहाँ की उत्तर दिश ध्यायें।
त्रयोदश तीर्थ हम ध्यायें, सुखों की सम्पदा पायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सताये ये क्षुधा भारी, लगी दिन-रात बीमारी।
लिये मिष्ठान्न नर-नारी, करें पूजा बड़ी भारी।। आठवाँ..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय दीप की थाली, लगे जैसे हो दीवाली।
प्रभु की अर्चना आली, चढ़ायें दीप की थाली।। आठवाँ..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घट गंध फैलाये, भाव दूषण विनश जाये।
भक्त भगवान को ध्यायें, जलाने कर्म हम आये।। आठवाँ..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संतरा आम वा केला, चढ़ाये भक्त अलेबला।
लगा प्रभु द्वार पे मेला, आ गया पर्व अलबेला।। आठवाँ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त भक्ति में रंग जाये, प्रभु का संग मिल जाये।
प्रभु के द्वार पे आये, चढ़ाने अर्घ हम लाये।। आठवाँ..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा– उत्तर के जिनबिम्ब पे, सुन्दर पुष्प चढ़ाय।
तेरह जिनगृह चैत्य को, मन–वच–तन से ध्याय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

शेर छंद (हे दीन बंधु श्रीपति...)

तेरह सदन बने यहाँ जिनदेव के महान्।
पूजा से पूज्य पद मिले ये माँगते वरदान।।
अंजनगिरि उत्तर दिशा में चमचमा रही।
पूजा करें जिनराज की यह मन को भा रही।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि पूरब दिशी रम्या सुवापिका।
तल्लीन हो जिनभक्त पाये धर्म की शिखा।। अंजनगिरि..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि दक्षिण दिशी रमणीया वापिका।
पूजा करें तीर्थेश की सुर देव–देवियाँ।। अंजनगिरि..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीया वापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशा अंजन गिरि की वापी 'सुप्रभा'।
दधिमुख के जिनभवन की हमें मिल रही प्रभा।। अंजनगिरि..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह सर्वतोभद्रा सरस उत्तर दिशा में है।
अंजन दधिमुख मध्य में जिनचैत्य बने हैं।। अंजनगिरि..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

रम्या द्रह ईशान, रतिकर स्वर्णमयी है।
इनमें जिनभगवान, प्रतिमा रत्नमयी है।।
नंदीश्वर में मात्र, देव-देवियाँ जाते।
हम परोक्ष में पूज, उनको अर्घ चढ़ाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि 'रम्या' श्रेष्ठ, दिश आग्नेय कहाती।
रतिकर आलय श्रेष्ठ, देव जातियाँ जाती।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रमणीया' हृद रम्य, अग्नि दिशा में आये।
रतिकर नग अतिरम्य, सुरगण वाद्य बजायें।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह 'रमणीया' भव्य, रतिकर रत्नों वाला।
नैऋत्य जिनग्रह मध्य, रंग-बिरंगी माला।। नंदीश्वर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीया वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ द्रह नैऋत्य, रतिकर नग जिनदेवा।
चौंसठ चँवर ढुँराय, लाये देव चंदेवा।। नंदीश्वर..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभा वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ वायव्य कोण, है रतिकर नग वापी।
हम इस विध जिन ध्याय, ना हो जन्म कदापि।।
नंदीश्वर में मात्र, देव-देवियाँ जाते।
हम परोक्ष में पूज, उनको अर्घ चढ़ाते।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्र, रतिकर स्वर्ण समाना।
वायव के जिन चैत्य, देते पुण्य खजाना।। नंदीश्वर..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनगृह शाश्वत रम्य, अविचल हैं प्रतिमायें।
वापि सर्वतोभद्र, रतिकर रम्य बतायें।। नंदीश्वर..।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रा वापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, उत्तर दिश सुखकारी।
रतिकर दधिमुख अंजनगिरि के, मन्दिर मंगलकारी।।
तेरह जिन चैत्यालय को हम, अर्घ पवित्र चढ़ायें।
उनके शाश्वत जिनबिम्बों को, हम सब शीश झुकायें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना।।
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता छन्द)

नंदीश्वर स्वामी, हे जगनामी, बावन चैत्यालय की जय।
जयमाल तिहारी, है सुखकारी, देती है हर भव में जय।।

(दोहा)

नंदीश्वर शुभ द्वीप की, जयमाला सुखकार।
द्वीप आठवें के प्रभु, तुम हो मंगलकार।।1।।

तेरह चैत्यालय कहें, उत्तर दिश के माय।
जो प्रत्यक्ष में पूजने, सुरगण आदि जाय।।2।।

मंत्र जाप पूजा करें, कीर्तन पाठ कराय।
नृत्य गान संस्तव सुखद, आठों याम रचाय।।3।।

प्रभु नाम के मंत्र से, होवे पाप विनाश।
श्री जिनवर के जाप से, पहुँचे प्रभु के पास।।4।।

मंत्र जाप के अंत में, स्वाहा शब्द सुहाय।
स्वाहा विद्या वाच्य है, विद्या ज्ञान बढ़ाय।।5।।

स्वाहा बिन गर जाप हो, मंत्र रूप कहलाय।
मंत्रों की शक्ति अति, संकट दूर कराय।।6।।

करें आरती भक्ति से, दीपावली सजाय।
रत्नों के उस चैत्य को, दीपों से चमकाय।।7।।

चारों दिश में घूमकर, फेरी नित्य लगाय।
अंजन दधिमुख चैत्य पे, रतिकर पे सुर जाय।।8।।

विद्याधर नर नारी वा, ऋद्धिधर मुनिराय।
इस नंदीश्वर द्वीप में, मनुज कभी ना जाय।।9।।
हम भक्ति करते प्रभु, दो ऐसा वरदान।
हम भी सिद्ध समान हो, दर्शन दो भगवान।।10।।
प्रभुवर की आराधना, गुप्ति व्रतों के साथ।
जिनवर पे 'आस्था' बढ़े, सदा झुकायें माथ।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तर दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

समुच्चय मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर संज्ञाय नमः।
(2) ॐ ह्रीं श्री अष्टमहाविभूति संज्ञाय नमः।
(3) ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकसार संज्ञाय नमः।
(4) ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुख संज्ञाय नमः।
(5) ॐ ह्रीं श्री पञ्चमहालक्षण संज्ञाय नमः।
(6) ॐ ह्रीं श्री स्वर्ग सोपान संज्ञाय नमः।
(7) ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्र संज्ञाय नमः।
(8) ॐ ह्रीं श्री इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

समुच्चय जयमाला

दोहा– श्री नंदीश्वर द्वीप में, बावन जिनगृह माल।
उनकी जयमाला पढ़ें, भरकर श्रीफल थाल।।

(नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवें नंदीश्वर की, जयमाला हम गायें।
बावन जिन चैत्यालय को हम, झुक–झुक शीश नवायें।।
बड़े पुण्य से नंदीश्वर के, दर्शन सुरपति पायें।
सर्व देव–देवी भी आकर, अतिशय भक्ति रचायें।।1।।

प्रथम[1] इन्द्र हस्ती पे चढ़कर, कर में श्रीफल लाये।
ईशानेन्द्र गजारूढ़ होकर, पूंगीफल भर लाये।।
सानत इन्द्र सिंह पे आरूढ़, आम्र गुच्छ फल लाये।
इन्द्र महेन्द्र अश्व पे चढ़कर, केले लेकर जाये।।2।।

श्री ब्रह्मेन्द्र हंस आरूढ़ हो, पुष्प केतकी लाये।
क्रौंच पक्षी आरूढ़ ब्रह्मोत्तर, कमल हाथ में लाये।।
श्री शुकेन्द्र चढ़े चकवा पर, पुष्प हाथ में लाये।
तोता पे महाशुक्र इन्द्र चढ़, फूलमाल ले आये।।3।।

श्री शतार सुर कोयल पे चढ़, नीलकमल ले आये।
सहस्रार सुर चले गरुड़ पे, फल अनार कर लाये।।
आनत सुरपति विहगाधिप चढ़, पनस गुच्छ फल लाये।
प्राणत सुरपति तुम्बरु फल ले, पद्म यान से आये।।4।।

गन्ने लेकर आरणेन्द्र भी, कुमुद यान से आये।
चँवर हाथ ले अच्युतेन्द्र भी, मयूर यान से आये।।

1. पहला (सौधर्म)

भवनवासी व्यन्तर ज्योतिष सुर, निज वाहन पर जाये।
मालाएँ पुष्पों की ले वे, विविध फलों को लायें।।5।।

यहाँ अखण्डित आठ दिनों तक, सुरपति भक्ति रचायें।
आठों याम प्रभु को पूजें, द्रव्य अनेक चढ़ायें।।
मनुज और ऋद्धिधर मुनिवर, वहाँ नहीं जा पायें।
वंदन पूजन कर परोक्ष से, हम सब पुण्य कमायें।।6।।

श्रीमत् सिद्ध जिनेश्वर भगवन्, सर्व सिद्धियाँ देते।
जिनभक्तों की संकट पीड़ा, श्री जिनवर हर लेते।।
मंगलकारी जिनपूजा ये, हमको शांति दिलाये।
यही कामना एक हमारी, नित जिन भक्ति रचायें।।7।।

हे प्रभु ! हम सब बनें पुजारी, तव समान पद पाने।
कर्म शृंखला के बंधन को, आये आज नशाने।।
करो नाथ कल्याण हमारा, समिति गुप्ति हम धारें।
दृढ़ 'आस्था' ही हर प्राणी को, भव से पार उतारे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे चतुर्दिक संबंधि द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

(अडिल्ल छंद)

आदि शांति श्री पार्श्व वीर को है नमन।
देव-शास्त्र-गुरु तीनों को शत्-शत् नमन।।
परमेष्ठी पाँचों को मेरा है नमन।
कुंथु कनक गुप्तिनंदी गुरु को नमन।।1।।

श्रुतपंचमी गुरु पुष्यामृत शुभ योग में।
नंदीश्वर का पाठ लिखा उस योग में।।
पच्चीस सौ चालीस वीर निर्वाण था।
दो हजार सन् तेरह व गुरुवार था।।2।।

प्रभु भक्ति में कलम सदा चलती रहे।
गुरुओं का आशीष सदा मिलता रहे।।
छंद शब्द व मात्रा का ना ज्ञान है।
भक्ति के वश मैंने लिखा विधान ये।।3।।

(दोहा)

वसुधा पे जब तक रहे, सूरज चंदा आग।
तब तक रहे विधान यह, जागे मेरा भाग्य।।
जिनगुण सम्पत् प्राप्त हो, 'आस्था' को दो दान।
तीन गुप्ति चारित्र धर, बनूँ सिद्ध भगवान।।4।।

।। इति अलम् ।।

नंदीश्वर द्वीप आरती

(तर्ज – माईन माईन....)

नंदीश्वर के श्री विधान की, आरती मंगल गायें।
बावन जिन चैत्यालय की हम, आरती करने आये।।
बोलो नंदीश्वर की जय, बोलो सब जिनवर की जय

द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, रत्नमयी मनहारी।
ऊँची-ऊँची इसमें प्रतिमा, रंग-बिरंगी प्यारी।।
स्वयं सिद्ध भगवन् ये सारे-2, इनको सुरगण ध्यायें।
बावन जिन........

अंजनगिरि रतिकर दधिमुख ये, पर्वत मणियों वाले।
अलग-अलग हैं यहाँ वापियाँ, मन्दिर रत्नों वाले।।
अकृत्रिम जिनबिम्बों की हम-2, गुण गाथा को गायें।
बावन जिन........

अलग-अलग मन्दिर में प्रतिमा, इक सौ आठ कहीं हैं।
पाँच शतक धनु ऊँची प्रतिमा, सारी रत्नमयी हैं।।
प्रभुवर सारे मंगल करते-2, अतिशय जिन दिखलायें।
बावन जिन........

सर्व सुरासुर आठ दिवस तक, नंदीश्वर में जाते।
करें निरन्तर पूजा भक्ति, फेरी नित्य लगाते।।
हम भी 'आस्था' करते प्रभु पे-2, शीघ्र सुदर्शन पायें।
बावन जिन........

***

श्री रविव्रत विधान

शंभु छंद

उपसर्ग विजेता पार्श्व प्रभु, मेरे मन मंदिर में आओ।
संकटहर चिंतामणि बाबा, सब चिंता दूर भगा जाओ।।
दस भव का वैरी दुष्ट कमठ, वो भी तुम शरणा में आये।
हम भी आह्वान करें जिनवर, पूजा से उत्तम सुख पायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुःखदारिद्र्य निवारक, कामनापूर्ण फलदायक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिकुंड संकटहर सर्व उपद्रव निवारक शांति तुष्टि-पुष्टि प्रदायक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणकारक मंगलदायक धरणेन्द्र पद्मावती पूजित सहस्त्रफणी श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शेर छंद

जिनदेव का भक्ति से भक्त न्हवन करायें।
निज जन्म जरा मृत्यु रोग नाशने आयें।।
हम पार्श्वनाथ की विशेष भक्ति रचायें।
रविव्रत विधान करके सर्व पाप नशायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिकुण्ड पार्श्वनाथ को हम गंध लगायें।
प्रभु के चरण की गंध को हम शीश लगायें।। हम पार्श्वनाथ...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलम मणि समान छवि आपकी प्यारी।
अक्षत अखण्ड ले चढ़ायें भक्त पुजारी।। हम पार्श्वनाथ...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के सिंहासन के मध्य नाथ शोभते।
हम उनको पुष्प रत्न चढ़ा पाप छोड़ते।।
हम पार्श्वनाथ की विशेष भक्ति रचायें।
रविव्रत विधान करके सर्व पाप नशायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार की मिठाई शुद्ध बनायी।
अपनी क्षुधा मिटाने हमने चरण चढ़ायी।। हम पार्श्वनाथ...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर ये जगमगा रहा अखण्ड ज्योति से।
हम दीप दान करके सजें ज्ञान ज्योति से।। हम पार्श्वनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्यान अग्नि में जलाये कर्म आपने।
हम भी चढ़ायें धूप अपने कर्म नाशने।। हम पार्श्वनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर मंदिरों में पार्श्वनाथ आप विराजे।
हम श्रेष्ठ मधुर फल चढ़ायें आपको ताजे।। हम पार्श्वनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हर भव में आपने क्षमा का सूत्र सिखाया।
हमने अनर्घपद के हेतु अर्घ चढ़ाया।। हम पार्श्वनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

पार्श्वनाथ की प्रतिमा मन पावन करे।
संकटहर चिंतामणि सब संकट हरे।।

प्रभु पद में हम त्रय धारा जल की करें।
कर कमलों से पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।।

शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : (1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं नमो भगवते चिंतामणि पार्श्वनाथ सप्तफण मंडिताय श्री धरणेन्द्र–पद्मावती सहिताय मम ऋद्धिं सिद्धिं वृद्धिं सौख्यं कुरु–कुरु स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

प्रथम वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा– रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

क्षायिक ज्ञान लब्धि के धारी, पार्श्वनाथ को ध्यायें।
अपना मिथ्याज्ञान नशाने, घृत का दीप चढ़ायें।।
नव लब्धि धारी परमेश्वर, दानी श्रेष्ठ कहाते।
भक्ति से इनको हम पूजें, चरणन् अर्घ चढ़ाते।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक दर्शन लब्धि धारी, श्री जिनदेव कहाये।
जिनवर की गुण महिमा गा हम, मोह तिमिर विनशायें।। नव..।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक सम्यक लब्धिधारी, समकित मार्ग दिखायें।
भव–भव का मिथ्यात्व हरो जिन, हम चरणों में आये।। नव..।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक चारित लब्धि धारी, चौथे बाल यतीश्वर।
उत्तम चारित पाने भगवन्, पूजें भव्य मुनीश्वर।।
नव लब्धि धारी परमेश्वर, दानी श्रेष्ठ कहाते।
भक्ति से इनको हम पूजें, चरणन् अर्घ चढ़ाते।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक दान लब्धि से भूषित, सर्व दान जिन देते।
प्रभुवर के दर आकर हम नित, बिन मांगे सुख लेते।। नव..।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक लाभ लब्धि के धारी, अक्षय लाभ जगायें।
अक्षय लाभ गुणों का पाने, हम प्रभु शरणा आये।। नव..।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक भोग लब्धि जिन पाते, सुख अनंत जिन भोगें।
हम हैं प्रभुवर लाल तुम्हारे, हमको शरणा दोगे।। नव..।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक है उपभोग लब्धि ये, कर्मनाश प्रभु पायें।
अक्षय लब्धि हैं जिनवर में, उनसे हम भी पायें।। नव..।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक वीर्य लब्धि को जिनवर, कर्म नाश कर पायें।
वीर्य शक्ति के आगे निश्चित, कर्म शक्तियाँ जायें।। नव..।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रविव्रत करें विधान हम, मंडल भव्य सजाय।
लगा चंदेवा छत्र संग, बंदनवार लगाय।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

प्रथम वर्ष के नौ रविव्रत में, अनशन व्रत स्वीकार करें।
करते जो उपवास भक्ति से, निज आतम में वास करें।।

जल फल आदिक आठ द्रव्य संग, पूरण अर्घ चढ़ाते हैं।
पार्श्वनाथ करुणा निधान को, हम सब शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं प्रथमवर्षे रविव्रतोपवासप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर–नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा– रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

द्वितीय वर्ष आषाढ़ का, शुक्ल पक्ष मनहार।
काँजी का आहार लो, उत्तम सुख दातार।।
पार्श्वनाथ भगवान का, ये रविव्रत सुखकार।
अष्ट द्रव्य ले पूजते, आ हम प्रभु के द्वार।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ष दूसरे में करो, काँजी का आहार।
स्वर्गों का वैभव मिले, व्रत पालो सुखकार।।
पार्श्वनाथ भगवान का, ये रविव्रत सुखकार।
अष्ट द्रव्य ले पूजते, आ हम प्रभु के द्वार।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत तीजा पार्श्व का, व्रत की सिद्धी कराय।
मांड ग्रहण कर व्रत करें, उत्तम वैभव पाय।। पार्श्वनाथ...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथे रविव्रत से मिले, प्राणी को संतोष।
काँजी का आहार ले, व्रत पालें निर्दोष।। पार्श्वनाथ...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकटमोचन व्रत यही, दे सुख शांति अपार।
ले आचाम्ल विशेष जो, पाये सौख्य अपार।। पार्श्वनाथ...।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्नहरण मंगलकरण, भुक्ति मुक्ति दातार।
कांजि ही बस ग्रहण करो, ये छठवा रविवार।। पार्श्वनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय जय करो, लो काँजी आहार।
पार्श्वनाथ का ध्यान कर, पाओ पुण्य अपार।। पार्श्वनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति करें हम पार्श्व की, पाने सम्यक् दर्श।
व्रत में काँजी भोज लें, नाशें मिथ्या दर्श।। पार्श्वनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधिवत जो व्रत पालते, अन्नादिक दे त्याग।
काँजी दूजे वर्ष लें, छोड़ें सबसे राग।। पार्श्वनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

द्वितीय वर्ष के इस रविव्रत में, काँजी का आहार करें।
रसना इन्द्रिय को वश करके, षट्रस व्यंजन त्याग करें।।
पार्श्वनाथ के इस रविव्रत को, जो श्रद्धा से अपनाये।
दुःख दारिद्र्य मिटा वो अपना, जिन सम शिव लक्ष्मी पाये।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे कांजिकाहार प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

तृतीय वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शंभु छंद)

ये वर्ष तीसरा रविव्रत का, हम नमक त्याग भोजन करते।
जो त्याग सहित व्रत को धारे, वो सर्वोत्तम यश सुख वरते।।
रविव्रत पारस प्रभु की पूजा, दुःख-संकट हरने वाली है।
आनंद सौख्य यशकीर्ति वा, धन-शांति देने वाली है।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक सहित पूजा करते, और जाप करे जो इस व्रत का।
आहार करें जो नमक बिना, फल पाते दुगुना इस व्रत का।। रविव्रत... ।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्वनाथ का पाठ करे, रात्रि में ना विश्राम करें।
सेंधव तज जो आहार करे, वो स्वर्ग मोक्ष अविराम वरें।। रविव्रत... ।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में शुभ भाव जगाने को, अपने कर्तव्यों को पालें।
भवि लवण बिना भोजन करके, जीवन के विघ्नों को टालें।। रविव्रत... ।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो व्रत लेकर अर्चा करते, उनको व्रत का फल शीघ्र मिले।
भोजन में लवणादिक छोड़ें, प्रभुवर की उसको शरण मिले।। रविव्रत... ।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नर नारी रविव्रत पालें, और राग-रंग का त्याग करे।
वो पंचेन्द्रिय पर जय पायें, जिन चरणों से अनुराग करे।। रविव्रत... ।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत पालन से सिद्धी होती, जैनागम से हमने जाना।
मन वच काया त्रय शुद्धि से, हमको इस व्रत को अपनाना।। रविव्रत... ।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब धर्म ध्यान में चित्त लगे, सांसारिक वैभव ना भाये।
प्रभु की मुख मुद्रा हृदय बसे, हम यही भावना नित भायें।।
रविव्रत पारस प्रभु की पूजा, दुःख-संकट हरने वाली है।
आनंद सौख्य यशकीर्ति वा, धन-शांति देने वाली है।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौभाग्यवान वे प्राणी हैं, जो प्रभु का कीर्त्तन करते हैं।
रविव्रत के दिन संयम धरकर, प्रभु चरणों में रत रहते हैं।। रविव्रत...।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष तीसरा इस रविव्रत का, नो रविवार नमक छोड़ें।
इस व्रत को श्रद्धा से करके, कर्मों के बंधन तोड़े।।
पार्श्वनाथ के शुभ चिंतन में, अपना समय लगाते हैं।
अष्ट द्रव्य में श्रीफल ले हम, ध्वज युत अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे लवणरहितैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चतुर्थ वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा– रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

बाल यतिश्वर तेइसवें जिन, नगर बनारस के राजा।
पूज रहे हम तुमको निशदिन, हे मधुवन के जिनराजा।।
चौथा वर्ष लगे रविव्रत का, मन में अति उत्साह भरो।
करो अल्प आहार विधि से, रविव्रत कर शिव सौख्य वरो।।1।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वसेन वामानंदन की, नीलमणी सम थी काया।
सौ वर्षों की आयु पाई, उत्तम तन उनने पाया।। चौथा वर्ष... ।।2।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक दिवस मित्रों को संग ले, पारस प्रभु वन में जायें।
जीव जल रहे इस लक्कड़ में, तापस को प्रभु समझायें।। चौथा वर्ष... ।।3।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नागयुगल को मंत्र सुनाया, मरकर वो सुरतन पायें।
शासन यक्ष बने वे दोनों, प्रभु सेवा कर हर्षाये।। चौथा वर्ष... ।।4।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व भवों के विशद ज्ञान से, हुये जिनेश्वर वैरागी।
चौथे बाल यतिश्वर के हम, चरण कमल के अनुरागी।। चौथा वर्ष... ।।5।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा लेकर करी साधना, भीमावन में प्रभु आये।
कमठ करे उपसर्ग प्रभो पे, कष्टों पे प्रभु जय पायें।। चौथा वर्ष... ।।6।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मावती माता ने आकर, प्रभु को सिर पर धार लिया।
श्री धरणेन्द्र यक्ष ने आकर, प्रभु के सर फण तान दिया।।
चौथा वर्ष लगे रविव्रत का, मन में अति उत्साह भरो।
करो अल्प आहार विधि से, रविव्रत कर शिव सौख्य वरो।।8।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सावलियाँ प्रभु पार्श्वनाथ की, सहस्र फणों की प्रतिमायें।
फणा शीश पे चिह्न सर्प युत, सर्वाधिक प्रभु प्रतिमायें।। चौथा वर्ष... ।।8।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म बनारस मोक्ष शिखर जी, तीर्थ नाथ के मन भाये।
अतिशयकारी तीर्थ अनेकों, पार्श्वनाथ के कहलाये।। चौथा वर्ष... ।।9।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

पारस पारस हे प्रभु ! पारस, तीन लोक तुमको ध्यायें।
पारस प्रभुवर के चरणों में, हम पूर्णार्घ सजा लाये।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ के, नाम मंत्र का जाप करें।
चिंतामणि संकटहर प्रभु का, पूजन ध्यान विधान करें।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे चाटुकैकभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पंचम वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय-जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

रविव्रत आषाढ़ से आता, मंदिर में उत्सव छाता।
जिसका पुण्योदय आता, वो रविव्रत में लग जाता।।
जब वर्ष पाँचवा आये, रविव्रत को भवि अपनायें।
हम पार्श्वनाथ को ध्यायें, द्रव्यों की थाल चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह रस का त्याग करीजै, रविव्रत को चित्त धर लीजे।
जल छाछ ही इसमें लीजे, इस व्रत को पूरण कीजे।। जब...।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारसमणि तो इक पत्थर, पारस प्रभु हैं तीर्थंकर।
पारसमणि स्वर्ण बनाये, प्रभु हमको प्रभु बनायें।। जब...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैरी पे द्वेष नहीं है, भक्तों से राग नहीं है।
प्रभुवर हैं समताधारी, छवि वीतराग मनहारी।। जब...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता प्रभुवर से सीखें, शत्रु पे कभी ना चीखें।
मैत्री प्रमोद अपनायें, गुणियों से राग बढ़ायें।।
जब वर्ष पाँचवा आये, रविव्रत को भवि अपनाये।
हम पार्श्वनाथ को ध्यायें, द्रव्यों की थाल चढ़ायें।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसक जीवों को तारा, दुर्गति से उन्हें उबारा।
उनको नवकार सुनाया, सुरपद दोनों ने पाया।। जब...।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस का रस है चोखा, इसमें किञ्चित ना धोखा।
पारस का रस हम पायें, जीवन को सफल बनायें।। जब...।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रमुदित मन से व्रत धारें, कहते हमको गुरु सारे।
क्रोधादिक् रञ्च न लावें, समता परिणाम जगावें।। जब...।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधिवत हम रविव्रत पाले, प्रभु चरणन् चित्त लगालें।
इस वर्ष छाछ ही लेवे, षट्रस व्यंजन तज देवे।। जब...।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष पाँचवाँ इस रविव्रत का, नो रविवार इसे पाले।
नमक बिना बस छाछ भात लें, होवें उत्तम पद वाले।।
पार्श्वनाथ की पूजा करने, जल चंदन आदिक लाये।
हर्ष सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, मन अति पावन हो जाये।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे निवेडभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

षष्ठम् वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा– **रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।**
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आँचली बद्ध (आठ दरब मय अर्घ बनाय... पंचमेरु पूजा की राग)

ऋद्धि सिद्धि दाता भगवान, चिंतामणि है इनका नाम।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....
छट्ठे वर्ष करें रविवार, एक अन्न इसमें आहार।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....।।1।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न विनाशक मंगलदाय, पार्श्व प्रभु सब विघ्न नशाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....।।2।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको भूत पिशाच सताय, उसकी बाधा प्रभु विनशाय।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....
छट्ठे वर्ष करें रविवार, एक अन्न इसमें आहार।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....॥3॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्याधियाँ धर्म छुड़ाय, प्रभु का नाम निरोग बनाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥4॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना धरम के धन ना आय, प्रभु पूजा ही भाग्य जगाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥5॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञाकारी हो सुत नार, जहाँ धरम के हो संस्कार।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥6॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पात्र महामुनिराय, उनको नित आहार कराय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥7॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान धर्म में द्रव्य लगाय, दुःख दारिद्र्य सभी मिट जाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥8॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत संयम तप जो अपनाय, वो भी इक दिन शिवपुर पाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥9॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

षष्ठ वर्ष के इस रविव्रत में, एक अन्न ही ग्रहण करें।
त्याग नियम संयम समता धर, अपना आत्मोत्थान करें।।
नीरादिक द्रव्यों को ले हम, पूरण अर्घ चढ़ाते हैं।
रविव्रत के स्वामी पारस को, झुक–झुक शीश नवाते हैं।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे एकान्नभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर–नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सप्तम वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा– रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नवगीता छंद)

रविव्रत लगे जब सातवाँ, गोरस तजें शुचि व्रत करें।
रस गृद्धता को त्याग कर, इक बार भोजन हम करें।।
पायें शरण प्रभु आपकी, ऐसा हमें वरदान दो।
हम कर रहे नित अर्चना, हमको प्रभो सद्ज्ञान दो।।1।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारें निशंकित अंग को, शंका कभी भी ना करें।
जिन आप्त गुरु जिन ग्रंथ पे, श्रद्धान सच्चा हम करें।। पायें....।।2।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कांक्षा रहित पूजा करें, भगवान पारसनाथ की।
ये अंग निकांक्षित कहें, माला जपो प्रभु नाम की।। पायें....।।3।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में घृणा ना अल्प हो, धर्मात्मा को देखकर।
गुण के पुजारी हम बनें, जिन चरण मस्तक टेककर।। पायें....।।4।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्या तत्व क्या कुतत्व ये, अमूढ़ दृष्टि जानते।
त्रय मूढ़ता को त्याग कर, जिनराज को ही मानते।। पायें....।।5।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का करें गुणगान हम, मम दोष प्रतिपल दूर हो।
दृष्टि सदा गुण पे रहे, अवगुण मेरे चकचूर हो।। पायें....।।6।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व से ना हम गिरे, और ना गिरे धर्मात्मा।
नित धर्म में अविचल रहे, बस ये प्रभु से प्रार्थना।। पायें....।।7।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य सबसे जो रखे, तीर्थेश वो प्राणी बने।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम मोक्ष पथगामी बनें।। पायें....।।8।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म नित जयवंत हो, ये ही हमारी भावना।
तीर्थेश पारसनाथ की, इस हेतु है आराधना।।
पायें शरण प्रभु आपकी, ऐसा हमें वरदान दो।
हम कर रहे नित अर्चना, हमको प्रभो सद्ज्ञान दो।।9।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

रसना इन्द्रिय की लोलुपता, जो भविजन मन से त्यागे।
उसके त्यागमयी भावों से, कर्म बंध जल्दी भागें।।
पार्श्वनाथ भगवन् को भज हम, अपना भाग्य जगायेंगे।
रविव्रत करके उत्तम विधि से, मोक्ष संपदा पायेंगे।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अष्टम वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा– रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

वर्ष आठवाँ रविव्रत आया, षट्रस भोजन त्याग बताया।
मुनियों ने यह व्रत बतलाया, भक्ति सहित करना सिखलाया।।
पार्श्व प्रभु की भक्ति रचायें, ध्वजा सहित हम अर्घ चढ़ायें।
रविव्रत जो भी करें करावें, व्रत कर मोक्ष महासुख पावें।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उद्यापन जब करवावें, मंदिर में भी रंग करावें।
झूमर तोरण द्वार लगावें, ये भी इक पूजा कहलावें।। पार्श्व....।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर में घंटा लगवावें, दिव्यध्वनि सा अतिशय पावें।
रंगोली से चौक सजायें, लक्ष्मी माँ उसके घर आये।। पार्श्व....।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापुरुष की कथा करायें, जीवन में वैराग्य समाये।
व्रत संयम का भाव जगायें, समता भाव उमड़ कर आवें।। पार्श्व....।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर दिवार पे चित्र बनायें, मन में प्रभु के चित्र बसायें।
अंत समय जब अपना आवे, जिन चरित्र का ध्यान लगावें।। पार्श्व....।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप अखंड विशेष लगायें, महा आरती करें करायें।
केवलज्ञान की ज्योति पाये, जो प्रभु के दर दीप जलाये।। पार्श्व....।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की वेदी श्रेष्ठ बनायें, स्वर्ण रत्न उसमें जड़वायें।
दान करें ऐसा जो कोई, स्वर्ग लोक में जन्मे वो ही।।
पार्श्व प्रभु की भक्ति रचायें, ध्वजा सहित हम अर्घ चढ़ायें।
रविव्रत जो भी करें करावें, व्रत कर मोक्ष महासुख पावें।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत में दूध दही घृत त्यागें, गोरस आदि सब कुछ त्यागें।
ये अष्टम रवि व्रत कहलावे, अष्ट करम से हमें छुड़ावे।। पार्श्व.... ।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर में जो शिखर बनाये, स्वर्ण कलश और ध्वजा चढ़ाये।
वो नित मान प्रतिष्ठा पावे, आगे स्वर्ग मोक्ष सुख पावे।। पार्श्व.... ।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष आठवें के रविव्रत में, जो नीरस भोजन करते।
पूजा दान करे विधि पूर्वक, सर्वश्रेष्ठ पद वो वरते।।
जल चंदन अक्षत पूष्पादिक् , द्रव्य चढ़ाने हम आये।
पूरण अर्घ चढ़ा हम भगवन्, कर्म श्रृंखला विनशायें।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे रूक्षाहार प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नवम वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय-जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(रोला छंद)

चार घातियाँ नाश, श्री अरिहंत कहायें।
उनको हम सब आज, उत्तम अर्घ चढ़ायें।।
रविव्रत नौवे वर्ष, प्रौषध व्रत अपनाये।
पार्श्व प्रभु को ध्याय, सर्व सुखों को पायें।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल विमल चिद्रूप, सिद्ध बुद्ध अविनाशी।
अष्ट कर्म से मुक्त, सिद्ध शिला के वासी।। रविव्रत...।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पालें पंचाचार, श्री आचार्य हमारे।
आत्म सिद्धि के हेत, इनके चरण पखारें।। रविव्रत...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठन पठन कराय, उपाध्याय मन भाये।
बुधग्रह दोष नशाय, जो नित गुरु को ध्यायें।। रविव्रत...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग्न दिगम्बर रूप, पंच महाव्रत धारी।
क्रूर ग्रहों की चाल, इनके आगे हारी।।
रविव्रत नौवे वर्ष, प्रौषध व्रत अपनाये।
पार्श्व प्रभु को ध्याय, सर्व सुखों को पायें।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म तीर्थ दिनरात, जग में बढ़ता जाये।
दया अहिंसा रूप, जैन धर्म कहलाये।। रविव्रत... ।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुयोग है चार, वो है माँ जिनवाणी।
जिनके नाम अनेक, कहते गणधर ज्ञानी।। रविव्रत... ।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमा अभिराम, लगती सबको प्यारी।
उनकी भक्ति त्रिकाल, मेटे संकट भारी।। रविव्रत... ।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चैत्यालय भव्य, घंटा कलश ध्वजामय।
जिसको पूजें भव्य, पायें मोक्ष सुखालय।। रविव्रत... ।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ *(नरेन्द्र छंद)*

प्रथम परोसा भोजन करते, नवम वर्ष के रविव्रत में।
एक बार ही भोजन करना, कहते मुनिवर रविव्रत में।।
पूजन पाठ करें रविव्रत में, तप संयम हम अपनायें।
अर्पण करने अर्घ प्रभु को, श्रीफल की माला लाये।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे एकस्थानप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहें।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहें।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : (1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा। (2) ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय दुष्टग्रह शोक सर्वज्वर रोगाल्पमृत्युविनाशनाय सूर्यव्रतोद्योतनाय नमः स्वाहा।
(जयमाला के पहले ये मंत्र जाप करना चाहिये।) (9, 27 या 108 बार जाप करें)

समुच्चय जयमाला

दोहा : पार्श्वनाथ भगवान की, जयमाला सुखकार।
रविव्रत नायक पार्श्व को, वंदन बारम्बार।।

(नरेन्द्र छंद)

जय-जय पार्श्व जिनेश्वर सबके, चिंतामणि संकटहारी।
यंत्रराज कलिकुण्ड नाथ की, मूरत लगती मनहारी।।
बालयतिश्वर तैइसवें जिन, वामा माँ नंदन प्यारे।
अश्वसेन के राजकुँवर को, पूजें सुर-नर मिल सारे।।1।।

आप नाम के पर्व अनेकों, भक्त भक्ति से अपनायें।
उनमें भी रविव्रत करने से, सब दुःख संकट कट जाये।।
मतिसागर की सेठानी ने, मुनिवर से रविव्रत धारा।
घर जाकर बेटे बहुओं को, बतलाया व्रत दुःखहारा।।2।।

करें पुत्र परिजन जब निंदा, सेठानी ने व्रत तोड़ा।
पाप उदय से उसी समय में, लक्ष्मी ने उनको छोड़ा।।
दर-दर के वो बने भिखारी, दासवृत्ति को अपनायें।
पुत्र बनारस नगर छोड़कर, नगर अयोध्या में जायें।।3।।

सेठ-सेठानी रुके बनारस, उनके फिर शुभ दिन आये।
वो अवधिज्ञानी गुरुवर को, अपनी पीड़ा बतलाये।।
मुनि बोले रविव्रत निंदा से, तुम पर ये संकट आया।
उनने निज आलोचन करके, फिर से रविव्रत अपनाया।।4।।

रविव्रत की महिमा से उनके, तत्क्षण अच्छे दिन आये।
किन्तु सातों पुत्र अवध में, व्रत निन्दा का फल पायें।।
अवध देश के एक ग्राम में, सातों खेती करते थे।
सर्दी-गर्मी भूख प्यास वा, सब कष्टों को सहते थे।।5।।

इक दिन छोटे भाई गुणधर, हसिया भूले खेती में।
भाभी बोली जाओ पहले, हसिया लाओ खेती से।।
हसिये पर अहि[1] लिपटा देखा, गुणधर तब अति घबराया।
श्रद्धापूर्वक उसने मन में, पार्श्वनाथ प्रभु को ध्याया।।6।।

पद्मावती माता ने उसको, स्वर्णिम हसिया भेंट किया।
रत्नमयी जिनबिम्ब पार्श्व भी, बहु द्रव्यों संग भेंट दिया।।

1. सांप।

गुणधर के श्रद्धा की महिमा, अवध नरेश्वर तक आयी।
उनने राज्य सहित कन्या दे, व्रत की महिमा फैलायी।।7।।
मात–पिता संग राज्य संपदा, वैभव उन सबने पाया।
फिर विरक्त हो मुनि दीक्षा धर, स्वर्ग संपदा सुख पाया।।
गुणधर तीजे भव में निश्चय, श्रेष्ठ सिद्ध पद पाते हैं।
रविव्रत की 'आस्था' वा महिमा, उत्तम शास्त्र बताते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं धरणेन्द्रपद्मावतीसहितायदुष्टग्रहशोकसर्वज्वर–रोगाल्पमृत्युविनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर–नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

(दोहा)

पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
आदि शांति महावीर को, वंदन बारम्बार॥1॥

गणधरश्रुत गुरु पाँच जो, परमेष्ठी त्रयकाल।
कुंथु कनक गुरुराज को, सदा नमाऊँ भाल॥2॥

गुप्तिनंदी गुरुराज को, सदा झुकाऊँ शीश।
सम्पादन उनने किया, देकर शुभ आशीष॥3॥

पौष शुक्ल की पूर्णिमा, रविपुष्यामृत योग।
ये विधान रविव्रत लिखा, पाने को शुभ योग॥4॥

ज्येष्ठ शुक्ल की सप्तमी, पूरण किया विधान।
रविवार रविव्रत करें, पानें मुक्ति महान्॥5॥

काव्य कला जानूँ नहीं, ना छंदों का ज्ञान।
भक्ति के वश में लिखा, प्रभु पे कर श्रद्धान॥6॥

जब तक सूरज चाँद है, तब तक रहे विधान।
पार्श्व प्रभु के नाम का, होता रहे विधान॥7॥

पार्श्व प्रभु के चरण में, 'आस्था' करें प्रणाम।
हाथ-जोड़ विनती करें, पाये मुक्ति धाम॥8॥

॥ इति अलम्॥

रविव्रत विधान की आरती

(तर्ज – सगला चालो रे....)

आओ आओ रे प्रभु के द्वारे चले आओ, चले आओ....
झूम–झूम के पार्श्व प्रभु की आरती गाओ।।
आओ–आओ...

ये विधान रविव्रत सुखकारी, सबके संकट हरता।
दुःख–दारिद्र्य नशाने भगवन्, मैं भी रविव्रत करता।।
आओ–आओ...

वामा माँ के राजदुलारे, अश्वसेन के प्यारे।
नगर बनारस में प्रभु जन्मे, सबके तारणहारे।।
आओ–आओ...

सारंगी वीणा आदिक ले, सात सुरों में गाओ।
पारस बाबा के मंदिर में, दीपावली मनाओ।।
आओ–आओ...

छम–छम बजते पायल घुंघरु, वाद्य सुमंगल बाजे।
हर भक्तों के मन में देखो, पारसनाथ विराजे।। आओ–आओ...

केवलज्ञानी पारस स्वामी, केवल इतना वर दो।
'आस्था' से हम करें आरती, केवल ज्योति वर दो।।
आओ–आओ...

***

चिंतामणि पार्श्वनाथ की आरती

(तर्ज – मिलो ना तुम तो हम....)

हे धरणेश्वर, हे परमेश्वर, झुक–झुक शीश झुकायें।
करें हम आरती....
हे तीर्थेश्वर, हे परमेश्वर, चरणों में हम आये।।
करें हम आरती....

1. पद्मावती माँ ने, शीश बिठाया प्रभु आपको।
धरणेन्द्र यक्ष ने, छत्र लगाया प्रभु आपको।।
समता धारी पार्श्व जिनेशा, गुण तेरे नित गाये।
करें हम आरती..

2. सात फणों से लेकर, सहस्र फणा है प्रभु आपपे।
पार्श्वनाथ प्रतिमा के, फण ही सरल पहचान है।।
पद्मावती धरणेन्द्र आपके, भक्त विशेष कहाये।
करें हम आरती..

3. हर एक मंदिर में, प्रतिमायें होती पार्श्वनाथ की।
हर एक प्राणी के, मन में बसे हैं पार्श्वनाथ जी।।
जग–मग जग–मग ज्योति जलाये, 'आस्था' भी हर्षाये।
करें हम आरती..

***

श्री तत्त्वार्थ सूत्र पूजा विधान

(नरेन्द्र छंद)

मोक्ष मार्ग के अभिनेता हैं, वीतराग सर्वज्ञ प्रभो।
हित उपदेशी ज्ञाता दृष्टा, केवलज्ञानी सिद्ध प्रभो।।
पुष्पांजलि हाथों में लेकर, हम उनका आह्वान करें।
उनके पथ पर चलकर हम सब, मुक्ति मार्ग अभियान करें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र दश अध्याय अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

पंचामृत अभिषेक करें प्रभु आप का।
प्रभु पूजा से घड़ा फूटता पाप का।।
प्रभु पूजा से पुण्य मिले यह जानिये।
परम्परा से मुक्ति हेतु भी मानिये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में हम चंदन अर्पण करें।
चंदन पूजा से भव का तर्पण करें।। प्रभु पूजा...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत से प्रभु की हम पूजा करें।
अक्षत पूजा से हम अक्षय पद वरें।। प्रभु पूजा...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलादिक पुष्पों से हम अर्चा करें।
पुष्प अर्चना काम रिपू को वश करे ।। प्रभु पूजा...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन से प्रभुवर की हम पूजा करें।
नैवज अर्चा क्षुधा तृषादिक अघ हरे।।
प्रभु पूजा से पुण्य मिले यह जानिये।
परम्परा से मुक्ति हेतु भी मानिये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर से प्रभु की हम अर्चा करें।
मोह तिमिर का हनन दीप अर्चा करे।। प्रभु पूजा...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में हम धूप चढ़ा पूजा करें।
धूप अर्चना से हम आठों अघ हरें।। प्रभु पूजा...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व फलों से हम प्रभु की अर्चा करें।
फल अर्चा से हम मुक्ति का सुख वरें।। प्रभु पूजा...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से हम प्रभु की पूजा करें।
अर्घ चढ़ा प्रभु को अनर्घ पदवी वरें।। प्रभु पूजा...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– मोक्षशास्त्र श्री ग्रन्थ का, करते भव्य विधान।
हाथ जोड़ विनती करें, दो प्रभु हमको ज्ञान।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

दस अध्याय के अर्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्ष शास्त्र अध्याय प्रथम में, जीव तत्त्व बतलाया।
सम्यक् दर्शन और ज्ञान का, इसमें वर्णन आया।।

मोक्ष शास्त्र के सर्वसूत्र को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
सर्व सूत्र के पठन श्रवण से, एक वास फल पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष शास्त्र अध्याय दूसरा, पंच भाव दर्शाये।
जीवों के तन का विकास क्रम, सहज सरल समझाये।। मोक्ष.. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अध्याय तीसरा सुन्दर, दोनों लोक बताये।
अधोलोक व मध्यलोक संग, नर पशु लोक बताये।। मोक्ष.. ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय चार में, देवों का है वर्णन।
ऊर्ध्व लोक व देवायू का, उसमें पूर्ण विवेचन।। मोक्ष.. ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय पाँच में, तत्त्व अजीव बताया।
पुद्‌गल धर्म अधर्म काल नभ, छहों द्रव्य समझाया।। मोक्ष.. ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय छठे में, आस्रव तत्त्व बताया।
आश्रव का संक्षिप्त विवेचन, गुरुवर ने दर्शाया।। मोक्ष.. ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय सातवाँ, श्रावक धर्म बताये।
कर्मास्रव से बचने का वह, उत्तम मार्ग बताये।। मोक्ष.. ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय आठवाँ, बंध तत्त्व समझाये।
जीव कर्म की बंध व्यवस्था, श्री गुरुवर समझायें ।। मोक्ष.. ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर और निर्जरा दोनों, नवम पाठ में आये।
मुनियों के सम्यक् चारित्र को, ये अध्याय बताये।।
मोक्ष शास्त्र के सर्वसूत्र को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
सर्व सूत्र के पठन श्रवण से, एक वास फल पायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष शास्त्र अध्याय दशम में, मोक्ष तत्त्व दर्शाया।
मोक्षगमन व मुक्त जीव का, इसमें वर्णन आया।। मोक्ष..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

श्रीफल ध्वजा दीपक लिये, लड्डू चढ़ायें साथ में।
अर्घों में भी पूर्णार्घ हम, अर्पण करें द्वय हाथ से।।
प्रभु को विनय से सर झुकायें, ज्ञान का वरदान दो।
मम पाप दुःख वसु कर्म क्षय हो, बोधि लब्धि प्राप्त हो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत् सिद्ध श्रुतदेवताभ्यो तत्त्वार्थ सूत्रे सर्व अध्यायेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्षमार्ग के देवता, श्री अरिहंत जिनेश।
शांतिधार पुष्पाञ्जलि, उन पर करें हमेश।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्राय नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– मोक्ष शास्त्र के सृजक हैं, उमास्वामी आचार्य।
उनकी जयमाला पढ़ूँ, नमूँ प्रथम अनिवार्य।।

नरेन्द्र छंद

मोक्ष मार्ग के नेता हैं जो, कर्म पर्वतों के भेत्ता।
विश्व तत्त्व के ज्ञाता को मैं, तद्गुण हित वंदन करता।।

तीन काल में नव पदार्थ हैं, सात तत्त्व छह द्रव्य कहे।
अस्तिकाय भी पाँच बताये, व्रत समिति गति ज्ञान कहे॥1॥

चरित आदि के भेद बताये, मोक्ष तत्त्व के मूल कहे।
त्रिभुवन पूजित अर्हत् जिनवर, मूल सृजेता इसके हैं॥
गणधर गुंथित आचार्यों कृत, मूल शास्त्र की धारा ये।
उनका पूजन वंदन कीर्त्तन, करता हृदय हमारा है॥2॥

वर्तमान जिनशासन नायक, वर्द्धमान महावीर हुये।
उनके बाद केवली क्रमयुत, श्रुत केवली आचार्य हुये॥
अंग पूर्व सिद्धांत वेत्ता, क्रम से बहु आचार्य हुये।
अंतिम अंग अंश के ज्ञाता, श्री धरसेनाचार्य हुये॥3॥

उनसे शिक्षित सूरि युगल[1] ने, षट् खंडागम ग्रंथ रचा।
इससे पूर्व सूरि गुणधर ने, कषाय पाहुड ग्रंथ रचा॥
इत्यादिक सिद्धांत विशारद, ज्ञानी कई आचार्य हुये।
इस ही क्रम में नग्न दिगम्बर, उमास्वामी आचार्य हुये॥4॥

एक समय आचार्य मुनीश्वर, उर्जयन्तगिरि पर आये।
चर्या हित इक श्रावक के घर, पुनः उतर कर वे आये॥
श्री सिद्धय्य नामक का श्रावक, काष्ठ फलक पर सूत्र रचे।
सम्यक् बिन वह सूत्र अधूरा, उमास्वामी को नहीं जचें॥5॥

अतः सूत्र के आगे गुरुवर, सम्यक् शब्द लगाते हैं।
पूर्ण सूत्र पा सिद्धय्या अब, गुरु चरणों में आते हैं॥
श्री गुरुवर से कहते अब वे, इसे आप ही पूर्ण करो।
सर्व शास्त्र के ज्ञाता गुरुवर, मेरी इच्छा पूर्ण करो॥6॥

1. आचार्य पुष्पदंत व आचार्य भूतबलि।

इस विध उमास्वामी सूरी ने, बहुत बड़ा उपकार किया।
जैनागम सिद्धान्त शास्त्र को, संस्कृत सूत्राकार दिया।।
हर जैनी साधु व श्रावक, इसे अवश ही पढ़ते हैं।
इसके आश्रय से निशंक हो, मोक्षमार्ग पर बढ़ते हैं।।7।।

यहीं ग्रन्थ जैनों की गीता, सिद्धांतों की कुंजी है।
मोक्षमहल ले जाने वाली, यह रत्नत्रय पूंजी है।।
इस पर श्री सर्वार्थसिद्धी लिख, पूज्यपाद विख्यात हुए।
भट्ट अकलंक राजवार्तिक लिख, और अधिक विख्यात हुए।।8।।

श्री तत्त्वार्थ श्लोक रचना कर, विद्यानंद प्रसिद्ध हुए।
गंधहस्ति महा भाष्य सृजन कर, समंतभद्र जग सिद्ध हुए।।
इत्यादि कई आचार्यों ने, वृत्ति वार्तिक श्लोक लिखे।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र यों, जैनागम का रत्न दिखे।।9।।

इसके दश अध्याय पठन से, इक अनशन का लाभ मिले।
त्रय शत सत्तावन सूत्रों के, चिंतन से श्रुत लाभ मिले।।
इसे सदा पढ़कर चिंतन कर, समिति गुप्ति व्रत प्राप्त करूँ।
मोक्षशास्त्र पर 'आस्था' रखकर, मैं भी मोक्ष महान् वरूँ।।10

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सर्वअध्याय संबंधी सप्त पंचाशत अधिक त्रिशतक सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय पूजा

(अडिल्ल छंद)

श्री तत्त्वार्थ सूत्र जग में अतिश्रेष्ठ है।
लिखे अनेकों ग्रंथ सूत्र पे श्रेष्ठ हैं।।
आह्वानन हम करें प्रथम अध्याय का।
बहु महत्त्व है पठन और स्वाध्याय का।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

अभिषेक सहित प्रभु की पूजा, जिन आगम में बतलायी है।
छह अंग सहित जो भक्ति करें, उनने की पुण्य कमायी है।।
जिन चैत्य चैत्यालय के संग में, हम आगम की पूजा करते।
तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन कर, शुद्धि पूर्वक अर्चा करते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनशास्त्र अचेतन होकर भी, सब चेतन का कल्याण करे।
हम देव शास्त्र को गंध चढ़ा, उनपे सच्चा श्रद्धान करें।। जिन..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आगम की हम श्रद्धा से, निशदिन ही अर्चा करते हैं।
हम जल से धोकर के अक्षत, द्रय मुट्ठी अर्पण करते हैं।। जिन..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पुष्प सुगंधित हो सुन्दर, जिसपे भौंरे मंडराते हैं।
वो पुष्प प्रभु के चरण चढ़ा, हम मदन भाव विनशाते हैं।। जिन..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धि से शुद्ध मिठाई बना, हम पूजन करने आते हैं।
इस क्षुधा रोग को विनशाने, छप्पन पकवान चढ़ाते हैं।।
जिन चैत्य चैत्यालय के संग में, हम आगम की पूजा करते।
तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन कर, शुद्धि पूर्वक अर्चा करते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने चाँदी व मिट्टी के, घृत के दीपक हम लाये हैं।
मिथ्यात्व नशाने हम अपना, प्रभु आरती करने आये हैं।। जिन..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप चढ़ाने से, जिन मंदिर देखो महक गया।
प्रभुवर की पूजा करने से, यह आतम मेरा महक गया।। जिन..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पुण्य उदय जब आता है, तब हम विधान कर पाते हैं।
हमको ये अवसर सदा मिले, हम श्रीफल आदि चढ़ाते हैं।। जिन..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे पद अनर्घधारी स्वामी, हमको अविनाशी पद देना।
हम अर्घ चढ़ायें नाथ तुम्हें, बस इतनी अरजी सुन लेना।। जिन..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलाचरण

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुण-लब्धये।।

त्रैकाल्यं द्रव्य-षट्कं, नव-पद-सहितं जीव षट्काय-लेश्याः,
पञ्चान्ये चास्तिकाया, व्रत-समिति-गति-ज्ञान-चारित्र-भेदाः।
इत्येतन्मोक्षमूलं, त्रिभुवन-महितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः
प्रत्येति श्रद्धधाति, स्पृशति च मतिमान्, यः स वै शुद्धदृष्टिः।।1।।

सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउव्विहाराहणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो।।2।।
उज्जोवणमुज्जवणं, णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसण–णाण–चरित्तं, तवाणमाराहणा भणिया।।3।।

(नरेन्द्र छंद)

मोक्ष शास्त्र है ग्रंथ हमारा, सबका ज्ञान कराये।
सूत्र रूप में रचा गुरु ने, आगम सार बताये।।
इसके लेखक उमा स्वामी हैं, उनको शीश झुकायें।
त्रय भक्ति से इसका व्रत कर, मोक्ष महल पा जायें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे मंगलाचरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम अध्याय सूत्र

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।।1।। तत्त्वार्थ–श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।।2।। तन्निसर्गादधि–गमाद्वा।।3।। जीवाजीवास्रव–बन्ध–संवर–निर्जरा–मोक्षास्तत्त्वम्।।4।। नाम–स्थापना–द्रव्यभावतस्त–न्न्यासः।।5।। प्रमाण–नयैरधिगमः।।6।। निर्देशस्वामित्व–साधनाधिकरण–स्थिति–विधानतः।।7।। सत्संख्या–क्षेत्र–स्पर्शन–कालान्तर–भावाल्पबहुत्वैश्च।।8।। मति–श्रुतावधि–मनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम्।।9।। तत्प्रमाणे।।10।। आद्ये परोक्षम्।।11।। प्रत्यक्षमन्यत्।।12।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्।।13।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय–निमित्तम्।।14।। अवग्रहेहावाय–धारणाः।।15।। बहुबहुविध–क्षिप्रा निःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम्।।16।। अर्थस्य।।17।। व्यञ्जन–स्यावग्रहः।।18।। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम्।।19।। श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक–द्वादश–भेदम्।।20।। भव–प्रत्ययोऽवधिर्देव नारकाणाम्।।21।। क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः शेषाणाम्।।22।। ऋजु–विपुलमती मनःपर्ययः।।23।। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।।24।। विशुद्धि–क्षेत्र – स्वामि–विषयेभ्योऽवधि–मनःपर्यययोः।।25।। मति–श्रुतयोर्निबन्धो

द्रव्येष्वसर्व–पर्यायेषु ।।26।। रूपिष्ववधेः ।।27।। तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य ।।28।। सर्व–द्रव्य–पर्यायेषु केवलस्य ।।29।। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना–चतुर्भ्यः ।।30।। मति–श्रुतावधयो विपर्ययश्च ।।31।। सदसतोरविशेषाद्य–दृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ।।32।। नैगम–संग्रह–व्यवहारर्जुसूत्र–शब्द–समभिरुढैवंभूता नयाः ।।33।।

।। इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ।। 1 ।।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र के प्रथम पाठ में, तैंतीस सूत्र बताये।
सम्यक्दर्शन प्राप्त करें हम, प्रथम सूत्र में आये।।
पाठ करें तत्त्वार्थ सूत्र का, श्रद्धा और भक्ति से।
हम पूर्णार्घ चढ़ायें भगवन्, स्वात्मभाव शक्ति से।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य प्रथम अध्याय संबंधी त्रयस्त्रिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– एक बार हम नियम से, करें सूत्र का पाठ।
उच्चारण हो शुद्धि से, हरे करम ये आठ।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे प्रथमोध्यायाय नमः स्वाहा।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जीव तत्त्व वर्णन करे, अग्रिम चऊ अध्याय।
जयमाला पढ़ हम करें, उनका नित स्वाध्याय।।

(शंभु छंद)

प्रवचनकर्त्ता अर्हंतों को, तीर्थंकर जिन को नमन करें।
उनसे प्रगटी श्रुत गंगा को, जिनवाणी को हम नमन करें।।
अर्हत् भाषित गणधर गुंथित, आचार्य रचित जिनवाणी है।
द्वादश अंगों में सजी हुई, कल्याणी माँ जिनवाणी है।।1।।

जैनागम की कुंजी स्वरूप, तत्त्वार्थ सूत्र इसमें आता।
उसमें इसका अध्याय प्रथम, रत्नत्रय पथ को दिखलाता।।
सम्यक्त्व आदि रत्नत्रय का, इसमें संक्षिप्त विवेचन है।
उनकी प्राप्ति के सर्व सूत्र, उनका ही विशद विवेचन है।।2।।

तत्त्वार्थों पर श्रद्धा करना, सम्यक् दर्शन कहलाता है।
वह भी निसर्ग से अधिगम से, भव्यात्मा को हो पाता है।।
जीवाजीवाश्रव बंध तत्त्व, संवर निर्जर व मोक्ष कहें।
इनके बोधक निक्षेप चार, निर्देश आदि अनुयोग कहें।।3।।

सम्यक्त्वादि कैसे किसको कब, कहाँ प्राप्त हो सकते हैं।
सत्संख्यादिक अनुयोगों से, इनका अनुभव कर सकते हैं।।
मति आदि सम्यक्ज्ञान पांच, सम्यक्ज्ञानी को होते हैं।
नय व प्रमाण से भवि प्राणी, आगम के ज्ञानी होते हैं।।4।।

पाँचों ज्ञानों का मोक्ष शास्त्र, विस्तृत स्वरूप समझाता है।
नैगम आदि नय भंगों से, ज्ञानी प्रवीण हो जाता है।।
सम्यग्दर्शन पाने वाला, निश्चय सिद्धाचल पाता है।
इनसे विपरीत चले जो भी, वो मिथ्यात्वी दुःख पाता है।।5।।

हम नितप्रति इसके प्रतिपादक, जिनवर को अर्घ चढ़ाते हैं।
इसका विधान व्रत पूजन कर, सूत्रों का ध्यान लगाते हैं।।
हम इस पर सच्ची श्रद्धा कर, रत्नत्रय को अपनायेंगे।
त्रय गुप्ति समिति व्रत पालन कर, हम मोक्ष महल को पायेंगे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्याय संबंधी त्रयस्त्रिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याय पूजा

(अडिल्ल छंद)

जैनधर्म के सूत्रों को हम ध्या रहे।
जिनवर वा जैनागम के गुण गा रहे।।
सर्व सूत्र के अक्षर पे श्रद्धा करें।
मोक्ष शास्त्र का हम भी आह्वानन करें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

निर्मल सलिल कलश में लाये, कलश सजा सिर पे रख लाये।
प्रभु का हम अभिषेक करेंगे, प्रभुवर सारे पाप हरेंगे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन प्रभु के चरण लगायें, वही शेष हम शीश लगायें।
यही नाथ की रज कहलाये, इससे अपना भाग्य जगायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत मन धवल बनाये, प्रभु को अक्षत पुंज चढ़ायें।
हम भी अक्षय पदवी पायें, मोक्ष शास्त्र का व्रत अपनायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सभी को लगते प्यारे, प्रभु पद पुष्प चढ़ायें सारे।
कामबाण अपना विनशायें, काम विजेता प्रभु को ध्यायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बना नैवेद्य चढ़ायें, प्रभु की अर्चा भव्य रचायें।
क्षुधारोग से मुक्ति पायें, मुनि बन मोक्ष महल में जायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें आरती नाथ तुम्हारी, बने प्रभु के चरण पुजारी।
मोह तिमिर की हरो बिमारी, यही आपसे अरज हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जला मंदिर महकायें, कर्म काष्ठ को दहन करायें।
हम प्रभु पूजन करने आये, पूजन कर उत्तम पद पायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे भरे फल आज चढ़ायें, हरा भरा जीवन बन जाये।
महामोक्ष फल प्रभु दिलवाये, हम उनके निशदिन गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत हम लाये, पुष्प धूप अर्घादि चढ़ायें।
अर्घ चढ़ायें भक्ति रचायें, झूम-झूम कर नृत्य रचायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय अध्याय सूत्र

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च।।1।। द्वि नवाष्टा-दशैकविंशति-त्रि-भेदा यथाक्रमम्।।2।। सम्यक्त्व-चारित्रे।।3।। ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च।।4।। ज्ञानाऽज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रि-पंच भेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च।।5।। गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शनाज्ञाना-संयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदाः।।6।। जीव-भव्या-भव्यत्वानि च।।7।। उपयोगो लक्षणम्।।8।। स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः।।9।। संसारिणो मुक्ताश्च।।10।। समनस्कामनस्काः।।11।। संसारिणस्त्र-सस्थावराः।।12।। पृथिव्यप्तेजोवायु-वनस्पतयः स्थावराः।।13।। द्वीन्द्रियादय-स्त्रसाः।।14।। पञ्चेन्द्रियाणि।।15।। द्विविधानि।।16।।

निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम ।।17।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।।18।। स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि ।।19।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः ।।20।। श्रुत-मनिन्द्रियस्य ।।21।। वनस्पत्यन्ताना-मेकम् ।।22।। कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्या-दीनामेकैक-वृद्धानि ।।23।। संज्ञिनः समनस्काः ।।24।। विग्रह-गतौ कर्मयोगः ।।25।। अनुश्रेणि गतिः ।।26।। अविग्रहा जीवस्य ।।27।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।।28।। एकसमयाऽविग्रहा ।।29।। एकं द्वौ त्रीन्वा-नाहारकः ।।30।। संमूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म ।।31।। सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।।32।। जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः ।।33।। देव-नारकाणा-मुपपादः ।।34।। शेषाणां संमूर्च्छनम् ।।35।। औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि ।।36।। परं परं सूक्ष्मम् ।।37।। प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ।।38।। अनन्त-गुणे परे ।।39।। अप्रतीघाते ।।40।। अनादि-संबन्धे च ।।41।। सर्वस्य ।।42।। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।।43।। निरुपभोग-मन्त्यम् ।।44।। गर्भ-संमूर्च्छनजमाद्यम् ।।45।। औपपादिकं वैक्रियिकम् ।।46।। लब्धि-प्रत्ययं च ।।47।। तैजसमपि ।।48।। शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ।।49।। नारक-संमूर्च्छिनो नपुंसकानि ।।50।। न देवाः ।।51।। शेषास्त्रि-वेदाः ।।52।। औपपादिक-चरमोत्तमदेहासंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।।53।।

।। इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ।।2।।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र के द्वितीय पाठ में, त्रैपन सूत्र बताये।
इन सूत्रों को पढ़कर हम भी, जीवन सुखी बनायें।।

हम पूर्णार्घ चढ़ायें मैय्या, ज्ञान निधि हम पायें।
पाठ करें व जाप करें हम, कर्म कलंक नशायें।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रन्थस्य द्वितीय अध्याय संबंधी त्रिपंचाशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रभु दर पे होती सदा, भक्ति विविध प्रकार।
कैसी भी भक्ति करो, मिलता पुण्य अपार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे द्वितीय अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– जीव देह व भाव को, कहे द्वितीय अध्याय।
इसकी जयमाला पढ़ें, व्रत विधान अपनाय।।

(कुसुमलता छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय दूसरा, वर्णन करे जीव विज्ञान।
इसके कर्त्ता अर्हत् गणधर, उमास्वामी आचार्य महान्।।
जीव तत्त्व के पाँच भाव हैं, क्षायिक आदि बहु परिणाम।
इनके दो नौ अठरा इक्कीस, और तीन विध हैं अविराम।।1।।

दर्शन ज्ञान चेतना वाला, जीवों का लक्षण उपयोग।
आठ भेद ज्ञानोपयोग के, चऊ प्रकार दर्शन उपयोग।।
संसारी व मुक्त जीव हैं, संज्ञी और असंज्ञी जीव।
संसारी में त्रस स्थावर, पंच भेद स्थावर जीव।।2।।

दो इन्द्रिय आदिक त्रस होते, इन्द्रिय होती हैं कुल पाँच।
द्रव्येन्द्रिय भावेन्द्रिय दो विध, सभी इन्द्रियाँ जानों पाँच।।

पृथ्वी आदि वनस्पति के, इन्द्रिय होती है कुल एक।
कृमि से नर तक बढ़ें इन्द्रियाँ, सर्व प्राणियों की प्रत्येक।।3।।

चौ इन्द्रिय तक रहे असंज्ञी, पंचेन्द्रिय में उभय प्रकार।
मन वाले होते हैं संज्ञी, विग्रह गति में कर्म विकार।।
उनकी अनुश्रेणी गति होती, विस्तृत वर्णन शास्त्र बताय।
जन्म योनि का विस्तृत वर्णन, बतलाता है ये अध्याय।।4।।

मनुज पशु खग गर्भज होते, देव नारकी के उपपाद।
शेष सभी सम्मूर्छन जन्में, पाते हैं वे घोर विषाद।।
औदारिक आदिक तन जानों, निश्चय से सब पाँच प्रकार।
सब शरीर का अनुपम वर्णन, करे शास्त्र यह रुचिराकार।।5।।

सभी नारकी और सम्मूर्च्छन, इनके होय नपुंसक वेद।
देव नपुंसक कभी न होते, शेष सभी के तीनों वेद।।
देव नारकी चरम शरीरी, या हो भोग भूमि के जीव।
इनका नहीं अकाल मरण हो, कहे शारदा आगम दीव[1]।6।।

हम दूजा अध्याय पढ़ें नित, 'आस्था' से जयमाला गाय।
इसका व्रत उपवास करें नित, मंत्र जाप कर पुण्य कमाय।।
देह सृष्टि को जान समझ हम, जन्म मरण के बंध छुड़ाय।
समिति गुप्ति संयम धारें हम, मोक्ष महल अविरल पा जाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याये त्रिपंचाशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1.दीपक।

तत्त्वार्थ सूत्र तृतीय अध्याय पूजा

(दोहा)

मोक्ष शास्त्र अध्याय त्रय, भूमण्डल बतलाय।
मध्य अधो द्वय लोक का, वर्णन इसमें आय।।
पाप करे जो जीव नित, वो नरकों में जाय।
पुण्यवान मुक्ति वरें, उनकी भक्ति रचाय।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र तृतीय अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

पत्र पुष्प युत कुंभ ले, करते हम अभिषेक।
प्रभुवर का अभिषेक ही, नाशे दुःख प्रत्येक।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर के सर्वांग में, चंदन लेप कराय।
मिले सुगन्धित तन उसे, जो नित गंध लगाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसे अक्षत धवल है, वैसे ही हो भाव।
पूजा हम करते प्रभो, मन में भर उत्साह।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध रंग के पुष्प ले, प्रभु के चरण चढ़ाय।
कामाग्नि हम क्षय करें, ब्रह्मचर्य गुण पाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभुवर हमको लगा, क्षुधा व्याधि का रोग।
षट्रस व्यंजन से भजें, बनने पूर्ण निरोग।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्य दीप से अर्चना, हम करते जिन आज।
करें आरती भक्ति से, बजा-बजा कर साज।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में चढ़ा, करें मंत्र का जाप।
ॐ ह्रीं हम बोलते, हरो नाथ ! सब पाप।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मनोज्ञ फलादि से, पूजा करें विशेष।
प्रभु पूजा से पूज्य बन, इक दिन बनें जिनेश।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक अर्घ में, आठों द्रव्य मिलाय।
अष्टम मही के नाथ को, उत्तम अर्घ चढ़ाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय अध्याय सूत्र

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः- प्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः।।1।। तासु त्रिंशत्पंचविंशति-पंचदश-दश-त्रि-पंचोनैक-नरक-शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम्।।2।। नारका नित्याशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः।।3।। परस्परोदीरित-दुःखाः।।4।। संक्लिष्टाऽसुरोदीरित-दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः।।5।। तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः।।6।। जम्बूद्वीप-लवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः।।7।। द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलयाकृतयः।।8।। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजन-शतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः।।9।। भरतहैमवतहरिविदेहरम्यक-

हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥10॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिम-वन्निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ॥11॥ हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः ॥12॥ मणिविचित्र-पार्श्वा उपरिमूले च तुल्य-विस्ताराः ॥13॥ पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केशरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका ह्रदा-स्तेषामुपरि ॥14॥ प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध-विष्कम्भो ह्रदः ॥15॥ दशयोजना-वगाहः ॥16॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥17॥ तद्द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥18॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः ॥19॥ गङ्गा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रूप्य-कूला-रक्ता-रक्तोदाः सरित-स्तन्मध्यगाः ॥20॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥21॥ शेषास्त्वपरगाः ॥22॥ चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः ॥23॥ भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागा योजनस्य ॥24॥ तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ताः ॥25॥ उत्तरा-दक्षिण-तुल्याः ॥26॥ भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥27॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽव-स्थिताः ॥28॥ एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारि-वर्षक-दैवकुरवकाः ॥29॥ तथोत्तराः ॥30॥ विदेहेषु संख्येय-कालाः ॥31॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भागः ॥32॥ द्विर्धातकीखण्डे ॥33॥ पुष्करार्धे च ॥34॥ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥35॥ आर्या म्लेच्छाश्च ॥36॥ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तर-कुरुभ्यः ॥37॥ नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्यो-पमान्तर्मुहूर्ते ॥38॥ तिर्यग्योनिजानां च ॥39॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥3॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र के तृतीय पाठ में, कहे सूत्र उन्चालीस।
इन सूत्रों का अर्थ समझकर, मिटे कर्म की नालिश[1]।।
दीप ध्वजा लड्डू श्रीफल ले, जिन मंदिर हम आये।
इन सूत्रों को अर्घ चढ़ाकर, निज भव भ्रमण मिटायें।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य तृतीय अध्याय संबंधी एकोन्‌चत्वारिंशत्‌ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ये तीजा अध्याय है, त्रय गुण हमें दिलाय।
शांतिधारा पुष्पांजलि, प्रभु के चरण चढ़ाय।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्‌

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे तृतीय अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– चौबीसों जिनवर नमें, श्रुत गणधर गुरुराय।
कहें भूगोल त्रिलोक का, पूजें त्रय अध्याय।।

(जोगीरासा छंद)

अर्हत्‌ सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को वन्दन।
जैनधर्म श्रुत चैत्य जिनालय, उनका नित अभिनन्दन।।
तीन लोक संस्थान विचय का, हम सब ध्यान लगायें।
मोक्षशास्त्र अध्याय तीन की, जयमाला अब गायें।।1।।

रत्नप्रभादिक सात पृथ्वियां, नीचे क्रम से होती।
तीन वलय पर अवलम्बित वे, नरक भूमियाँ होती।।

1. मुकदमा।

उनमें कुल बिल चौरासी लख, शास्त्र हमें बतलाये।
नरक दुःखों का वर्णन इसमें, छह सूत्रों में आये॥2॥

जम्बू आदिक द्वीप असंख्यों, मध्य लोक में जानों।
लवणादिक सागर भी अनगिन, वलयाकृति में मानो॥
द्वीपों को सागर ने घेरा, सागर को द्वीपों ने।
इक से दूजे दूने घेरे, चूड़ी की आकृति में॥3॥

उनके बीच जगत् नाभि सम, मेरू सुदर्शन जानो।
एक लाख चालीस योजन का, उसको ऊँचा मानो॥
सभी द्वीप में क्षेत्र कुलाचल, सरवर पुष्कर नदियाँ।
सभी अकृत्रिम रत्नमयी हैं, उत्तर दक्षिण तुल्या॥4॥

छह कम उनचालिस सूत्रों में, मध्य लोक का वर्णन।
जिज्ञासु तत्त्वार्थ सूत्र का, करें पूर्ण अवलोकन॥
मध्यलोक में मनुज पशु व, देव देवियाँ रहते।
मुनिगण इसमें तप साधन कर, मुक्ति रमा को वरते॥5॥

मध्यलोक के जीव यहाँ से, चारों गति में जाते।
यहीं तीर्थंकर आदिक होते, मोक्ष यहाँ से पाते॥
इस विधान को करके हम भी, मोक्ष महल को पायें।
समिति गुप्ति व्रत पालन करके, आठों कर्म नशायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्याये एकोन्चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र चतुर्थ अध्याय पूजा

(नरेन्द्र छंद)

जिनवाणी जिन सूत्र जिनालय, जैनागम हितकारी।
गुरुओं के हर एक वाक्य हैं, जन-जन के उपकारी।।
हम उनका आह्वानन् करते, कर में पुष्प सजायें।
मन मंदिर में उन्हें बिठाकर, अपना ज्ञान बढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र चतुर्थ अध्याय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

प्रभु के पद हम निर्मल नीर चढ़ा रहे।
जन्मादिक त्रय रोग नशाने ध्या रहे।।
नर नारी सुर पूजा करते आपकी।
पूजक पूज्य बने पूजा कर नाथ की।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरणन् गंध लगायें हाथ से।
तिलक करें हम उसी गंध का माथ पे।। नर-नारी...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम भक्ति करें हम उत्तम व्रत धरें।
उत्तम अक्षत से प्रभु की पूजा करें।। नर-नारी...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल सुलोचन जिनके प्यारे पद कमल।
उनके चरण चढ़ायें हम खिलते कमल।। नर-नारी...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध मिठाई प्रभु हम नित्य चढ़ा रहे।
झूम झूमकर प्रभु की पूजा गा रहे।।
नर नारी सुर पूजा करते आपकी।
पूजक पूज्य बने पूजा कर नाथ की।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाकर करें प्रभु की आरती।
प्रभु आरती मोह तिमिर परिहारती।। नर-नारी...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

करें धूप से प्रभुवर की शुभ अर्चना।
अष्ट कर्म क्षय हेतु करते वंदना।। नर-नारी...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ सब ऋतु के फल हम ला रहे।
हे त्रैलोक्यपति ! प्रभु तुम्हें चढ़ा रहे।। नर-नारी...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत पुष्पादिक ला रहे।
दीप धूप चरु फल व अर्घ चढ़ा रहे।। नर-नारी...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ अध्याय सूत्र

देवाश्चतुर्णिकायाः।।1।। आदितस्त्रिषु पीतान्त-लेश्याः।।2।। दशाष्ट-पञ्च द्वादश विकल्पाः कल्पोपपन्न-पर्यन्ताः।।3।। इन्द्र-सामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्ष - लोक - पालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः।।4।। त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः।।5।। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः।।6।। कायप्रवीचारा आ ऐशानात्।।7।। शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः-प्रवीचाराः।।8।।

परेऽप्रवीचाराः ॥9॥ भवनवासिनोऽसुरनाग–विद्युत्सुपर्णाग्नि–वातस्त–
नितोदधि–द्वीप–दिक्कुमाराः ॥10॥ व्यन्तराः किन्नर–किंपुरुषमहोरग–
गन्धर्व–यक्ष–राक्षस–भूत–पिशाचाः ॥11॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ
ग्रहनक्षत्र–प्रकीर्णक–तारकाश्च॥12॥ मेरु–प्रदक्षिणा नित्य–गतयो
नृलोके॥13॥ तत्कृतः काल–विभागः ॥14॥ बहिरवस्थिताः ॥15॥
वैमानिकाः ॥16॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च॥17॥ उपर्युपरि॥18॥
सौधर्मैशानसानत्कुमार–माहेन्द्र–ब्रह्म–ब्रह्मोत्तर–लान्तव–कापिष्ठ–
शुक्रमहाशुक्र–शतार–सहस्रारेष्वानत–प्राणतयोरारणा–च्युतयोर्नवसु
ग्रैवेयकेषु विजय–वैजयन्त–जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च॥19॥
स्थिति–प्रभाव–सुख–द्युति–लेश्या–विशुद्धीन्द्रियावधि–विषय–
तोऽधिकाः ॥20॥ गतिशरीर–परिग्रहाऽभिमानतो हीनाः ॥21॥ पीत–
पद्म–शुक्ल–लेश्या द्वि–त्रि–शेषेषु॥22॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥23॥
ब्रह्म–लोकालया लौकान्तिकाः ॥24॥ सारस्वतादित्यवह्न्यरु–रुण–
गर्दतोय–तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च॥25॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥26॥
औपपादिक–मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्य–ग्योनयः ॥27॥ स्थितिरसुर–नाग–
सुपर्ण–द्वीप–शेषाणां सागरोपम–त्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥28॥
सौधर्मैशानयोः सागरोपमे–अधिके॥29॥ सानत्कुमार–माहेन्द्रयोः
सप्त॥30॥ त्रिसप्त–नवैकादश–त्रयोदश–पञ्चदशभिरधिकानि
तु॥31॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु
सर्वार्थसिद्धौ च॥32॥ अपरा पल्योपममधिकम्॥33॥ परतःपरतः पूर्वा
पूर्वाऽनन्तरा॥34॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु॥35॥ दशवर्ष–सहस्राणि
प्रथमायाम्॥36॥ भवनेषु च॥37॥ व्यन्तराणां च॥38॥ परा
पल्योपममधिकम्॥39॥ ज्योतिष्काणां च॥40॥ तदष्टभागोऽपरा॥41॥
लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम्॥42॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥4॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय चार में, सूत्र बयालिस आये।
भाव सहित पढ़-सुन हर प्राणी, इक अनशन फल पाये।।
अर्घ सजाकर इन सूत्रों को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।
पढ़ें-सुनें श्रद्धा हम धारें, व्रत पालें सुख पायें।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य चतुर्थ अध्याय संबंधी द्विचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्ष शास्त्र शुभ ग्रंथ को, पढ़े सुने जो कोय।
इसका फल उपवास है, श्रद्धा मन में होय।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे चतुर्थ अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- नमन करें नव देव को, सर्व सिद्ध को ध्याय।
मोक्षशास्त्र चऊ पाठ की, जयमाल अब गाय।।

(नरेन्द्र छंद)

लोक अग्र में सिद्ध विराजें, उनका ध्यान लगायें।
ऊर्ध्वलोक के चैत्यालय को, हम सब अर्घ चढ़ायें।।
मोक्षशास्त्र अध्याय चार में, देव गति का वर्णन।
उसका हम स्वाध्याय करें नित, मोक्षशास्त्र है दर्पण।।1।।

भवनवासी व्यंतर व ज्योतिष, वैमानिक सुर जानों।
चार निकाय इन्हें ही कहते, भक्त प्रभु के मानो।।
भवनवासी सुर दस प्रकार हैं, व्यंतर आठ प्रकारा।
ज्योतिष पंच प्रकार बतायें, मोक्षशास्त्र श्रुत द्वारा।।2।।

कल्पवासी सुर बारह विध हैं, इनमें भेद अनेकों।
इन्द्र और सामानिक आदि, दस–दस अन्तर देखों।।
ब्यालिस सूत्रों में देवों का, पूरा वर्णन आया।
जिसने सम्यक् आदिक साधा, उसने सुर पद पाया।।3।।

सब देवों के आठ ऋद्धियाँ, तीन ज्ञान नित होते।
सब कुमारवत अति सुन्दर वा, वैभवशाली होते।।
भवनत्रिक से अच्युत सुर तक, देव–देवियाँ जानों।
आगे फिर अहमिन्द्र अकेले, देव मात्र ही जानो।।4।।

देव विमानों में जिनवर के, चैत्यालय अतिशायी।
उनमें देव युगल नित पूजें, श्री जिनवर सुखदायी।।
सम्यक्दृष्टि देव प्रभु की, सम्यक् भक्ति रचाते।
मिथ्यात्वी कुल देव मानकर, जिनवर को ही ध्याते।।5।।

पंचकल्याणक उत्सव में व, अष्टाह्निक पर्वों में।
पूजा करने पुण्य कमाने, आते ये स्वर्गों से।।
या मुनि का उपसर्ग दूर कर, भारी पुण्य कमाते।
जिससे इक भव अवतारी हो, क्रम से शिवपुर जाते।।6।।

देव दुबारा देव बने ना, नहीं नरक में जाये।
वैक्रियक से वैक्रियक तन, कोई तुरत ना पाये।।
देवों जैसी पूजा भक्ति, हम भी नित्य रचायें।
गुप्ति समिति व्रत पालन करके, मोक्ष सदन को पायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्याये द्विचत्वारिंसद् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र पंचम अध्याय पूजा

(नरेन्द्र छंद)

मोक्ष शास्त्र है शास्त्र अनोखा, इसकी महिमा गायें।
बड़े-बड़े आचार्यों ने भी, इस पे शास्त्र बनाये।।
सूत्र रूप में रचा गुरु ने, सबका ज्ञान बढ़ाये।
हम उनकी अब भक्ति रचाने, पुष्प सजाकर लाये।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र पंचम अध्याय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छंद)

इन्द्र-इन्द्राणी भव्य, करते न्हवन प्रभु का।
ॐ ह्रीं श्री बोल, न्हवन करें हम विभु का।।
मंदिर के जिनबिम्ब, जग में मंगलकारी।
उनकी पूजा भक्ति, भक्तों को दुःखहारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नशने भव संताप, प्रभु पद गंध लगायें।
तीन लोक के ईश, सबको सुखी बनायें।। मंदिर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अक्षत लेय, प्रभु को पुंज चढ़ायें।
अक्षय दाता नाथ, हम उन सम पद पायें।। मंदिर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्प, चुन-चुन कर हम लायें।
काम विजेता नाथ, उनको पुष्प चढ़ायें।। मंदिर..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तिल्ली मोदक आदि, बहु पकवान बनायें।
क्षुधा व्याधि शमनार्थ, प्रभु के चरण चढ़ायें।।
मंदिर के जिनबिम्ब, जग में मंगलकारी।
उनकी पूजा भक्ति, भक्तों को दुःखहारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कर्पूर के दीप, अंधकार विनशाये।
प्रभु की आरती गाय, हम निज मोह नशायें।। मंदिर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित धूप चढ़ाय, मंदिर को महकायें।
धूपार्चा से नाथ, हम वसु कर्म नशायें।। मंदिर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम बिजौरा जाम, केला दाडिम लाये।
पाने मोक्ष मुकाम, प्रभु को सुफल चढ़ायें।। मंदिर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि द्रव्य सजाय, प्रभु को अर्पण करते।
मंगल वाद्य बजाय, प्रभु दर नर्तन करते।। मंदिर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम अध्याय सूत्र

अजीव - कायाधर्माधर्माकाश - पुद्गलाः ।।1।। द्रव्याणि।।2।। जीवाश्च।।3।। नित्यावस्थितान्यरूपाणि।।4।। रूपिणः पुद्गलाः।।5।। आ आकाशादेकद्रव्याणि।।6।। निष्क्रियाणि च।।7।। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम्।।8।। आकाशस्यानन्ताः।।9।। संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम्।।10।। नाणोः।।11।। लोकाकाशेऽवगाहः।।12।। धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने।।13।। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम्।।14।।

असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ।।15।। प्रदेश–संहार–विसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ।।16।। गति–स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ।।17।। आकाशस्यावगाहः ।।18।। शरीर–वाङ् मनः प्राणापानाः–पुद्गलानाम् ।।19।। सुख–दुःख–जीवित–मरणोपग्रहाश्च ।।20।। परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।।21।। वर्तना–परिणाम–क्रियाःपरत्वाऽपरत्वे च कालस्य ।।22।। स्पर्श–रस–गन्ध–वर्णवन्तः पुद्गलाः ।।23।। शब्द–बन्ध–सौक्ष्म्य–स्थौल्य–संस्थान–भेद–तमश्छायाऽऽतपोद्योत–वन्तश्च।।24।। अणवः स्कन्धाश्च ।।25।। भेद–संघातेभ्य उत्पद्यन्ते ।।26।। भेदादणुः ।।27।। भेद–संघाताभ्यां चाक्षुषः ।।28।। सद्द्रव्य–लक्षणम् ।।29।। उत्पाद–व्ययध्रौव्य–युक्तं सत् ।।30।। तद्भावाऽव्ययं नित्यम् ।।31।। अर्पिताऽनर्पितसिद्धेः ।।32।। स्निग्ध–रूक्ष–त्वाद् बन्धः ।।33।। न जघन्य–गुणानाम् ।।34।। गुणसाम्ये सदृशानाम् ।।35।। द्व्यधिकादि–गुणानां तु ।।36।। बन्धेऽधिकौ परिणामिकौ च ।।37।। गुण–पर्ययवद् द्रव्यम् ।।38।। कालश्च ।।39।। सोऽनन्तसमयः ।।40।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।।41।। तद्भावः परिणामः ।।42।।

।। इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पञ्चमोऽध्यायः ।।5।।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय पाँच में, सूत्र बयालिस आये।
विश्व द्रव्य विज्ञान समुच्चय, इसमें विस्तृत आये।।
इन सूत्रों का पठन मनन कर, पूर्ण ज्ञान हम पायें।
भाव सहित पूर्णार्घ चढ़ा हम, परमेष्ठी पद पायें।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य पंचम अध्याय संबंधी द्विचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

इस पंचम अध्याय में, आते हैं षट् द्रव्य।
उनके सर्व स्वरूप को, जानें इससे भव्य।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे पंचम अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– नमन पंच परमेष्ठी को, नमन जिनागमसार।
मोक्षशास्त्र श्रुतदेव की, जयमाला सुखकार।।

(नरेन्द्र छंद)

पंच परम परमेष्ठी प्रभु के, प्रतिदिन गुण हम गायें।
मोक्षशास्त्र अध्याय पाँच की, जयमाला अब गायें।।
मूर्त्त अमूर्त्त अजीव तत्त्व को, यह अध्याय बताये।
जीव सृष्टि विज्ञान जगत् को, सम्यक् विध समझाये।।1।।

पुद्गल धर्म अधर्म गगन व, काल पाँच ये जानो।
जीव सहित छह द्रव्य कहे ये, सम्यक् विध श्रद्धानो।।
नित्य अवस्थित और अरूपी, पुद्गल बिन सब जानो।
पुद्गल नित्य रूपी मूर्तिक है, इसे शास्त्र से जानो।।2।।

धर्म अधर्म आकाश द्रव्य ये, एक-एक निष्क्रिय हैं।
पुद्गल जीव अनंत अनोखे, योग सहित सक्रिय हैं।।
धर्म अधर्म व एक जीव ये, होय असंख्य प्रदेशी।
पुद्गल संख्य असंख्य प्रदेशी, और अनंत प्रदेशी।।3।।

छह द्रव्यों का विस्तृत वर्णन, इसमें विधिवत् आया।
ब्यालिस सूत्रों में गुरुवर ने, सम्यक् बोध कराया।।
विश्व सृष्टि का कोई न कर्त्ता, कोई न पालक हंता।
छहों द्रव्य ही स्वयं-स्वयं के, कर्त्ता पालक हंता।।4।।

लोकालोक अनादि अकृत्रिम, अविनश्वर असहायी।
तीन लोक के चैत्यालय की, हमने भक्ति रचायी।।
इस विध जो संस्थान विचय व, छह द्रव्यों को ध्याये।
गुप्ति समिति व्रत पालन करके, केवल लक्ष्मी पाये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्याये द्विचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र षष्ठम अध्याय पूजा

(चौपाई)

मोक्ष शास्त्र ये ग्रंथ हमारा, सबको लगता ये अति प्यारा।
पाठ करें और व्रत अपनायें, आह्वानन हम करने आये।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र षष्ठम अध्याय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

नर देव-देवी बन के भक्त नाथ को भजें।
हाथों में द्रव्य लेके चले वो सजे-धजे।।
जल से करें हम नाथ की जिन भक्ति अर्चना।
गुरु शास्त्र देव की करें त्रिकाल वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुगंध घिस के भक्त पात्र में लाये।
उस गंध को जिनदेव के पादाग्र लगाये।।
चंदन चढ़ा के आज करें भव्य अर्चना।। गुरु....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से भक्त नाथ को बहु रत्न चढ़ाते।
गजमोती व अक्षत चढ़ाके पुण्य कमाते।।
अक्षय अखंड पद की प्राप्ति हेतू अर्चना।। गुरु.... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार कुंद केवड़ा गुलाब चढ़ायें।
नर-नारी सर्वफूल चढ़ा काम नशायें।।
पुष्पों से करें नाथ की हम दिव्य अर्चना।। गुरु.... ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार की मिठाई शुद्ध बनायें।
हम झूमते गाते प्रभु को पूजने आये।।
नैवेद्य चढ़ा नाथ की करें सदार्चना।
गुरु शास्त्र देव की करें त्रिकाल वंदना।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीली चटक से कहीं भी ना होय उजाला।
ऐसी चटक से कैसे मिले ज्ञान उजाला।।
सुज्ञान ज्योति पाने करें दीप अर्चना।। गुरु.... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप खेने से ही कर्म जलेंगे।
जो धूप के बिना भजे वो हाथ मलेंगे।
हम धूप अग्नि में चढ़ाके करते अर्चना।। गुरु.... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सूखे फल चढ़ायें वो सूखे ही रहेंगे।
जो फल सरस चढ़ाये वो ही सरस रहेंगे।।
हम मोक्ष धाम पाने करें फल से अर्चना।। गुरु.... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदनादि अष्ट द्रव्य थाल सजायें।
भर-भर के प्रभु आपको हम अर्घ चढ़ायें।।
अनर्घ पद की प्राप्ति हेतु करते अर्चना।। गुरु.... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम अध्याय सूत्र

कायवाङ्मनः कर्मयोगः ।।1।। स आस्रवः ।।2।। शुभः पुण्यस्याशुभःपापस्य ।।3।। सकषायाऽकषाययोः साम्परायिकेर्या-पथयोः ।।4।। इन्द्रिय-कषायाऽव्रतक्रियाः पञ्च-चतुःपञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः ।।5।। तीव्र-मन्द-ज्ञाताऽज्ञातभावाऽधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः ।।6।। अधिकरणं जीवाजीवाः ।।7।। आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भ-योग-कृत-कारिताऽनुमत-कषायविशेषै-स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ।।8।। निर्वर्तना-निक्षेप-संयोगनिसर्गा-द्विचतुर्द्वि-त्रिभेदाः परम् ।।9।। तत्प्रदोष-निह्नवमात्सर्यान्तराया-सादनोपघाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः ।।10।। दुःख-शोक-तापाक्रन्दनवध-परिदेवनान्यात्म-परोभय-स्थान्यसद्वेद्यस्य ।।11।। भूतव्रत्यनुकम्पादान-सराग-संयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ।।12।। केवलि-श्रुतसंघ-धर्म-देवाऽवर्णवादो दर्शनमोहस्य ।।13।। कषायो-दयात्तीव्र-परिणामश्चारित्रमोहस्य ।।14।। बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्याऽऽयुषः ।।15।। माया तैर्यग्योनस्य ।।16।। अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं मानुषस्य ।।17।। स्वभाव-मार्दवं च ।।18।। निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ।।19।। सरागसंयमसंयमा-संयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ।।20।। सम्यक्त्वं च ।।21।। योगवक्रता विसंवादनं चाऽशुभस्य नाम्नः ।।22।। तद्विपरीतं शुभस्य ।।23।। दर्शनविशुद्धि-र्विनयसंपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारो-ऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्याग - तपसी - साधु-समाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्तिराऽऽवश्यका-ऽपरिहाणिर्मार्ग-प्रभावना प्रवचन-वत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ।।24।। परात्मनिन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।।25।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।26।। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।27।।

।। इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ।।6।।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय छठे में, सूत्र सत्ताइस आये।
पापों के आस्रव से बचने, प्रभु के गुण हम गायें।।
कर्मों की आस्रव की व्याख्या, ये अध्याय बताये।
उनको नित पूर्णार्घ चढ़ा हम, शुद्ध भावना भायें।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य षष्ठम अध्याय संबंधी सप्तविंशति सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता– जिन ग्रंथ की महिमा, उसकी गरिमा, उनकी पूजा भक्ति रचाय।
कर जल की धारा, प्रभु पथ प्यारा, जिन चरणन् में पुष्प चढ़ाय।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे षष्ठम अध्यायाय नमः स्वाहा।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– देव–शास्त्र–गुरु को नमूँ, नमूँ सर्व जिनराय।
ध्याऊँ आस्रव तत्त्व अब, पढ़ षष्ठम अध्याय।।

(नरेन्द्र छंद)

जय–जय जिन सर्वज्ञ केवली, मोक्षमार्ग दर्शाया।
जय–जय गणधर श्रुतधर गुरुवर, आगम ग्रंथ रचाया।।
मोक्षशास्त्र अध्याय छठे में, तत्त्व तीसरा आया।
उमास्वामी आचार्यश्री ने, आस्रव तत्त्व बताया।।1।।

आत्म परिस्पन्दन जब होता, मन–वच–तन के द्वारा।
कर्मों का आना आस्रव है, जानों सूत्रों द्वारा।।
शुभ भावों से पुण्यास्रव हो, अशुभ करे पापास्रव।
निष्कषाय जीवों के होता, इक ईर्यापथ आस्रव।।2।।

और कषाय सहित जीवों के, होता आस्रव दूजा।
निष्कषाय जिनवर की हमने, की श्रद्धा से पूजा।।
कर्मों का आना कब कैसे, किस विध कितना होवे।
ये छट्ठा अध्याय बताये, किस विध आस्रव होवे।।3।।

तीव्र मंद ज्ञाता अज्ञाते, जैसा आस्रव होवे।
अधिष्ठान व बल जैसा हो, वैसा आस्रव होवे।।
सत्ताईस सूत्रों से गुरुवर, आस्रव को समझायें।
जो जाने श्रद्धा से इसको, वो इससे बच पाये।।4।।

केवली श्रुत औ संघ धर्म वा, देवों का अपवादी।
इनमें जो अपवाद लगाये, बाँधे मोह प्रमादी।।
इत्यादि सम्पूर्ण कर्म का, आस्रव समझो जानो।
इनसे बचने पंच गुरु को, नव कोटी श्रद्धानो।।5।।

अशुभ भाव परिहार करो सब, श्रेष्ठ भाव अपनाओ।
पाप क्रियायें छोड़ हृदय से, निर्मल पुण्य कमाओ।।
उमा स्वामी के सूत्र समझ कर, मोक्ष मार्ग अपनाओ।
गुप्ति समिति व्रत पालन करके, जीवन सुखी बनाओ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्याये सप्तविंशति सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र सप्तम अध्याय पूजा

(दोहा)

हाथों में ले पुष्प हम, आये प्रभु के द्वार।
मोक्ष शास्त्र इस ग्रंथ की, महिमा अपरम्पार।।
हृदय बुलाये नाथ को, आह्वानन् कर आज।
अष्ट द्रव्य की थाल ले, पूजन करते आज।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र सप्तम अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

प्रभु चरणों में जल चढ़ा, जोड़ें प्रभु को हाथ।
पूजक से हम पूज्य हो, यही प्रार्थना नाथ।।
भक्त आपके हम प्रभो, आप हमारे नाथ।
पूजा करते आपकी, पाने भव–भव साथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से शीतल अति, प्रभु के पावन चर्ण।
गंध प्रभु के पद लगा, पायें हम जिन शर्ण।। भक्त...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दानी है ना आप सा, सबको सब मिल जाय।
हम अक्षत अर्पण करें, जिन गुण निधि मिल जाय।। भक्त...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तच्छद चंपक तरु, पुष्प अनेक प्रकार।
सर्व पुष्प प्रभु पद चढ़ा, नाशें कर्म विकार।। भक्त...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाड्डु बाटी वा पुड़ी, बरफी मेवा खीर।
चढ़ा रहे हम नाथ को, हरो क्षुधा की पीर।।
भक्त आपके हम प्रभो, आप हमारे नाथ।
पूजा करते आपकी, पाने भव-भव साथ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर प्रभुवर की आरती, करें मोह परिहार।
दे दो केवलज्ञान का, हे जिनवर ! उपहार।। भक्त... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य सहित जिन अर्चना, देती पुण्य अपार।
धूप चढ़ा प्रभु आपको, पायें शिवपुर द्वार।। भक्त... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रभु को फल से भजे, पाये सुख भंडार।
मिले अतुल सुख-संपदा, सुखी रहे परिवार।। भक्त... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत अष्टम भू बसे, सर्व सिद्ध भगवान।
पूजा अष्टम भूमि की, करें परम कल्याण।। भक्त... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम अध्याय सूत्र

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम्।।1।। देशसर्वतोऽणु-महती।।2।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च।।3।। वाङ्मनोगुप्तीर्याऽऽदाननिक्षेपण-समित्यालोकितपान-भोजनानि पञ्च।।4।। क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्यनुवीचि-भाषणं च पञ्च।।5।। शून्यागार विमोचितावास-परोपरोधाकरण भैक्ष्यशुद्धि-सधर्माविसंवादाः पञ्च।।6।। स्त्रीरागकथाश्रवण-तन्मनोहराङ्गनिरीक्षण-

पूर्वरतानुस्मरण–वृष्येष्टरस–स्वशरीर–संस्कारत्यागाः पञ्च ॥7॥ मनोज्ञाऽमनोज्ञेन्द्रिय–विषय–राग–द्वेष–वर्जनानि पञ्च ॥8॥ हिंसादिष्विहामुत्राऽपायाऽवद्यदर्शनम् ॥9॥ दुःखमेव वा ॥10॥ मैत्री–प्रमोद–कारुण्य–माध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनयेषु ॥11॥ जगत्काय–स्वभावौ वा संवेग–वैराग्यार्थम् ॥12॥ प्रमत्तयोगात्प्राण–व्यपरोपणं हिंसा ॥13॥ असदभिधानमनृतम् ॥14॥ अदत्तादानं स्तेयम् ॥15॥ मैथुनमब्रह्म ॥16॥ मूर्च्छापरिग्रहः ॥17॥ निशल्यो–व्रती॥18॥ अगार्यनगारश्च॥19॥ अणुव्रतोऽगारी॥20॥ दिग्देशाऽनर्थ–दण्डविरति–सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग–परिभोग–परिमाणाऽतिथि–संविभाग व्रत–सम्पन्नश्च ॥21॥ मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥22॥ शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्य–दृष्टि–प्रशंसा–संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ॥23॥ व्रत–शीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥24॥ बन्ध–वधच्छेदातिभारारोपणाऽन्नपान–निरोधाः॥25॥ मिथ्योपदेश–रहोभ्याख्यान–कूटलेखक्रिया–न्यासापहार–साकार–मन्त्रभेदाः ॥26॥ स्तेनप्रयोग–तदाहृताऽऽदान–विरुद्ध–राज्यातिक्रम–हीनाधिक मानोन्मान–प्रतिरूपक–व्यवहाराः ॥27॥ परविवाहकरणे–त्वरिका–परिगृहीताऽपरि–गृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडा–कामतीव्राभि–निवेशाः ॥28॥ क्षेत्रवास्तु हिरण्यसुवर्ण – धनधान्य – दासीदास – कुप्य – प्रमाणातिक्रमाः ॥29॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्य–तिक्रमक्षेत्र–वृद्धि–स्मृत्यन्तराधानानि ॥30॥ आनयनप्रेष्य–प्रयोग–शब्दरूपानुपात–पुद्गलक्षेपाः ॥31॥ कन्दर्प–कौत्कुच्य–मौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोग परिभोगाऽऽनर्थक्यानि ॥32॥ योगदुः–प्रणिधानाऽनादर–स्मृत्यनुप–स्थानानि ॥33॥ अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादान–संस्तरोप–क्रमणाऽनादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥34॥ सचित्तसम्बन्ध–संमिश्राभि–षव–दुःपक्वाहाराः ॥35॥ सचित्त–निक्षेपापिधान–परव्यपदेश–मात्सर्य्य–

कालाऽतिक्रमाः ॥36॥ जीवित–मरणाशंसा–मित्रानुराग–सुखानुबन्ध–निदानानि ॥37॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥38॥ विधि–द्रव्यदातृपात्र–विशेषात्तद्विशेषः ॥39॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥7॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय सात में, श्रावक चर्या आये।
उन्चालिस सूत्रों में सुन्दर, शुभ पुण्यास्रव आये॥
सूत्रों को पूर्णार्घ चढ़ा हम, आत्म पुनीत बनायें।
पूजन नमन करें हम प्रभु को, झुक–झुक शीश नवायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य सप्तम अध्याय संबंधी एकोन्चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– बोलें जय जयकार, परमेश्वर भगवान की।
पायें शांति अपार, पुष्पाञ्जलि कर पुष्प से॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे सप्तम अध्यायाय नमः स्वाहा।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– सब जिनवर को पूजकर, पंच परम पद ध्याय।
जयमाला में हम पढ़ें, अब सप्तम अध्याय॥

(नरेन्द्र छंद)

हिंसादिक पाँचों पापों से, विरति व्रत कहलाये।
वही महाव्रत और अणुव्रत, दो रूपों में आये॥
पंच व्रतों की स्थिरता में, पाँच भाव सहकारी।
भेद सभी के पाँच–पाँच हैं, कुल पच्चीस दुःखारी॥1॥

हिंसादिक पाँचों पापों से, जीव महादुःख पाये।
इस भव में अपयश बंधन पा, भव–भव में दुःख पाये।।
मैत्री आदिक चार भावना, इनको हम नित भायें।
जगत् काय स्वभाव विचारें, दृढ़ वैराग्य जगायें।।2।।

उन्चालिस सूत्रों में गुरु ने, श्रावक धर्म सिखाया।
जिसने श्रावक धर्म निभाया, उसने सुरपद पाया।।
पूर्ण महाव्रत पाल मुनीश्वर, निश्चय मुक्ति पायें।
अणुव्रत द्वारा श्रावक गण भी, क्रम से मुक्ति पायें।।3।।

पंचाणुव्रत चऊ शिक्षाव्रत, त्रय गुणव्रत अपनायें।
अंत समय में धार समाधि, सुरपति का पद पाये।।
श्री यमपाल अहिंसाणुव्रत, पाल प्रसिद्ध हुआ है।
श्री धनदेव सत्याणुव्रत को, पाल प्रसिद्ध हुआ है।।4।।

वारिषेण तीजा अणुव्रतधर, मुनि बन मुक्ति पाये।
सीता आदिक चौथे व्रत से, महासती कहलाये।।
जय कुमार पंचम अणुव्रत से, गणधर पदवी पायें।
एक–एक व्रत से सुर द्वारा, ये सब पूजें जायें।।5।।

ये अणुव्रत सब पाप विनाशक, पुण्यास्रव करवाये।
पुण्ण फला अरहंता उत्तम, आगम हमें बताये।।
जिन पूजा आहार दान हम, निशदिन करते जायें।।
व्रत उपवास समिति गुप्ति से, आठों कर्म नशायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्याये एकोन्चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र अष्टम अध्याय पूजा

(नरेन्द्र छंद)

प्रभु के चैत्य चैत्यालय की हम, पूजा पाठ रचायें।
प्रभु के चरणों में आकर हम, अपने कष्ट मिटायें।।
नाथ निरंजन जन मनरंजन, उनको पुष्प चढ़ायें।
अभिवंदन स्वागत हे भगवन् !, तुमको हृदय बसायें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र अष्टम् अध्याय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

क्षीर समुंदर से पय घट भर, प्रभु का न्हवन करें हम।
जन्म-जरा-मृत रोग नशाने, पूजा-पाठ करें हम।।
जिनमंदिर की सब प्रतिमायें, जग में मंगलकारी।
मन-वच-तन से जैन शास्त्र के, चरणन् ढ़ोक हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पद में चंदन लेपन, करें कपूर मिलाकर।
उसी गंध से तिलक लगायें, चरणन् शीश झुकाकर।। जिन.... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत भेंट तुम्हें जिन, उत्तम भाव बनाने।
अक्षयदानी जिन ! हम तुमको, पूजें वह पद पाने।। जिन.... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी काम अरि विनशाये, वो ही नाम कमाये।
श्री जिनवर ही काम नशायें, उनको पुष्प चढ़ायें।। जिन.... ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन जन मनरंजन, लायें शुद्ध मिठायी।
क्षुधा रोग विनशाने हमने, प्रभुवर तुम्हें चढ़ायी।।
जिनमंदिर की सब प्रतिमायें, जग में मंगलकारी।
मन–वच–तन से जैन शास्त्र के, चरणन् ढ़ोक हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुल दीपक की रक्षा करने, प्रभु दर दीप लगायें।
आरती करके नाथ तुम्हारी, केवल ज्योति पायें।। जिन....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंध लगे अति प्यारी, जब अग्नि में जलायें।
प्रभु के सन्मुख धूप जलाकर, कर्मन् धूल उड़ायें।। जिन....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर सुगंधित आमादिक फल, हम जिन तुम्हें चढ़ायें।
मुक्ति वधू को पाने हेतू, प्रभु की पूजा गायें।। जिन....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ मिलाकर, अर्चा नाथ तुम्हारी।
अर्घ चढ़ायें भक्ति रचायें, आयें शरण तुम्हारी।। जिन....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम अध्याय सूत्र

मिथ्यादर्शनाऽविरति–प्रमाद–कषाय–योगा बन्ध–हेतवः।।1।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानाऽऽदत्ते स बन्धः।।2।। प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशा–स्तद्विधयः।।3।। आद्यो ज्ञानदर्शनावरण–वेदनीय–मोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः।।4।। पञ्च–नवद्व्यष्टा विंशति–चतुर्द्विचत्वारिंशद्–द्वि–पञ्च–भेदा यथाक्रमम्।।5।। मतिश्रुता

वधिमनःपर्यय–केवलानाम् ॥6॥ चक्षुरचक्षुरवधि–केवलानां निद्रा–निद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥7॥ सदसद्वेद्ये ॥8॥ दर्शनचारित्र–मोहनीया–कषाय–कषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्वि–नवषोडशभेदाः सम्यक्त्व–मिथ्यात्व–तदुभयान्य–कषायकषायौ हास्य–रत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यान–प्रत्याख्यान–संज्वलन–विकल्पाश्चैकशः क्रोध–मान–माया–लोभाः ॥9॥ नारक–तैर्यग्योन–मानुष–दैवानि ॥10॥ गतिजाति–शरीराङ्गोपाङ्गनिर्माण–बन्धन–संघात–संस्थान–संहनन–स्पर्श–रस–गन्ध–वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूप–घात–परघातातपोद्योतोच्छ्वास–विहायोगतयः प्रत्येकशरीर–त्रस–सुभग सुस्वरशुभ–सूक्ष्म–पर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्ति–सेतराणि तीर्थकरत्वं च ॥11॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥12॥ दानलाभ–भोगोपभोग–वीर्याणाम् ॥13॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम–कोटीकोट्यः परा–स्थितिः ॥14॥ सप्ततिर्मोहनी–यस्य ॥15॥ विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥16॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोप–माण्यायुषः ॥17॥ अपरा द्वादश–मुहूर्त्ता वेदनीयस्य ॥18॥ नाम–गोत्रयोरष्टौ ॥19॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ॥20॥ विपाकोऽनुभवः ॥21॥ स यथानाम् ॥22॥ ततश्च निर्जरा ॥23॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह–स्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्त–प्रदेशाः ॥24॥ सद्वेद्य–शुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥25॥ अतोऽन्यत्पापम् ॥26॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ॥8॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय आठ में, कर्म विवेचन आये।
छब्बीस सूत्रों में कर्मों के, व्याख्या सूत्र समायें॥

कर्म बंध के कारण प्राणी, भव का भ्रमण बढ़ाये।
कर्म बेड़ियाँ कैसे काटें, गुरुवर ये समझायें।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य अष्टम अध्याय संबंधी षट्विंशति सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांति पथ जिनसे मिले, करें उन्हीं पे धार।
पुष्प हार प्रभु को चढ़ा, नमन करें शत बार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे अष्टम अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– कर्म बंध से मुक्त हैं, सर्व सिद्ध भगवान।
कर्म नाश हित हम करें, उनका निशदिन ध्यान।।

(नरेन्द्र छंद)

मिथ्यादर्शन अविरत आदि, पाँच बंध के हेतु हैं।
जीव कषाय सहित त्रिभुवन में, निज कर्मों का बंधक है।।
उन कर्मों के प्रकृति आदि, चार भेद बतलाये।
इनमें अग्रिम प्रकृति बंध के, आठ भेद बतलायें।।1।।

उनके उत्तर भेद शास्त्र में, बहुत प्रकार बताये।
पहला ज्ञानावरण पाँच विध, मति आदि कहलाये।।
दर्शनावरणीय के नो विध, वेदनीय के दो हैं।
मोहनीय के हैं अट्ठाईस, उसमें अंतर दो है।।2।।

आयु कर्म के चार भेद हैं, ब्यालिस नाम कर्म के।
ऊँच-नीच दो भेद गोत्र के, अंतिम पाँच कर्म के।।
छब्बीस सूत्रों में गुरुवर ने, बंध तत्त्व समझाया।
कर्म रूप कानून पाश से, कोई नहीं बच पाया।।3।।

त्रिंशत् कोड़ाकोड़ी सागर, स्थिति चार[1] करम की।
सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर, दर्शन मोह करम की।।
विंशति कोड़ाकोड़ी सागर, नाम गोत्र करम की।
तैंतीस सागर उच्च स्थिति, जानो आयु करम की।।4।।

सब कर्मों की जघन स्थिति, मोक्ष शास्त्र समझाये।
वसु कर्मों का पूर्ण विवेचन, वसु अध्याय बताये।।
कर्म सभी कानून से ऊपर, सब यंत्रों से न्यारा।
जिसने किया कर्म का संवर, उसे मिला शिव द्वारा।।5।।

कर्म जीव के अपकारी हैं, धर्ममात्र उपकारी।
जो तोड़ें कर्मों के बंधन, उसकी है बलिहारी।।
कर्मजाल अपना विनशाने, समिति गुप्ति अपनायें।
ग्रंथ सृजेता उमास्वामी को, 'आस्था' से हम ध्यायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्याये षड्विंशति सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. ज्ञानावरणीय, (2) दर्शनावरणीय (3) वेदनीय (4) अंतराय।

तत्त्वार्थ सूत्र नवम अध्याय पूजा

(अडिल्ल छंद)

मोक्ष शास्त्र इस ग्रंथ राज को ध्या रहे।
आह्वानन् स्थापन करने आ रहे।।
रत्नत्रय निधि पाने हम पूजा करें।
उनके गुण कीर्त्तन से सुख शांति वरें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र नवम अध्याय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

स्वच्छ जलाशय का जल भरकर ला रहे।
प्रभु चरणों में निर्मल नीर चढ़ा रहे।।
सब तीर्थंकर प्रभु की हम पूजन करें।
प्रभु पूजा ही हम सबका मंगल करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से प्रभुवर की हम पूजा करें।
प्रभु पूजा से पाप ताप अपना हरें।। सब.....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पदवी धारी सब भगवान को।
अक्षत उन्हें चढ़ाकर कोटि प्रणाम हो।। सब.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्प बाग से ला रहे।
प्रभु के चरणन् हम सब पुष्प चढ़ा रहे।। सब.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन शुद्ध बनाकर ला रहे।
क्षुधा विजेता प्रभु को नित्य चढ़ा रहे।।
सब तीर्थंकर प्रभु की हम पूजन करें।
प्रभु पूजा ही हम, सबका मंगल करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग करता दीपक तम हरता सदा।
प्रभु आरती करते भविजन सर्वदा।। सब..... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पात्र में धूप चढ़ायें हाथ से।
कर्म नाशकर पहुँचे प्रभु के पास में।। सब..... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम द्राक्ष केला नारंगी ला रहे।
महामोक्ष फल पाने भक्ति रचा रहे।। सब..... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्पादिक अर्घ ले।
श्रीफल ध्वजा चढ़ायें भक्ति तरंग से।। सब..... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम अध्याय सूत्र

आस्रव-निरोधः संवरः।।1।। स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षापरीषहजय-चारित्रैः।।2।। तपसा निर्जरा च।।3।। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः।।4।। ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः।।5।। उत्तम-क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतप-स्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः।।6।। अनित्याशरण-

संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव–संवर–निर्जरा–लोक –बोधिदुर्लभ–धर्मस्वाख्याततत्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ।।7 ।। मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।।8।। क्षुत्पिपासाशीतोष्ण–दंशमशक–नाग्न्यारति–स्त्रीचर्या–निषद्याशय्याक्रोशवध–याचनालाभ–रोग–तृणस्पर्श–मल–सत्कारपुरस्कार–प्रज्ञाज्ञानाऽदर्शनानि ।।9 ।। सूक्ष्मसाम्पराय–छद्मस्थवीत–रागयोश्चतुर्दश।।10।। एकादश जिने।।11।। बादर–साम्पराये सर्वे ।।12 ।। ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ।।13 ।। दर्शनमोहान्तराययोर–दर्शनाऽलाभौ।।14।। चारित्रमोहे नाग्न्यारति–स्त्री–निषद्या–ऽऽक्रोश–याचना–सत्कार–पुरस्काराः ।।15।। वेदनीये शेषाः ।।16।। एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोन–विंशतेः ।।17 ।। सामायिकच्छेदोपस्थापना परिहार–विशुद्धि–सूक्ष्मसाम्पराय–यथाख्यातमिति चारित्रम् ।।18।। अनशनावमौदर्य–वृत्तिपरिसंख्यान–रसपरित्याग–विविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ।।19 ।। प्रायश्चित्तविनय–वैयावृत्त्य–स्वाध्याय–व्युत्सर्ग–ध्यानान्युत्तरम् ।।20 ।। नवचतुर्दश–पञ्च–द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ।।21।। आलोचना–प्रतिक्रमणतदुभय–विवेक–व्युत्सर्ग–तपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ।।22 ।। ज्ञानदर्शन–चारित्रोपचाराः ।।23 ।। आचार्योपाध्याय–तपस्वि–शैक्ष्य–ग्लान–गण–कुल–संघ–साधुमनोज्ञानाम् ।।24 ।। वाचना–पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय–धर्मोपदेशाः ।।25 ।। बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ।।26 ।। उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्ता–निरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ।।27 ।। आर्त्त–रौद्रधर्म्यशुक्लानि ।।28 ।। परे मोक्षहेतू ।।29 ।। आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति–समन्वाहारः ।।30 ।। विपरीतं मनोज्ञस्य ।।31 ।। वेदनायाश्च ।।32 ।। निदानं च ।।33 ।। तदविरत–देशविरत–प्रमत्तसंयतानाम् ।।34 ।। हिंसानृतस्तेय–विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत–

देशविरतयोः ॥35॥ आज्ञाऽपाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम्॥36॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥37॥ परे केवलिनः॥38॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-व्युपरत-क्रियानिवर्तीनि॥39॥ त्र्येकयोग-काय-योगाऽयोगानाम्॥40॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे॥41॥ अवीचारं द्वितीयम्॥42॥ वितर्कः श्रुतम्॥43॥ वीचारोऽर्थ व्यञ्जन योग-सङ्क्रान्तिः ॥44॥ सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्तवियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोपशमकोपशांतमोह-क्षपक-क्षीणमोह जिनाः क्रमशोऽसंख्येय-गुण-निर्जराः ॥45॥ पुलाकबकुश-कुशील-निर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥46॥ संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थलिङ्ग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः ॥47॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥9॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय नवम में, श्रमणाचार समाये।
सैंतालिस सूत्रों में विस्तृत, सम्यक् चारित्र आये॥
संवर निर्जरा उभय तत्त्व भी, इसमें सहज समाये।
उनको हम पूर्णार्घ चढ़ाकर, श्रेष्ठ श्रमण पद पायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य नवम अध्याय संबंधी सप्तचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जहाँ त्रिलोकी नाथ हैं, वहाँ शांति का द्वार।
प्रभुवर के दरबार में, है आनंद अपार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे नवम अध्यायाय नमः स्वाहा।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– पंच परम पद को नमूँ, करूँ उन्हीं का ध्यान।
संवर हो सब कर्म का, इस हित करूँ विधान।।

(नरेन्द्र छंद)

जय–जय श्री चौबीस तीर्थंकर, जय–जय उनके गणधर।
जय–जय सब पूर्वाचार्यों की, श्रुत कर्त्ता सब गुरुवर।।
उमास्वामी ने मोक्षशास्त्र में, सात तत्त्व बतलाये।
नवम पाठ में संवर निर्जर, तत्त्व युगल समझाये।।1।।

आस्रव का निरोध संवर है, वह चरित्र से होता।
गुप्ति समिति धर्मानुप्रेक्षा, परिषह जय से होता।।
तप से संवर और निर्जरा, दोनों युगपत् होते।
मुनि तपस्वी इनके द्वारा, कर्म कालिमा धोते।।2।।

सैंतालिस सूत्रों में गुरु ने, श्रमण धर्म समझाया।
जिन–जिनने इनको अपनाया, उनने कर्म नशाया।।
तीन गुप्तियाँ पाँच समिति, दशविध धर्म बतायें।
द्वादश अनुप्रेक्षायें होती, बाईस परिषह गायें।।3।।

तप के बारह भेद बताये, उनको दो विध जानों।
पंच प्रकार चरित्र कहा है, मुनिगण दशविध मानों।।
स्वाध्याय के पाँच भेद हैं, उपधि उभय कही है।
उत्तम संहनन युत ध्यानी को, मिलती मुक्ति मही है।।4।।

आर्त्त रौद्र व धर्मशुक्ल ये, ध्यान चार विध जानो।
धर्मशुक्ल मुक्ति के हेतू, आगम से श्रद्धानो।।

ध्यान कहा कब किसको होता, इन सूत्रों में आया।
बिना ध्यान मुक्ति नहीं होती, गुरुवर ने बतलाया।।5।।

श्रावक से केवली जिनवर तक, कर्म निर्जरा बढ़ती।
असंख्यात गुण इक दूजे से, क्रम से बढ़ती रहती।।
पुलाक आदिक पंच प्रकारा, भावलिंगी होते हैं।
संयम श्रुताभ्यास आदि से, ये बहुविध होते हैं।।6।।

हे जिन ! हम उत्तम चरित्र को, तीन योग से पालें।
अविरति क्लेश प्रमाद आदि को, समता से धो डालें।।
मोक्षशास्त्र अध्याय नवम को, उत्तम अर्घ चढ़ायें।
त्रय गुप्ति व्रत समिति आदि धर, कर्म कलंक नशायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्याये सप्तचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र दशम अध्याय पूजा

(नरेन्द्र छंद)

प्रभु आपका अभिनंदन कर, जागे भाग्य हमारा।
मिला भाग्य से प्रभु पूजन का, यह सौभाग्य हमारा।।
देवों के भी देव आप हो, आओ–आओ स्वामी।
पुष्पों से आह्वान करें हम, घट–घट अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र दशम अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

जल की झारी भरकर लायें, प्रभु का न्हवन कराने।
जन्म–जरा–मृत रोग नाश हो, आये भक्ति रचाने।।
मोक्ष मार्ग के सच्चे नेता, वीतराग कहलाये।
ज्ञाता दृष्टा हित उपदेशी, इनको हम नित ध्यायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर में कर्पूर मिलाकर, हाथों से घिस लायें।
प्रभु के चरण कमल चर्चित कर, भव आताप नशायें।। मोक्ष...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल दोनों हाथों में भर, मुट्ठी बाँध चढ़ायें।
हे त्रैलोकीनाथ आप सम, अक्षय पद हम पायें।। मोक्ष...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुन्धरा के बहु पुष्पों को, चुन–चुनकर हम लायें।
तोरणद्वार व गुलदस्तों से, प्रभु का द्वार सजायें।। मोक्ष..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नैवेद्य लगे अति सुन्दर, सबके मन को भाये।
क्षुधारोग विनशाने अपना, निशदिन अवश्य चढ़ायें।।
मोक्ष मार्ग के सच्चे नेता, वीतराग कहलाये।
ज्ञाता दृष्टा हित उपदेशी, इनको हम नित ध्यायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुबह शाम घृत दीप जलाकर, प्रभु की आरती गायें।
जिन मंदिर में प्रभु के सन्मुख, नित्य प्रदीप जलायें।। मोक्ष...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

असली धूप चढ़ायें प्रभु को, घट में अग्नि जलायें।
तभी हमारे कर्म जलेंगे, जिनगुरु शास्त्र बताये।। मोक्ष...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर-मधुर रस वाले फल के, भर-भर थाल चढ़ायें।
अंतिम शाश्वत एक मोक्ष पद, प्रभु से पाने आये।। मोक्ष...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा के स्वामी को, आठों द्रव्य चढ़ायें।
मिले हमें भी मही आठवी, यही भावना भाये।। मोक्ष...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम अध्याय सूत्र

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम्।।1।। बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः।।2।। औपशमिकादि-भव्यत्वानां च।।3।। अन्यत्र केवलसम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शनसिद्धत्वेभ्यः।।4।। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्याऽऽलोकान्तात्।।5।। पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्-बन्धच्छेदात् तथागतिपरिणामाच्च।।6।। आविद्धकुलालचक्रवद्-व्यपगतलेपाऽलाम्बुवदेरण्डबीजवदग्नि-

शिखावच्च ।।7 ।। धर्मास्तिकायाभावात् ।।8 ।। क्षेत्रकाल–गति–लिङ्ग–तीर्थ–चारित्रप्रत्येकबुद्धबोधित–ज्ञानाऽवगाहनान्तर–संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ।।9 ।।

।। इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ।। 10 ।।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय दशम में, नौ ही सूत्र बताये।
इन सूत्रों में मोक्ष तत्त्व का, विस्तृत अर्थ समाये।।
मोक्ष तत्त्व का ध्यान लगा हम, मोक्षमहल को पायें।
मोक्षमहल के वासी प्रभू को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य दशम अध्याय संबंधी नव सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर–मात्रा–पद–स्वर–हीनं, व्यञ्जन–संधि–विवर्जित–रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ।।1 ।।

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः ।।2 ।।
तत्त्वार्थ–सूत्र–कर्तारं, गृद्धपिच्छोपलक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्र–संजात, मुमास्वामी–मुनीश्वरम् ।।3 ।।
पढम–चक्के पढमं, पंचमए जाण पोग्गलं तच्चं।
छह–सत्तमे हि आस्सव, अट्ठमए बंध णादव्वं ।।4 ।।
णवमे संवर–णिज्जर, दहमे मोक्खं वियाणेहि
इह सत्त–तच्च भणिदं, दह–सुत्ते मुणिवरिंदेहिं ।।5 ।।
जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं ।।6 ।।

तवयरणं वयधरणं, संजम–सरणं च जीव–दया–करणं।
अंते समाहिमरणं, चउगई–दुक्खं णिवारेइ॥7॥
अरहंत–भासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाण–महोवहिं सिरसा॥8॥
गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान–दर्शन–नायकाः।
चारित्रार्णव – गंभीराः मोक्ष – मार्गोपदेशकः॥9॥
कोटिशतं द्वादशं चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्र–संख्यमेतद्श्रुतं पंचपदं नमामि॥10॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रापरनाम–तत्त्वार्थसूत्रे मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ॥

357 सूत्रों का पूर्णार्घ (शंभु छंद)

श्री उमास्वामी सूरीश्वर ने, तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थ लिखा।
त्रयशत सत्तावन सूत्रबद्ध, संस्कृत भाषा में प्रथम लिखा॥
उन सूत्रों को हम श्रद्धा से, पूर्णार्घ समर्पण करते हैं।
ये जैन धर्म की गीता है, हम इसका वाचन करते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उमास्वामी आचार्य विरचित दश अध्याय संबंधी सप्त पंचाशत अधिक त्रिशतक सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– वीतरागी सर्वज्ञ जिन, हित उपदेशी नाथ।
हम अर्हंत व सिद्ध को, सदा झुकायें माथ॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे दशम अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– मोह विजेता सर्व जिन, उनको करूँ प्रणाम।
मोक्ष शास्त्र अध्याय दस, पढूँ नित्य अभिराम॥

(नरेन्द्र छंद)

मोह ज्ञान दर्शन आवरणी, अंतराय का क्षय जब हो।
चार घातिया का क्षय हो तब, केवल रवि उद्भाषित हो।।
बंध हेतुओं का अभाव व, पूर्ण निर्जरा जब-जब हो।
मोक्ष तत्त्व कहलाय वही जब, पूर्ण कर्म मल का क्षय हो।।1।।

औपशमिक आदि भावों का, और अभाव भव्यता का।
मोक्ष यही है सौख्य यही है, निश्चय से सब सिद्धों का।।
निज आतम के सहज गुणों का, होता नहीं अभाव कभी।
मुक्त जीव लोकान्त भाव तक, एक समय में जाय तभी।।2।।

पूर्व प्रयोग व संग अभावे, बंध छेद से ऊर्ध्वगमन।
ऊर्ध्वगामी गुण के कारण ही, सिद्ध करे लोकाग्र गमन।।
धर्म द्रव्य के ही अभाव में, होता नहीं अलोक गमन।
इसीलिये सब सिद्ध जिनेश्वर, लोक अंत में रहे मगन।।3।।

क्षेत्रकाल गति लिङ्ग अपेक्षा, उनमें भेद अनंते हैं।
पर स्वभाव गुणद्रव्य अपेक्षा, सब समान भगवंते हैं।।
नौ सूत्रों में मोक्ष तत्त्व का, सुन्दर वर्णन आया है।
उमास्वामी के उपकारों को, कोई चुका न पाया है।।4।।

दस अध्यायों में गुरुवर ने, सात तत्त्व समझाया है।
सूत्रबद्ध श्रुत रचना करके, मोक्ष मार्ग दर्शाया है।।
श्रुतकर्त्ता सब परम गुरु को, हम नित शीश झुकाते हैं।
त्रय गुप्ति से मुक्ति गमन हो, यही भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्याये नव सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– (1) ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्राय नमः स्वाहा।
(2) ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्राय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा– मोक्षशास्त्र श्री ग्रंथ पे, टीका ग्रंथ विशाल।
सब गुरुओं के चरण में, सदा झुकायें भाल॥

नरेन्द्र छंद

जिनने मोक्ष मार्ग बतलाया, उनको शीश झुकायें।
श्री गणधर व मुनिराजों को, हम सब मिलकर ध्यायें॥
अति उपकार गुरु का हम पे, जिनने ग्रंथ रचे हैं।
इन ग्रंथों के कारण हम सब, निश्चय आज बचे हैं॥1॥

प्रभु वाणी को गणधर झेले, उनसे गुरुवर पायें।
परम्परा से प्रभु की वाणी, गुरुवर लिखते जायें॥
जिनवाणी में क्या लिखा है, हमको समझ न आये।
गुरु ही प्रभुवर की वाणी को, सदा हमें समझायें॥2॥

जिसने प्रभु की वाणी समझी, वो भव से तिर जाये।
जो प्रभुवर की बात न समझे, वो भव भ्रमण बढ़ाये॥
सम्यक् दर्शन की परिभाषा, सारे गुरु बतायें।
सम्यक्दर्शन ही प्राणी को, मनु से प्रभु बनाये॥3॥

मोक्ष शास्त्र के ग्रंथ सृजेता, उमास्वामी गुरुदेवा।
श्री सर्वार्थ सिद्धी के कर्त्ता, पूज्यपाद गुरुदेवा॥
श्री तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिक, राजवार्तिक सुन्दर।
गंध हस्ति महाभाष्य ग्रन्थ है, अनुपम ज्ञान समुन्दर॥4॥

श्री तत्त्वार्थ सूत्र का व्रत हम, श्रद्धा से अपनायें।
दस उपवास करें हम इसके, ये ही गुरु बतायें।।
चतुर्दशी से शुरू करे व्रत, पूजा भव्य रचायें।
दश अध्याय पढ़ें जो निशदिन, अनशन का फल पाये।।5।।

सूत्र तीन सौ सत्तावन हैं, उनका पाठ करें हम।
मन–वच–काया शुद्धि पूर्वक, इसका जाप करें हम।।
विनय और भक्ति श्रद्धा से, इसको पढ़ते जायें।
गुरुवर कहते नित्य अहर्निश, इसका पाठ करायें।।6।।

ये विधान और यह व्रत हमको, बोधि समाधि दिलाये।
चारों गति के दुःख संकट से, हम को मुक्त कराये।।
उमास्वामी आचार्य गुरु के, पद हम शीश झुकायें।
गुप्ति समिति व्रत पालन कर हम, सिद्ध अवस्था पायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं तत्त्वार्थ सूत्र मोक्षशास्त्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

उमास्वामी आचार्य का अर्घ

(शेर छंद)

आचार्य उमास्वामी का ये ग्रंथ है महान्।
इस ग्रंथ को पढ़कर बने हम आपके समान।।
ऐसे गुरु को भक्ति से हम अर्घ चढ़ायें।
चरणों में शीश को झुका जयकार लगायें।

ॐ ह्रूँ मोक्षशास्त्र ग्रन्थकर्त्ता आचार्य श्री उमास्वामी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रशस्ति

(दोहा)

ऋषभदेव से वीर तक, चौबीसों भगवान।
जिनवाणी गणधर प्रभु, उनका लेते नाम॥1॥

देव–शास्त्र गुरुदेव को, कोटि–कोटि प्रणाम।
सरस्वती माँ को नमें, जपे उन्हीं का नाम॥2॥

धर्मतीर्थ में हैं अभी, आदिनाथ भगवान।
उनके चरणों में लिखा, मोक्षशास्त्र सुविधान॥3॥

इसके रचनाकार हैं, गृद्धपिच्छाचार्य।
सूत्रबद्ध इस ग्रंथ का, पाठ करें अनिवार्य॥4॥

चारों ही अनुयोग का, देता हमको ज्ञान।
श्रद्धा से हम नित पढ़ें, पायें सम्यक्ज्ञान॥5॥

महावीर कुंथु कनक, गुप्तिनंदी गुरुराज।
गुरुवर के आशीष से, पूर्ण होय सब काज॥6॥

सर्व भक्त यह व्रत करें, करके महा विधान।
'आस्था' से जिन भक्ति कर, करले मोक्ष प्रयाण॥7॥

॥ इतिअलम् ॥

मोक्षशास्त्र विधान की आरती

(तर्ज – चंदा तू ला रे चंदनिया..)

आओ मंदिर में आओ, प्रभुवर की आरती गाओ।
जिनवाणी माँ की करते आरती,
हो भगवन् हम सब उतारें प्रभु की आरती...

चौबीसों प्रभुवर के मुख से, निकली माँ जिनवाणी–2।
गणधर प्रभु की वाणी झेलें, लिख गये गुरुवर ज्ञानी–2।।
करते प्रभुवर की भक्ति, पाने दुःखों से मुक्ति–2
हम सब उतारे....

ग्रंथराज तत्त्वार्थ सूत्र ये, लिखा उमास्वामी ने–2।
इसी ग्रंथ पे लिखी अनेकों, टीकायें गुरुओं ने–2।।
ज्ञान की ज्योति पाये, भ्रमतम अपना विनशाये–2।
हम सब उतारे....

करें आरती इस विधान की, अपना भाग्य जगाने–2।
समता से त्रय गुप्ति समिति, धारें मुक्ति पाने–2।।
'आस्था' से जिनगुण गाये, श्रद्धा से शीश झुकायें–2
हम सब उतारे....

***

श्री णमोकार पूजा विधान

(गीता छंद)

सब मंत्र में जो श्रेष्ठ है वह मंत्र श्री नवकार है।
इसका ना आदि अंत है इस मंत्र की जयकार है।।
जिस मंत्र से उत्पन्न है चौरासी लख जिन मंत्र ये।
आह्वान हम इसका करें ये मंत्र-यंत्र व तंत्र है।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञ मुख समुद्भूत अनादिनिधन श्री अपराजित नाम मंत्राधिराज ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शेर छंद)

परमेष्ठी सर्व ॐ मंत्र में ही समाये।
हम ॐ ह्रीं बोलकर ही नीर चढ़ाये।।
णवकार महामंत्र का हम ध्यान लगायें।
उत्साह भक्ति भाव से विधान रचायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय शांति पुष्टयर्थं पवित्रतर जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरण कमल में भव्य गंध लगाये।
मंत्रित हुई वह गंध अपने शीश लगाये।। णवकार..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

एकाक्षरी ये मंत्र सिर्फ ॐ कहाये।
हम पाँच पुञ्ज अक्षतों के श्रेष्ठ चढ़ायें।। णवकार..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा व मंत्र जाप में हम ॐ बोलते।
पुष्पाञ्जलि चढ़ाके कर्म ग्रंथि खोलते।। णवकार..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐकार रूप में खिरे जिनवर की देशना।
नैवेद्य चढ़ा हम नशे क्षुधादि वेदना।।
णवकार महामंत्र का हम ध्यान लगायें।
उत्साह भक्ति भाव से विधान रचायें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन की करे भक्ति से भक्त नित्य आरती।
ये आरति हमारा मोहतम निवारती।। णवकार..।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पैंतीस अक्षरों को हम नमन करें त्रिकाल।
ये धूप ही नशाये सर्व कर्म का बवाल[1]।। णवकार..।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब अनादि मंत्र की महार्चना करें।
पाने को मंत्र शक्ति हम फलार्चना करें।। णवकार..।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से णमोकार का विधान हम करें।
उत्तम मनोज्ञ अर्घ सजा नृत्य हम करें।। णवकार..।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– परमेष्ठी पाँचों प्रभु, वंदनीय त्रिकाल।
शांतिधारा हम करें, और चढ़ाये माल।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र – णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

1. आफत, परेशानी।

जयमाला

दोहा– णमोकार यह मंत्र है, जिसके नाम अनेक।
इसकी जयमाला पढ़ें, पाने शिव सुख एक।।

(शंभु छंद)

सुख सन्तति धन वैभव मिलता, इस महामंत्र को पढ़ने से।
ऋद्धि–सिद्धि यश कीर्ति बढ़े, इस महामंत्र को पढ़ने से।।
सम्पूर्ण पाप क्षय होते हैं, इस महामंत्र को पढ़ने से।
अरहंत सिद्ध बन जाते हैं, इस महामंत्र को पढ़ने से।।1।।

अपमृत्यु भी टल जाती है, इस णमोकार को पढ़ने से।
हो जाय समाधि समता से, इस णमोकार को पढ़ने से।।
दृष्टि विकार नहीं होता है, इस णमोकार को पढ़ने से।
सर्वांग सुरक्षित होता है, इस णमोकार को पढ़ने से।।2।।

नवग्रह भी सब अनुकूल बने, इस णमोकार को पढ़ने से।
नश जाय कुमंत्रों का प्रयोग, इस णमोकार को पढ़ने से।।
जादु मंत्रर मुठादि नशे, इस णमोकार को पढ़ने से।
कर्जा उतरे व्यापार बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से।।3।।

विषधर का विष अमृत होवे, इस णमोकार को पढ़ने से।
वैरी भी उत्तम मित्र बने, इस णमोकार को पढ़ने से।।
साधक के मैत्री भाव बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से।
सुख–शांति और आनंद बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से।।4।।

डाकिन–शाकिन–भूतादि भगे, इस णमोकार को पढ़ने से।
भयभीत जीव निर्भय होते, इस णमोकार को पढ़ने से।।

आँधी तूफाँ में प्राण बचे, इस णमोकार को पढ़ने से।
बिजली भूकम्प व बाढ़ नशे, इस णमोकार को पढ़ने से।।5।।
सब विद्यायें हो जाय सिद्ध, इस णमोकार को पढ़ने से।
प्रतिभा सम्पन्न सभी बनते, इस णमोकार को पढ़ने से।।
हर जगह सफलता मिलती है, इस णमोकार को पढ़ने से।
सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं, इस णमोकार को पढ़ने से।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम ब्रह्मणे अनंतानंत ज्ञान शक्तये णमोकार महामंत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

चलते-फिरते सोते-उठते, खाते-पीते जाप करें।
तीव्र वेदना या संकट में, हरपल मन में जाप करें।।
मानस वाचिक या कायिक हम, णमोकार का जाप करें।
'आस्था' से हम ये विधान कर, सारे संकट पाप हरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलम्।।

इति पंच परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो पंचागप्रणामः कुर्यात्।

(शंभु छंद)

हे पाँच पदों को नमस्कार, यह नमस्कार सब पाप हरें।
सबका मंगल करने वाला, सम्पूर्ण अमंगल दूर करें।।
मंगल में पहला मंगल है, इस मंगल को है नमस्कार।
अरिहंत सिद्ध सूरि पाठक, सब मुनिराजों को नमस्कार।।

(यहाँ सिर झुकाकर नमस्कार करना चाहिये।)

विधान प्रारम्भ

(दोहा)

महामंत्र णवकार को, पढ़े सुने जो कोय।
स्वर्गादिक व मोक्ष में, उसकी सद्गति होय।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

णमो अरहंताणं के अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

ण– णमोकार में सर्व प्रथम हम, अरिहंतों को ध्यायें।
ॐ णमो अरिहंताणं को, पहले अर्घ चढ़ाये।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, श्री अरिहंत कहाते।
हम सब इन अरिहंत प्रभु की, पूजा कर हर्षाते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोक्ष मार्ग के सच्चे नेता, सबको मार्ग बताते।
मोह कर्म को नाशे भगवन, सुख अनंत को पाते।। वीतराग..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अ– अतिशयकारी जिन प्रतिमायें, अतिशय नित दिखलायें।
चारों पुरुषार्थों की सिद्धि, अर्हत् भक्ति कराये।। वीतराग..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र– रक्षक ही रक्षा करता है, और करे ना कोई।
तुमसे बढ़कर रक्षक जग में, और कभी ना होई।। वीतराग..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'र' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हं– हनन किया कर्मों का प्रभु ने, चार घातियाँ नाशे।
केवलज्ञानी श्री प्रभुवर के, सर्व चराचर भाषे।। वीतराग..।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ता– तारणहारे तुम हो स्वामी, सबको तुमने तारा।
तुमको तारणहार समझकर, हमने लिया सहारा।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, श्री अरिहंत कहाते।
हम सब इन अरिहंत प्रभु की, पूजा कर हर्षाते।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ता' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– नमन करें सब अरिहंतों को, चार चतुष्टय धारी।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, हम सबके उपकारी।। वीतराग.. ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

तीन लोक त्रयकालवर्ती सब, अरिहंतों को ध्यायें।
णमो अरिहंताणं पद को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।
तीर्थंकर उपसर्ग अन्तकृत, मुक और सामान्य प्रभु।
समुद्घात अनुबद्ध केवली, ये सातों अर्हंत् प्रभु।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो अरिहंताणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो सिद्धाणं के अर्घ

दोहा– दूजा पद णवकार का, उसमें हैं प्रभु सिद्ध !।
सिद्ध प्रभु को हम भजें, बन जायें हम सिद्ध।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

ण– णमोकार यह मंत्र, सर्व सुखों का दाता।
ये ही मंगल श्रेष्ठ, ये ही शरण कहाता।।

ॐ नमः सिद्धाय, हम यह ध्यान लगायें।
सब सिद्धों को पूज, आतम शक्ति जगायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोहादि वसु कर्म, सर्व सिद्ध विनशायें।
गुण अनंत विध रूप, सहज प्रगट हो जाये।। ॐ नमः।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सि– सिद्ध हुये जो नाथ, फिर जग में ना आयें।
उन सिद्धों को आज, हम सब अर्घ चढ़ायें।। ॐ नमः।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सि' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्धा– ध्यान बताये चार, उसमें दो उपयोगी।
धर्म शुक्ल को ध्याय, हम भी बने अयोगी।। ॐ नमः।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'द्धा' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– णमोकार का जाप, सिद्ध भक्ति हम बोलें।
सर्व सिद्धि के हेत, अन्तर्मन को धोले।। ॐ नमः।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

पंचरंगी ध्वज एक हाथ में, दूजे कर में थाली।
पंच अक्षरी प्रभु की पूजा, देती है खुशहाली।।
ॐ णमो सिद्धाणं पद का, जाप करें सुख पायें।
पंच परावर्तन को नशने, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो सिद्धाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो आयरियाणं के अर्घ

दोहा– अमृत रस बरसे सदा, देते गुरुवर ज्ञान।
गुरु का सद उपदेश ही, देता सम्यक् ज्ञान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

ण– णमोकार की शक्ति अपरम्पार है।
वंदन करते हम इसको त्रय बार है।।
णमो आइरियाणं की पूजा करें।
ये आचार्य हमारे सारे दुःख हरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोक्ष महल पाने करते गुरु साधना।
उन आचार्यों की करते आराधना।। णमो...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आ– आचार्यों को भक्ति से हम दान दें।
परम्परा से दान मोक्ष स्थान दें।। णमो...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इ– इन्द्रिय मन को इन गुरुओं ने वश किया।
तप संयम समता से तन को कृश किया।। णमो...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'इ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रि– रिद्धि सिद्धि धारी श्री गुरुवर को नमन।
भाव भक्ति से करते हम उनका भजन।। णमो...।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रि' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या– याद करें हम सुख–दुःख में गुरु नाम को।
त्रय भक्ति से उनको नित्य प्रणाम हो।। णमो...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'या' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– णमोकार का जाप करें नो बार हम।
चलते – फिरते ध्यायें बारम्बार हम।।
णमो आइरियाणं की पूजा करें।
ये आचार्य हमारे सारे दुःख हरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

सप्तअक्षरी पूजा तीजी, णमो आइरियाणं की।
जय बोले पंचाचारी की, णमो आइरियाणं की।।
मोक्ष मार्ग के हित उपदेशक, श्री आचार्य हमारे।
ये पूर्णार्घ चढ़ाने हम सब, आये गुरु के द्वारे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो आइरियाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो उवज्झायाणं के अर्घ

(दोहा)

शिक्षक पाठक ये गुरु, देते सम्यक् सीख।
ये जग तारण तरण हैं, इन्हें नमावे शीश।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

(चौपाई)

ण– णमोकार ये मंत्र हमारा, इसी मंत्र ने सबको तारा।
महामंत्र को मन से ध्यायें, भाव सहित हम अर्घ चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोक्ष मार्ग का पाठ पढ़ाते, वे ऋषिवर शिक्षक कहलाते।
हम सब उनको अर्घ चढ़ायें, उन सम प्रज्ञा दीप जलायें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उ– उपाध्याय गुरु शिक्षा देते, शिष्य शरण में शिक्षा लेते।
चारों ही अनुयोग पढ़ाते, हम सब उनको अर्घ चढ़ाते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व– वसु विधि द्रव्य सजाकर लाये, वसुधा अष्टम हम सब पायें।
अंत समय मुनियों का आये, यही मंत्र मुनि उन्हें सुनाये।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्झा– ज्झाण[1] ज्झयण[2] तुम्हारी चर्या, भक्त कराते उनकी चर्या।
छम–छम घुंघरु वाद्य बजाते, उनको अर्घ मनोज्ञ चढ़ाते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ज्झा' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या– याद गुरु की हमको आये, गुरु बिन हमको कौन तिराये।
सर्व दुःखों से गुरु बचाये, उनको हम सब अर्घ चढ़ायें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'या' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– णमोकार यह मंत्र अनादी, इसने मेटी सबकी व्याधी।
उपाध्याय भगवान हमारे, इनकी पूजा कष्ट निवारे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

ॐ णमो उवज्झायाणं की, सप्त अक्षरी पूजा।
सप्त परम स्थान दिलाये, पाठक गुरु की पूजा।।
करें विधान विधिपूर्वक हम, सुखद सुफल पा जाये।
त्रयकालिक सब उपाध्याय को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो उवज्झायाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ज्ञान, 2. ध्यान।

दोहा- णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।
।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो लोए सव्व साहूणं के अर्घ

दोहा- सर्व परिग्रह जो तजे, विषयों से जो दूर।
ज्ञान ध्यान तप नित करे, करें कर्म चकचूर।।
अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

(शेर छंद)

ण- णवकार महामंत्र का हम जाप करेंगे।
पूजन विधान जाप करके पाप हरेंगे।।
णमोकार महामंत्र की विशेष अर्चना।
मम सर्व कर्म को हरे ये मंत्र अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो- मोदक चढ़ाये मोक्ष पाने मोद भाव से।
पूजा से परम पुण्य मिले मोद भाव से।। णमोकार...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लो- लोभादि कषायें नशाने जो मुनि बने।
ऐसे गुरु को द्रव्य हम, चढ़ायें अनगिने।। णमोकार...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'लो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ए- एकत्व आदि भावना मुनिराज भा रहे।
एकाक्षरी में एं बीजाक्षर को ध्या रहे।। णमोकार...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ए' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स- सम्यक्त्व की सुगंध मुनिराज में मिले।
हमको गुरु की वाणी से, सम्यक् निधि मिले।। णमोकार...।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व– वरदान हमें धर्म का प्रदान कीजिये।
जिनधर्म में बुद्धि रहे आशीष दीजिये।।
णमोकार महामंत्र की विशेष अर्चना।
मम सर्व कर्म को हरे ये मंत्र अर्चना।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व्व' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा– साधु जहाँ चरण धरे वो तीर्थ धाम है।
साधु की साधना को कोटीशः प्रणाम है ।। णमोकार...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हू– हुये यहाँ उपसर्ग मुनिराज पे कभी।
समता धरे उपसर्ग सहे वे मुनि सभी।। णमोकार...।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हू' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– णमोकार की यह कार हमें मोक्ष दिलाये।
यह कार दुर्गतियों के दुःखों से बचाये।। णमोकार...।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

नव अक्षर का अंतिम पद ये, नवग्रह दोष मिटाये।
अंतिम पद के नव अक्षर में, सर्व साधु सब आये।।
क्रुर ग्रहों की प्रतिकूलता, सर्व साधु विनशाये।
उन गुरुओं के चरण कमल में, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो लोए सव्व साहूणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पाँचों परमेष्ठियों का पूर्णार्घ

(शंभु छंद)

पैंतीस अक्षर की पूजा में, पाँचों परमेष्ठी हम ध्यायें।
चल अचल तीर्थ के परमेश्वर, ये सर्व अमंगल विनशाये।।
पैंतिस फल ध्वज पैंतिस दीपक, पैंतीस मिठायी मालायें।
पैंतीस अर्घ की थाल सजा, पूर्णार्घ चढ़ाने हम आये।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम ब्रह्मणे पंच परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

णमोकार महामंत्र में, परमेष्ठी भगवान।
मंगल उत्तम शरण में, ये ही सब भगवान।।
शांति करो सब लोक में, करें प्रार्थना आज।
पुष्पों की माला चढ़ा, धन्य हुये हम आज।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

**जाप्य मंत्र– (1) णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा।।**

(2) ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें पंचरंगी पुष्प या धूप लवंग चढ़ाकर)

समुच्चय जयमाला

घत्ता– महामंत्र हमारा, हमको प्यारा, इसकी जयमाला गायें।
यह मंत्र श्रवणकर, पठन मनन कर, जनम–मरण दुःख मिट जाये।।

(शंभु छंद)

इस ढ़ाई द्वीप में तीन लोक में, पाँचों परमेष्ठी होते।
ये मंगल उत्तम और शरण, पाँचों ही पद में ये होते।।

इस महामंत्र को नमस्कार, सब परमेष्ठी को नमस्कार।
अरिहंत सिद्ध सूरि पाठक, साधुगण को हैं नमस्कार॥1॥

श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हित उपदेशक जग के स्वामी।
अष्टादश दोष विमुक्त प्रभो, अरिहंत देव अन्तर्यामी॥
आठों कर्मों से रहित सिद्ध, बसते शाश्वत सिद्धालय में।
सिद्धों की सिद्ध भक्ति करते, पूजा करते भक्ति लय से॥2॥

शिष्यों को शिक्षा–दीक्षा दे, पालन–पोषण सबका करते।
छत्तीस मूलगुण के धारी, आचार्यों को वंदन करते॥
जो पढ़े–पढ़ावे रात दिवस, वो उपाध्याय कहलाते हैं।
आगम ही जिनके चक्षु हैं, उन मुनियों के गुण गाते हैं॥3॥

पाँचों पद के पैंतीस अक्षर, मात्रा होती है अट्ठावन।
स्वर चौंतिस कहते मंत्र विज्ञ, और तीस बताये हैं व्यंजन॥
स्वर व्यंजन दोनों चौंसठ है, श्रुतज्ञान का विरलन भी चौंसठ।
श्री द्वादशांग जिनवाणी के, श्रुतज्ञानाक्षर होते चौंसठ॥4॥

मन–वच–काया से ध्यान लगा, इस महामंत्र का जाप करें।
प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में, हम णमोकार का पाठ करें॥
बच्चों को जैन बनाते जब, उसको नवकार सुनाते हैं।
जीवन का अंत समय आवे, तब भी णवकार सुनाते हैं॥5॥

जिसने श्रद्धा से मंत्र सुना, उसका निश्चय उद्धार हुआ।
आगे–पीछे पढ़ सुनकर भी, हर प्राणी भव से पार हुआ॥
अंजन तस्कर ने मंत्र जपा, सिद्धात्म निरंजन पद पाया।
इससे ही सेठ सुदर्शन ने, शूली से सिंहासन पाया॥6॥

सीता सोमा चंदन मैना, द्रोपदी मनोरम मनोवती।
अंजना सुन्दरी आदिक ने, इसको ध्या पाई उच्च गती॥

कपि श्वान बैल गज सिंह नाग, इन सबने भी नवकार सुना।
इस मंत्रराज की महिमा से, मर करके उत्तम स्वर्ग चुना।।7।।

इस णमोकार के व्रत में जो, पैंतीस श्रेष्ठ उपवास करें।
व्रत के अतिशय से मुनिव्रत पा, अविराम आत्म उत्थान करें।।
आषाढ़ सुदी सप्तम तिथि से, इस व्रत को हम प्रारम्भ करें।
फिर डेढ़ वर्ष तक यह व्रत कर, उद्यापन से सम्पूर्ण करें।।8।।

सुख–दुःख दोनों ही घड़ियों में, हम णमोकार का जाप करें।
इक महामंत्र ही ऐसा है, इसका कैसा भी जाप करें।।
मन–वच–काया त्रय गुप्ति से, इक माला तो निशदिन फेरे।
'आस्था' भी शिवसुख पा जाये, यह मंत्र बसे अंतस मेरे।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख, अशांति, क्लेश, पाप, ताप, संकट, पीड़ा, रोग, शोक, कष्ट, अपमृत्यु, अपघात, तनाव, चिंता, उपसर्ग, दुर्भिक्ष, विवाद, आधि–व्याधि, शारीरिक, मानसिक कर्म, कोरोना ज्वारादि निवारणाय, सुख–शांति आरोग्य, धन, सुत संपत्ति, ऋद्धि–सिद्धि जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय पंच परम पद दायक श्री णमोकार महामंत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

महामंत्र के इस विधान से, अपने कष्ट मिटाये।
आज्ञाकारी सुत व नारी, धन–यश–कीर्ति पाये।।
ऋद्धि–सिद्धि सुख शांति पाकर, धर्म प्रभाव बढ़ाये।
सर्व कामना पूर्ण करें ये, शिव साम्राज्य दिलाये।।

दोहा– **णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।**
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

विधान की प्रशस्ति

दोहा

आदि शांति पारस प्रभु, नमूँ वीर भगवान।
पाँचों परमेष्ठी प्रभु, कर दो मम कल्याण।।1।।

जिनवाणी माँ दो मुझे, सद्बुद्धि सद्ज्ञान।
गणधर प्रभु की भक्ति से, पूर्ण करूँ अभियान।।2।।

महावीर कुंथु कनक, गुप्तिनंदी गुरुराय।
सब गुरुओं के चरण में, आस्था शीश झुकाय।।3।।

गुरु पूर्णिमा से लिखा, श्री नवकार विधान।
अल्प समय में हो गया, मंगल मंत्र विधान।।4।।

इस अपराजित मंत्र का, होवे सदा विधान।
जब तक सूरज चाँद है, भक्त करें कल्याण।।5।।

भक्ति भाव के वश लिखा, श्री नवकार विधान।
छंद ज्ञान मुझको नहीं, क्षमा करें विद्वान।।6।।

आस्था से 'आस्था' जपे, महामंत्र णवकार।
ॐ ॐ जपते-जपते, हो 'आस्था' भव पार।।7।।

'इति अलम्'

णमोकार विधान की आरती

(तर्ज : सगला चालो रे, इंजन की सीटी में...)

आओ–आओ रे प्रभु के द्वारे चले आओ, चले आओ।
ढ़ोल मंजीरा घुँघरु लेकर आरती गाओ।। आओ–आओ रे....

1. इस विधान की आरती में हम, मंगल वाद्य बजाये।
महामंत्र की आरती करने, पैंतीस द्वीप जलाये।।
आओ–आओ रे...

2. महामंत्र ये मंगलकारी, सबका कष्ट मिटाये।
श्रद्धा से जो पाठ करे तो, सब संकट टल जाये।।
आओ–आओ रे....

3. सब कुछ भूले भले प्रभो हम, मंत्र भूल ना जाये।
ये ही प्रभु वरदान हमें दो, णमोकार को ध्याये।।
आओ–आओ रे....

4. सोते–उठते, चलते–फिरते, महामंत्र को ध्याये।
अंत समय भी णमोकार जप, अंतिम पद पा जाये।।
आओ–आओ रे...

5. सबसे प्यारा मंत्र हमारा, ॐ णमो सुखकारी।
'आस्थाश्री' भी त्रिगुप्ति से, भक्ति करे तुम्हारी।।
आओ–आओ रे....

***

आदिनाथ भगवान की स्तुति

(चामर छन्द)

मैं सदा-सदा नमूँ, जिनेश आदिनाथ को।
श्री मुनीश वा जगीश, देव आदिनाथ को॥
हे जिनेश ! हे जिनेश !, आपको प्रणाम है।
आपके सुवाक्य ही, त्रिलोक में प्रमाण है॥1॥

आदिनाथ आदिनाथ, आप व्याधियाँ हरें।
आदिनाथ जाप से, दु:खादि व्याधियाँ हरें॥
पुण्य के प्रताप से, सुकर्म भूमि आ गई।
सर्वलोक में विशेष धर्म कीर्ति छा गई॥2॥

श्रेष्ठ हैं सुज्येष्ठ हैं, जिनेश सर्वश्रेष्ठ हैं।
तीन लोक के महेश, आप सर्वश्रेष्ठ हैं॥
आपके सुनाम से, सुदीप ज्ञान के जलें।
रोग शोक नाश हेत, भक्त पूजते चले॥3॥

कुष्ठ रोग सूरि वादिराज, का मिटा दिया।
स्तोत्र का प्रभाव नाथ, आपने दिखा दिया॥
नाथ आप हो जहाँ, कमाल ही कमाल हो।
आप के प्रभाव से, अकाल भी सुकाल हो॥4॥

कीर्ति आप नाम की, त्रिलोक में प्रसिद्ध हो।
आप भक्ति से जिनेन्द्र, भक्त लोक सिद्ध हो॥
मैं सदा-सदा नमूँ, जिनेश आदिनाथ को।
श्री मुनीश वा जगीश, देव आदिनाथ को॥5॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

एकीभाव पूजा विधान

श्री आदिनाथ पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

आदिनाथ प्रभुवर का हम सब, भक्ति से जयकार करें।
हाथों में पुष्पाञ्जलि लेकर, आह्वानन हम आज करें।।
नाभिराय के कुलदीपक को, सौ–सौ इन्द्र सदा नमते।
गणधर सुर असुरों से पूजित, ऋषभदेव को हम भजते।।

ॐ ह्रीं श्री युगब्रह्मा, युगपुरुष, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं शतेन्द्र पूजित सहस्रनाम धारक आद्य जिनेश्वर श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक विभूषित कल्याणकारक धर्मतीर्थ प्रवर्तक श्री आदिनाथ ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

भर भरके कुंभ इक हजार आठ लायेंगे।
पाण्डुक शिला पे नाथ का न्हवन करायेंगे।।
देवों के देव ऋषभदेव से है प्रार्थना।
मुनिराज वादिराज जैसी हो प्रभावना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को लगाये गंध शेष शीश जो धरें।
वो कामदेव के समान देह को वरें।। देवों के देव...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अतुल्य शक्तिवान आदि जिनेशा।
मोती व अक्षतों से भजे भक्त हमेशा।। देवों के देव...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल थल वा स्वर्ण रत्न के, ये पुष्प चुनाये।
प्रभु के पवित्र पाद चढ़ा भाग्य जगायें।।
देवों के देव ऋषभदेव से है प्रार्थना।
मुनिराज वादिराज जैसी हो प्रभावना।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्मास का उपवास किया आपने प्रभो।
षट् रसमयी व्यंजन चढ़ायें आपको विभो।। देवों के देव... ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये लाख-लाख दीप लेके नृत्य हम करें।
कैवल्य ज्योति पाने आज आरती करें।। देवों के देव... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपके समान बनने धूप चढ़ाऊँ।
आठों करम को नाशने मैं भक्ति रचाऊँ।। देवों के देव... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फलों से अर्चना जिनदेव आपकी।
सर्वोच्च फल दिलाये एक भक्ति आपकी।। देवों के देव... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य से भजें प्रभु को इन्द्र नरेशा।
भक्ति से भक्त पूजते हैं आदि जिनेशा।। देवों के देव... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सरवर सरिता का सरस, लाया भरकर नीर।
त्रय लोकों में शांति हो, हरो नाथ सब पीर।।

शांतये शांतिधारा......

दोहा- समवशरण में नाथ पे, बरसे पुष्प अपार।
श्री विहार में सुर रचे, हेम पद्म मनहार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

(घत्ता)

श्री प्रथम जिनेशा, नमित सुरेशा, आद्यबंधु आदीश्वर जिन।
जयमाल रचायें, पुण्य बढ़ायें, प्रभु को ध्यायें हम निशदिन।।

(दोहा)

आदिनाथ भगवान की, बोलें जय-जयकार।
ऋषभदेव जिनराज को, वंदन बारम्बार।।1।।

नाभिराय के लाल ने, किया जगत कल्याण।
मरुदेवी सुत वृषभ जिन, बने ज्येष्ठ भगवान।।2।।

श्री अवधेश्वर नाथ का, हुआ अवध अवतार।
शांति हुई त्रयलोक में, खुशियाँ अपरम्पार।।3।।

मतिश्रुत अवधिज्ञान युत, होता गर्भ कल्याण।
होता मेरु पे न्हवन, दूजा जन्म कल्याण।।4।।

लौकान्तिक सुर मना रहे, प्रभु का तप कल्याण।
दिव्य देशना हो जहाँ, वही ज्ञान कल्याण।।5।।

सुरगण चार निकाय के, पूजें मोक्ष कल्याण।
निज को प्रभु ने पा लिया, करके मोक्ष प्रयाण।।6।।

युग को युग कर्त्ता मिले, युगब्रह्मा है नाम।
युग को परिवर्तित किया, सुर-नर करें प्रणाम।।7।।

असि मसि कृषि वाणिज्य ये, शिल्प कला का ज्ञान।
षट् कर्मों के ज्ञान से, बचे जीव के प्राण।।8।।

एक शतक सुत को दिया, अस्त्र-शस्त्र विज्ञान।
राजसुता द्वय को दिया, युगल लिपि का ज्ञान।।9।।

महिमा आदिनाथ की, जग में अति विशाल।
नर-सुर गुण ना गा सकें, इन्द्र झुकाये भाल।।10।।

प्रतिमा प्रभु की है जहाँ, अतिशय हुये महान्।
अति उत्तुंग मनोज्ञ हैं, बावनगज भगवान।।11।।

भातकुली अपराजिता, धर्मतीर्थ कैलाश।
ऋषभदेव ऋषिकेश वा, कुंडलपुर में वास।।12।।

रानीला, कुरुक्षेत्र वा, अष्टापद व प्रयाग।
सर्वक्षेत्र को पूजता, जय जय बद्रीनाथ।।13।।

वादिराज ऋषिराज ने, ध्याया तुम्हें त्रिकाल।
एकीभाव विधान से, कुष्ठ मिटा तत्काल।।14।।

मन मेरा प्रभु में रंगा, ना उतरे ये रंग।
मन वच काया गुप्ति से, पाऊँ प्रभु का संग।।15।।

ऋषभदेव का नाम ही, आदिनाथ जगदीश।
भक्ति रस पाने प्रभु, 'आस्था' है नत शीश।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वरोग, शोक, दुःख, संकट, पीड़ा, कष्ट, क्लेश, अशांति, तनाव, चिंता, अपमृत्यु, टेंशन, कैंसर, कोरोना रोग, सर्व ज्वरादि विनाशनाय, सुख-शांति, आरोग्य, ऋद्धि-सिद्धि, यश-कीर्ति, धन-धान्य, ऐश्वर्य जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

नगर अयोध्या नाथ, ऋषभदेव भगवान ये।
जय-जय आदिनाथ, प्रथम सूर्य को है नमन।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान प्रारम्भ

दोहा– एकीभाव विधान हम, करें भक्ति के साथ।
रोग-शोक संकट हरें, जिनवर आदिनाथ।।

(अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(1) कर्म बंधन विनाशक

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्मबन्धो,
घोरं दुःखं भवभवगतो दुर्निवारः करोति।
तस्याप्यस्य, त्वयि जिनरवे भक्तिरुन्मुक्तये चेत्,
जेतुं शक्यो भवति न तया कोऽवरस्ताप हेतुः।।1।।

(नरेन्द्र छंद)

एकीभाव को प्राप्त हुये ये, आठों कर्म दुःखी करते।
बड़े भयानक बड़े कठिन हैं, भव-भव में ताड़ित करते।।
श्री जिनेन्द्र वे ज्ञानसूर्य हैं, भव-भव के संताप हरें।
भक्ति की शक्ति से भविजन, अपने भवदुःख पाप हरें।।1।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) हृदय रोग निवारक, विद्या प्रदायक

ज्योतीरूपं दुरितनिवह ध्वांत विध्वंस हेतुं,
त्वामेवाहु र्जिनवर चिरं तत्त्वविद्याभियुक्ताः।
चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्रासमान,
स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमोवस्तुतो वस्तुमीष्टे।।2।।

श्रेष्ठ जिनेश्वर ज्ञान दिवाकर, ज्योतिर्मय जिनको कहते।
मुनियों के गणस्वामी जिनको, विद्या वाचस्पति कहते।।
विद्याधन धारी मेरे उर, ज्योतिपुंज बन चमक रहे।
जिसके मन जिननाथ विराजे, पाप वहाँ ना कभी रहे।।2।।

ॐ ह्रीं पापान्धकार विनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3) आनंद प्रदायक, विषहारक

आनन्दाश्रुस्नपित वदनं गद्गदं चाभिजल्पन्,
यश्चायेत त्वयि दृढ़मनाः स्तोत्रमंत्रैर्भवन्तम्।
तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देहवल्मीकमध्यान्,
निष्कास्यंते विविधविषमव्याधयः काद्रवेयाः।।3।।

आनंद अश्रु जब-जब निकले, मुख प्रक्षालन कर देते।
उसी तरह प्रभु की पूजन से, मन प्रक्षालन कर देते।।
मंत्रों की शक्ति वश अहि भी, वामी से बाहर आते।
जिन तेरे स्तोत्र मंत्र से, रोग काय के मिट जाते।।3।।

ॐ ह्रीं विषम व्याधि निष्कासन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4) कुष्ठ रोग निवारक, कंचन देह प्रदायक

प्रागेवेह, त्रिदिव भवनादेष्यता भव्य पुण्यात्,
पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव निन्येत्वयेदं।
ध्यानद्वारं मम रुचिकरं स्वान्तगेहं प्रविष्ट-,
स्तत्किं चित्रं जिनवपुरिदं यत्सुवर्णी करोषि।।4।।

स्वर्ग लोक से च्युत हो जिनवर, माता के उर में आते।
छः महीने से पूर्व देवगण, भू सोने से चमकाते।।
मैंने सुन्दर मन मंदिर में, तुम्हें बिठाकर ध्यान किया।
ये कोई आश्चर्य नहीं तन, कुष्ठ रोग से मुक्त हुआ।।4।।

ॐ ह्रीं भाक्तिकेषु तनुसुवर्णी करण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5) क्लेश निवारक

लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन्निर्निमित्तेन बन्धु–
स्तवय्येवासौ सकलविषया शक्तिरप्रत्यनीका।
भक्तिस्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्तशय्यां
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयूथं सहेथाः ॥5॥

संसारी प्राणी के जिनवर, आप अकारण बंधु हैं।
सर्वज्ञेय की शक्ति जिनमें, निराबाध दृढ़ बंधु हैं॥
भक्ति रत जिन–जिन भक्तों की, मन शैय्या पर आप रहे।
दुःख समूह वहाँ कैसे हो, क्यों कर वो दुःख शोक सहे॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वक्लेश विनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6) ज्वरशामक, दाह–ताप निवारक

जन्माटव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा,
प्राप्तैवेयं तव नयकथा स्फारपीयूष वापी।
तस्या मध्ये हिमकर हिमव्यूह शीते नितान्तं,
निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःखदावोपतापाः॥6॥

किसी समय मैं भव अटवी में, दीर्घ काल तक भरमाया।
तभी आप नय कथा रूप की, अमृत वाणी को पाया॥
उस वापी में डुबकी लेता, दुःख संताप मिटाने को।
दुःख दावानल यहीं मिटेंगे, यह निश्चय कर जाने को॥6॥

ॐ ह्रीं दुःख दावोपतापशांतकरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7) कल्याणकारक

पादन्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं,
हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः।
सर्वाङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे,
श्रेयः किं तत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति॥7॥

श्री विहार करते जब जिनवर, पावन तीनों लोक बने।
कमल रचे प्रभु के चरणों तल, कनक कमल श्रीवास बने॥
हे परमेश्वर ! सर्व अङ्ग से, मन से मैं संस्पर्श करूँ।
मेरा अब कल्याण करो जिन, प्रतिदिन प्रतिपल ध्यान करूँ॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वश्रेयः प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8) वचन संबंधी दोष-रोग निवारक

पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्तिपात्र्या पिबन्तं,
कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्दधाम प्रविष्टम्।
त्वां दुर्वारस्मरमदहरं त्वत्प्रसादैक भूमिं-,
क्रूराकाराः कथमिवरुजा कण्टका निर्लुठन्ति॥8॥

कर्म काष्ठ को नष्ट किया है, मदन विजेता कहलाते।
कर्म समूल जलाकर जिनवर, अनुपम सुख शांति पाते॥
भक्ति का ले पात्र हाथ में, वचनामृत पीने आये।
तव प्रसाद से क्रूर रोग भी, सौम्य फूल सम बन जाये॥8॥

ॐ ह्रीं दुर्वाररोग निवारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9) मानहारक

पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्नमूर्तिः,
मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्नवर्गः।
दृष्टिं प्राप्तो हरति स कथं मानरोगं नराणां,
प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्ति हेतुः॥9॥

रत्नमयी पाषाण रत्न का, मानस्तम्भ बना सुन्दर।
अन्य रत्न भी बड़े मनोहर, फिर भी है उनमें अन्तर॥
मानहरण का अद्भुत अतिशय, तव सन्निधि से होता है।
तुम दर्शन से वंचित दुर्भग, क्या ऐसा सुख पाता है॥9॥

ॐ ह्रीं भाक्तिक जनमानरोगहरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10) खाज खुजली–चर्मरोग निवारक

हृद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्तिशैलोपवाही
सद्यः पुसां निरवधिरुजाधूलिबन्धं धुनोति।
ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टस्,
तस्याशक्यः क इह भुवने देव लोकोपकारः॥10॥

हे जिनवर ! तुम तन को छूकर, जिस जिस दिश में हवा बहे।
वहाँ सर्व पुरुषों के तत्क्षण, रोग धूलि सम दूर बहे॥
ध्यानमग्न हो मन पंकज पर, जो तुमको बैठाता है।
सर्वलोक उपचार कार्य में, वो समर्थ हो जाता है॥10॥

ॐ ह्रीं निरवधि रोग धूलि धुन्वन् समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11) क्रोध उपशामक, भव दुःख निवारक

जानासि त्वं मम भवभवे यच्च यादृक्च दुःखं,
जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि।
त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या,
यत्कर्त्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम्॥11॥

भव–भव की मेरी सब पीड़ा, हे जिनवर ! तुम जान रहे।
जिनका सुमिरन मेरे मन में, शस्त्र सरीखे साल रहें॥
तुम सर्वेश्वर कृपावान हो, भक्त आय तेरे चरणा।
जो कुछ करना करो आप ही, तुम ही हो उत्तम शरणा॥11॥

ॐ ह्रीं भव–भव दुःखनिवारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12) लक्ष्मी प्रदायक

प्रापद्दैवं तवनुति पदैर्जीवकेनोपदिष्टैः
पापाचारी मरणसमये सारमेयोऽपि सौख्यं।
कः संदेहो यदुपलभते वासवश्रीप्रभुत्वं
जल्पन् जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रं॥12॥

पापाचारी सारमेय ने, जीवन्धर से मंत्र सुना।
महामंत्र को सुनने से ही, मरकर कुत्ता देव बना॥
प्रभु नाम के मंत्र जाप से पापी से पापी तिरते।
इसमें कुछ आश्चर्य नहीं वे, इन्द्र सरीखा पद लभते॥12॥

ॐ ह्रीं स्वर्ग लक्ष्मी प्रभुत्वकरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13) रहस्य विद्या प्रदायक

शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते, सत्यपि त्वय्यनीचा,
भक्तिर्नो चेदनवधिसुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम्।
शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्तिकामस्य पुंसो-
मुक्तिद्वारं परिदृढ़महामोहमुद्राकवाटम्।।13।।

परम विशुद्ध ज्ञान चारित से, मोक्ष महल ना मिले कभी।
उत्तम भक्ति जो नर करते, प्रभुवर उसको मिले तभी।।
निर्मल ज्ञान चरण पाकर भी, गर भक्ति चाबी ना हो।
मुक्ति का पट खोल न पाये, यत्न भले कितना ही हो।।13।।

ॐ ह्रीं मुक्ति-द्वारोद् घाटनकारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14) वाणी सिद्धि प्रदायक

प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्-,
पन्था मुक्तेः स्थपुटितपदः क्लेशगर्तैरगाधैः।
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी,
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्भारतीरत्नदीपः।।14।।

मोक्षमार्ग सब ओर ढ़का है, घोर पाप अंधियारे से।
दुःखरूपी गहरे गड्ढे से, आऊँगा उजियारे में।।
हे जिनवर ! तव वाणी से ही, सप्त तत्त्व को जाना है।
गमन करूँगा उसी मार्ग पे, जिसमें मोक्ष खजाना है।।14।।

ॐ ह्रीं मुक्ति पथावलोकन सामर्थ्य-प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(15) भय निवारक, आत्मशक्ति प्रदायक

आत्मज्योतिर्निधिरनवधि र्द्रष्टुरानन्द हेतुः,
कर्मक्षोणीपटलपिहितो योऽनवाप्यः परेषां।
हस्ते कुर्वन्त्यनति चिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः
स्तोत्रैर्बद्ध प्रकृतिपरुषोद्दामधात्री खनित्रैः॥15॥

मोही मिथ्यात्वी प्राणी को, ज्ञाननिधि ना मिल सकती।
अष्ट कर्म से मुक्ति पाने, सम्यक्त्वी करते भक्ती॥
जैसे कोई कुदाल चलाकर, गढ़ा हुआ धन प्राप्त करें।
संस्तुति करके प्रभु आपकी, निजानंद निधि प्राप्त करें॥15॥

ॐ ह्रीं आत्मज्योति निधि प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16) जलाशय संबंधी बाधा निवारक

प्रत्युत्पन्ना, नयहिमगिरेरायता चामृताब्धे,
र्या देव त्वत्पदकमलयोः संगता भक्तिगङ्गा।
चेतस्तस्यां मम रुचिवशादाप्लुतं क्षालितांहः,
कल्माषं यद्भवति किमियं देव संदेह भूमि॥16॥

जिन हिमगिरी से प्रगट हुई है, स्याद्वाद नय की गंगा।
बड़े भाग्य से प्राप्त हुई है, नाथ भक्ति की ये गंगा॥
श्रद्धा से हम डुबकी लेते, पाप हरेगी ये गंगा।
संशय मन का दूर भगाकर, पा जाओ मुक्ति गंगा॥16॥

ॐ ह्रीं सर्वकल्मषक्षालन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17) ध्यान शक्ति प्रदायक

प्रादुर्भूतस्थिरपदसुख ! त्वामनुध्यायतो मे,
त्वय्येवाहं स इति मति रुत्पद्यते निर्विकल्पा।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्तिमभ्रेषरूपां,
दोषात्मानोऽप्यभिमतफलास्त्वत्प्रसादाद्भवन्ति॥17॥

स्थिर सुख जिनवर ने पाया, ऐसे प्रभु का ध्यान करें।
मैं भी जिनवर जैसा ही हूँ, मति में सोच असत्य धरें॥
मिथ्या होकर भी हे जिनवर !, वो निश्चय सुख प्राप्त करें।
तव प्रसाद से दोषरहित भी, इच्छित वस्तु प्राप्त करें॥17॥

ॐ ह्रीं सोऽहमिति मतिप्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(18) विद्या बुद्धि प्रदायक

मिथ्यावादं मलमपनुदन्सप्तभङ्गीतरङ्गै-
र्वागम्भोधिर्भुवनमखिलं देव ! पर्येति यस्ते।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेत सैवाचलेन,
व्यातन्वन्तः सुचिरममृता सेवया तृप्नुवन्ति॥18॥

जिन समुद्र से निकली वाणी, सर्वलोक को पूत किया।
सप्त भंगमय जिन तरंग से, मिथ्यामल को दूर किया॥
मन मेरु से श्रुतसागर का, जो जन मंथन करता है।
वो भव्योत्तम जिनवर जैसा, शाश्वत अमृत वरता है॥18॥

ॐ ह्रीं परमामृत प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19) सुन्दर रूप प्रदायक

आहार्य्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यः,
शस्त्रग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः।
सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां,
तत्किं भूषावसन कुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः॥19॥

हे जिनवर ! जो हैं कुरूप वे, तन को अधिक सजाते हैं।
जो डरते हैं वे शस्त्रों से, झूठा रौब दिखाते हैं॥
जिन तुम अन्दर बाहर सुन्दर, अतः तुम्हें क्या वस्त्रों से ?
तुम अजातशत्रु परमेश्वर, नहीं प्रयोजन शस्त्रों से॥19॥

ॐ ह्रीं परम सुन्दर स्वरूप प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20) ऐश्वर्य प्रदायक, प्रभाव वृद्धिकारक

इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तयाश्लाघनं ते,
तस्यैवेयं भवलयकरी श्लाघ्यता-मातनोति।
त्वं निस्तारी जननजलधेः सिद्धिकान्तापतिस्त्वं,
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थं॥20॥

इन्द्र तिहारी पूजा करता, लाभ तुम्हें क्या पूजा से।
प्रभु पूजा भव भ्रमण मिटावे, यश कीर्ति का लाभ उसे॥
हे जिनवर ! तुम भवतारक हो, स्वयं तिरें सबको तारें।
मुक्तिवधु के तुम हो स्वामी, भक्त तुम्हें पूजे सारे॥20॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्य प्रभु-स्तुतिश्लाघनाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21) वचन शक्ति प्रदायक

वृत्तिर्वाचामपरसदृशी न त्वमन्येन तुल्यः,
स्तुत्युद्गाराः कथमिव ततः स्त्वय्यमी न क्रमन्ते।
मैवं भूवंस्तदपि भगवन्भक्तिपीयूषपुष्टा–
स्तेभव्यानामभिमतफलाः पारिजाता भवन्ति।।21।।

अन्य मनुष्यों के जैसी है, हे प्रभुवर ! मेरी वाणी।
करूँ अर्चना हे जिन ! तेरी, कैसे पहुँचे मम वाणी।।
मम वाणी तुम तक ना, पहुँची फिर भी उत्तम कार्य करें।
सर्वश्रेष्ठ सुरतरु अमृत बन, मोक्ष सिद्धी अनिवार्य करें।।21।।

ॐ ह्रीं भव्य गणाभिमत फलप्रद समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22) क्रोधशामक, क्लेश निवारक

कोपावेशो न तव न तव, क्वापि देव प्रसादो
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवानपेक्षम्।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं सन्निधिर्वैरहारी,
क्वैवंभूतं भुवनतिलकं ! प्राभवं त्वत्परेषु।।22।।

हे जिनवर ! तुमको भक्तों पर, राग–द्वेष का भाव नहीं।
ना प्रसन्न होते भक्तों पे, वीतरागता यही सही।।
फिर भी जग तुम सन्निध पाकर, वैर विरोध मिटाता है।
तीन लोक के श्रेष्ठ तिलक का, यह प्रभाव दर्शाता है।।22।।

ॐ ह्रीं परमोपेक्षि–भुवनतिलक प्रभाव समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23) सद्‌बुद्धि प्रदायक

देव स्तोतुं त्रिदिवगणिका मण्डली गीत कीर्तिं,
तोतूर्ति त्वां सकल विषय ज्ञानमूर्तिं जनो यः।
तस्य क्षेमं न पदमटतो, जातु जोहूर्ति पन्था–,
स्तत्त्वग्रन्थस्मरणविषयै नैष मोमूर्ति मर्त्यः॥23॥

देव–देवियाँ संस्तव द्वारा कीर्त्तन नृत्य भजन करते।
स्वपर प्रकाशी श्री जिनवर की, पूजा में तत्पर रहते॥
होता तब कल्याण जीव का, सरल मोक्ष पथ पा जाते।
तत्त्व ग्रंथ से मोक्ष पंथ पा, मोह जाल से बच जाते॥23॥

ॐ ह्रीं सकल तत्त्व ग्रंथ स्मरण विषयिबुद्धि प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(24) अनंत सुख प्रदायक

चित्ते कुर्वन्निरवधिसुख ज्ञानदृग्वीर्य रूपं,
देव त्वां यः समयनियमादादरेण स्तवीति।
श्रेयोमार्ग स खलु सुकृती तावता पूरयित्वा,
कल्याणानां भवति विषयः पञ्चधा पञ्चितानां॥24॥

गुण अनंत के धारी प्रभु को, हृदय कमल में जो धारे।
त्रय संध्या में विनय भाव से, संस्तुति करते प्रभु द्वारे॥
वो निश्चय से भक्ति रचाकर, श्रेयमार्ग का पात्र बने।
पाँचों कल्याणक से पूजित, तीर्थंकर शुभ गात्र बने॥24॥

ॐ ह्रीं भाक्तिक जन पञ्चकल्याण प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(25) मनवांछित कार्य सिद्धिदायक

(शार्दूलविक्रीड़ित छंद)

भक्तिप्रह्वमहेन्द्रपूजितपद ! त्वत्कीर्तने न क्षमाः,
सूक्ष्मज्ञानदृशोऽपि, संयमभृतः के हन्त मन्दावयम्।
अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते
स्वात्माधीनसुखैषिणां स खलु नः कल्याणकल्पद्रुमः॥25॥

श्री जिनेन्द्र के पाद पद्म की, सुरगण भक्ति न कर पाये।
अवधि मनःपर्यय योगी भी, प्रभु के गुण न लिख पाये॥
आप गुणों से प्रीति कर जो, अनुपम संस्तव करता है।
कल्पतरु कल्याण लाभ पा, आत्म सुखों को वरता है॥25॥

ॐ ह्रीं सुखेच्छुक जन कल्याण कल्पद्रुमाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(26) कवित्व शक्ति प्रदायक

(स्वागता छंद)

वादिराजमनु शाब्दिक लोको, वादिराजमनु तार्किक सिंहः।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनु भव्यसहायः॥26॥

वादिराज मुनि सर्वलोक में, शब्द शास्त्र के ज्ञाता हैं।
मुनियों में मुनि वादिराज यति, तार्किक सिंह विधाता हैं॥
वादिराज की काव्य कुशलता, अद्‌भुत अतिशयकारी हैं।
वादिराज मुनि बने सहायक, भव्यों के उपकारी हैं॥26॥

ॐ ह्रीं श्री वादिराज सूरिकृत एकीभाव स्तोत्र स्वामिने श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

वादिराज मुनिराज ने, किया प्रभु का ध्यान।
कुष्ठ रोग से मुक्त हो, किया जगत् कल्याण।।
छब्बिस गाथा में रचा, एकीभाव विधान।
ऋषभदेव को पूजकर, पायें सौख्य महान।।

ॐ ह्रीं सर्व व्याधि दुःख-संकट, कुष्ठ रोग, चर्मरोग, केंसरादि, कोरोनादि रोग विनाशन समर्थाय आरोग्य, ऋद्धि-सिद्धि, सुख-शांति, समृद्धि, यश-कीर्ति, प्रज्ञा प्रदायकाय श्री आदिनाथ तीर्थंकर परमदेवाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जग में शांति ना मिले, शांति मिले प्रभु द्वार।**
शांतिकरण जगदीश पे, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा

दोहा- **कमलासन के मध्य में, बैठे प्रभुवर आप।**
कमल मनोज्ञ चढ़ा करूँ, प्रभुवर का मैं जाप।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं सर्व व्याधिविनाशन समर्थाय श्री ऋषभदेव तीर्थंकर परमदेवाय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा- **एकीभाव विधान की, जयमाला सुखमाल।**
ऋषभदेव को भेंट है, पुष्पों की ये माल।।

(चौपाई)

जय-जय आदिनाथ मनहारे, तीन लोक के चाँद सितारे।
दिनकर बनकर प्रभुवर आये, रोशन सारा जग हो जाये।।1।।

जो प्रभु को नित मन से ध्याये, दुःख संकट पीड़ा मिट जाये।
जिसने प्रभु को जहाँ पुकारा, उसको प्रभु ने दिया सहारा॥2॥
हरवादी का मान गलाये, वादिराज सूरी कहलाये।
जयसिंह राजा वा दरबारी, पूजा करती प्रजा तिहारी॥3॥
इक विद्वान् सभा में आया, गुरुवर का उपहास उड़ाया।
जैन धरम झूठा है राजा, झूठे हैं इनके मुनिराजा॥4॥
रोगी कुष्ठी उनकी काया, बदसूरत मुनि मन ना भाया।
जैन भक्त यह सह ना पाया, बोला मम गुरु कंचन काया॥5॥
भूपति ने दर्शन की ठानी, मुनि से श्रेष्ठी कहे कहानी।
जैनधर्म पे प्रश्न उठाया, गुरुवर ने तब धैर्य बँधाया॥6॥
वादिराज गुरु प्रभु को ध्याये, ऋषभदेव का ध्यान लगाये।
एकीभाव स्तोत्र बनाये, काया कंचन सम बन जाये॥7॥
जब गुरु चौथा छंद रचायें, गलित कुष्ठ तन का मिट जाये।
राजा संग श्रेष्ठी वन आया, गुरु तन चमक देख हर्षाया॥8॥
गुरु का तेज दूर तक फैला, लगा गुरु दर्शन को मेला।
गुरु को लख राजन चकराये, जैन मुनि ये ही कहलाये॥9॥
नरपति गुरु को शीश झुकाये, द्वेषी पे नृप कोप दिखाये।
राजा को मुनि सत्य बताते, कुष्ठ रोग की बात बताते॥10॥
छोटी अंगुली भी दिखलाये, कुष्ठ रोग उसमें दिखलाये।
जैन श्रमण सब ग्लान नहीं है, मंत्री को सद्ज्ञान नहीं है॥11॥
जैन धर्म का अतिशय मानो, ये जिन भक्ति का फल जानो।
एक रात में कुष्ठ मिटाया, मैंने भक्ति का फल पाया॥12॥
मुनि वाणी सुन सब हर्षाये, गुरु चरणों में सब झुक जाये।
क्षमा करो गुरु दोष हमारा, जैनधर्म सबने स्वीकारा॥13॥

जैन धर्म राजा स्वीकारे, समकित गुण से भाग्य संवारे।
वादिराज सूरी मन भाये, प्रभु भक्ति का मार्ग दिखाये।।14।।
जैन धर्म जिनगुरु की महिमा, उनके तप की जो है गरिमा।
एक रात में पाठ रचायें, अतिशय गुरु हमको दिखलायें।।15।।
ये विधान जो करे करावे, निश्चित अपने कष्ट मिटावे।
जो इसका व्रत विधि से पाले, सर्वश्रेष्ठ उत्तम सुख पाले।।16।।
प्रभु की गुण गाथा हम गाये, रोग-शोक से मुक्ति पाये।
त्रय गुप्ति से प्रभु को ध्यायें, 'आस्था' प्रभु को शीश झुकाये।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व आधि-व्याधि संकट रोग-शोक, दुःख, अशांति, कोरोना वायरस, सर्व ज्वरादि रोगाल्प अपमृत्यु विनाशन समर्थाय सुख, शांति, आरोग्य, ऋद्धि-सिद्धि, धन-धान्य, केवलज्ञान लक्ष्मी प्रदायकाय श्री आदिनाथ तीर्थंकर परमदेवाय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एकीभाव विधान करें हम, सर्व रोग विनशायें।
रहे निरोगी काय हमारी, जिनगुण निशदिन गायें।।
महिमा मंडित वादिभ सूरी, ज्ञानी गुरु को ध्यायें।
आदि प्रभु व वादि सूरी को, हम सब शीश झुकायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आचार्य श्री वादिराज मुनिराज का अर्घ

(जोगीरासा छंद)

वादी प्रतिवादी सब हारे, वादिराज गुरु के आगे।
ओजस्वी गुरु की वाणी सुन, मिथ्यावादी सब भागे।।
ऐसे सूरी वादिराज को, वसु विधि द्रव्य चढ़ाता हूँ।
'आस्था' भक्ति युत गुरुवर को, झुक-झुक शीश नवाता हूँ।।

ॐ ह्रीं परम तपस्वी आचार्य श्री वादिराज महामुनिराज चरणेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

(दोहा)

ऋषभदेव से वीर तक, वंदन बारम्बार।
शांतिनाथ गणनाथ को, प्रणमु शत-शत बार॥1॥

पाँचों परमेष्ठी प्रभु, सरस्वती जग मात।
सर्व श्रमण के चरण की, भक्ति करें दिन-रात॥2॥

वादिराज सूरीश ने, रचना की सुखकार।
एकीभाव स्तोत्र ये, सब दुःख संकटहार॥3॥

कुंथु कनक गुरुराज का, मिला मुझे आशीष।
गुप्तिनंदी गुरुराज को, झुका रही मैं शीश॥4॥

माघबदी की चौदसी, आदिनाथ निर्वाण।
उस दिन ही प्रारम्भ कर, आदिनाथ विधान॥5॥

मुनिसुव्रत का जन्म तप, नवग्रह शांति विधान।
पानीपत में कर इति, एकीभाव विधान॥6॥

शब्द छंद का है नहीं, मुझ में प्रभु कुछ ज्ञान।
'आस्था' को बोधि मिले, पाऊँ केवलज्ञान॥7॥

॥ इतिअलम् ॥

आदिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज – जय गणेश जय गणेश देवा..)

आदिनाथ आदिनाथ, आदिनाथ देवा।
दीप धूप आरती ले, भक्त करें सेवा।।

मात मरुदेवी लाल, नाभिनंद देवा।
आरती की थाल लेके, भक्त करे सेवा।।

1. स्वर्ण रत्न दीप लेके, द्वार तेरे आये।
मोतियों की थाल में ये, दीप चमचमाये।।
नृत्य भक्ति करके पावे, सौख्य शांति मेवा।
दीप धूप ......

2. नवरंगी लाख लाख, दीप हम सजायें।
रत्नमयी रंगमयी, ज्योत हम जलायें।।
आरती में झूम रहे, सर्व देवी–देवा।
दीप धूप ......

3. ज्ञान ज्योति पाने को ये, आरती तिहारी।
सर्व पाप ताप हरे, आरती तिहारी।।
'आस्था' को मोक्ष दीजे हे जिनेन्द्र देवा !
दीप धूप ....

***

एकीभाव विधान (आदिनाथ विधान) की आरती

(तर्ज – ॐ जय महावीर...)

ॐ जय आदिनाथा, स्वामी जय आदिनाथा।
आरती करते हम सब, झुका रहे माथा।। ॐ जय आदिनाथा...

1. ऋषभदेव है नाम तुम्हारा, ऋषियों के स्वामी–2 हो स्वामी..
ऋषि मुनि तव गुण गाये, दुःख मेटो स्वामी...
ॐ जय आदिनाथा...

2. वादिराज मुनिवर के तन में, कोड़ हुआ भारी–2 हो स्वामी..
एकीभाव से तत्क्षण, मिटी व्याधि सारी।।
ॐ जय आदिनाथा...

3. वादिराज मुनिवर की काया, सोने सी चमके–2 हो स्वामी..
चमत्कार लख राजा, गुरुवर को नमते।।
ॐ जय आदिनाथा...

4. इस विधान को जो भी करता, सुख संपत्त पावे–2 हो स्वामी..
'आस्था' से हम भविजन, गुण कीर्त्तन गावे।।
ॐ जय आदिनाथा...

***

चंदनषष्ठी व्रत विधान

(नरेन्द्र छंद)

श्री चंदनषष्ठी व्रत नायक, चंद्रनाथ को ध्यायें।
चंदन षष्ठि व्रत अपनाकर, प्रभु की भक्ति रचायें॥
मन-वच-काया शुद्धि पूर्वक, इस व्रत को अपनायें।
पुष्पों से आह्वान करें हम, प्रभु को हृदय बसायें॥

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

स्वर्ण कलश में निर्मल जल भर ला रहे।
त्रय रोगों से मुक्ति पाने आ रहे॥
चंद्रनाथ की करते हम आराधना।
प्रभु पूजन से होती पाप विराधना॥1॥

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से भी शीतल हैं प्रभु के चरण।
चंदन चरण लगायें मेटें भव भ्रमण॥ चंद्रनाथ...॥2॥

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद अक्षय पद दाता से मिले।
उनकी पूजा भक्ति करने हम चले॥ चंद्रनाथ...॥3॥

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चुनकर लायें रंग-बिरंगे फूल हम।
फूल चढ़ाकर पायें प्रभु पद धूल हम॥ चंद्रनाथ...॥4॥

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी फैनी मधुर इमरती पूड़ियाँ।
प्रभु की पूजा से मिटती भव दूरियाँ।।
चंद्रनाथ की करते हम आराधना।
प्रभु पूजन से होती पाप विराधना।।5।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी जग-मग करती दीपावली।
आरती करके पायें सुख की छावली।। चंद्रनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशों दिशायें महक उठी इस धूप से।
धूप चढ़ाकर बच जायें भव कूप से।। चंद्रनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला आम जाम व रामफल।
फल की अर्चा से मिलता है मोक्षफल।। चंद्रनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

छम-छम नाचे-गायें प्रभु भक्ति करें।
अर्घ चढ़ाकर हम अपने संकट हरें।। चंद्रनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- **चंदन षष्ठी व्रत करें, करते भव्य विधान।**
शुद्धि से प्रभु को भजें, कहते सब भगवान।।

अथ मंडलस्योऽपि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शेर छंद (तर्ज : हे दीनबंधु श्रीपति...)

जिनमात देखती है सोलह स्वप्न रात में।
स्वप्नों का फल बताये पिता सुप्रभात में।।

विशेष नोट- इस व्रत में चन्द्रप्रभु भगवान की ही 6 बार पूजा करें।

आकर के अष्ट देवियाँ माता को सजायें।
हम अर्घ चढ़ा आज गर्भ पर्व मनायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भमंगल मण्डिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवतार लेके नाथ ने सबको जगा दिया।
क्षणमात्र को त्रिलोक से सब दुःख भगा दिया॥
सौधर्म ने जिन राज का अभिषेक रचाया।
हमने चढ़ाके अर्घ वही पुण्य कमाया॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्ममंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार को असार जान वन को चल दिये।
केशों का लोच करके प्रभु आत्मरस पिये॥
मुद्रा प्रभु की त्याग का संदेश दे रही।
अनुमोदना दीक्षा की करें भाव से यही॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपोमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के समवशरण में सभी भव्य आ रहे।
शुभ दर्श पाके आप से सम्यक्त्व पा रहे॥
श्री केवली भगवान की हम आरती करें।
कीर्तन करें वंदन करें, पर मन नहीं भरे॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान तीर्थनाथ हमें पास बुलायें।
भगवान शब्द मात्र ही भव पार लगाये॥
भगवान भव से तर गये भव्यों को तारते।
हम भव्य प्राणी आपको मन से पुकारते॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर का गर्भ जन्म हुआ चंद्रपुरी में।
उत्सव मनाने आये देव स्वर्गपुरी से॥

मधुवन से मोक्ष पा लिया भगवान आपने।
हम अर्घ चढ़ा भक्ति करें पाप नाशने।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्र पूजते सदैव चंद्रनाथ को।
हम अर्घ चढ़ा नमन करें चंद्रनाथ को।।
हमसे हुई अशुद्धि उनकी माँगते क्षमा।
सब पाप दोष कष्ट हरो माँगते क्षमा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतेन्द्र पूज्याय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस तीर्थ-नगर-क्षेत्र चन्द्रनाथ विराजे।
अतिशय वहाँ पे होय बजे नित्य ही बाजे।।
इस व्रत में होती है विशेष चंद्र अर्चना।
हम नाथ आपकी करें त्रिकाल वन्दना।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्षेत्र विराजित त्रिकाल पूजिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मन शुद्धि को छोड़कर, की पूजा अभिषेक।
क्षमा करो हे नाथ ! अब, पूजें भक्त विशेष।।
शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से हमने किया, बिना शुद्धि गुणगान।
पाप बंध उसमें किया, रहा नहीं कुछ भान।।

शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचनकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया को धोया मगर, किया नहीं मुख शुद्ध।
शुद्ध वस्त्र धारण किये, छूकर किये अशुद्ध॥ शुद्धि..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किये विधान बड़े-बड़े, तजकर शुद्धि विवेक।
भोजन पानी ले लिया, भूले वस्त्र विवेक॥ शुद्धि..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूजा विधाने अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छींक जंभाई खाँसी में, करके वस्त्र अशुद्ध।
पाप बंध हमसे हुआ, कैसे हो हम शुद्ध॥ शुद्धि..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थों में हम जब गये, परिजन संग ले साथ।
खा पीकर हम पेट भर, गये प्रभु के पास॥ शुद्धि..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थक्षेत्रे अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरूओं के आहार में, पहने वस्त्र न शुद्ध।
झूठ बोल शुद्धि कहे, मन-वच-काय अशुद्ध॥ शुद्धि..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं पात्र दान संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा स्वाध्याय में, तन अशुद्ध जब होय।
छिपा लिया वह दोष जब, तन कुष्ठी तब होय॥

शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवपूजा स्वाध्याय संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन तो मैला कर लिया, तन भी मैला होय।
वचनों से शुद्धि कहें, तीनों शुद्ध न होय॥ शुद्धि..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं मन–वच–काय कृत सर्व अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतकारित अनुमोदना, अच्छा बुरा दिखाय।
मन–वच–काया तीन ये, पुण्य–अपुण्य दिलाय॥ शुद्धि..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं नवकोटी जनित दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप छिपाकर जो किये, इक दिन बाहर आय।
घड़ा पाप का फूटता, सबको ही दिख जाय॥ शुद्धि..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं पापान्धकार निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप छिपाये ना छिपे, छिपे ना कोई रोग।
शुद्धि से प्रभु भक्ति कर, मिट जायें सब रोग॥ शुद्धि..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्ति संबंधि सर्व दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठ बोलकर दे दिया, मुनिवर को आहार।
कोढ़ होय जब देह में, करते कर्म प्रहार॥ शुद्धि..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं असत्य वचन संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसात्मक सामग्री से, सजा रहे जो काय।
उसमें जिन–गुरु भक्ति कर, दुःखकर पाप कमाय॥

शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुद्ध कायसंबंधि सर्वदोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवली गुरु श्रुत देव पर, करते जो अपवाद।
दर्शन मोह कुकर्म भी, देता उन्हें विषाद॥ शुद्धि..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं देव–शास्त्र–गुरु संबंधि सर्व अपवाद दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की निंदा जो करे, या करते अपमान।
उसकी दुर्गति हो अवश, होगा ना कल्याण॥ शुद्धि..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुरु निंदा संबंधि सर्व दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधु माँस व्यसनी अगर, करते पूजा पाठ।
उनको दुर्गति दुःख मिले, मिले नरक का ठाठ॥ शुद्धि..॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्त व्यसन संबंधि सर्व दुर्गति पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसनी हो प्रभु को भजे, पाये कष्ट अनेक।
पाप छिपाने अघ करे, लेकिन नहीं विवेक॥ शुद्धि..॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्म पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गठरी बाँधे पाप की, कुल में दाग लगाय।
जन्मा जिन कुल में मगर, जैन नहीं बन पाय॥ शुद्धि..॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुल कलंक दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होटल में भोजन किया, चाय कॉफी के साथ।
विषय लोलुपी बन किया, पाप बंध हे नाथ !॥

शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुद्ध भोजन संबंधि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उपवास अनेक कर, किया मंत्र का जाप।
दर्शन पूजा सब किया, मन को किया न साफ॥ शुद्धि..॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं मन संबंधि सर्वपाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म जिन कुल मिला, पाई उत्तम देह।
लगे रहे नित भोग में, व्यर्थ गंवाई देह॥ शुद्धि..॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं अति आसक्ति दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तक काय निरोग थी, किया नहीं कल्याण।
जरा रोग तन में लगा, कैसे हो कल्याण॥ शुद्धि..॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं देह व्याधि निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धोखा छल अन्याय व, ईर्ष्या अत्याचार।
स्व हिंसा पर घात कर, किया पाप व्यापार॥ शुद्धि..॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं छल–कपट, राग–द्वेष, ईर्ष्या–पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

मन रोगी का मन है चंचल, रोग मानसिक कहलाये।
मन से सोचा बुरा अगर जो, ऐसे रोग उभर आये॥
ऐसे रोग नशाने भगवन, अर्चा करने हम आये।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं मानसिक रोगहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शिरशूल दर्द व चक्कर, शिर के रोग अनेकों हों।
अति तनाव में टेंशन होता, बुद्धि विकार अनेकों हों॥
बुद्धि रहे सदा सद्बुद्धि, यही भावना हम भायें॥ सर्व रोग..॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिर शूल तनाव आदि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस काया के किसी अंग में, जब कैंसर हो जाता है।
महारोग का नाम सुने वो, जीव शीघ्र मर जाता है॥
हमने करी अशुद्धि भगवन्, रोग इसी कारण आये॥ सर्व रोग..॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं कैंसर आदि रोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत दाग काया पे होते, दिखती काया अधी जली।
चर्म रोग व लाल दाग से, मुरझाती है हृदय कली॥
कुष्ठ रोग होता अशुद्धि से, शुद्धि से प्रभु को ध्यायें॥ सर्व रोग..॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुष्ठ आदि रोगहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव-विभोर भक्ति करते पर, शुद्धि का कुछ ज्ञान नहीं।
कर्म वेदनी अति दुःख देता, बी.पी. शूगर बड़े वहीं॥
ऐसे राज रोग से बचने, प्रभु की पूजा रचवायें॥ सर्व रोग..॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं बी.पी. शुगर आदि वेदनीय कर्मजनित सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन के राग-द्वेष ही हमको, पाप बंध करवाते हैं।
मलिन हो गया मन मंदिर ये, हृदय गति रुकवाते हैं॥
तन अच्छा है जब तक अपना, देव-शास्त्र-गुरु को ध्यायें॥ सर्व रोग..॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं रागद्वेष पापजनित हृदयादि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय अटैक अचानक तन पे, किडनी लीवर साथ न दे।
पेट में पथरी किड़नी बिगड़ी, तन भी अपना साथ न दे॥

जो-जो भी अपराध हुये हैं, क्षमा माँगने हम आये॥
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं किडनी लीवर आदि उदर संबंधि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञात और अज्ञात भाव से, हमसे दुष्कर पाप हुआ।
उनका फल पाया जब हमने, हमको बहु संताप हुआ॥
उन कर्मों के बंध छुड़ाने, हम श्री जिनवर को ध्यायें॥ सर्व रोग..॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाताज्ञात भावकृत सर्वदोष हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं नहीं खाते जो वस्तु, खिला रहे व्यापार किया।
भक्ष्याक्ष्य विवेक छोड़कर, तन को मरघट बना लिया॥
पेट महारोगी हो इससे, मौत सामने आ जाये॥ सर्व रोग..॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं भक्ष्याभक्ष्य भोजन संबंधि सर्वदोष हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन भी जावे धन भी जावे, ऐसा रोग कभी ना हो।
देव गुरु की भक्ति करें नित, हमको रोग कभी ना हो॥
कोमा लकवा हो ना तन में, स्वस्थ शरीर सभी पायें॥ सर्व रोग..॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं कोमा-लकवा आदि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोम-रोम में रोग लगे हैं, सर्व अंग अति पीड़ित हैं।
आँख नाक व कर्ण दाँत के, रोगों से हम पीड़ित हैं॥
सर्दी खाँसी कंठ पीठ व, दर्द कमर में ना आये॥ सर्व रोग..॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाङ्ग रोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव से जो कर्म बंधे हैं, वो भी अब प्रभु नश जायें।
हो ना हमसे नाथ अशुद्धि, ऐसी प्रज्ञा जग जाये॥
प्रभु भक्ति ही पार लगाती, दुर्गति में हम ना जायें।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं सद्बुद्धि प्रदायकाय सर्व अशुद्धि हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य बढ़ाने के जो साधन, प्रभु भक्ति गुरु की सेवा।
पूजा दान करें हम निशदिन, मिले भक्ति का नित मेवा।।
संकट-पीड़ा-कष्ट मिटाने, हम भी प्रभु के गुण गायें।। सर्व रोग.. ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं संकट पीड़ा कष्ट निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धि ही सिद्धि को देती, प्रभु व गुरुवर बतलायें।
सही मार्ग पे जो नित चलते, दुःख में कभी ना घबरायें।।
संकट की घड़ियों में भी हम, रंच न विचलित हो जायें।। सर्व रोग.. ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि दुःखहरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उपवास आदि के द्वारा, कर्म कटेंगे शास्त्र कहें।
दान धर्म समता रखने से, शूल हटेंगे शास्त्र कहें।।
पापों की हम निंदा करते, आलोचन करने आये।। सर्व रोग.. ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पापहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव देवों की पूजा भक्ति, करने में जो दोष हुये।
इसी पाप के कारण हमको, इस काया में रोग हुये।
काय निरोगी रहे हमारी, रत्नत्रय हम भी पायें।। सर्व रोग.. ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरोग शरीर प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव का तन है अति उत्तम, अच्छे उत्तम कार्य करें।
इसी गति को पाकर प्राणी, मुक्ति का सोपान वरे।।
कर्म कालिमा पाप वर्गणा, जिन भक्ति से विनशायें।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्म कालिमा पाप वर्गणा हरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्गति दुर्गति मिले यही से, पुण्य-पाप हमने बाँधा।
शुद्धि अशुद्धि करे मनुज ही, पाप रोग बनकर आता॥
खोटे अशुभ करम विनशाने, प्रभु चरणों में हम आये॥ सर्व रोग.. ॥50॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गति निवारणाय सद्गति प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र और काल भाव भी, शुद्ध जहाँ नहिं होते हैं।
धर्म कार्य कर लेने पर भी, बीज पाप के बोते हैं॥
पुण्य कमायें प्रभु भक्ति से, पाप नशाने हम आये॥ सर्व रोग.. ॥51॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व क्षेत्रादि अशुद्धि निवारकाय पुण्य वृद्धि कराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप उदय में आता है जब, बिलख-बिलख कर रोते हैं।
कैसे दुःख की घड़ियाँ बीते, चिंता में ना सोते हैं॥
हे भगवन् ! इन दुःख से तारों, हम सब चरणों में आये॥ सर्व रोग.. ॥52॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिदुःख त्रास हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म की लीला अद्भुत, पुण्य पाप बन जाता है।
धर्म कार्य करने वाला भी, दुःखी नजर अब आता है॥
ऐसे कर्म हमारे क्षय हो, निशदिन हम प्रभु गुण गायें॥ सर्व रोग.. ॥53॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्म पाप हराय धर्मवृद्धि कराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूतक पातक जब हो घर में, भूल स्वयं हम करते हैं।
मंदिर जाते माला जपते, गंधोदक ले लेते हैं॥
सूतक पातक जो ना पाले, वो भी निश्चित दुःख पाये।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥54॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूतक पातक संबंधी अशुद्धि दोष हरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म उदय आता पापों से, भक्ति से ही कर्म कटें।
जो कर्मों से नहीं घबराते, उनके निश्चित कर्म कटें॥
कर्म उदय में ना घबराये, ऐसी हम शक्ति पायें॥ सर्व रोग..॥55॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्तिरूपी शक्ति प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस काया को स्वस्थ बनाने, आगम की आज्ञा पालें।
शिर से लेकर पैरों तक के, रोग देव भक्ति टाले॥
हमसे जो भी दोष हुये प्रभु, क्षमा माँगने हम आये॥ सर्व रोग.. ॥56॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वांग काया स्वस्थ करणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

केलादि फल के गुच्छ संग, श्रीफल ध्वजादि ला रहे।
पुष्पादि माला दीप संग, पूर्णार्घ इन्द्र चढ़ा रहे॥
सम्पूर्ण रोगों को हरे, जिनराज की ये अर्चना।
सुख शांति जिनगुण प्राप्त हो, इस हेतु करते वंदना॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि, रोग, कष्ट, पीड़ा, दुःख, अशांति, क्लेश, संकट, शोक, कोरोना महाव्याधि निवारणाय सुख-समृद्धि, शांति, आरोग्य, बुद्धि, ऋद्धि-सिद्धी, धन-धान्य सौभाग्य प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : भक्ति भाव का नीर ले, आये प्रभु के द्वार।
प्रभु के पद प्रक्षाल से, मिलती शांति अपार॥

शांतये शांतिधारा

दोहा : पुष्पों से कोमल अति, तीर्थंकर जिनराज।
हृदय पुष्प पुलकित हुआ, पुष्प चढ़ाके आज॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकराय श्यामयक्ष ज्वालामालिनी देवी सहिताय नमः स्वाहा। अथवा (2) ॐ ह्रीं चन्दनषष्ठी व्रतोद्यापने श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (3) ॐ ह्रीं चन्दनषष्ठी व्रताधिपति श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा : चंदन षष्ठी व्रत करें, हम सब हे भगवान !।
जयमाला व्रत की पढ़ें, पायें मुक्ति महान्॥

चौपाई

जय-जय हो तीर्थंकर स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
जयमाला ये मंगलकारी, प्रभु की भक्ति है सुखकारी॥1॥
चंदन षष्ठी व्रत अपनाये, काया चंदन सी महकाये।
जो कोई इस व्रत को पाले, परम्परा से शिव सुख पाले॥2॥
एक शहर उज्जैन कहाये, ईश्वर प्रभु के भक्त कहायें।
वहाँ श्रमण अतिमुक्तक आये, मास-मास उपवास रचायें॥3॥
ईश्वरचंद उन्हें पड़गाये, निज भार्या को पास बुलाये।
बोला हम गुरु को ले आये, दोनों मिल आहार करायें॥4॥
भय से पत्नी ने मुँह फेरा, कहे अपावन यह तन मेरा।
मैं गुरु को आहार न दूँगी, पाप बंध मैं नहीं करूँगी॥5॥
सेठ कहे चुप रह सेठानी, मैंने तो आहार की ठानी।
जाओ जल्दी थाली लाओ, गुरुवर को आहार कराओ॥6॥
अशुद्ध तन चर्या करवाये, चर्या कर गुरु वन में जाये।
तीन दिवस जैसे ही होते, कुष्ठ रोग से दोनों रोते॥7॥
गुप्त पाप उदयागत आया, तन में कोढ़ निकलकर आया।
बड़े कष्ट से समय बिताये, पुण्य उदय से मुनि संघ आये॥8॥
भद्रगुरु के दर्शन पाये, गुरु को अपनी व्यथा सुनाये।
कोढ़ हुआ क्यों हमको स्वामी, आप बताओ अन्तर्यामी॥9॥

तब गुरुवर उनको बतलाये, उनका दोष सहज समझायें।
तुमने छल से दान दिया था, संयम का अपमान किया था॥10॥
वही पाप उदयागत आया, गले कोढ़ से अब तुम काया।
पश्चात्ताप उन्हें तब आया, उनने गुरु को शीश झुकाया॥11॥
बोले हमको मार्ग दिखाओ, दुःख संकट से मुक्त कराओ।
गुरु ने करुणा भाव दिखाया, चंदन षष्ठी व्रत दिलवाया॥12॥
भादो कृष्णा छठ जब आये, वो ही चंदन छठ कहलाये।
दोनों इस व्रत को अपनाओ, कंचन सम उत्तम तन पाओ॥13॥
श्री गुरुवर से व्रत अपनाया, छह अनशन कर पुण्य कमाया।
विधिवत इस व्रत को अपनाया, उत्तम उद्यापन करवाया॥14॥
व्रत से सुन्दर तन को पाया, धार समाधि सुर-तन पाया।
ईश्वर नृप बन मुनिव्रत धारें, तद्भव से वो मोक्ष पधारें॥15॥
चंदन बनी पद्मिनी रानी, उसकी थी ये बड़ी कहानी।
बनी आर्यिका फिर वो रानी, छेदे स्त्रीलिंग प्रधानी॥16॥
पुनः मनुज तन जब वो पाये, निश्चित श्रेष्ठ सिद्ध पद पाये।
एक बार जो व्रत अपनाता, सर्व दुःखों से मुक्ति पाता॥17॥
मन के साथ वचन की शुद्धि, वचनों के संग तन की शुद्धि।
शुद्धिपूर्वक गुरु की भक्ति, देती है पापों से मुक्ति॥18॥
चंदन षष्ठी व्रत अपनायें, 'आस्था' से प्रभु के गुण गायें।
चन्द्रनाथ जिन को हम ध्यायें, गुप्ति समिति धर शिवसुख पायें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि, रोग, कष्ट, पीड़ा, दुःख, अशांति, क्लेश, संकट, शोक, कोरोना महाव्याधि निवारणाय सुख-समृद्धि, शांति, आरोग्य, बुद्धि, ऋद्धि-सिद्धी, धन-धान्य सौभाग्य प्रदायकाय चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चंद्रनाथ जिनराज का, करते हम गुणगान।
गुप्ति समिति व्रत पालकर, बन जायें भगवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ

श्याम यक्ष

(अडिल्ल छंद)

श्याम यक्ष श्री चंद्रप्रभु को ध्या रहे।
प्रभु की पूजा भक्ति यक्ष रचा रहे।।
श्याम यक्ष को अर्घ समर्पण हम करें।
वो उनके दुःख हरते जो श्रद्धा करें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चंद्रप्रभ जिनशासन प्रभावक श्री श्याम यक्षाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ज्वालामालिनी यक्षिणी

(अडिल्ल छंद)

चंद्रप्रभु की यक्षी ज्वाला मालिनी।
जिन शासन की रक्षक ज्वाला मालिनी।।
जिनशासन का ध्वज माता फहरा रही।
उन्हें पूजने भक्त टोलियाँ आ रही।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चंद्रप्रभ जिनशासन सेविका श्री ज्वालामालिनी यक्ष्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

***

विधान प्रशस्ति

अडिल्ल छंद

वृषभादि चौबीस नाथ को है नमन।
चंद्रप्रभु को करते हैं शत्–शत् नमन।।
सरस्वती माँ गणधर गुरुओं को नमन।
कुंथु–कनक–गुप्तिनंदी गुरु को नमन।।1।।

चंदनषष्ठी व्रत का भव्य विधान ये।
अल्प समय में पूर्ण हुआ सु विधान ये।।
गुप्ति गुरु ने इसका संपादन किया।
हमने इसको भक्ति से निर्मित किया।।2।।

इस वसुधा पे जब तक सूरज–चाँद हैं।
भव्यों द्वारा ये विधान होता रहे।।
इस विधान की महिमा अपरम्पार है।
''आस्था'' का प्रभु वंदन बारम्बार है।।3।।

***

आरती

(तर्ज – ना कजरे की धार ना...)

श्री चंद्रनाथ भगवान, करते हम सब गुणगान।
लेकर दीपों की थाल, करते मंगल आरती आज॥–2
हो हो.. आ–आ..

चंदन षष्ठी व्रत धारें, अपने सब अघ परिहारें–2
चंदा प्रभु की पूजा कर, नर–नारी व्रत स्वीकारें॥
इस व्रत को, श्रद्धा से–2, पालन करते नर–नार॥1॥
श्री........

भादो कृष्णा षष्ठी को, इक वर्ष में व्रत ये आता–2
विधिपूर्वक व्रत जो करता, वो मोक्ष लक्ष्मी पाता॥
चंदा प्रभु की, पूजा करके–2, पाते हम सौख्य अपार॥2॥
श्री........

चंदन षष्ठी का हम सब, पूजन–विधान करते हैं–2
करते व्रत का उद्यापन, चंदन सम सुख वरते हैं॥
''आस्था'' से, हम आये–2, हे चन्द्र प्रभु ! तव द्वार॥3॥
श्री........

***

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया।।
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय............

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे.................... प्रान्ते–नगरे........... मासानांमासे.........मासे.........पक्षे.........तिथौ..........वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥
आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥
छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः–3जः–3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट–दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री बृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री बृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री बृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-
सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छयानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी
(आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति
(गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.) I,II
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना

* * *